राजस्थान भारती प्रकाशन

# जिनराजसूरि-कृति-कुसुमांजलि

सम्पादक

अगरचन्द नाहटा



सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट

बीकानेर

प्रथमावृत्ति १०००]   वि० सं०-२०१७   [मूल्य ४)

प्रकाशक:—
सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीटयूट
बीकानेर

प्रथम संस्करण : १००० प्रतियाँ
मूल्य—४ रु०

मुद्रक:—
महावीर मुद्रणालय,
अलीगंज (एटा)

सुविहित चारित्र-चूड़ामणि, प्राचीन ग्रन्थोद्धारक
स्वाध्याय रत आत्मार्थी गणिवर्य

## श्री बुद्धिमुनिजी महाराज

के कर कमलों में श्रद्धा व
भक्ति पूर्वक सादर

समर्पित

—अगरचंद नाहटा

# प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा संस्कृत, हिन्दी एवं विशेषत: राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानो एवं भाषाशास्त्रियो का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमे प्रारम्भ से ही मिलता रहा है।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर मे विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तिया चलाई जा रही हैं, जिनमे से निम्न प्रमुख है—

## १. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस सम्बन्ध मे विभिन्न स्रोतो से संस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दों का संकलन कर चुकी है। इसका सम्पादन आधुनिक कोशो के ढंग पर, लंबे समय से प्रारम्भ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके है। कोश मे शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं दी गई है। यह एक अत्यन्त विशाल योजना है, जिसकी सन्तोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है। आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य मे इसका प्रकाशन प्रारम्भ करना सम्भव हो सकेगा।

## २. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भंडार के साथ मुहावरो से भी समृद्ध है। अनुमानत: पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग मे लाये जाते है। हमने लगभग [illegible] हजार मुहावरों का, हिन्दी मे अर्थ और राजस्थानी मे उदाहरणो सहित प्रयो[illegible] [illegible]म्पादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबन्ध किया जा [illegible] है। यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है।

यदि हम यह विशाल संग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह संस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिये भी एक गौरव की बात होगी ।

३. **आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का प्रकाशन**

इसके अंतर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं:—

१. **कळायण**, ऋतु काव्य । ले० श्री नानूराम संस्कर्ता ।

२. **आभै पटकी**, प्रथम सामाजिक उपन्यास । ले० श्री श्रीलाल जोशी ।

३. **वरस गांठ**, मौलिक कहानी संग्रह । ले० श्री मुरलीधर व्यास ।

'राजस्थान-भारती' में भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का एक अलग स्तम्भ है, जिसमें भी राजस्थानी कवितायें, कहानियां और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं ।

४. **'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन**

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन संस्था के लिये गौरव की वस्तु है । गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है । बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयों के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन संभव नहीं हो सका है । इसका भाग ५ अंक ३-४ **'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक'** बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अंक एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है । पत्रिका का अगला ७वां भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है । इसका अंक १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और वृहत् विशेषांक है । अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है ।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के संबंध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन में भारत एवं विदेशों से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाएं हमें प्राप्त होती हैं । भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में भी इसकी मांग है व इसके ग्राहक हैं । शोधकर्त्ताओं के लिये 'राजस्थान-भारती' अनिवार्यत: संग्रहणीय शोध-पत्रिका है । इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखों के अतिरिक्त संस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचंद नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है ।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान, सम्पादन एवं प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि को प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित रखने एवं सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप मे मुद्रित करवा कर उचित मूल्य मे वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। संस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रंथो का अनुसंधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यों की ओर से निरंतर होता रहा है, जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६. पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई संस्करण प्रकाश मे लाये गये हैं और उनमे से लघुतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अंश 'राजस्थान-भारती' में प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध संस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती मे प्रकाशित हुए हैं।

७. राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखा) की ७५ रचनाओं की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अंक मे प्रकाशित हुई है। उनका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक 'काव्य क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबंध राजस्थान-भारती मे प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड क्षेत्र के ५०० लोकगीतो का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र के सैकडो लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरियाँ, और लगभग ७०० लोक कथाएँ संग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतो के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पाबूजी के पवाड़े और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' मे प्रकाशित किए गए है।

१०. बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखो का विशाल संग्रह 'बीकानेर जैन लेख नामक वृहत् पुस्तक के रूप मे प्रकाशित हो चुका है।

११. जसवंत उद्योत, मुंहता नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचन्द भंडारी की ४० रचनाओं का अनुसन्धान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के सम्बन्ध में भी सबसे प्रथम 'राजस्थान भारती' मे लेख प्रकाशित हुआ है।

१३. जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखों और 'भट्टि वश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४. बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथों का अनुसन्धान किया गया और ज्ञानसागर ग्रंथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओं का संग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५. इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियों के निर्वाण-दिवस और जयन्तियां मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्य गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमें अनेकों महत्वपूर्ण निबंध, लेख, कविताएं और कहानियां आदि पढ़ी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियों तथा भाषणमालाओं आदि के भी समय-समय पर आयोजन किये जाते रहे हैं।

१६. बाहर से ख्याति प्राप्त विद्वानों को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्रीकृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रम्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं।

गत दो वर्षों से महाकवि पृथ्वीराज राठौड आसन की स्थापना की गई है। दोनों वर्षों के आसन-अधिवेशनों के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, बिसाऊ और पं० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, हूडलोद थे।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षों के जीवनकाल मे, सस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है। आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह सम्भव नही हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लडखड़ा कर गिरते पड़ते इसके कार्यकर्त्ताओं ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओं के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे। यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नही है, न अच्छा सदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्यालय को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं; परन्तु साधनो के अभाव मे भी संस्था के कार्यकर्त्ताओं ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर संस्था के गौरव को निश्चित ही बढा सकने वाली होगी।

राजस्थानी-साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है। अब तक इसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश में आया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनो और साहित्यिको के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हे सुगमता से प्राप्त करना संस्था का लक्ष्य रहा है। हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढता के साथ अग्रसर हो रहे हैं।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तको के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना सम्भव नही हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोध एवं सास्कृतिक कार्यक्रम मन्त्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अंतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये १५०००) रु० इस मद मे राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशना

हेतु इस सस्था को इस वित्तीय वर्ष में प्रदान की गई है; जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

| | |
|---|---|
| १. राजस्थानी व्याकरण— | श्री नरोतमदास स्वामी |
| २. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध) | डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल |
| ३. अचलदास खीची री वचनिका— | श्री नरोत्तमदास स्वामी |
| ४. हमीरायण— | श्री भवरलाल नाहटा |
| ५. पद्मिनी चरित्र चौपई— | ,, ,, ,, |
| ६. दलपत विलास— | श्री रावत सारस्वत |
| ७. डिंगल गीत— | ,, ,, ,, |
| ८. पवार वंश दर्पण— | डा० दशरथ शर्मा |
| ९. पृथ्वीराज राठोड ग्रंथावली— | श्री नरोतमदास स्वामी और श्री बदरीप्रसाद साकरिया |
| १०. हरिरस— | श्री बदरीप्रसाद साकरिया |
| ११. पीरदान लालस ग्रंथावली— | श्री अगरचंद नाहटा |
| १२. महादेव पार्वती वेलि— | श्री रावत सारस्वत |
| १३. सीताराम चौपई— | श्री अगरचंद नाहटा |
| १४. जैन रासादि संग्रह— | श्री अगरचंद नाहटा और डा० हरिवल्लभ मायाणी |
| १५. सदयवत्स वीर प्रबंध— | प्रो० मंजुलाल मजूमदार |
| १६. जिनराजसूरि कृतिकुसुमाजलि— | श्री भंवरलाल नाहटा |
| १७. विनयचद कृतिकुसुमाजलि— | ,, ,, ,, |
| १८. कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावली— | श्री अगरचंद नाहटा |
| १९. राजस्थान रा दूहा— | श्री नरोत्तमदास स्वामी |
| २०. वीर रस रा दूहा— | ,, ,, ,, |
| २१. राजस्थान के नीति दोहे— | श्री मोहनलाल पुरोहित |
| २२. राजस्थानी व्रत कथाएँ— | ,, ,, ,, |
| २३. राजस्थानी प्रेम कथाएँ— | ,, ,, ,, |
| २४. चंदायन— | श्री रावत सारस्वत |

| | |
|---|---|
| २५. भड्डली— | श्री अगरचंद नहाटा और म.विनय सागर |
| २६. जिनहर्ष ग्रंथावली | श्री अगरचंद नाहटा |
| २७. राजस्थानी हस्त लिखित ग्रंथों का विवरण | ,, ,, |
| २८. दम्पति विनोद | ,, ,, |
| २९. हीयाली–राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य | ,, ,, |
| ३०. समयसुन्दर रासत्रय | श्री भंवरलाल नाहटा |
| ३१. दुरसा आढा ग्रंथावली | श्री बदरीप्रसाद साकरिया |

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह ( संपा० डा० दशरथ शर्मा ), ईशरदास ग्रथावली ( संपा० बदरीप्रसाद साकरिया ), रामरासो ( प्रो० गोवर्द्धन शर्मा ), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० श्री अगरचंद नाहटा), नागदमण (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया) मुहावरा कोश ( मुरलीधर व्यास ) आदि ग्रंथो का संपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नही हो रहा है।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एवं गुरुता को लक्ष्य मे रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमे अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त सपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथो का प्रकाशन संभव हो सकेगा।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षा विकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मजूर की।

राजस्थान के मुख्य मंत्री माननीय मोहनलालजी सुखाडिया, जो सौभाग्य से शिक्षा मत्री भी है और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने मे पूरा-पूरा योगदान रहा है। अतः हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते है, जिन्होने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने मे समर्थ हो सके। संस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी।

इतने थोडे समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थो का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य मे जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादको व लेखको के अत्यन्त आभारी हैं।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर संग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन संग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसधान समिति जयपुर, ओरियटल इन्स्टीट्यूट बडोदा, भाडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ वृहद् ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बंबई, आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बडोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशकर देराश्री, प० हरिदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक संस्थाओ और व्यक्तियो से हस्तलिखित प्रतिया प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रथो का संपादन सम्भव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते है।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थो का सम्पादन श्रमसाध्य है एव पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय मे ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियो का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छत: स्खलनंक्वपि भवत्येव प्रमादत:, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधव:।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनो का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावो द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुन: मा भारती के चरण कमलों मे विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकें।

निवेदक
लालचन्द कोठारी
प्रधान-मन्त्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

बीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
संवत् २०१७
दिसम्बर ३, १९६०

# जिनराजसूरि कृति-कुसुमांजलि

## अनुक्रमणिका

## रामायण सम्बन्धी पद

## श्री विरहमान विंशति जिन गीतम्

## श्री ऋषभादि तीर्थङ्कर गीत

## आत्म-प्रबोधक गीत

# जैनाचार्य जिनराजसूरि और उनकी साहित्य सेवाः—

राजस्थान में काफी प्राचीन समय से जैन-धर्म का प्रचार रहा है। समय समय पर अनेको जैनाचार्यों और विद्वान मुनियों ने यहा के लोगों को अपने उपदेशों द्वारा सद्धर्मानुयायी बनाया। ओसवाल, पोरवाल, श्रीमाल, पल्लीवाल, खंडेलवाल आदि अनेक जैन, वंश, जाति व गोत्र, जो आज सारे भारतवर्ष में फैले हुए है, वे अधिकांश राजस्थान के ही है। कलापूर्ण मंदिर, मूर्तियों, चित्रों, हस्तलिखित ग्रंथों आदि का राजस्थान मे जैन मुनियो और आचार्यों द्वारा प्रचुर परिमाण मे-निर्माण हुआ। आज भी सैकड़ों छोटे-बड़े ज्ञानभंडार, जैन-मंदिर राजस्थान मे पाए जाते है। अनेकों विद्वान जैन ग्रंथकार राजस्थान में हुए हैं। जिन्होंने प्राकृत संस्कृत, अपभ्रंश राजस्थानी, हिंदी, गुजराती, पंजाबी, सिंधी भाषा में रचनाएं की है। यहां के कई विद्वान तो बंगाल तक पहुँचे और वहां भी राजस्थानी एवं हिंदी में ग्रन्थ बनाए। उनके द्वारा कुछ फुटकर भजन बंगला भाषा में भी रचे गये है, इस तरह राजस्थान के जैन कवियो का रचा हुआ साहित्य बहुत विशाल और विविध प्रकार का है-साहित्य-रचना में उनका प्रधान उद्देश्य लोक,कल्याण का रहा है। विद्वता-प्रदर्शन, धन एवं यश की प्राप्ति उनका उद्देश्य नही था। जन साधारण के लिए रचे जाने के कारण उनकी रचनाओं की भाषा भी सरल होती थी। प्राकृत एव संस्कृत ग्रन्थों की भाषा टीकाएं भी राजस्थानी-गद्यमे काफी

लिखी गई हैं। कुछ कथा-ग्रंथ और पट्टावलियाँ भी राजस्थानी-गद्य में प्राप्त है।

१७ वी शताब्दी के राजस्थानी जैन कवियो में मालदेव, पार्श्वचन्द्रसूरि, विनयसमुद्र, समयसुन्दर, साधुकीर्ति, कनकसोम, हीरकलश, कुशललाभ, गुणविनय, सूरचंद, सहजकीर्ति, लब्धि-कल्लोल, श्रीसार आदि अनेक कवि हो गए हैं। जिनराजसूरि भी १७ वी के उत्तरार्द्ध के उल्लेखनीय कवि है। इनका जन्म बीका-नेर मे ही हुआ था। १९ वी शताब्दी के मस्तयोगी एवं प्रखर समालोचक सुकवि ज्ञानसार जी ने इनके लिए लिखा है 'गुजरात माँ ए कहिवत छे आनंदघन टंकसाली, जिनराजसूरि बावा तो अवध्य बचनी' अर्थात् इनके बचनों के प्रति लोगों का बहुत ही आदर भाव था। आपकी चौवीसी, वीसी के गीतों में भक्तिरस सराबोर है। तो अन्य पदो में नीति एवं धर्म का प्रेरणाप्रद संदेश है। प्रस्तुत ग्रंथ आपकी रचनाओं का संग्रह है अतः आपकी जीवनी और रचनाओं के सम्बन्ध मे यहां संक्षेप में प्रकाश डाला जाता है।

## गुरु-परम्परा—

१७ वीं शताब्दी के खरतरगच्छ के आचार्य जिनचंद्रसूरि जी बड़े ही शासन-प्रभाविक होने से चौथे दादासाहब के नाम से श्वेताम्बर-जैन समाज में सर्वत्र प्रसिद्ध हैं। उन्होंने सं० १६१३ में बीकानेर में आकर जैन साधुओं के शिथिलाचार के निवारण का महान् प्रयास किया था। सं० १६४८ में सम्राट अकबर ने धर्मो-पदेश सुनने के लिए इन्हें आमन्त्रित किया था और आप खंभात से विहार कर लाहौर पधारे थे। सम्राट अकबर ने इनके प्रति बहुत ही श्रद्धा प्रदर्शित की और जीव-हिंसा निवारण संबंधी फरमान जारी किए। असाढ़ सुदी ८ से चतुर्दशी तक ७ दिन

अकबर के विशाल साम्राज्य में जीवहिंसा निषेध कर दी गई। इसी प्रकार 'खंभात के समुद्र से १ वर्ष तक कोई भी मछली नहीं पकड़ सकता' ऐसा फरमान जारी कर दिया गया। इतना ही नहीं सम्राट अकबर ने जैन धर्म मे जो सबसे अधिक महत्त्वशाली पद 'युगप्रधान' है उससे आपको विभूषित किया इस प्रसंग पर बीकानेर के मंत्री कर्मचंद बच्छावत ने ६ हाथी, ६ गाँव, ५०० घोड़े आदि कुल मिलाकर सवा करोड़ का दान दिया। १६६८ में जब किसी कारण से सम्राट जहांगीर ने समस्त श्वेताम्बर साधुओं को देश से निकालने का हुक्म जारी कर दिया तो सारे जैन-संघ में खलबली मच गई। तब जिनचंद्रसूरि पाटण से आगरे पहुँचे और जहाँगीर से मिलकर उस घातक आदेश को रद्द करवाया।

ऐसे महान् आचार्य के शिष्य वाचक मानसिंह हुए जिन्हें सम्राट अकबर और जहांगीर तथा अनेक राजा महाराजा सम्मान देते थे। सम्राट अकबर के आग्रह से वे काश्मीर-विजय के समय सं०१६४८में उनके साथ गए थे और श्रीपुर काश्मीर तक इनके उपदेश से सम्राट ने अभारि प्रवर्तित की उनके साध्वाचार से प्रभावित होकर सम्राट अकबरने काश्मीर से लौटने पर जिनचंदसूरिजी से इन्हें आचार्य पद दिलवाया था। जिनचाँदसूरि जी के 'युगप्रधान' पद का महोत्सव और मानसिंह जी का आचार्य-पद महोत्सव मंत्रीश्वर कर्मचंद ने एक साथ ही किया था। आचार्य पद के बाद मानसिंह जी का नाम जिनसिंहसूरि रखा गया। अकबर ने जब जिनचंदसूरि जी को बुलाया था तो आप सूरिजीके आदेश से उनसे पहले लाहौर पहुच कर सम्राट से मिले थे। उन दिनों शाहजादा सलेम के मूलनक्षत्र में कन्या हुई थी। इसके दोष निवारण और शान्ति के लिए अष्टोत्तरी शान्ति-स्नात्र महोत्सव वाचक मानसिंहजीने करवाया था। जिनराजसूरिजी उन्ही जिनसिंहसूरिजी के पट्टधर शिष्य थे।

प्रस्तुत ग्रंथ के अंत में जिनराजसूरि की विद्यमानता में ही रचित जयकीर्ति रचित जिनराजसूरिरास प्रकाशित किया गया है उसका संक्षिप्त सार इस प्रकार है--

## जिनराजसूरि जी का जीवन-परिचय--

बीकानेर नगर में बोथरा गोत्रीय धर्मसी साह निवास करते थे। उनकी धर्मपत्नी का नाम धारलदेवी था, दम्पति सुखपूर्वक सांसारिक सुख भोगते हुए रहते थे। सं० १६४७ वैसाख शुक्ला ७ को धारलदेवी के शुभ लक्षणवान, सुन्दर पुत्र जन्मा[१]। पिता द्वारा नाना प्रकार के उत्सव किए जाकर शिशु का नाम 'खेतसी कुमार' रखा गया। बाल्यकाल में ही कुमार समस्त कलाओं का अभ्यास कर निपुण बन गए।

एक बार बीकानेर मे खरतर-गच्छाचार्य श्री जिनसिंहसूरि पधारे। उनका धर्मोपदेश सुन वैराग्य-वासित होकर कुमार ने दीक्षा लेने के लिए माता-पिता से आज्ञा माँगी। बड़ी कठिनता से अनुमति प्राप्त कर बड़े समारोह के साथ सं० १६५७ मार्गशीर्ष कृष्णा १०[२] के दिन प्रव्रज्या ग्रहण की। उनका नाम राजसिंह रखा गया। तत्पश्चात् मांडल के तप कराके छेदोपस्थापनीय चारित्र दे कर उनका नाम राजसमुद्र प्रसिद्ध किया गया।

राजसमुद्र जी की बुद्धि बडी कुशाग्र थी। अल्पकाल में न्याय व्याकरण, तर्क, अलंकार, कोष, ४५ आगम आदि पढ़कर विद्वान् हुए। तेरह वर्ष की अल्पावस्था में चिन्तामणि तर्क-शास्त्र आगरे में पढ़ा।

---

१- रास का प्रथम पत्र न मिलने से यहा तक का उल्लेख श्रीसार-कृत 'जिनराजसूरि रास' से लिया गया है।

२- श्रीसारकृत रास मे सं० १६५६ मि० मा० शु० १३ लिखा है। इस रास की प्रति मे भी पहले यही मिति लिखकर और फिर काट कर उपर्युक्त मिती दी है। अन्य प्रबंध मे सं० १६५७ मि० मा० सु० ५ लिखा है।

युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी ने सं० १६६७[1] में आसाउलि में राजसमुद्रजी को वाचक पद से अलंकृत किया। वाचकजी ने समसद्दी-सिकदार को रंजित करके २४ चोरों को बंधन-मुक्त कराया। घंघाणी ग्राममे प्रतिमाओं की प्राचीन लिपि पढ़ी। मेड़ता मे अम्बिकादेवी सिद्ध हुई। आगे संघपति रतनसी, जूठा और आसकरण के साथ तीनवार शत्रुञ्जय की यात्रा की थी, चौथी वार देवकरण के संघ के साथ सिद्धगिरि स्पर्शना की।

वाचकजी को बड़े बड़े राजा, महाराजा, राणा मुकरबखान नबाब आदि बहुमान देते थे। मुकरबखान ने सम्राट के समक्ष इनकी बड़ी प्रसंशा की।

सम्राट जहांगीर के आमन्त्रण से श्री जिनसिंहसूरिजी बीकानेर से विहार कर मेड़ता पधारे। वहाँ सूरिजी का शरीर अस्वस्थ रहने लगा। अन्त समय मे वाचक जी ने बडी भक्ति की और सूरिजी के श्रेयार्थ गच्छ पहिरावणी करने,ज्ञानभ डारमे ६३६००० ( ग्रंथाग्रन्थ ) पुस्तके लिखाकर रखने और ५०० उपवास करने का वचन दिया। सूरिजी के स्वर्गवासी हो जाने पर सं० १६७४ का० शु०७ शनिवार को राजसमुद्र जी को उनके पट्ट पर स्थापित किया गया। संघपति आसकरण ने उत्सव किया। आचार्य हेमसूरि ने[2] सूरिमंत्र दिया। भट्टारक श्रीजिनराजसूरि नाम रखा गया दूसरे शिष्य श्रीजिनसागरसूरिजी को भी आचार्य पदवी दी।

कवि ने पदस्थापना महोत्सव करने वाले सुप्रसिद्ध चोपड़ा शाह आसकरण का यह विवरण लिखा है-जिनके घर मे परम्परागत बड़ाई थी। शाह माला स ग्राम की भार्या दीपकदे के पुत्र कचरे ने

---

१- प्रबंध में सं० १६६८ का उल्लेख है। इस रास मे मूल गाथा में संवत् न लिखकर किनारे पर लिखा है।

२- प्रबंध में इन्हें पूर्णिमा गच्छीय लिखा है।

बहुत धर्म कार्य किए। आसकरण[1] के पिता अमरसी और माता अमरादेवी और स्त्री का नाम अजायबदे था। अमीपाल, कपूरचंद भाई, ऋषभदास और सूरदास नामक बुद्धिशाली पुत्र थे। संघपति आसकरण चोपड़ा ने शत्रुंजय संघ, जिनालय निर्माण, पदस्थापना महोत्सव आदि धर्मकार्य किए।

भट्टारक श्री जिनराजसूरिको जेसलमेरके राउल कल्याणदासने विनति करके जेसलमेर बुलाए स्वागतार्थ कुमार मनोहरदास को भेजा। भणसाली जीवराजने प्रवेशोत्सव किया। सूरिजीने चातुर्मास किया, उनके प्रभाव से वहाँ सुकाल हुआ। बहुतसे धर्म कार्य हुए पर्यूषण में अमरसिंह के पुत्र जीदासाह ने पोषध वालों को १ सेर खाँड और नकद रुपये की प्रभावना की। राजकुमार मनोहरदास प्रतिदिन वन्दना करने आते, राउलजी बहुमान देते थे।

संघपति थाहरू शाह[2] जो श्रीमलशाह के सुपुत्र थे,ने लोद्रव-

१- मेडता मे इन्होंने शांतिनाथ जिनालय बनवाकर अनेक बिम्बों की प्रतिष्ठा जिनराजसूरि से करवाई थी। प्रतिष्ठा लेख नाहर जी के जैन लेख संग्रह मे लेखाक ७७१,७८८,७८७में प्रकाशित है जिनमें इनके सम्बन्धमे लिखा गया है कि गणधर चोपड़ा गोत्रीय अमरसी भार्या अमरादे पुत्र रत्न संप्राप्त श्री अर्बुदाचल विमलाचल संघपति तिलक कारित युगप्रधान श्री जिनसिंहसूरि पट्टनन्दिमहोत्सव विविध धर्म कर्त्तव्य विधायक सं०आसकरणेन। ×× 'स्वयं कारित मम्माणीमय विहार-शृंगारक श्री शांतिनाथ बिम्बकारित(सं०१६७७ जेठ बदि ५ गुरुवारका प्रतिष्ठा-लेख)

२- इनके सम्बंध में स्वयं जिनराजसूरि जी ने एक गीत बनाया है जो इसी ग्रंथ के पृष्ठ ६७ में प्रकाशित है। इनकी वंश परम्परा और धार्मिक कार्यों के संबंध में महोपाध्याय समयसुंदर के शिष्य वादी हर्षनंदन ने एक प्रशस्ति बनाई है। सं० १६७५ मिगसर सुदि १२ गुरुवार को इन्होंने लोद्रवे तीर्थ का उद्धार करवाया और मंति की प्रतिष्ठा जिनराजसूरि से करवाई। उनके लेख नाहरजी के जैन लेख संग्रह नं० २५४४,

पुर के मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया और सं० १६७५ मार्गशीर्ष शुक्ला १२ शुभ मुहूर्त में सूरिमहाराज से प्रतिष्ठा करवाई। कवि ने थाहरू शाह के धर्मकार्यों का वर्णन इस प्रकार किया है—लोद्रवपुर का जीर्ण प्रासादोद्धार, ग्रामदो मे खरतर गच्छीय ज्ञानभंडार कराया, दानशाला खोली, चारों अट्ठाहियों में ४४०० जिन प्रतिमाओं की पूजा, सातों मन्दिरों मे ध्वजा चढाई, गीतार्थों के पास सिद्धात श्रवण, त्रिकाल देवपूजा आदि धर्म कार्य करता था। लोद्रवपुर प्रतिष्ठा-समय देशान्तरो का संघ बुलाया। तीन रुपये और अशरफियो की लाहण की, राउल जी को विपुल द्रव्य भेट किया, जाचकों को मनोवाँछित दिया, हरराज और मेघराज सहित चिरजीवी रहे। उस समय जीदाशाह ने २००) रुपये देकर इन्द्रमाल ग्रहण की। जोवराज भी पुत्र सहित शोभायमान था।

इसके पश्चात् अहमदाबाद के सुप्रसिद्ध संघपति रूपजी को चिट्ठी नफरइ (डाकिया) ने लाकर दी। शत्रुञ्जय प्रतिष्ठा के लिए सूरिजी को बुलाया था। तब करमसी शाह और माल्हु अरजुन ने उत्साह पूर्वक संघ निकाला। गांव गाँव मे लाहण करता हुआ संघ श्री जिनराजसूरिजी के साथ शत्रुञ्जय पहुचा। युगादि जिनेश्वर के दर्शन कर संघ ने अपना मनुष्य जन्म सफल किया।

अब कवि रूपजी शाह के विषय मे कहता है कि अहमदाबाद के खरतर गच्छीय श्रावक सोमजो और शिवा वस्तुपाल तेजपाल की भाँति धर्मात्मा हुए, जिन्होंने सं० १६४४ मे शत्रुञ्जय का संघ निकाला। अहमदाबाद में महामहोत्सवपूर्वक जिनालय की भी प्रतिष्ठा करवाई। खंभात, पाटण के सघ को आमंत्रित कर

---

२५६९, २५६८, २५७०, २५७२, मे प्रकाशित है। सं० १६८२ और १६९३ मे भी थाहरूशाह ने गणधर पादुका व मूर्तियो की प्रतिष्ठा जिनराजसूरि जी से करवाई थी। इनके स्थापित ज्ञानभंडार जेसलमेर मे हैं।

पहरावणी की। राणकपुर, गिरनार, सेरिसइ गौड़ीपुर, आबू आदि तीर्थों की संघ सहित यात्रा की, साधर्मी वात्सल्य किया। खरतर गच्छ संघ में लाहण की प्रत्येक घर में अर्द्ध रुपया दिया। स्वधर्मियों को बहुत बार सोने के वेढ पहनाए। शत्रुञ्जय पर चैत्य बनवाया। सोमजी शाह के रतनजी और रूपजी दो पुत्र थे। रतनजी के पुत्र सुन्दरदास और शिखरा सुप्रसिद्ध थे। रूपजी शाह ने शत्रुञ्जय का आठवाँ उद्धार कराके खरतर गच्छ की बड़ी ख्याति फैलाई। सं० १६७६[1] वैशाख शुक्ला १३ को चौमुखजी की प्रतिष्ठा श्रीजिनराजसूरि जी के हाथ से करवाई[2] मारवाड़, गुजरात का संघ आया। याचक, भोजक, भाट, चारणों को बहुतसा दान दिया।

श्रीजिनराजसूरिजी ने संघ के साथ विहार कर नवानगर में चातुर्मास किया। भाणवड में शाह चांपसी (बाफणा) कारित बिम्बों की प्रतिष्ठा की। गुरु श्री के अतिशय से बिम्ब से अमृत झरने लगा। जिस से अमीझरा पार्श्व प्रसिद्ध हुए। मेड़ता के संघपति आसकरण ने आमंत्रण कर सं० १६७७[3] में श्री शांतिनाथजी के मंदिर की प्रतिष्ठा कराई। बीकानेर चातुर्मास कर सिंधु पधारे। मुलतान, मेरठ, फतेपुर, देरा के संघ ने सामैया कर प्रवेशोत्सव किया। मुलतानी संघ ने बहुतसा द्रव्य व्यय किया। गणधर शालिभद्र, पारिख तेजपाल ने संघ निकाल कर सूरिजी को देरावर श्री जिनकुशलसूरिजी की यात्रा करवाई।

---

१- शिलालेखो मे गुजराती पद्धति से सं० १६७५ लिखा है।

२- शिलालेखों मे जेठवदी ५ लिखा है।

३- इसके प्रतिष्ठा-लेख जिनविजय जी सम्पादित 'प्राचीन जैन-लेख संग्रह' में प्रकाशित है।

सूरिजी ने पंचपीरों को साधन किया, बीकानेर[1] पधारे। करमसी शाह के आग्रह से केरिणी चौमासा करके जेसलमेर पधारे।

सा० अर्जुनमाल्हू ने प्रवेशोत्सव किया। नंदी स्थापन कर कर्मसी शाह ने चतुर्थ व्रत अंगीकार किया। जेसलमेर चातुर्मास कर पाली पधारे। संघपति जूठा कारित चैत्य की प्रतिष्ठा की। नगरशेठ नेता ने गुरु श्री को बंदन किया। चातुर्मास पाटण किया। वहां से अहमदाबादी संघ के आग्रह से वहाँ चातुर्मास किया। अनेको को पाठक, वाचकपद एवं दीक्षा प्रदान की।

इससे पूर्व अम्बिकादेवी ने प्रत्यक्ष होकर 'आपको भट्टारक पद पाँचवें वर्ष प्राप्त होगा।' ऐसा भविष्यवाणी की थी वह एवं अन्य पचास बोल फलीभूत हुए। अम्बिका हाजिर रहकर आपको सानिध्य करती थी। जयतिहुअण के स्मरण से धरणेन्द्र ने 'आज से चौथे वर्ष फागुण सुदि ७ को आप भट्टारक पद पाओगे' ऐसा कहा था। श्री जिनसिंहसूरिजी के स्वर्गवास की सूचना तीन दिन पूर्व आपको ज्ञात हो गई थी। बाल्यावस्था मे भी अपने कथनानुसार गच्छ पहरावणी, ६३६००० ग्रंथ भंडार मे रखना, ५०० उपवास करना आदि कार्य सम्पन्न किए।

---

१- बीकानेर मे आपकी प्रतिष्ठित अनेक मूर्तिया सं० १६७५ से १६९६ तक की प्रतिष्ठित की हुई उपलब्ध है, जिनके लेख हमारे 'बीकानेर-जैन लेख संग्रह' में प्रकाशित है। बीकानेरके सुप्रसिद्ध आदीश्वरजी के मंदिरमें सं०१६८६के चैत्र बदि ४ को आपकी प्रतिष्ठित जिनसिंहसूरि चरणपादुका और जिनचंद्रसूरिजी की मूर्ति है। सं० १६८७ ज्येष्ठ सुदि १० को प्रतिष्ठित भरत बाहुबलि प्रतिमा और सं० १६९४ फागुण बदि ७ को प्रतिष्ठित पुंडरीक स्वामी, एवं सुविधिनाथ की मूर्तिया हैं। सं०१६८६ की प्रतिष्ठित मरुदेवी मूर्ति आदीश्वरपादुका आदि हैं।

सं० १६८१ राखीपूनम के जेसलमेर में युगप्रधान श्री जिनचंद्रसूरि जी के शिष्य पं० सकलचंद गणि के शिष्य उपाध्याय समय सुन्दर[1] के शिष्य वादीराज हर्षनन्दन के शिष्य पं० जयकीर्ति ने प्रस्तुत काव्य रचकर संपूर्ण किया।

जिनराजसूरि जी के जीवनचरित्र के संबंध में श्रीसार नामक एक अन्य कवि ने भी रास बनाया जो हमारे ऐतिहासिक जैन संग्रह मे प्रकाशित हुआ है। वह रास स० १६८१ असाढ़ बदि १३ सेत्रावा में रचा गया था। अर्थात् उपरोक्त जयकीर्तिके रास के आसपास के दिनो मे ही रचा गया है। अतः उपरोक्त दोनों रास जिनराजसूरि जी की विद्यमानता में ही रचे जाने से पूर्ण रूप से प्रामाणिक है। इसके बाद करीब १८ वर्ष तक और भी आपने शासन-प्रभावना की, जिसका पूरा विवरण तो नही मिलता पर एक ऐतिहासिक गीत से एक महत्वपूर्ण उल्लेख मिलता है कि सं० १६८६ के मिगसर बदि ४ रविवार को आगरे मे आप सम्राट शाहजहाँ से मिले थे। और वहां ब्राह्मणों को वाद-विवाद में पराम्त किया था तथा दर्शनो लोगों के विहार का जहाँ कहीं प्रतिषेध था, उसे खुला करवा कर शासनोन्नति की थी। शाही दरबार में मुकरबखानने आपके साध्वाचार की बड़ी प्रशंसा की थी।

जसु देखि साधु पणौ भलौ हरखि दियौ बहुमान।
साबासि तुम्ह करणी भली कहइ श्री मुकरब खान॥

शाहजहां से मिलने के संबंध में दास कवि ने लिखा है—

"साहिजहाँ पातिसाह प्रबल प्रताप जाको,
अति ही करूर नूर कौन सर दाखी है।

---

१- समयसुंदर जी और हर्षनंदन जी का परिचय देखें 'युगप्रधान जिनचंद्रसूरि' पृ० १६७ से १७१ तक। जयकीर्ति कृत पृथ्वीराज वेलि बालावबोध उपलब्ध है।

आसीचउ गछ' सब थहराये जाके भय,
ऐसो जोर चकतौ हुवौ न कोउ भाखी हो।
श्रीय 'जिनसंघ' पाट मिल्येउ साहि सनमुख,
'धरमसी' नंदन सकल जग साखी है।
कहै 'कविदास' षट्दरशन कुं उबारे,
शासन की टेक 'जिनराजसूरि' राखी है।
'आगरै' तखत आये सबही के मन भाये,
विविध वधाये संघ सकल उछाह कुं।
राजा 'गजसंघ' 'सूरसंघ' 'असग्प खान',
'आलम' 'दीवान' सदा सुगुरु सराह कुं॥
कहै 'कविदास' जिणसिंघ पाट सूर तेज,
अगम सुगम कीने शासन सुठाह कुं
'मिगसर बहु (ल) चोथ' 'रविवाव' शुभ दिन,
मिले 'जिनराज' 'शाहिजहाँ' पतिशाह कुं

इस मिलन के सम्बन्ध मे दानसागर भंडार को एक भाषा पट्टावली में लिखा है 'सं० १६८६ श्री आगरा माहे पहली आस-बखान नइं मिल्या। तिहाँ ८ ब्राह्मणां मूं वाद करि,आठइ ब्राह्मण हारया। आसिबखान निपट खुसी थया। तिवार पछी कह्या मइ पातसाहसुं तुमकूं मिलावूंगा। तिवारं मिगसर वदि ४ आदित्यवार पातिसाह साहजहाँ नइ मिल्या। त्रिहजारी बी कुंवराश्री सामा-मूकि तेड़ाया, घणउ आदर दिउ अनइ केतरेक देसे यति रह न सकता ते पिण तिवार पछि रहता थया। घणा अवदात छइ।'

अन्य एक महत्वपूर्ण घटना आपके आचार्य पद प्राप्ति के पहले की पट्टावलियों एवं शिलालेखोंमें उल्लिखित है कि मारवाड के घघाणी गाँव में सं० १६६२ में बहुत सी प्राचीन जैन प्रतिमाएँ प्रगट हुई थी। मुसलमानी साम्राज्य के भय से उन प्राचीन प्रति-माओंको कभी भूमि-गृहमें बंद करके रख दिया गया था। जेठ सुदि

११ को वे ६५ प्रतिमाएं प्रगट हुई जिनका विविरण महोपाध्याय समयसुंदर ने अपने घंघाणी तीर्थ स्तवन में दिया है जो कि हमारे समय सुंदर कृति-कुसुमांजलि में प्रकाशित हो चुका है। वे प्रतिमाएँ मौर्य काल तक की पुरानी थीं इसलिए उनकी लिपि उस समय पढ़ी जाना बहुत ही कठिन था। पट्टावलियों एवं शिलालेखों मे लिखा है कि धरणेन्द्र या अम्बिकादेवी के प्रसाद से आप उस प्राचीन लिपि को पढने में समर्थ हुए।

'बणारस ( वाचक ) पद थकां धरणेन्द्र प्रभावइ श्री घंघाणी नी लिपि बाँची अनइ वर दीधउ जेहनइ माथइ हाथि द्यइ ते पिण वाचइ। वलि लघुवइ थकां तपाँरउ उपाध्याय सोमविजय नइं हराव्यउ।'

'अम्बिका प्रदत्त वरधारका स्तद्बल प्रगटित घंघाणीपुर-स्थित चिरंतन-प्रतिमा प्रशस्ति वर्णान्तरा।

आपके शासन में ६ उपाध्याय और ४१ वाचक पदधारी बिद्वान हुए। एक साध्वी का प्रवर्तनी का पद दिया गया। आपके शिष्य और प्रशिष्यों की संख्या भाषा पट्टावलीमें ४१ बतलाई गई है। आपने अनेक शिष्यों को आगमादि ग्रंथ सिखाए थे। इस तरह धर्म सेवा और साहित्य सेवा करते हुए पाटण मे सं० १७०० असाढ सुदि ६ गुजराती संवत् के अनुसार सं० १६९९ में आप स्वर्गवासी हुए।

आपके साथ ही जिनसागरसूरिजी को आचार्य पद दिया गया। वे १२ वर्ष तक तो आपके साथ रहे, फिर अलग हो गए। उनसे आचार्य शाखा प्रकटित हुई। जिनराजसूरिजी के समय राजस्थान और गुजरातमे खरतर गच्छ का बहुत प्रभाव था और अनेक विद्वान् इनकी आज्ञा में गाँवों और नगरो में विचरते हुए धर्म-प्रचार और साहित्य-सृजन कर रहे थे। आपके आज्ञानुवर्ती श्रावकों में भी कई बहुत प्रभावशाली और समृद्ध थे, जिन्होंने

बडे २ तीर्थयात्रा के संघ निकाले। बडे भव्य और विशाल जैन मंदिरों का निर्माण और जीर्णोद्धार करवाया। हजारो प्रतिमाओं की जिनराजसूरि जी के हाथ से प्रतिष्ठा करवाई। जेसलमेर के थाहरूशाह ने लोद्रवेके चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालयका जीर्णोद्धार करवाया अहमदाबाद के संघपति सोमजी के पुत्र रूपजी ने शत्रुञ्जय पर चतुर्मुख,रिषभ आदि ५०१ प्रतिमाएं और जिनालय की प्रतिष्ठा करवाई। भाणवड मे चॉपसी साहने अमीझरा पार्श्वनाथ आदि ८० बिम्बों की प्रतिष्ठा करवाई। मेडते के चापडे आसकरण ने शातिनाथ मंदिर की प्रतिष्ठा करवाई। इस तरह जिनराजसूरि बडे ही प्रभावशाली, विद्वान आचार्य हुए है। जिनकी फुटकर रचनाओ और दो रासो को इस ग्रंथ में प्रकाशन किया गया। आपकी रचनाओं का संक्षिप्त विवरण आगे दिया जा रहा है।

## जिनराज सूरि की साहित्य-सेवा—

आचार्य जिनराजसूरि जी अपने समय के विशिष्ट विद्वान और सुकवि थे। रासकार जयकीर्ति और श्रीसार दोनों ने उनकी कुशाग्र बुद्धि अध्ययन के सम्बंध मे अच्छा प्रकाश डाला है। उनके बाल्यकाल के अध्ययन के संबध में श्रीसार ने लिखा है।

पुत्र भणइवा मांडियइ, पण्डित गुरुनइ पाय।
विद्या आवी तेहनइ, सरसति मात पसाय ॥१॥
भली परइ आवी भले, रिद्धो अनइ समान।
"चाणाइक" आवइ भला, नीति शास्त्र असमान ॥२॥
तेह कला कोइ नही, शास्त्र नहीं वलि तेह।
विद्या ते दीसइ नही, कुमर नइ नावइ जेह ॥३॥
कला 'बहुत्तरि' पुरषनी, जाणइ राग 'छतीस'।
कला देखि सहुको कहइ, जीवो कीड़ि बरीस ॥४॥

'षड भाषा' भाखइ भली, 'चवदइ विद्या' लाध।
लिखइ 'अठाहर लिपी' सदा, सिगले गुणे अगाध ॥५॥

जयकीर्ति ने तो प्रारम्भिक अध्ययन के मुहूर्त और उत्सव के सम्बंध में भी सुन्दर प्रकाश डाला है। उनका बनाया हुआ रास इसी ग्रंथ के परिशिष्ट में दिया गया है इसलिए उसका उद्धरण नही दिया जा रहा है श्रीसार रचित 'जिनराजसूरि रास भी हमारे ऐतिहासिक जैन काव्य-संग्रह में छप चुका है। जैन-आगमों और व्याकरण कोश, छन्द, अलंकार, काव्य-शास्त्र का अध्ययन आपने दीक्षा के अनन्तर गुरुश्री के पास किया था। न्यायशास्त्र के भी आप बड़े विद्वान् थे। आगरे में भट्टाचार्य के पास 'चिन्तामणि' नामक नव्य-न्याय के महान् ग्रंथ का आपने अध्ययन किया था। जयकीर्ति ने लिखा है–

काव्य, तर्क, ज्योतिष गणित रे व्याकरण, छन्द, अलङ्कार।
नाटक नाममाला अधिक रे, जाणइ शास्त्र-विचार ॥११॥भ०॥
तेरे वर्षे आगरइ रे, भण्यउ चितामणि तर्क।

सगली विद्या अभ्यसी रे, भट्टाचारज सम्पर्क ॥१२॥भ०॥

अर्थात् आपका विशेष अध्ययन आगरे में किसी भट्टाचार्य विद्वान से करवाया गया था। सं० १६६७ में आपकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर अकबर-प्रतिबोधक युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी ने आसावली में इन्हें वाचक पद से अलंकृत किया था। सं०१६५७ मे आपकी दीक्षा हुई थी, अतः १० वर्ष तक आपने अनेक विषयों और शास्त्रो का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उसी समय से आप कविता भी करने लगे थे। आपकी उपलब्ध रचनाओं में संवतोल्लेख वाली सर्व प्रथम रचना गुणस्थान विचार गर्भित पार्श्वनाथ स्तवन सं० १६६५ का है। जो जैन शास्त्र के कर्म सिद्धान्त और आत्मोत्कर्ष की पद्धति के सम्बन्ध में है इससे आपका शास्त्रीय ज्ञान उस समय तक कितना बढ़ चुका था, विदित होता है।

संवतोल्लेख वाली दूसरी रचना कर्मबत्तीसी सं० १६६ में रची गई रचना-समय का निर्देश न होने पर भी आपके दीक्षा नाम राजसमुद्र के नाम-निर्देश वाली अनेकों रचनाएं प्रस्तुत ग्रंथ मे है इससे आप आचार्य पद से पूर्व भी कवि के रूप में काफी प्रसिद्ध पा चुके थे, सिद्ध है। राजस्थानी और हिंदी की फुटकर कविताओं के अतिरिक्त आपने संस्कृत मे भी उस समय कई टीकादि ग्रंथ बनाए थे। कवि श्री सार ने आपके रचित 'ठाणांग' नामक तृतीय अंगसूत्र की वृत्ति रचने का उल्लेख किया है। पर वह आज प्राप्त नही है। उल्लेख इस प्रकार है–

"श्री ठाणांग नइ वृत्ति करीनइ, विसमउ अर्थ बतायो।"

संभव है यह वृत्ति आचार्य पद से पहले ही की हो। सं० १६८१ मे श्रीसार उसका उल्लेख करते है। उससे पहले तो यह प्रसिद्ध हो चुकी थी। पंचमांग भगवती सूत्र के ९ वें शतक के ३२ वे उद्देशक का आपने संस्कृत मे विवरण लिखा था जिसकी ९ पत्रों की एक हस्तलिखित प्रति हमारे संग्रह में है। पर यह प्रति लिखते हुए छोड दी गई है इसलिए अपूर्ण रह गई है। यह विवरण आपने वाचनाचार्य पद प्राप्ति के बाद और आचार्य-पद प्राप्तिसे पूर्व लिखा है। उक्त विवरण का प्रारंभिक अंश नीचे दिया जाता है।

"श्री पार्श्वनाथ प्रणम्य नवमशतकस्य द्वात्रिंशत्तमोद्देशकस्य टीकानुसारेण वाचनाचार्य श्री राजसमुद्र गणिभिःक्रियते विवरण" इससे आपने और भी कई आगमादि ग्रंथों के विवरण लिखे थे, मालूम होता है, पर उनका प्रचार अधिक नहीं हो पाया।

बीकानेर के खरतर गच्छीय वृहद्ज्ञानभंडार के अंतर्गत महिमाभक्ति भंडार मे तर्क शास्त्र संबंधी किसी ग्रंथका विवरण राजसमुद्रजी का लिखित प्राप्त है जिसका मध्यम अंश सं०१६६३ फागुण बदि १२ को लिखा हुआ है। इससे उस समय तक आपका न्यायशास्त्र का अच्छा अभ्यास हो चुका था और संभव

है उसी सिलसिले में आपने यह महत्वपूर्ण ग्रंथ अपने अध्ययनार्थ लिखा हो। १३००० श्लोकों का यह महत्वपूर्ण तर्क शास्त्रीय सटीक ग्रंथ की प्रति अपूर्ण रूप मे मिली है। इसलिए मूल ग्रंथ का क्या नाम है और टीका कब एवं किसने बनाई, निश्चय नहीं किया जा सका। पर, इन सब बातों से यह निश्चित है कि जिनराजसूरि जी बहुत बड़े विद्वान हुए हैं।

छोटी २ राजस्थानी रचनाओं के अतिरिक्त आपने राजस्थानी काव्यों का निर्माण भी आचार्य पद प्राप्ति से पहले ही शुरू कर दिया था। जन रामायण की कथा का आपने राजस्थानी काव्य के रूप में इसी समय निर्माण किया था। उसकी एक अपूर्ण प्रति कोटा के खरतरगच्छ भंडार में प्राप्त हुई है। २८ पत्रों की यह प्रति उसी समय की लिखी हुई है, पर अंत में प्रशस्तिकी ढाल नहो है, इसलिए इसकी रचना कब एवं कहा की गई, जानने का साधन नही है।

आचार्य पद प्राप्ति के अनन्तर आपने चौबीसी, बीसी, धन्ना शालिभद्ररास, गजसुकुमाल रास आदि राजस्थानी काव्यों की रचना की, जो प्रस्तुत ग्रन्थ मे प्रकाशित हो रहे हैं। इनके अतिरिक्त कयवन्ना रास, पाश्वंनाथ गुणवेलि, प्रश्नोत्तर रत्नमालिका बालावबोध, नवतत्वटब्बार्थ, आदि आपकी और भी रचनाएं हैं। जिन्हें हम प्रयत्न करने पर भी प्रस्तुत ग्रंथ के संपादन के समय प्राप्त नही कर सके। प्रश्नोत्तर रत्नमालिका, बालावबोध और नवतत्वटब्बार्थ संस्कृत और प्राकृत रचनाओं के राजस्थानी गद्यमें लिखे गए संक्षिप्त विवरण हैं। यह विवरण किसी श्रावक या श्राविका को बोध कराने के लिए रचा गया है क्योंकि मूल ग्रंथ संस्कृत-प्राकृत में होने से उनके लिए सुबोध नहीं थे।

आचार्यश्री की सबसे बड़ी और महत्त्वपूर्ण रचना नैषधमहाकाव्य की ३६००० श्लोक परिमित वृहट्टीका है इसकी दो अपूर्ण

प्रतियाँ हरिसागरसूरि ज्ञानभंडार. लोहावट और भंडारकर ओरि-यन्टल-इंस्टीट्यूट, पूना मे है और एक पूर्ण प्रति जयपुर के एक जैनेतर विद्वान के संग्रह मे महोपाध्याय विनयसागर जी ने देखी थी। पर इन प्रतियों में भी अंतिम प्रशस्ति नहीं है। इसलिए इस टीका की एक रचना किस संवत् में कहां हुई,ज्ञात हो नहीं सका। इस बृहद्वृत्ति से उनका काव्यशास्त्र का निष्णात होना सिद्ध होता हैं। इस तरह जिनराजसूरि एक बहुत बड़े विद्वान और सुकवि सिद्ध होते है, जिनकी प्राप्त राजस्थानी कविताओं का संग्रह इस ग्रंथ मे प्रकाशित किया जा रहा है।

जिनराजसूरि का शालिभद्र रास तो जैन समाज में इतना अधिक प्रसिद्ध हुआ कि उसकी सैकड़ों हस्तलिखित प्रतियाँ गाँव २ और नगर २ में पाई जाती हैं। केवल हमारे संग्रह में ही उसकी २५ प्रतियां हैं। इस रासकी लोकप्रियता उसके रचे जानेके समयसेही पाई जाती है। सं० १६७८ के आश्विन बदि ६ को २६ ढालों वाला यह रास रचा गया था। सं० १६८८ को लिखी हुई प्रति के अनुसार इसकीरचना आचार्य श्री ने अपने भ्राता गेहा का अभ्यर्थना से की थी। प्रशस्ति इस प्रकार है—

बोहित्थवंशीयावतंसीयमान तिस्समात महिमा निधान निर्वि-गान, यशोवितान सावधान प्रधान विद्वज्जनदर्शिताष्टावधानाधिगत चतुर्दश विद्यास्थान श्री शत्रुञ्जय तीर्थाष्टमोद्धार प्रतिष्ठा विधान लब्धमानवमन वामनधीमान मान नान जगम युगप्रधान श्रीजिन-सिंहसूरिभि वि रचर्या चक्रे। साह धर्मसी धारलदेवी पुत्ररत्न शाह गेहाख्या भ्रातुरभ्यर्थनयानन्दनादाचंद्रार्कं श्रोतध्येत्रि सुखप्रदा सं० १६८८ वर्षे पंडित ज्ञानमूर्ति लिखित फागुण सुदि १४ दिने। शुभं भवतु श्री जालोर मध्ये।

[पत्र २४। डाह्याभाई वकील सूरत के संग्रह में]

प्रस्तुत रास की प्रशस्ति में 'श्री जिनसिंहसूरि शीश मति

सारे' शब्द आता है उससे अनेक लोगों को यह भ्रम हुआ और होता है कि इस रास के रचयिता का नाम मतिसार है। स्वर्गीय मोहनलाल देसाई ने अपने जैन गुर्जर कविओं-प्रथम भाग के पृष्ठ ५०१ में भी इसका रचयिता मतिसार[1] ही बतलाया था, यद्यपि उन्हीं के उद्धृत प्रशस्ति मे 'जिनराजसूरिभिर्चयाँचके' स्पष्ट उल्लेख था। हमने इस भूल की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया तो उन्होंने जैन गुर्जर कविओं के तीसरे भागमे उसका संशोधन करके रचयिता का नाम मतिसार की जगह जिनराज सूरि रख दिया। पर आज भी कई ज्ञानभंडारो की सूचियों में भ्रमवश मतिसार नाम दिया जाता है।

थोड़े समयमें ही यह रास इतना लोकप्रिय हुआ कि सं०१६८१ में रचना के केवल २॥ वर्ष बाद ही इसकी एक सचित्र प्रति तैयार की गई जिसे बादशाही चित्रकार शालिवाहन ने चित्रित की थी। वह प्रति अभी कलकत्ता के श्री बहादुरसिंह जी सिंघी के संग्रह में है। उसके चित्र बहुत ही सुन्दर है और बहुत से पेज तो पूरे लंबे पेज में चित्रित है जिसमें कथा का भाव चित्रकार ने बडी खूबी से अंकित किया है। प्रस्तुत प्रति के कुछ पत्रों एवं चित्रों के ब्लाक इस ग्रंथ में प्रकाशित किए जा रहे है इसके लिए हम श्री नरेन्द्रसिंह जी सिंघी के आभारी हैं, प्रति की लेखन प्रशस्ति इस प्रकार है—

'इति श्री सालिभद्र महामुनि चरित्रं समाप्तं ॥ संवच्चान्द्र गजरसरसामिते द्वितीय चैत्र सुदि पंचमी तिथौ शुक्रवारे बलूलबल सकल भूपाल भाल विशाल कोटीरहीर श्री मज्जहांगीर पातिसाहिपति सलेमसाहि वर्तमान राज्ये श्रीमज्जिनशासन वन प्रमोद

---

१- इसी कारण जिनराजसूरि जी के दूसरे गजसुकुमाल रास को उन्होंने पृष्ट ५५३में उनके नाम से अलग रूप से उल्लिखित किया था।

आनंद काव्य महोदधि मौक्तिक १ में सन् १९१३ में शालिभद्ररास प्रकाशित किया गया था। उसका रचयिता श्रीजिनसिंहसूरि शिष्य मतिसागर बतलाया गया था जो मतिसार शब्द पर ही आधारित था।

विधान पुष्करावर्त घना घन समान युगप्रधान श्री श्री श्री ४ श्री जिनराजसूरि विजयि राज्ये नागडगोत्र शृ गारहार सा० जैत्रमलत त्तनय सविनय धर्म-धुरा धारण धौ य श्री मज्जिनोक्त सम्यक्त्व मूल स्थूल द्वादश व्रतधारक श्री प'चपरमेष्ठि महाम'त्र स्मारक श्री-मत् साहिसभा शृ गारक सश्रीक स'घमुख्य सा० नागडगोत्रीय सा० मारमल्लेन । लघुबांधव नागडगोत्रीय सा० राजपाल । विचक्षण-धुरीण सा० उदयकरण जंवातृक महासिहादि सार परिवारयुतेन लेखितं । तच्च वाच्यमानं चिरं नंदतात् । सदा । लिखितं चैतत् प'० लावण्यकीर्ति गणिना चित्रितं चित्रकारेण सालिवाहनेन ॥ श्रेयः सदा ।'

हमारे स'ग्रह में भी मथेन जयकिसन के चित्रित स'० १८२५ की प्रति है जिसमें ४७ चित्र हैं । लेखन प्रशस्ति इस प्रकार है —

स'० १८२५ वर्षे मिति प्रथम श्रावण सुदि २ शुक्रवारे पुख निखत्र लिखव्यो मथेन श्री श्री रामकृष्ण जी तत्पुत्र मथेन जय किसय । तत्र स'जुगते । श्री बीकानेर मध्ये । शुभंभवतु कल्याण मस्तु ।

बीकानेर-वृहद् ज्ञानभ'डार, श्री पूज्यजी स'ग्रह, बोरान् सेरी उपासरा आदि अन्य कई ज्ञानभ'डारों मे भी इस रास की सचित्र प्रतियां मिलती है जिनमें से, बोरान्सेरी उपाश्रय की प्रति जो अभी महोपाध्याय विनयसागर जी स'ग्रह कोटा में है शालिभद्ररास की सचित्र, सुन्दर प्रति उल्लेखनीय है । सैकड़ों प्रतियों की उप-लब्धि और १०-१२ सचित्र प्रतियों की प्राप्ति इस रास की प्रसिद्ध और लोकप्रियता की परिचायक हैं ।

शालिभद्र महान् भोगी और महान् त्यागी थे । 'अन्तगड़ दशा' नामक आठवें अ'ग-सूत्र में शालिभद्र चरित्र वर्णित है । उसके बाद स'स्कृत और राजस्थानी, गुजराती में अनेक काव्य इस कथा प्रस'ग को लेकर रचे गए है । स'०१२८५ में खरतरगच्छीय पूर्ण-

भद्र गणि ने जेसलमेर में 'धन्ना शालिभद्र चरित्र' नामक महाकाव्य बनाया जो प्रकाशित भी हो चुका है। इसीप्रकार धर्मकुमार रचित शालिभद्र चरित्र काव्य भी टिप्पणी सहित प्रकाशित हो चुका है। बहुत से रास भी उपलब्ध है जिनमें से जिनविजयकृत धन्नाशालिभद्र रास प्रकाशितहो चुका है। अमोलकऋषि और शंकर प्रसाद दीक्षित रचित धन्नाशाभिद्र चरित्र और शालिभद्र चरित्र भी प्रकाशित हो चुके हैं। अप्रकाशित रास भी अनेक है पर जितनी अधिक प्रसिद्धि जिनराजसूरिजी के प्रस्तुत रास को मिली वैसी अन्य किसी भी रचना को नहीं मिल सकी।

उनके रचित दूसरा राजस्थानी काव्य गजसुकुमाल महामुनि चौपई भी बहुत ही सुन्दर है। इसमें श्री कृष्ण के सगे लघु भ्राता गजसुकुमालका रोमांचकारी पावन चरित्र वर्णित है। गजसुकुमाल का चारित्र अन्तगड दशासूत्रमें पाया जाता है और इस कथा-प्रसग को लेकर और भी कई कवियोंने रास ढाल एवं सज्झाएं बनाई हैं।

प्रस्तुत ग्रंथ मे सबसे पहले चतुर्विंशतिका या चौबीसी नामक रचना छपी है जिसमे २४ तीर्थङ्करों के २४ भक्ति गीत और २५ वाँ कलश है। तदनंतर 'विहरमानविंशति जिन गीतम्' जिसे 'वीसी' कहते हैं, प्रकाशित की गई है। जैन मान्यता के अनुसार इस अवसर्पिणी काल के प्रस्तुत जम्बूद्वीप और भरतक्षेत्र के चौबीस तीर्थङ्कर मोक्ष पधार चुके हैं, पर महाविदेह क्षेत्र में बीस तीर्थङ्कर आज भी विचर रहे हैं। उन्ही बीस तीर्थङ्करों के २० भक्ति गीत और २१ वाँ कलश प्रस्तुत वीसी नामक रचना में है। दोनों मे रचनाकाल का उल्लेख नही किया गया पर इनकी रचना आचार्य पद-प्राप्ति के बाद हुई हैं। और इनकी हस्तलिखित प्रतियाँ स० १६८३ की लिखी हुई हमारे संग्रह में है इसलिए सं० १६७४ और १६८३के बीचमेंही चौबीसी और बीसी का रचा जाना निश्चित है इन रचनाओं का भी जैन समाज में काफी प्रचार रहा अत. इनकी अनेकों हस्तलिखित प्रतियां हमारे संग्रह में एवं अन्यत्र भी प्राप्त है।

प्रस्तुत ग्रंथ मे प्रकाशित अन्य फुटकर रचनाएं अनेक हस्त

लिखित प्रतियों से वर्षों के परिश्रमसे संगृहीत एवं वर्गीकृत करके यहाँ प्रकाशित की गई है। फुटकर रचनाओं की दो संग्रह प्रतियाँ भी हमें बहुत वर्ष पहले प्राप्त हुई थी जिसमे से एक ३४ पत्रों की प्रति यति जयचन्दजी के भंडार मे है और दूसरी श्री पूज्यजी के संग्रह में। हमारे संग्रह के कई गुटकों एवं फुटकर पत्रों में भी आपकी रचनाए मिली है जिनमेसे कुछ पत्रतो आपके उस समयके लिखे हुए हैं, जिन समय आप आचार्य पद पर आरूढ नही हुए थे और राजसमुद्र के नाम से प्रसिद्ध थे। ऐसे फुटकर पत्रो मे से एक दो पत्रो के ब्लॉक इस ग्रंथ मे दिए जा रहे है जिनसे आपके अक्षरों का भी हमे दर्शन हो जाता है।

आपके कुछ चित्र भी प्राप्त हुए हैं जिनमें से यति सूरजमलजी के संग्रह की शालिभद्र चौपाई की सचित्र प्रति के एक चित्र का ब्लाक हमने अपने 'ऐतिहासिक जैन-काव्य संग्रह'-के पृष्ठ १५० में प्रकाशित किया था। सिघोजीके संग्रह की विशिष्ट सचित्र प्रति में भी आपका चित्र पाया जाता है। यह प्रति आपकी विद्यमानतामे ही चित्रित की गई थी और अवश्य ही इसके चित्रकार शालिवाहन ने आपको देखा होगा इसलिए उसका बनाया हुआ चित्र अधिक प्रामाणिक होने से उसी का ब्लाक इस ग्रंथ मे दिया जा रहा है।

**शिष्य परम्परा:—**

आपके शिष्य अनेक थे और उनमें कई बडे अच्छे विद्वान् और कवि थे। आपके पट्टधर जिनरंगसूरि भी अच्छे कवि थे। उनके स्तवन सज्झाय, गीत पद की एक संग्रह प्रति बीकानेर सेठिया-लायब्रेरी मे प्राप्त है और कुछ रचनाएं प्रकाशित भी हो चुकी है। आपके द्वितीय पट्टधर जिनरत्नसूरिजीके रचित कुछ स्तवन मिलते हैं। जिनरंगसूरिजी से लखनऊ गद्दी हुई और उस परंपरा मे अभी श्री जिनविजयसेन सूरि हैं। जिनरत्नसूजीकी पट्ट परम्परा बीकानेर में चली। वर्तमान पट्टधर जिनविजये-न्द्रसूरि अच्छे विद्वान हैं। आपके इन दोनों पट्टधर शिष्यों के अति-रिक्त कई उपाध्याय आदि विद्वान शिष्य थे जिनकी परम्परा में

कई कवि हो गए हैं। आपके शिष्य भाव-विजय के शिष्य भाव-विनय के शिष्य भावप्रमोद रचित सप्तपदार्थी वृत्ति, और अजा-पुत्र चौपई प्राप्त है। आपके एक अन्य शिष्य मानविजय के शिष्य कमलहर्ष तो बहुत अच्छे कवि थे और उनकी बहुत रचनाएं प्राप्त है। कमलहर्ष के शिष्य विद्याविलास और उदयसमुद्र भो अच्छे विद्वान थे।

प्रस्तुत ग्रथ का मूल संशोधन मेरे सहयोगी भ्रातृपुत्र श्री भंवरलाल नाहटाने किया है और साहित्यक अध्ययन प्रो०श्रो नरेन्द्र भानावतने लिखा है। अतः ये दोनों ही मेरे आशीर्वाद भाजन हैं। ग्रंथ प्रकाशन में अत्यधिक विलंब होजाने से कठिन शब्द कोश देने की इच्छा होते हुए भी नही दिया जा सका।

—अगरचंद नाहटा



# जिनराजसूरि कृति-कुसुमांजलि
## एक साहित्यिक अध्ययन

(प्रो० नरेन्द्र भानावत : गवर्नमेन्ट कॉलेज, बून्दी)

१७ वीं शती के उत्तरार्द्ध के कवियों में जिनराजसूरि का महत्वपूर्ण स्थान है। ये खरतरगच्छीय आचार्य जिनसिंहसूरि के शिष्य थे। प्रारंभ से ही इन्होने दर्शन, साहित्य और व्याकरण का अध्ययन किया। काव्य की ओर रुचि थी ही। अध्ययन और अभ्यास का सहारा पाकर इनकी प्रतिभा खिल उठी। सैकडों पद, स्तवन और रास मुक्त हँसी हँसने लगे। जन-साधारण को उनमे मिला हृदय को उल्लसित करने वाला आध्यात्मिक वातावरण, मस्तिष्क को सजग बनाने वाला आत्म-रस और जीवन को मधुर बनाने वाला उद्बोधन। ऐसे श्रामधर्मी कविकी रचनाओ का समग्र रूपसे एक ही स्थान पर आस्वादन हो सके ऐसे प्रयत्न की महत्ती आवश्यकता थी। 'समयसुन्दर कृति कुसुमांजलि' के ही अनुक्रम में 'जिनराजसूरि कृति कुसुमाञ्जलि' के प्रकाशन द्वारा यह महदनुष्ठान अब पूर्ण हुआ है। यहां संक्षेप में आलोच्य कृति का साहित्यिक अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है।

(क) भाव पक्ष.—

भाव कविता का मूलधर्म है। इसके अभाव मे कविता कविता नही रहती। ये भाव कभी सांसारिक विषयो से लिपटे रहते तो कभी आध्यात्म-जगत से बधे रहते है। हिन्दी का रीतिकालीन काव्य पहली धारा का प्रतिनिधित्व करता है तो भक्तिकालीन काव्य दूसरी धारा का। आलोच्य-कवि दोनो धाराओ के बीच मे रहा है। पर उसका स्वाद अपना है, उसकी पद्धति अपनी है।

इसीलिए वह विशिष्ट है । स्थूल रूपसे कविका कार्य-विषय दो प्रकार का रहा है–

(१) गुणगाथात्मक या स्तुतिपरक

(२) आध्यात्मिक या उपदेशपरक

[१] *गुणगाथात्मक या स्तुतिपरकः—*

अपने से महान और श्रद्धेय पुरुषों का गुणगान गाना, उनके लोकोपकारक कार्यों का स्मरण स्तवन करना भारतीय धर्म और काव्य का मुख्य आधार रहा है। इससे मन पवित्र होतां है, मानसिक शान्ति मिलतो है और नयी संजीवनी शक्ति का अनुभव होने लगता है । जिनराज सूरि ने महान आत्माओं के अतिरिक्त महान आत्माओं से सम्बन्ध रखने वाले तीर्थादि स्थानों का भी माहात्म्य प्रतिपादित किया है।

महान आत्माओं मे यदि कवि का ध्यान तीर्थङ्करों, विरहमानों, सतियो और अन्य तेजोपु ज व्यक्तियों की ओर गया है तो तीर्थादि स्थानो मे उसे शत्रुञ्जय (विमलाचल), आबू तथा अन्य मन्दिरादि विशेष प्रिय रहे है। रामायण की कथा भी उससे अछूनी नही रही । संवादात्मक गेय शैली में जो पद लिखे गये है , बड़े मार्मिक और चोट करने वाले हैं । स्वप्न पद्धति के द्वारा कवि ने मदोदरी से जो भावी आशंका का वतावरण प्रस्तुत कराया है वह देखिए–

आज पीउ सुपनइ खरी डराई ।
जलधि उलंघि कटक लंका गढ़, घेरयउ परी लराई ॥१ आ०॥
लूटि त्रिकूट हरम सब लूटी, भूटा गढ़ की खाई ।
लपक लंगूर कंगुर बइठे फेरइ राम दुहाई ॥२॥आ०॥
जउ दस सांस वीस भुज चाहइ, तउ तजि नारि पराई ।
राज वदल हुणहार न टरिहइ, कोरि करउ चतुराई ॥३आ०(पृ.४)

श्री वर्तमान जिन चतुर्विंशतिका में २४ तीर्थङ्करों का गुणानु·

बाद गाया गया है। इनमें उनकी चारित्रिक दृढ़ता, अपनी भक्ति भावना, उनकी महानता अपनी लघुता का वर्णन है। कवि उन्हें आँखों में बसाना चाहता है, अपने हाथों से उनकी पूजा करना चाहता है और चाहता है अपनी जिह्वा से उनका संकीर्तन करना—

"इण परि भाव भगति मन आणी, शुध समकित सहिनाणीजी।
बर्तमान चउवीसी जाणा, श्री 'जिनराज' वखाणीजी ॥१॥इ०॥
जउ मूरति नयणे निरखीजइ, जउ हाथे पूजीजइजी।
जउ रसनाइ गुण गाइजई, नर भव लाहउ लीजइजी। २॥ इ०॥
(पृ० १७)

आदि तीर्थङ्कर भगवान ऋषभदेव का स्तवन करते हुए उनकी बाललीला का जो वर्णन किया गया है उसे पढ़ते समय महाकवि सूर और उसके कृष्ण हठात् स्मरण हो आते है। मरुदेवी के मातृ-हृदय को कविने पहचाना है, बालक ऋषभ की सहज-सुलभ क्रीडाओं को कविने देखा है, तभी तो जो चित्र बनते है वे उभर उभर कर आखो के सामने नाचते रहते है—

रोम रोम तनु हुलसइ रे, सूरति पर बलि जाउ रे।
कबही मोपइ आईयउ रे, हूँ भी मात कहाऊं रे ॥३॥
पगि घूघरडी घमघमइरे, ठमकि ठमकि धरइ पाउ रे।
बाँह पकरि माता कहइ रे, गोदी खेलण आउरे ॥४॥
चिबुकारइ चिपटी दीयइ रे, हुलरावइ उर लाय रे।
बोलइ बोल जु मनमनारे, दंतिआ दोइ दिखाइ रे ॥५॥
तिलक बणावइ अपछरा रे, नमयणा अंजन जोइ रे।
काजल की बिंदी दियइरे, दुजन चाखन होइरे ॥६॥ (पृ० ३१)

कवि भावानुकूल भाषा लिखने मे सिद्धहस्त है। 'श्री गिरनार तीर्थ यात्रा स्तवन' को पढते हुए लगता है जैसे यात्रियों का एक दल उमड़ता हुआ चला जा रहा है। बहिन द्वारा बहिन को

निमन्त्रण-कितना मधुर सरस और भाव भीना है-

मोरी बहिनी हे बहिनी म्हारी ।
मो मन अधिक उछाह हे, हां चालउ तीरथ भेटिवा ।।म्हा० ।।
संवेगी गुरु साथ हे, हाँ तेड़ीजइ दुख मेटिवा ।।१।।म्हा०।।
चढिमुं गढ़ गिरनार हे, हाँ साथइ सहियर झूलरइ ।।म्हा०।।
सजि बसन शृंगार हे, हाँ गलि झाबउ मकथूल रउ ।।२।।म्हा०।।
राजल रउ भरतार हे, हा जादव नंदन निरखिसुं ।।म्हा०।।
पूजा सतर प्रकार हे, हां करिसुं हियड़इ हरखिसुं ।।३।।म्हा०।।
अदबुद आदि जिणिंद हे, हाँ 'खरतरवसही' जोइसुं ।।म्हा०।।
अमियझरइ श्री पास हे, हाँ मल कसमल सवि धोइसुं ।।४।।म्हा०

पृ० (४२)

कहीं कहीं विरहादि वर्णन में प्रकृति चित्रण के लिए भी अवसर मिल गया है। यहाँ जो प्रकृति आई है वह स्वतंत्र रूप में होकर उद्दीपन रूपमे है। नेमिनाथ के विरहमे राजुल तड़फ तड़फ कर चतुर्मास बिताती है श्रावण, भाद्रपद, आसोज और कार्तिक का वर्णन इसी पृष्ठभूमि में आया है श्रावण मास का चित्र देखिये-

'श्रावण मइ प्रीयउ संभरइ, बूंद लगइ तनु तीर ।
खरीअ दुहेली घन घटा, कवण लहइ पर पीर ।।
पर पीर जाणत पापी, पपीहउ प्रीउ प्रीउ करइ ।
ऊमई बाहर घटा चिहुं दिसि, गुहिर अंबर घरहरइ ।।
दामिनी चमकत यामिनी भर, कामिनी प्रीउ विण डरइ ।
घन घोर मोर कि सार बोले, स्याम इण रितु संभरइ ।।

(पृ०४६)

'शालिभद्र धन्ना चौपई' कवि की महत्त्वपूर्ण कृति है इसकी कई हस्तलिखित प्रतियाँ भंडारों मे पाई जाती हैं। अकेले अभय-जैन ग्रंथालय, बीकानेर में इसकी २० प्रतियाँ है। सचित्र प्रतियाँ

भी मिलती हैं। कलकत्ते की सिंघीजी वाली सचित्र प्रति दस हजार रुपये की कीमत से भी अधिक मूल्यवान है। इससे चौपई की लोकप्रियता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इसकी कथा बड़ी सरस और मधुर है। वह जीवन के अभेद्य रहस्यों को खोलकर सामने रख देती है। भोग और योग का अद्भुत समन्वय, आत्मा, की स्वायत्तता और परवशता वे चिंतन-बिन्दु हैं जो जीवन के मोड़ को सहसा बदल देते हैं। शालिभद्र उन नायकों में से है जो संसार को फूल की तरह सुन्दर और कोमल, काया को मक्खन की तरह मुलायम और स्निग्ध तथा अपने आपको सबका स्वामी और नियन्ता मानता है। पर अचानक माता भद्राके वचनों को सुनकर "कि स्वामी (राजा) श्रेणिक अपने घर आया है" शालिभद्र का अन्तर क्रन्दन कर उठता है—

'एतला दिन लग जाणतो, हुँ छुं सहुनो नाथ।
माहरे पिण जो नाथ छे, तो छोड़िए हो तृण जिम ए आथ ॥४॥
जाणतो जे सुख सासता, लाधा अछ असमान।
ते सहु आज असासता, मैं जाण्या हो जिम स ध्या वान ॥५॥
(पृ० १३२)

और वह एक एक कर बत्तीस स्त्रियों का परित्याग कर मुक्ति के उस पथ पर बढ़ जाता है जहाँ कोई किसी का नाथ नहीं--
"उठयो आमणदूमणो, महल चढयो मनरंग।
फिरि पाछो जोवै नहीं, जिम कंचली भुयग ॥' (पृ० १३३)

## [२] आध्यात्मिक या उपदेशपरकः—

गुणगाथात्मक या स्तुतिपरक पदों में भी आध्यात्मिक वातावरण और देशना है। पर वहाँ कथा या चरित्र विशेष को प्रधानता दी गई है। यहां स्फुट पदों में संसार की असारता, जीवन की नश्वरता धर्म-प्रभावना आदि का जो चित्र प्रस्तुत किया गया है। वह सन्त कवियों की तरह बाह्य क्रिया-काडों का विरोधी

और भक्त कवियों की तरह 'प्रभु हौं सब पतितन को टीको' है।

कवि पश्चाताप करता है कि वह प्रभु का ध्यान नहीं कर सका। उसने बचपन इधर-उधर भटकने में, यौवन भोग-विलास में और बुढ़ापा इन्द्रियों की शिथिलता के कारण यों ही व्यतीत कर दिया फिर भी प्रभुने उसे अपना लिया। यह प्रभु की उदारता, भक्त-वत्सलता और महानता नही तो क्या है?

कबहूँ मइ नीकइ नाथ न ध्यायउ।
कलियुग लहि अवतार करम वसि, अघ घन घोर बढायउ।।१।।
बालापण नित इत उत डोलत, धरम कउ मरम न पायउ।
जोवन तरुणो तनु रेवा तट, मन मातंग रमायउ।।२।।
बूढापखि सव अंग सिथल भए, लोभइ पिंड भरायउ।
तउ भी तुम्ह करिहुउ अपणाई, या 'जिनराज' बड़ाई।।३।।
(पृ० ६२-६३)

जीवन की नश्वरता का चित्र देखिये—

कइसउ सास कइ वेसास।
कुस अणी परि ओस कण की, होत कितक रहास।।१।।
जाजरी सी घरी वाकइ, वीचि छिद्र पचास।
तिहा जीवन राखिवइ की, कउण करिहइ आस।।२।।
रयण दिन ऊसास कइ किसि, करत गवण अभ्यास।
जग अथिर 'जिनराज' तामइ, लेहु थिर जसवास।।३।।
(पृ० १०७ ८)

'शील बत्तीसी' व 'कर्मबतीसी' में शीलधर्म तथा कर्म की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है। शील-माहत्म्य में कवि कहता है—

सील रतन जतने करि राखउ, वरजउ विषय विकारजी।
सीलवंत अविचल पद पामइ, विषई रूलइ संसार जी।।
सीलवंत जगमइ सलहीजइं, सीधइ वंछित कोड़िजी।

सुरनर किन्नर असुर विद्याधर, प्रणमइ बेकर जोड़िजी ॥१॥
(पृ० ११२)

'करम' की गति भी 'अलख' अगोचर है। उसे कोई नहीं जान सकता—

"पूरव कर्म लिखत जो सुख दुख-जीव लहइ निरधार जो।
उद्यम कोडि करइ जे तो पिण, न फलइ अधिक लगार जो"॥२॥

यही कारण है कि—

'एक जनम लगि फिरइ कुआरा, एके रे दोय नारिजी।
एक उदरभर जन्मइ कहीइ, एक सहस आधार जी॥३॥
एक रूप रंभा सम दीसइ, दीसे एक कुरूप जो।
एक सहूना दास कहीये, एक सहूना भूप जी ॥४॥ (पृ० ११६)

कवि के कृतित्व में पार्थिक देह से ऊपर उठाने की अमोघ शक्ति है। वह हमे अपनी कमजोरियाँ बतलाकर हतोत्साहित नही करता वरन् आगे बढने की प्रेरणा देता है। वह अज्ञान का पर्दाफाश कर ऐसी झिल मिलाती हुई अमरज्योति को खीच लाना चाहता है जिसके प्रकाश मे समझा जा सके—

'बिणजारा रे वालंभ सुणि इक मोरी बात,
तूं परदेशी पाहुणउ ॥वि०॥
विणजारा रे मकरि तूं गृहवास,
आजकाल भइं चालणउ ॥वि०॥१॥
(पृ० ६३)

कवि का एक एक पद आध्यात्म रस का ऐसा स्निग्ध छींटा है जो प्यासे की प्यास नही जगाता वरन् उसके हृदय को इतना निर्मल और प्रशान्त बना देता है कि वह थोडी देर के लिए अपने आपको भूल जाता है, जड़-जंगम की सीमाएँ टूट जाती हैं।

### (ख) कला पक्षः—

जैन कवि सामान्यतः पहले धर्मोपदेशक और बादमें कवि रहे

हैं। यही बात जिनराजसूरि के बारे भी कही जा सकती है। फिर भी जिनराजसूरि उन सामान्य कवियों में से नहीं हैं जो भाषा के अलंकरण से एक दम दूर रहते हों। उनमें सादगी के साथ साथ साहित्यिकता भी है भावावेग के साथ साथ अलंकरण भी है, पर सर्वत्र कृत्रिमता और कारीगरी को बचाकर।

भाषा सरल राजस्थानी। सरस और सुबोध। इनका विहार-क्षेत्र गुजरात भी रहा अतः गुजराती का पुट भी यत्र-तत्र देखने को मिलता है। भाषा माधुर्यगुण और नाद-सौन्दर्य से सम्पन्न हो उसमें अनुप्रास की छटा भी देखी जा सकती है—यथाः

(१) मेरइ नेमिजी इक सयण।
अउर ठउर न दउर करिहुँ, कबहुँ मो मन भयण ॥१॥मे०
सुण्यउ निसि भरि जबहि चातक, रटत पिउ पिउ वयन।
पलक बादल वीचि उमड़े, सजल जलधर नयन ॥२॥मे०
(पृ० ४७)

(२) आज घड़ी सुघडी लेखइ पडी, जीवन जनम प्रमाण।
भगति जुगति 'जिनराज' जुहारतां, आज भलइ सुविहाण ॥७॥
(पृ० ४६)

(३) मारगि हे सखि मारगि सहियर साथि,
चालण हे सखि चालण पगला चलवलइ।
भेटण हे सखि भेटण आदि जिणंद,
मो मनि हे सखि मो मनि निसदिन टलवलइ ॥३॥
(पृ० ३४)

अर्थालंकारों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा विशेष प्रयुक्त हुए हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

**उपमाः—**

(१) मेरइं मनि तूं ही वसइ रे, ज्युं रयणायर मीन रे (पृ० ३१)
(२) जाणपणउ सरस व समउ, चिहुं माहे हो कहूं मेरु समान (पृ० ४०)

(३) कुंडल की सोभा कहुं रे लाल, रवि शशि कइ अणुहारि (पृ ५३)
(४) जी हो तृण जिमराज रमणि तजी होजो लीधउ संजमभार(७३
(५) फल किंपाक समान देखतां हो, देखतां सहुजन नइ सुख सपजइ हो (६२)
(६) पर कर परसेवो चल्यो, मांखण जेम सरीर।
चिहुँ दिसि परसेव चल्यो, जिम नीभरणे नीर ॥३॥ (१३३)

**रूपकः—**

(१) मन मधुकर मोही रहयउ, रिषभ चरण अरविंद रे।
ऊडायउ ऊडइ नहीं, लीणउ गुण मकरन्द रे ॥१॥ (पृ. १)

(२) सूर ने जिस प्रकार 'अब मैं नाच्यो बहुत गुपाल' सांग-रूपक बांधकर विनय-भावना प्रदर्शित की है उसी प्रकार जिनराज सूरि ने साँगरूपक बाँधकर अपनी मोह-दशा का मार्मिक चित्र खींचा है। यथाः

'नायक मोह नचावीयउ, हुं नाच्यउ दिन रातो रे।
चउरासी लख चोलणा, पहिरया नव नव भात रे॥१॥
काछ कपट मद घूघरा, कंठि विषय वर मालो रे।
नेह नवल सिरि सेहरउ, लोभ तिलक दे भालो रे॥२॥
भरम भुउण मन मादल, कुमति कदाग्रह नालो रे।
क्रोध कणउ कटि तटि वण्यउ, भव मंडप चउसालो रे॥३॥
मदन सबद विधि ऊगटी, ओढ़ी माया चीरो रे।
नव नव चाल दिखावतइ, का न करी तकसीरो रे॥४॥
(पृ० ८६)

(३) सोभा सायर वीचि मइ रे लाल, झील रहयउ मन मीन।
तइ कछु कोनी मोहनी रे लाल, नयन भए लयलीन ॥५॥
(पृ० ५३)

(४) जोवन तरुणी तनु रेवा तट, मन मातंग रमायउ (६२)
(५) पंचरंग काचुरी रे बदरंग तीजइ धोइ।

बहुत जतन करि राखीयइ, अंत पुराणी होइ ॥१॥
सीवणहारउ डोकरउ रे, पहिरण हार युवान रे।
चउथउ धोब खमइ नहीं हो, मत कोउ करउ रे गुमान ॥२॥
(पृ० १०३)

(६) मन रे तूं छोरि माया जाल।
भमर उडि बग आइ बइठे, जरा के रखवाल ॥ (पृ० १०७)

**उत्प्रेक्षा:—**

(१) तिण रंग लागउ माहरइ, जाणे चोल मजीठ (पृ० ४४)
(२) श्रावण मइ प्रीयउ संभरइ, बूंद लगइ तनु तीर (पृ० ४५)

लोक प्रचलित उपमानों के प्रयोग में कवि बड़ा कुशल है। जहां उसे अपने मत की पुष्टि करनी होती है वहाँ वह या तो कोई न कोई दृष्टान्त देता है या लोक प्रचलित उपमानों का प्रयोग कर विषय को एकदम स्पष्ट कर देता है। यथा:—

(१) घर अंगण सुरतर फल्यउ जी, कवण कनकफल खाइं।
गयवर बांधउ बारणइ जी, खर किम आवइ दाइं ॥ (पृ० ६)
(२) बोवइ पेड़ आक के आंगण, अंब किहाँ थइ चाखइ (७४)
(३) पइठउ श्वान काच कइ मंदिर, मूरखि भुसिहि भुसि मरइ (१८)
(४) कहा अग्यानी जीउकुं गुरु ज्ञान वतावइ।
कबहुं विष विषधर तजइ, कहा दूध पिलावइ ॥१॥
ऊषर ईख न नीपजइ, कोऊ बोवन जावइ।
रासभ छार न छारि हइ, कहा गंग नवावइ ॥२॥
काली ऊन कुमाणसां, रंग दूजउ नावइ।
श्री 'जिनराज' कोऊ कहा, कागउ सहज मिटावइ ॥३॥

भाषा की शक्तिमता के लिए कहीं कहीं लाक्षणिक प्रयोग भी किये गये हैं—

(१) दोउ नयण सावण भादुं भये, ऐसी भाँति रूनउ (८५)
(२) जोवन वसि दिन दसि झूठी सी, हइ *छवि छिन छिन छीजइ* ११२

मुहावरे भी आये हैं, यथाः

मयगलतणो दांते करी, *लोह चिणा कुण चाबैरे* (१४२)

कवि की छन्द-योजना वैविध्य पूर्ण है। उसमे एक अनन्त संगीत की गूंज है जो विभिन्न प्रकार की ढालो और रागिनियो द्वारा हृदय के तार झंकृत कर देती है। प्रत्येक पदके साथ राग-विशेष का उल्लेख कर दिया गया है। यथा प्रसंग तर्ज भी दे दी गई है। मुझे पूरा विश्वास है कि जिनराजसूरि के ये पद-जो अब तक अधिकांश रूप मे हस्तलिखित प्रतियों में बन्दी पड़े छटपटा रहे थे अब प्रकाशित होने से कबीर, सूर और मीरा के पदों की तरह लोक-कंठों में रमकर दग्ध-हृदय मरुस्थल में अनन्त आनन्द की वर्षा करेंगे।





श्री जिनराजसूरि [सं० १६९१ में चित्रित]



श्री जिनराजसूरि व जिनरंगसूरि आदि [सं० १८५२ चित्रित

वा० राजसमुद्रगणि ( जिनराजसूरि ) की हस्तलिपि

# जिनराजसूरि कृति-कुसुमाञ्जलि



## श्री वर्तमान जिन चतुर्विंशतिका



### (१) श्री आदिनाथ गीतम्

देश—बाँह समापउ बाहुजी

मन मधुकर मोही रह्यउ, रिषभ चरण अरविंद रे।
ऊडायउ ऊडइ नही, लीणउ गुण मकरंद रे ॥१॥म०॥
रूपइ रूडे फूलड़े, अलविन ऊडी जाइ रे ।
तीखा ही केतकि तणा, कंटक आवइ दाइ रे ॥२॥म०॥
जेहनउ रंग न पालटइ, तिणसु मिलियइ धाइ रे।
संग न कीजइ तेहनउ, जे काम पड्यां कुमिलाइ रे॥३॥म०॥
जे परवस बंधन पड्यां, लोकां हाथ विकाइ रे।
जे घर घर ना पाहुणा, तिण सु मिलइ बलाइ रे॥४॥म०॥
चउविह सुर मधुकर सदा, अणहूंतइ इक कोडि रे।
चरण कमल 'जिनराज' ना, सेवइ बे कर जोड़ि रे॥५॥म०॥

## (२) श्री अजितनाथ गीतम्

राग—गुंड मल्हार जाति कडखो

तार करतार संसार सागर थकी,
भगत जन वीनवइ राति दीसइ ।
अवर द्वारांतरइ जाइ ऊभां रह्यां,
ताहरउ पिण भलउ नही दीसइ ॥ता०॥१॥
आपणइ कोडि कर जोडि जे ओलगइ,
दास अरदास ते करण पावइ ।
पिण धणी जो हुवइ जाण सेवा तणउ,
तो किमु भगत पासइ कहावइ ॥ता०॥२॥
माहरउ कथन मन मांहि जो आणस्यउ,
पूरस्यउ तउ सही एह आसा ।
केड लागा तिके केड़ किम मूकिस्यइ,
नेट का एक करिस्यउ दिलासा ॥ता०॥३॥
स्यूं वलि तारवा के नवा आविस्यइ,
अजित जिन एतलउ जे विमास्यइ ।
अकल 'जिनराज' नउ माजनउ कुण लहइ,
सही ते तरइ जे रहइ पासइ ॥ता०॥ ४

## (३) श्री संभवनाथ गीतम्

राग—सोरठ, गौड़ी

विणजारा रे नायक संभवनाथ,
साथ खजीनउ सीतरउ विणजारा रे ।

वि०सहु को विणजण जाइ, थे घर बइठा स्युं करउ वि०॥१
वि० साटउ जोडइ आप, वीचि दलाल न को फिरइ वि० ।
वि० लाखीणा लख कोडि, रतन भविक ले ले घिरइ वि०॥२
वि० लाहइ रा दिन च्यार, वालंभ वार म लाविस्यउ वि० ।
वि० थासी लाभ अनंत, जउ किम हाथ हलाविस्यउ वि०॥३
वि० वाहि छछोहा हाथ साथ चलाऊ सऊ अछइ वि० ।
वि० मुण लोकोनी वात, पचतावइ पड़िस्यउ पछइ वि० ॥४
वि० पहुची साहिब सीम, विणज करउ मन मोकलइ वि० ।
वि० पूठ रखइ 'जिनराज' अरिअण मूल न को कलइ वि०॥५

## (४) श्री अभिनन्दन गीतम्

राग—परजीयउ ढाल-चांदलियो ऊगो हरणी आथमी ए०

बे कर जोडी वीनवु रे, अभिनंदन अवधार रे । दयालराय ।
अन्तरजामी माहरउ रे, आवागमन निवारि रे।द०॥१॥बे०
आगम वचने आकरु रे, सांभलि करम विपाक रे ।द०।
हुं सरणागत ताहरइ रे, सरणइ आयउ ताक रे।द०॥२॥बे०
मीटि अमीणी जउ करइ रे, तउ भाजइ भव भीड़ रे ।द०।
परमेसर पीहर पखइ रे, कुण जाणेइ पर पीड़ रे ।द०॥३॥बे०॥
उपगारी सिर सेहरउ रे, भयभंजण भगवंत रे ।द०।
अरिअण तउहिज अउहटइ रे, जउ पखउ करइ बलवंत रे।द०
हुं अपराधी सउ परे रे, महिर करउ महाराज रे द० ॥
मेघ न जोवइ वरसता रे, सम विषमी 'जिनराज' रे द०॥५।बे०

## (५) श्री सुमतिनाथ गीतम्

राग-मल्हार

करता सुं तउ प्रीति, सहु हींसी करइ रे सहु हींसी करइ
परमेसर सुं प्रीति, करु हुं सी परइ रे क० ।
आपणपइ नीराग, न रागी मुं अडइ रे न० ।
ताली एकण हाथ, कहउ किण विध पडइ रे क०॥१॥कर०॥
सेवी जोयउ सामि, आगलि ऊभा रही रे आ० ।
पड़ि पडि मरइ पतंग, दीवाचइ मन नही रे दी० ॥
भगति करुं सउ भांति, न साम नजरि करइ रे मो० ।
नाणइ मन असवार, घोडउ दउड़ी मरइ रे घो० ॥२॥क०॥
सुमतिनाथ जगनाथ, परवइ मन साहरइ रे प० ।
देव अवर नी सेव न आवइ काइरइ रे न० ॥
बाबीहउ जिम चूंच, न बोटिइ जल नवइ रे न० ।
जलधर सुं इकतार, करी प्रीउ प्रीउ लवइ रे क० ॥३॥क०॥
नीरंजन चउ नेह, लखी नवि को सकइ रे ल० ।
कईयइ बीजां हि जेम, चिहुं मांहि वकइ रे चि० ॥
आपइ अविचल, राज, लागी जउ को रहइ रे ला० ।
भगतिवच्छल 'जिनराज', विरुद साचउ वहइ रे वि०॥४॥क०

## (६) श्री पद्मप्रभ जिन गीतम्

राग-धन्यासी जाति भवन री

कागलियउकरतार भणी सी परि लिखूं रे कवि पूछुं कर जोड़ि ।
जिम तिम लिखतां हाथ वहइ नही रे,
लिखिवा नो पिण कोडि ॥१॥क०॥

सइंगू माणस सिवपुर चालतउ, न मिलइ इण कलिकाल।
प्रभु लगि सपगउ पहुँचि सकइ नही रे,
निपगइ नउ जंजाल ।।का० २।।
हाथ न झालइ कागल केहनउ रे, तउ वाचइ किम तेह।
अलविन पाछउ पिण* ऊत्तर लिखइ रे,
साहवीयउ निसनेह ।।का० ।।३।।
नीरंजन तो किमहि न रंजीयइ रे,जउ लिखउं वीनती लाख।
दूर थका पिण भगति हुइ रहउ रे,
ले सहुकोनी साख ।।का० ।।४।।
एक पखी जउ जाणउ पालस्यां रे, पदमप्रभु मुं प्रीत।
तउ कागल 'जिनराज' म मूकेज्यो रे,
इणि घरि छइ आ रीत ।।का० ।।५।।

## (७) श्री सुपार्श्व जिन गीतम्

राग—मारू

आज हो परमारथ पायउ, ज्ञानी गुरु अरिहंत बतायउ।
राग नइ द्वेष तणइ वसि नायउ,
परम पुरुष मइ सोइज ध्यायउ ।।आ०।।१।।
कर जोडी जउ को गुण गावइ, कडुए वचने कोइ मल्हावइ।
तूं अधिकउ ओछउ न जणावइ,
समता सागर नाथ कहावइ ।।आ० ।।२।।
साचउ सेवक जाणि न मिलीयउ,दुरजन देखिन अलगउ टलीयउ।

* किम

अकल पुरुष जिणविध* अटकलीयउ,
सहज सरूपी तिण विध फलीयउ ।।आ० ।।३।।
झाली हाथ न को तुं तारइ, फेरइ न कोइ न तूं संसारइ ।
तूं किम भाव कुभाव विचारइ,
फलइ मसाकति सारा मारइ ।।आ०।।४।।
एक नजरि सहु को परि राखइ, कुण बीजउ परमेसर पाखइ ।
श्री 'जिनराज' जिनागम भाखइ,
मुजस सुपास तणउ इम आखइ ।।५।। आ०।।

## (८) श्री चंद्रप्रभ गीतम्

रमउ रे मुरंगी गेहरी – ए जाति

श्री चंद्रप्रभु पांहुणउ रे, किम आवइ घरबार रे ।
जेहनइ प्रभु छीपइ नही रे, पाखलि ते परवार रे ।।श्री०।।१।।
पाणी वल पिण वेगलउ रे, न रहइ काम अछेप रे ।
माया माछणि काढिवा रे, मइ न कीयउ आखेप रे ।।श्री०।।२
लोभ अनीतउ वागरी रे, नांखइ पगि पगि जाल रे ।
आठ पहर ऊभउ करइ रे, चउकी क्रोध चंडाल रे ।।श्री०।।३
विसन वनेचर बारणइ रे, ऊभा करइ पुकार रे ।
माछीगर अभिमान चउ रे, न टलइ पग पइसार रे ।।श्री०।।४
सुमिरण श्री 'जिनराज' नउ रे, आवइ आगेवाण रे ।
तउ पापी पासउ लीयइ रे, वंछित चढइ प्रमाण रे ।।श्री०।।५।।

---

* सोइज

## (९) श्री सुविधिनाथ-गीतम्

राग - सोरठ कडखानी जाति

सेवा बाहिरउ कइयइ को सेवक, तारयउ हुवइ तउ तवीयइ ।
कीधइ काम मसाकति दीधां, ते दातार न चवीयइ ।।१।। से० ।।
बेडी जिम तारइ बूडंता, ते तारक सरदहीयइ ।
आंपणपइ तरतां नइ तारइ, ते मुं तारक कहीयइ ।।२।।से०।
आठ पहर ऊभा ओलगतां, मउज कदे कइ दीजइ ।
विरुद गरीब निवाज तणउ प्रभु,तिण ऊपरि न वहीजइ ३।।से०।।
ते किम पात्र कुपात्र विचारइ, जे उपगारी होवइ ।
सम विसमी धारा वरसंतउ, जलधर कदे न जोवइ ।।से० ।।४।।
पडियउ सुजस लिये परमेसर, पूरयउ छतउ पवाड़इ ।
श्री 'जिनराज' सुविधि साहिब मुं,किम पहुँचीजइ आडइ।।से.५

## (१०) श्री शीतल जिन गीतम्

राग—मल्हार सारंग

आज लगइ धरि अधिक जगीस, सेव्यउ सीतल विसवा वीस।
जउका कीधी हुयइ बगसीस, तउ संभारेज्यउ जगदीस।।१।।
अवसरि करिअ हुस्यइ अरदास, तंइ तउ काइ न पूरी आस ।।
तउ पिण तुझ ऊपरि वेसास, सेवक नई आपउ साबास ।।२।।
जउ को तइ काढयउ हुवइ काम, तउ ते दाखउ लेइ नाम ।
हुं तेसेवक तूं ते सामि, कितला इक दिन चलस्यइ आम ।।३।।
जनम लगइ नव नव अवदात, गातां वउलइ मुझ दिन रात
तूं किम नेह धरइ तिलमात, तत वेला वातांरी बात ।।४।।

बोल भलाई पिण 'जिनराज', तइ मोमुं न करी महाराज
जउ जाणउ पोतानी लाज, **राखिसि तउ** द्यउ अविचल राज ।५

## (११) श्री श्रेयांस जिन गीतम्

राग—मल्हार

एक कनक नई बीजी कामिनी रे, दूभर घाटी देखि ।
मारग मारग चलतां चीत न अउहटइ रे,
भेटइ भविक अलेख ।।१।।
ओलगडी ओलगडी मुहेली श्री श्रेयांसनी, जउ करि जाणइ कोइ ।
ओलगतां ओलगतां ओलगाणउ पहुँचइ चाकरी रे,
आप समोवडि होइ ।।२।। ओ०।।
आठ पहुर हाजर ऊभउ रहइ रे, न गणइ सांझ सवार ।
सइंमुख सइंमुख नइ परपूठइ सॉमची रे,
कोई न लोपइ कार ।।३।। ओ०।।
आठ अछइ अरियण अरिहत नारे, न करइ तास प्रसग ।
साजणीया साजणीया साहिब नइ वालहा रे,
तिणमुं राखइ रंग ।।४।। ओ०।।
नाथ अवर मायइं करतां हुस्यइ रे, [१]बिहुं मामेभाणेज ।
श्री जिन श्री 'जिनराज' बिहुं घोडे चढइ रे,
साचउ प्रभु सु हेज ।।५।। ओ०।।

## (१२) श्री वासुपूज्य जिन गीतम्

ढाल-१ चरणाली चामंड रण चढइ

१ कडुआरे फल छे क्रोधना

नायक मोह नचावीयउ; हुं नाच्यउ दिन रातो रे ।

चउरासी लख चोलणा, पहिरया नव नव भातो रे ॥१॥ना०॥
कोछ कपट मद घूघरा, कंठि विषय वर मालो रे ।
नेह नवल सिरि सेहरउ, लोभ तिलक दे भालो रे ॥२॥ना०॥
भरम भुउण मन * मादल, कुमति कदाग्रह तालो × रे ।
क्रोध कणउ + कटि तटि वण्यउ, भव मंडप चउसालोरे ॥३॥ना०॥
मदन सबद विधि ÷ ऊगटी, ओढी माया चीरो रे ।
नव नव चाल दिखावतइ, का न करी तकसीरो रे ॥४॥ना०॥
थाकउ हुं हिव नाचनउ, महिर करउ महाराजो रे ।
बारम जिनवर आगलइं, इम जंपइ 'जिनराजो' रे ॥५॥ना०॥

## (१३) श्री विमलनाथ जिन गीतम्

राग— धन्यासी, ढाल-रहउ चतुर चउमास,

घर अंगण सुरतर फल्यउ जी, कवण कनकफल खाइं ।
गयवर बांधउ बारणइ जी, खर किम आवइ दाइं ॥१॥
विमल जिन माहरइ तुम्ह सुं प्रेम ।
सुर सकलंकित सु मिल्या जी, हीयड़उ होसइं केम॥२॥वि०॥
मन गमता मेवा लही जी, कुण खल खावा जाइ ।
आदर साहिब नउ लही जी, कुण ल्यइ रांक मनाइं ॥३॥वि०॥
पाच छनइ कुण काचनइ जी, अलवि पसारइ हाथ ।
कुण सुरतरु थी ऊठिनइ जी, बावल घालइ बाथ ॥४॥वि०॥
देव अवर जउं हुं करुं जी, तउ प्रभु तुमची आण
श्री 'जिनराज' भवो भवे जी, तूं हिज देव प्रमाण ॥५॥वि०॥

---

* धुवन मद. × टाणो. + तणउ. ÷ विधि

## (१४) श्री अनन्तनाथ गीतम्

राग—सिन्धु

पूजा नउ तूं बे परवाही, तइ समता गाढी कर साही ।
राही जिम तुझ आण आराही, पूरइ तउ पूरो पतिसाही ॥१॥
मइ साची सेवा विधि जाणी, भूखा भमइ अवर सवि प्राणी ।
मन सुध आराधइं तुझ वाणी, तउ सतोपीजइ आफाणी ॥२॥
हेलइ हेक वचन ऊथापइं, ते तउ पंड भरीजइं पापइं ।
नाम जपइं परमेसर जापइं, तूं किम तेहनउ पातक कापइ॥३
भगति जुगति नउ पइंलउ पार, मइं लाधउं जिणवर आधार ।
जिण तुझ काइं न लोपी कार, तिण तउ भगति करी मउवार॥४
नाथ अनंत तणउ 'जिनराज' लाधउ माझ सही मइ आज ।
आगम ने वचने मुनि 'राज' चालइ तउ द्यउ सिवपुर राज ॥५॥

## (१५) श्री धर्मनाथ जिन गीतम्

राग—गोडी ढाल— १ नमणी खमणी.
२ सोई सोई सारी रैंन गुमाई.

भवसायर हुती जउ हेलइ, तार सहुं पोता नइ मेलइ ।
आगलि पाछलि इम जाणउ छउ,
तउ इवडउ स्या नइ ताणउ छउ ॥१॥
करम विवर देस्यइ जिण दीस्यइं, संजम पलिस्यइ विसवा वीसइ
तइयइ फलस्यै वंछित मोरउ,
तउ सउ तुम्हचउ नाह नहोरउ ॥२॥

तारउ मुझ सरिखउ मेवासी, तारक विरुद खरउ तउ थासी ।
जे जाया छइ जगनी रातइ,
ते तउ जस लइ जिण तिण वातै ।।३।।
पहिली तउ सउ वीनति कीजइ, मोटां सुं हठ पिण मांडीजइ ।
गिरुआ किम ही छेह न दाखइं,
जिम तिम सहु को ना मन राखइं ।।४।।
भव भव देवल देवल भमीयउ, सिवसुखदायक कोइ न मिलीयउ।
धर्मनाथ 'जिनराज' सखाई,
करतां चढती दउलति पाई ।।५।।

## (१६) श्री शांतिनाथ जिन गीतम्

राग- धन्यासी मिश्र-हांजरनी जाति

काल अनतानंत भव मांहे भमतां हो जे वेदन सही ।
सुं कहीयइ ले नाम बांभणपिण, गत हो तिथि वांचइ नहीं।।१।
पारेवइ सुं प्रीति तइं जिम कीधी हो तिम तूं हिज करइ ।
सांभलि ए अवदात, सहु को सेवक हो मन आसा धरइ ।।२।
हुं आयउ तुम्ह तीर, हरि करि मुझ पर हो सोम नजर करउ।
न लहइं अंतर पीड़, अंतरजामी हो तुं किम माहरउ ।।३।।
यानउ दीनदयाल, दुखीया देखी हो जउ नावइ दया ।
कुण करस्यइ तुझ सेव, वहतइ वारइ हो जउ न करउ मया ।।४
लाधउ त्रिभुवन राज, जउ साची सी हो तुझ सेवा सधइ ।
हुवइ समवड़ि 'जिनराज' रूंख प्रमाणइ हो जिम बेलउ वधइ।।५

## (१७) श्री कुन्थु जिन गीतम्

राग—मल्हार, वेलाल,

जिम तिम हुं आवी चढयउ जिनजी, मीटि तुम्हारी माहि ।
मत करज्यो बीजा वमु जिनजी, ल्यउ पोतइ निरवाहि ।।१।।
हिव रे जगतगुरु मुध समकित नीवी आपीयइ ।
करुणागर हो करुणा करि कुंथु कि,
सेवक थिर करि थापीयइ ।।आं०।।
पडयउ घणउ छइ पांतरउ जिनजी, जउ जोसउ करतूत ।
पिण प्रभु नइ पूंठी हुयइ जिन जी,
सकल रहइ घर सूत ।।२।। हि०।।
मइ खातउ मांडयउ नवउ जिन जी, तिण छइ पग पग धीज ।
दीठउ अणदीठउ करउ जिन जी,
लाज रहइ तउ हीज ।।३।। हि० ।।
ऊंची नीची बात मइ जिनजी, हु स्युं घालुं जीव ।
मोटा बगस्यइ सउ गुनह जिन जी,
साचइ कहइ सदीव ।।४।। हि० ।।
चरण न छोडुं ताहरा जिनजी, इण भव ए इकतार ।
'राज' अछइ विवहारीयउ जिन जी,
करि चलनउ ववहार ।।५।। हि०।।

## (१८) श्री अरनाथ जिन गीतम्

राग—प्रभावती-वेलाउल

आराधउ अरनाथ अहोनिसि,मन माहि राखउ लाख उमेद ।

मांगी कविजन जीभ म हारउ,
जउ लाधउ हुवइ गुरुमुखि भेद ॥१॥अ०॥
आणइ नेह न जे गुण गाता, कड़ुए वचने नाणे रोष ।
तारउ तारउ कहिआं न तारइ,
मांग्यउ दीयइ नहीं ते मोख ॥२॥आ०
किणही विधि करतार न तूसइ, तउ ते केम करइ बगसीस ।
सेवक ही नइ जो वसि नावइ,
साचउ तउ ते हिज जगदीस ॥३॥आ०॥
प्रीति न पालइ ते किण ही सुं, सउ अपराधे नाणइ द्वेष ।
आप समान करइ ओलगतां,
पुरुषोत्तम नउ एह विसेष ॥४॥आ०॥
कहि कहि नइ जे भगति करावइ, ते 'जिनराज' म जाणउ देव ।
देवां मांहि अछइ देवाचउ,
कोड़े गाने करिस्यइ सेव ॥५॥अ०॥

## ( १९ ) श्री मल्लि जिन गीतम्

राग-मोरीयानी देसी

दास अरदास सी परि करइ जी, मूल दीसइ नही कोइ ।
कान दे वात न सांभलइ जी, तउ निवाजस किसो होइ ॥१॥दा०
मल्लि मन माहि राखइ नही जी, भगतजन वीनवइ जेह ।
कोड़ि परि राग जउ को करइ जी, तूं किम करइ सनेह॥२॥दा०
आदर मान न को दीयइ जी, गुनह बगस्यइ नही एक ।
आपणउ जाणि न करे पखउ जी, देह धर आवड़ी टेक ॥३॥दा०

भोलडो भगति करिवा भणी जी, आविस्यइ एकण वार ।
वार बीजी सहि नाविस्यइ जी, ताहरो भगत तुझ दुवार ।४।दा०
तउ पिण दुवार 'जिनराज' नइ जी, ओलगइ वड़ वड़ा भूप ।
अलख अगोचर तुं सदा जी, सकल तूं अकल सरूप ॥५॥द०

## ( २० ) मुनिसुव्रत जिन गीतम्

राग—सोरठ कडखानी

अधिका ताहरा हुंता अपराधी, ते पिण तइं हिज तार्‍या ।
अम्ह सरिखा सेवक अलवेसर, वेगुनही वीसार्‍या ॥१॥अ०॥
आथ दीयइ बाथां भरि एकां, अमरा पुर द्यइ एकां ।
मुझ वेला मुहडउ मचकोडी, बइठउ तारक ते कां ॥२॥अ०
सहु कोनइ जउ राखइ सरिखा, पडइ न को पचतावइ ।
जगगुरु ही जोवइ बिहु नजरे, तउ बलियउ दुख आवइ ॥३॥अ०
तार्‍या किता किता तूं तारिस, तारइ छइ पिण तूं ही ।
इण वेला जउ तूं अलसाणउ, बइसि रहुंलउ हूं ही ॥४॥अ०॥
भोल भगत दीयइ ओलभा, साहिब सहिता आया ।
मुनिसुव्रत 'जिनराज' मनाई, राखि लीयइ छत्र छाया ।५।अ०

## ( २१ ) श्री नमिनाथ जिन गीतम्

राग —

सइंमुख हुं तुम्हनइ न मिलो सक्यउ, तउ सी सेवा थाइ ।
दूर थकां कीधी न वरइ पड़इ, खबरि न द्यइ को जाइ ।१।स०
प्रवचन वचन सुधारस बरसतउ, आगलि परषद बार ।
समवसरण नयणे निरख्यउ नही, सजल जलद अणुहार ।२।स०

जिम जिम गुरुमुखि प्रभु गुण सांभलुं, तिम तिम तनु उलसंति
परमेसर पीहर प्रापति पखइ, परतिख केम मिलंति ॥३॥स०
सुख दुखनी पिण वात न का कही, बि घड़ी बइसी पास।
घाट कमाई पोता तणी, तउ किम पूजइ आस ॥४॥स०॥
समरि समरि रसना रस वस करइ, नमि गुण गान रसाल॥
श्री 'जिनराज' जनम सफलउ करइ,
इण परि इण कलिकाल ॥५॥स०॥

## ( २२ ) श्री नेमिनाथ जिन गीतम्

राग – रामगिरी

सांभलि रे सांमलीआ सामी, साच कहुं सिरनामी रे।
बात न पूछइ तुं अवसर पामी,
तउ स्यानउ अंतरजामी रे॥१॥सां०॥
आगलि ऊभा सेवा कीजइ, पिण तुं किमही ईन रीझ रे।
निसदिन तुझ गायउ गाइजइ,
पिण तिलमात्र न भीजइ रे॥१॥सां०॥
जउ अह्मनइ भवसायर तारउ, तउ स्युं जाइ तुम्हारउ रे।
जउ पोतानउ बिरुद संभारउ,
तउ कांइ न विचारउ रे॥३॥सां०॥
हुं स्युं तारु हुं तारक स्यउ, ईम छूटी पड़ी न सकस्यउ रे।
जउ अह्मनइ सेवक त्रेवड़िस्यउ,
तउ वात इयां मांहि पड़स्यउ रे॥४॥सां०॥
ओछी अधिकी वात वणाइ, कहतां खोड़ि न काइरे।
भगतवछल 'जिनराज' सदाई,
किम विरचइ वरदाई रे॥५॥सां०॥

## (२३) श्रीपार्श्वनाथ जिन गीतम्

राग-हासलानी जाति, मल्हार धन्याश्री

मन गमतउ साहिब मिल्यउ, पुरिसादाणी पासन रे।
परतिख परता पूरवइ, सफल करइ अरदासन रे ॥१॥
भविअण भावइ भेटीयइ, ले साथइ परिवारन रे।
आज विषम पंचम अरइ, सुरतरु नउ अवतारन रे ॥२॥भ०
जे मुझ सरिखा मानवी, आणइ मन सदेहन रे।
तेहनइ सेवक मूंकिनइ, समझावइ सुमनेहन रे ॥३॥भ०॥
जे समरण साचइ मनइ, करिस्यइ वार विचारन रे।
तेहनइ प्रभु पुठी रखउ, थास्यइ सानिध कारन रे ॥४॥भ०॥
कीजइ चोल तणी परइ, परमेमर मुं प्रीतन रे।
श्री 'जिनराज' मिल्या पछी, चढइन बीजउ चीतन रे ॥५॥भ०

## (२४) श्री वीर जिन गीतम्

राग-गउड़ी मल्हार

भविक कमल प्रतिवोधतउ, साधु तणइ परिवार।
गामागर प्रभु विचरतउ, मिलि न सक्यउ तिण वारो रे ॥१॥
चरम जिनेसरु, लीनउ सिवपुर वास।
सबल विमासण, केम करुं अरदास रे ॥च०॥२॥
हिव अलगउ जाई रह्यउ, तिहां किण किम अवराय।
चलतउ साथ न को मिलइ, किम कागल दिवराइ रे ॥३॥च०॥
वात कहुं ते सांभलइ, दूर थकउ पिण वीर रे।
पिण पाछउ उत्तर न दयइ, तिणमो मन दिलगीर ॥४॥च०॥

इम 'जिनराज' विचारतां, आव्यउ भाव प्रधान।
तिण तूं परतिख मेलव्यउ, हिव करि आप समान रे ।।५।।च०

## ( २६ ) कलश—

राग—धन्याश्री सुभ वहिनी पिउडो परदेशी

इण परि भाव भगति मन आणी, सुध समकित सहिनाणी जी ।
वर्त्तमान चउवीसी जाणी, श्री 'जिनराज' वखाणी जी ।।१।।इ०
जउ मूरति नयणे निरखीजई, जउ हाथे पूजीजइ जी।
जउ रसनाइ गुण गाइजइ, नर भव लाहउ लीजइ जी ।।२।।इ०
युगवर 'जिनसिंहसूरि' सवाई, 'खरतर' गुरु वरदाई जी ।
पामइ जिनवर ना गुण गाई, अविचल राज सदाई जी ।।३।।इ०
पहिली परति लिखाई साची, वारु गुरुमुखि वाची जी ।
समझो अरथ विशेषइ राचो, ढाल कहेज्यो जाची जी।।४।।इ०।।
केई गुरु मुख ढाल कहावउ, केई भावना भावउ जी ।
के 'जिनराज' तणा गुण गावउ,
चढती दउलति पावउजी ।।५।।इ०।।

।। इति श्री चउवीस जिन गीतम् ।।

# श्री विहरमान विंशति जिन गीतम्

## ( १ ) श्री सीमंधर जिन गीतम्

राग—कलहरो देशी-पोपट चाल्यउरे

मुझ हियड़उ हेजालुयउ, भाखर गिराइ न भीति ।
आवइ जावइ रे एकलउ, करिवा तुम्ह सु प्रीति ॥१॥
सीमंधर करिज्यो मया, धरिज्यो अविहड नेह ।
अम्हचा अवगुण जोइ नइ, रखे दिखाड़उ छेह ॥२॥सी०॥
तुम्हचइ भगत घणु घणा, अगाहूंतइ इक कोड़ि ।
अम्हची मीटि न को चढयउ, साहिब तुम्हची जोड़ि ॥३॥सी०
दक्षिण भरत अम्हे रहूं, पुखलावति जिनराज ।
कोइक दिन मिलिवा तणउ, दीसइ अछय अन्तराय ॥४॥सी०
दीधी दैव न पंखडी, आवुं केम हजूर ।
पिण जाणेज्यो रे वंदना, प्रह ऊगमतइ सूर ॥५॥सी०॥
कागलीयइ लिख कारिमो, कीजइ सी मनुहारि ।
अम्हची एहीज वीनति, आवागमन निवारि ॥६॥सी०॥
परम दयाल कृपाल छउ, करिज्यो अवसर सार ।
श्री 'जिनराज' इमु कहइ, मत मूंकउ वीसारि ॥७॥सी०॥

## ( २ ) श्री युगमन्धर जिन गीतम्

ढाल- १ सुण सुण वाल्हहा- २ अबला केम उवेखीये. नी देसी

सइं मुख हुं न सकूं कही, आडी आवइ लाज ।
रहि पिण न सकुं बांपजी, इम किम सीझइ काज रे ॥१॥

वीरा चांदला ! तुं जाइस तिरण देस रे ।
जुगमंधर भरणी, कहिजे मुझ संदेस रे ।।२।।वी०।।
तू अंतरजामी अछइ, जाणइ मन नी वात ।
तउ पिरण आस न पूरवइ, ए सी तुम्हची धात रे ।।३।।वी०।।
मइं तउ करिवउ मो दिसा, तुम्ह मुं निवड़ सनेह ।
फल प्रापति सारू हुस्यइ, पिरण मत दाखउ छेह रे ।।४।।वी०।।
तेहनइ कहि समझाइयइ, जे हुवइ आप अयारण ।
पिरण 'जिनराज' समउ अछइ, अवर न एवड़ जारण रे ।५।वी०

## ( ३ ) श्री बाहु जिन गीतम्

ढाल– करहइनी· मन मधुकर मोही म्हचउ०

बांह समापउ बाहु जी, जिम मो मन थिर थाइ रे ।
जिरण तिरण बांह विलंबतां, मान महातम जाइ रे ।।१।।बां०।।
सबलां नइ सरणइ थियइ, गंजी न सकइ कोइ रे ।
पाधरसी पाछल पड्यां, कारिज सिद्धि न होइ रे ।।२।।बा०।।
तुम सरिखउ थायइ वलू, करइ पखउ जगनाह रे ।
तउ नागुं सुपनंतरइ, हुं केहनी परवाह रे ।। ३ ।। बा० ।।
सरणागत वच्छल तुम्हे, हुं सरणागत सामिरे ।
जे मन मानइ ते करउ, स्युं कहीयइ ले नाम रे ।।३।। बा० ।।
जउ सेवक करि जारणस्यउ, तउ इतलइ ही मुझ राज रे ।
मीटइ ही मोटां तरणी, जीवीजइ 'जिनराज' रे ।।५।।बा०।।

## ( ४ ) श्री सुबाहु जिन गीतम्

ढाल—कर जोड़ो आगल रही ए जाति

सामि सुबाहु जिणिंद नउ, जइयइ मुख निरखेसन रे ।

सकल मनोरथ मालिका, तइयइ सफल करेसन रे ।।१।।
धरम जागरीया जागतां, समरता गुण ग्रामन रे ।
पाणी वलि एहवु रहथउ, माहरउ मन परिणामन रे ।।२।।ध०
अमीय समाणा बोलड़ा, बारह परषद साथन रे ।
सांभलि भव थी ऊभगी, व्रत लेइसु प्रभु हाथन रे ।।३।।ध०।।
जनम लगइ पासइ रही, भगति करिसु निसदीसन रे ।
तप जप संजम पालिसु, मन सुध विसवा वीसन रे ।।४।।ध०
आपण पइ जइ गोचरी, आणिसु सुद्ध आहारन रे ।
साधु सहु नइ साचवी, देइसु देह आधारन रे ।।५।।ध०।।
च्यारि करम चकचूरि नइ, पामिसु केवल नाणन रे ।
श्री 'जिनराज' पसाउलइ, चढिस्यइ बोल प्रमाणन रे ।।६।।ध०

## ( ८ ) श्री सुजात जिन गीतम्

ढाल—महिमागर नी जाति, ग्राज निहेजो रे दीसइ नाहलो
तूं गति तूं मति तू साचउ धणी, तूं बंधव तू तात ।
तुझ सम अवर न को मुझ वालहउ, समरूं सामि सुजात ।।१।तूं०
हरि हर ब्रह्मादिक आराधतां, न टलइ गरभावास ।
तिण इण भव कीधी मइ आखडी, सीस नमावण तास।।२।।तूं०
जे पोते परनी आसा करइ, ते स्यू पूरइ आस ।
संतोष्यउ पिण रांक न दे सकइ, अवचल लील विलास।।३।तूं०
अंतरगत मन सु आलोचता, ए कीधउ निरधार ।
तुझ विण देव न को बीजउ अछइ, शिवसुखनउ दातार ।४।तूं०
करउ महिर भव जलधि लहिर थकी, प्रवहण सम 'जिनराज'।
जउ कर ग्रहि सेवक नइ तारिस्यउ,तउ हिज रहिस्यइ लाज५तूं

## ( ६ ) श्री स्वयंप्रभ जिन गीतम्

देशी—नणदलनी जाति

सामि स्वयंप्रभू साभलउ, करिहु निवाज सकाइ । जगजीवन ।
विरुद गरीब निवाजनउ, जिम जग जस थिर थाइ ।ज०।१मा०
पोताना अरिअण हण्या, तिण अरिहंत कहंत ।ज०।
जउ मुझ अरिदल निरदलउ, तउ साचउ अरिहंत ।।ज०।।२सा०
तूं स्युं तारइ नेह नइ, जे सूधा अणगार ।ज०।
तारक विरुद खरउ करउ, तउ मुउ सरिखउ तार ।।ज०।३सा०
अंतरजामी माहरउ, तू किण कारण होइ ।ज०
अंतरगति लेवा भणी, न दियइ कागल कोइ ।ज०।।४।।सा०।।
नेह गहेला मानवी, भावइ तिम भासंति ।ज०।
भारी खम 'जिनराज' जो, केहनइ छेह न दिंति ।ज०।५।सा०

## ( ७ ) श्री ऋषभानन जिन गीतम्

देशी—आज घुरा हुँ धुंधलउ, ए जाति

मइं तउ ते जाण्यउ नही साहिब, जेसुं तुम्हचइ रंग ।
तउ ही छांडी न को सकइ, साहिब पाणीवल तुझ संग ।।१।।
कोड़ि गाने हेजालूये, हेले मुझ गुण गेह ।
फेरि हेलउ न को तइं दीयउ,
साहिब तूं साचउ निसनेह।।२।।को०
आदर मान न को दीयइ, साहिब करइ न का बगसीस ।
तउ पिण ऊभा ओलगइ साहिब,
इन्द्रादिक निसदीस ।। ३ ।। को० ।।

ए माहरउ ए पारकउ, साहिब न करइ कोइ विचार।
तउ पिण आवी नइ जुडइ, साहिब आगलि परषद बार।४।को०
सुख दुख पिण पूछइ नही, साहिब तउ पिण तुम्ह सु प्रीति।
ऋषभानन सहु को करइ, साहिब ए तुझ नवली रीति।५।को०
नयणे नयण निहालतां, साहिब मोहइ सहुअ समाज।
आपणपइ अलगउ रहइ, साहिब मोह थकी 'जिनराज'।६।को०

## ( ८ ) श्री अनन्तवीर्य जिन गीतम्

देशी—सदगुरु माहरइ नांदइ भेहीयो. २ नारी अब हमकु मोकलो.

अनंतवीरिज मइ ताहरउ, नाम सुण्यउ जिनराज।
हिव जिम तिम बल फोरवी, आपउसिवपुर राज ॥१॥अ०॥
जउ हूं जोऊं मो दिसा, तउ न मिलइ तिल मात।
पिण तो चीतवतां सहू, वरइ पड़ेसी वात ॥२॥अ०॥
जे मइ कीधी नव नवी, करणी कोडि प्रकार।
तिण हुंती प्रभु छोडवइ, तउ हुवइ छूटकवार ॥२॥अ०॥
भवसायर बीहामणउ, जिहां किण वाट न घाट।
तूं तारइ तउ हिज तरूं, सबलां ऊझड़ वाट ॥४॥अ०॥
छोरू सहिज उछांछला, कोडि विणासइ काम।
पिण मावीत न मिट सकइ, जिम तिम पूरइ हाम ॥५॥अ०॥

## ( ९ ) श्री विशाल जिन गीतम्

देशी—आदरि जीव क्षमा गुण आदरि

आपणपइ हूं आवी न सकूं, मूंक्यउ छइ परधान जो।
जउ साची सेवा सारइ, तउ राखेज्यो वान जी ॥१॥

मुझ मन तुझ चरणे लयलीनउ, जिम मधुकर अरविंद जी ।
पाणी वल पिण पास न छंडइ,लीणउ गुण मकरंद जी ।।२।।मु०।।
चपल पणइ चूकस्यइ तउ पिण, मत छोडावउ तीर जी ।
तू तर ऊतर आपइ त्रटकी, गरुआ हुवइ गंभीर जी ।।३।।मु०।।
बीजां नइ बगसीस करंता, मत मूकउ वीसारिजी ।
पंति वंचउ परहरउ पातक, अवर न छइ संसारि जी ।।४।।मु०।
वात सहू नउ ए परमारथ, सांभलि सामि विशाल जी ।
श्री 'जिनराज' निरास म करिज्यो,
करिजो का संभाल जी ।।५।।मु०।।

## (१०) श्री सूरप्रभ जिन गीतम्

देशी–मेघमुनि कांइ डम डोलइ रे

कीजइ छइ जेहना सहू जी, वचने वचन प्रमाण ।
ते जो आपणपइ मिलइ जी, तउ हुवइ कोड़ि कल्याण ।।१।।
सूरप्रभु अवधारउ अरदास, जिम तिम पूरउ मुझ आस ।।सू०।।
देई तीन प्रदक्षिणा जी, आणी अधिक जगीस ।
प्रभु आगलि ऊभउ रही, प्रश्न करूं दस वीस ।।२।।सू०।।
वलि पूछूं हिव केतलउ जी, भमिवउ छइ संसार ।
आंधी ना सटइ पड्या जी, भमतां नावइ पार ।।३।।सू०।।
पोतानी करणी पखइ जी, तारी न सकइ सामि ।
पिण वाटइ वहता सहू जी, पूछै कितलै गांम ।।४।।सू०।।
जिण दिन प्रभु दरसण हुस्यइ जी, लेखइ पड़स्यइ तेह ।
ते धन दिन 'जिनराज' ना जी, इण परि वउलइ जेह ।।५।।सू०।

## (११) श्री वज्रधर जिन गीतम्

ढाल-पंथीडानी

एक सबल मन नउ धोखउ टल्यउ,
लाधउ साहिब चतुर सुजाण रे।
जेहु भगति करिसु ते जाणिस्यइ,
वज्रधर केवलनाण प्रमाण रे ॥ए०॥१॥
दूर थकउ पिण जउ साचइ मनइ रे,
सुमरण करिस्युं वार बिचार रे।
तउ पिण ते अहल्यउ जास्यइ नहीं रे,
फलस्यइ भव भव कोड़ि प्रकार रे ॥ए०॥२॥
अंतरगति अंतरजामी लहै रे,
ते प्रभु साचउ सुख नउ बीज रे।
जे गुण नइ अवगुण जाणइ नही रे,
तेमुं निसदिन करिवउ धीज रे ॥ए०॥३॥
चूक पड़इ जउ किण ही बात नउ रे,
तउ पिण न धरइ तिलभर रीस रे।
तूसइ पिण कईयइ रूसइ नहीं रे,
ए मुझ प्रभुनी अधिक जगीस रे॥ ए०॥४॥
ते तउ कहीयइ नाह न कीजीयइ रे,
जेहनइ आठे पहर अंधेर रे।
श्री'जिनराज' अवर सुं मीढतां रे,
मेरु अनइ सरसव नउ फेर रे ॥ए०॥५॥

## (१२) श्री चन्द्रानन जिन गीतम्

ढाल-धरम हीयइ धरो

समाचारी जूजूई रे, आवइ मन संदेह ।
सो साची करि सरदहुं रे, सबल विमासग एही रे ॥१॥
चंद्रानन जिन, कीजउ कवण प्रकार रे ।
इण दुसम अरउ, मइ लाधउ अवतार रे ॥२॥चं०॥
आगम बल तेहवुं नहीं रे, ससय पडे सरीर ।
सूधी समझि न का पड़ं रे, भारी करमा जीव रे ॥३॥चं०॥
दृष्टिराग राता अछइ रे, केहनइ पूछूं जाइ रे ।
आपणपउ थापइ सहु रे, तिण मो मन डोलाई रे ॥४॥चं०॥
विहरमान जिन संभली रे खरिय मिलण मन खंत ।
हुवइ दरसण 'जिनराज' नउ रे, तउ भांजइ मन भ्रंत रे।५।चं०

## ( १३ ) श्री चंद्रबाहु जिन गीतम्

देशी—आवउ म्हारी सहिया गच्छपति वादिवा.

जोवउ म्हारी आई इण दिसि चालतउ हे,
कागलीयउ लिख दीजइ हे ।
अंतरजामी थी अलगा रह्या हे, कागल वाही कीजइ हे ।१जो०।
साहिबीयउ तउ छइ वइरागीयउ हे, फेर जबाब देस्यइ हे ।
पिण प्रभुनी सेवा मांहे रह्यां हे,
सहजइ काज सरेस्यइ हे ॥२॥जो०॥
साहिब नइ अम्हची खप का नथी हे, पिण गरज अम्हारइ हे ।
जउ साचा सा भगति कहावीयइ हे,
तउ भव जलनिधि तारइ हे ॥३॥जो०॥

साजणिया पिण दुरगति जे दीयइ हे, तिण थी दूर रहीजइ हे ।
छोडावइ जे गरभावास थी हे,
तिण सु ं सकति मलीजइ हे ।।४।।जो०।।
नामजपीजइ श्री चंद्रबाहु नउ हे, निसिदिन ध्यान धरीजइ हे ।
ते सलहीयइ जइ कर 'जिनराज' नउ हे,
जिण करि लेख लिखीजइ हे ।।५।।जो०।।

## ( १४ ) श्री भुजंगम जिन गीतम्

ढाल– १ श्री विमलाचल सिर तिलउ, २ दीवाली दिन आवियउ
सामि भुजंगम ताहरउ, नाम जपइ सहु कोइ ।
पिण तेहनी परि तइं तजी, तिण मुझ अचरिज होइ ।१।सा०।
तू ं सपगउ पग रोपिनइ, चाढइ बोलि प्रमाण ।
आगम वचनइ तू ं चलइ, न चलइ हीया त्राण ।।२।।सा०।।
तू ं गयवर गति चालतउ, न धरइ तिल भर बांक ।
मोर गरुड़ सेवा करइ, नाणइ केहनो सांक ।।३।।सा०।।
दो जीहउ पिण तू ं नही, न धरइ विष लवलेस ।
अमीय समाणे बोलडे, दयइ सहु नइ उपदेस ।।४।।सा०।।
अथवा नाम भुजंगम मइ, साच कहइ कविराज ।
अवर सहू सपलोटीया, तू ं मणिधर 'जिनराज' ।।५।।सा०।।

## ( १५ ) श्री नेमि जिन गीतम्

ढाल—१ पास जिणंद जुहारीयइ जी,२ वीर वखाणो राणी चेलणा जी
नेमि प्रभु माहरी वीनती जी, सांभलउ धरम धुरीण ।
फेरवु ं तुझ विचइ तेहवउ जी, को नही जाण प्रवीण ।।१।।
हु ं तुझ दास तू ं मुझ धणी जी, आपणइं सगपण एह ।

ते भणी स्यु कही दाखवु जी, जुगत जाणउ करउ तेह ।।२।।
भगत तुझ अवर द्वारांतरइजी, आस पिण पूजतां जाइ ।
आप विमासी नइ जोइज्यो जो, लाज ए केहनइ थाइ ।३।ने०
पारधियां पहड़इ नही जी, उत्तम एह आचार ।
निपट उवेख मूकइ नही जी, नेट कांइ करइ सार ।।४।।ने०।।
आपण ऊपरि जे रहइ जी, अवर करइ नही सामि ।
ते 'जिनराज' निवाजीयइ जी, आपणउ अवसर पामि ।।५।।ने०

## ( १६ ) श्री ईश्वर जिन गीतम्

ढाल—पास जिणंद जुहारिइय

ईसर जिन वइरागियउ, रागी थी अधिक दिवाजइ रे ।
जिण परि प्रभु वखाणियइ, ते परि सगली तुझ छाजइ रे ।१।ई०
तू क्रोधी क्रोधइ चढयउ, अरियणना कंद नकंदइ रे ।
अभिमानी सिर सेहरउ, तू चालइ आपणइ छंदइ रे ।।२।।ई०
मायावी माया रची, सहु को ना तू मन वंचइ रे ।
तू लोभी गुण मेलवी, लाख गाने ले संचइ रे ।।३।।ई०।।
सेवक पिण पोतइ तणा, तु जोवइ नजरि न देई रे ।
देई कान न साभलइ, किणहीनइ वात कदेई रे ।।४।।ई०।।
अलख अगोचर तू जयउ, किणही तुझ अंत न पायउ रे ।
भगतवछल जगराजीयउ,
जीतउ पिण 'जिनराज' कहायउ रे ।।५।।ई०।।

## ( १७ ) श्री वीरसेन जिन गीतम्

ढाल—वहिली हो वलए करेज्यो इए दिसइ.

मुझ नइ हो दरसण न्याय न तू दीयइ हो, नवलो छइ मुझ रीति ।

जेसुं हो तुम्हचइ निसदिन रमणउ हो,
माहरइ तिण सुं प्रीति ॥१॥
जेहनइ हो तइं वनवास दीयउ हुतउ हो,धरतउ नवि वेसास ।
तेहनइ हो आदर सुं तेड़ाविनइ हो, मइ राख्यउ छइ पास ॥२॥
जिण सुं हो कईयइ मीटि न मेलणउ हो,करतउ कुरुख सदीव ।
मइ तिण सुं हो एकारउ मांडियउ, लागउ माहरउ जीव ।३।
वयण न लोपइ तू पिण जेहनउ हो, काम काढूं पिण जेह ।
नाक नमिण पिण न करूं तेहनइ हो,परटि अछइ मुझ एह ॥४
मुझ करणो साम्हउ न जोइयइ हो, वीरसेन 'जिनराज' ।
पर दुख कातर विरुद विचारनइ हो, दरसण दे महाराज ।५।

## (१८) श्री देवजस जिन गीतम्

देशी – वेग पधारउ महलां थी

सइंमुख साहिबनइं मिल्या, फेर पड़इ कुजकोइ ।
ओलगड़ी अलगां रह्यां, संदेसड़े न होइ ॥१॥
देवजसा दरसण दीयउ, ए मुख खरी रुहाड़ि ।
अंगुली बल जिम तिम करी, एह प्रमाणइ चाड़ि ॥२॥दे०॥
जउ छोरुं करि जाणस्यउ, तउ पूरवस्यइ लाडि ।
अलवेसर इण वातनउ, मत को जाणउ पाड ॥३॥दे०॥
मन नी वात सहु कहुं, जउ भेटुं जगनाथ ।
कहिवउ तउ छइ मुझ वसू, करिवउ छइ तुम्ह हाथ ॥४॥दे०
वहती वात सहू करइ, पर पूठइ 'जिनराज' ।
पिण मुंहड़इ न मिटी सकइ, दीवानी हुवइ लाज ॥५॥दे०॥

## (१९) श्री महाभद्र जिन गीतम्

ढाल—मन मोहनीयइ नी देसी

लहि मानव अवतार, गुरु मुख त्रिविध त्रिविध व्रत ऊचरुं ।
न पलइ निरतिचारि, परभव नउ डर तिल भर नवि धरूं ॥१॥
ए प्रभु आगलि जे वीतग ते भाखीइ,
मनका सल्ल कूड़ कपट स्यउं राखियइ ।
पर अवगुण चिहुं माहि, आणी सांक न कामइ भापतइ ।
दीधा कूड़ कलंक, पोतानइ स्वारथ अण पूजतइ ।२।प्र०॥
द्यूं पर नइ उपदेस, आगमने वचने अति आकरुं ।
जाणइ लोक महंत, पिण पोतइ ते मूल न आचरूं ॥३॥प्र०॥
विनडइ च्यार कपाय, ते परि हुं कहि न सकूं लाजतउ ।
सद्गति करणी सार, दीसइ छइ अलगी प्रभु आजतउ ॥४॥प्र०
एक अछइ आधार, सरदहणा साची प्रभु ऊपरइ ।
महाभद्र 'जिनराज' ते प्रभु जे सेवक नइ ऊधरइ ॥५॥प्र०॥

## (२०) श्री अजितवीर्य जिन गीतम्

ढाल—सुखदाई रे सुखदाइ रे—ए देशी

मिलि आवउ रे मिलि आवउ रे,
श्रीअजितवीरज गुण गावउ रे ॥मि०
अति सुस्वर सधव सहेली रे, मन मेलू भगति गहेली रे ।
मिथ्यामत दूर रहेली रे, बइसउ दस पांच महेली रे ॥१॥मि०
परतिख प्रभु नयण न दीसइ रे, मेलउ न दीयउ जगदीसइ रे ।
पर पूठइ ध्यान धरीसइ रे, तउ पिण भव जलधि तिरीसइ रे।२मि.
रावण वीणा धरि खंधइ रे, गुण गातउ विविध प्रबंधइ रे ।

तूटी तांतइ नस संधइ रे, तिण गोत्र तीर्थंकर बंधइ रे ।।३मि०
चित्त भगति वसइ पूरीजइ रे, तउ असुभ करम चूरीजइ रे ।
शिवपुर नइ हाथउ दीजइ रे,मानव भव लाहउ लीजइ रे॥४मि.
ते हिज जीहा सलहीजइ रे, जिण प्रभु नउ सुजस कहीजइ रे।
'जिनराज' सखाई कीजइ रे,मनवंछित सुखपामीजइरे ।।५मि.

## (२१) श्री बीस विहरमाण जिन गीतम्

ढाल— लोक सरूप विचारो ए देशी

वीस जिणेसर जगि जयवंता जाणियइ रे, अढीदीप मझार।
धन ते गामागर पुर प्रभु विचरइ जिहां रे,
साधु तणइ परिवार ।।१।।वी०।।
वासुदेव बलदेव भगति नित साचवइ रे, लहिवा भवजल तीर।
चउरासी लख पूरब सहुनउ आउखउ रे,
गुण गरुआ गभीर ।।२।।वी०।।
वृष लांछन सोभित तनुनी अवगाहना रे,पणसय धनुष प्रमाणि।
समवसरण बारह परषद प्रतिबोधता रे,
जगगुरु अमृत वाणि ।।३।।वी०।।
धन धन ते जीहा जिण प्रभु गुण गाइयइ रे,आणी मन आणंद।
धन धन ते दिन जिण दिन भेटीयइ रे,
विहरमाण जिणचंद ।।४।।वी०।।
'खरतर' गच्छ युगवर 'जिनसिंह सूरिद' नउ रे,
सीसइ धरीयइ जगीस ।
श्री 'जिनराज' वचन अनुम रइ संथुण्या रे,
विहरमाण जिन वीस ।।५।।वी०।।

इति श्रीजिनराजसूरि कृत बीस विहरमान जिन गीतम्-

# श्री ऋषभादि तीर्थंकर गीत

## श्री ऋषभदेव बाललीला स्तवन

मन मोहन महिमानिलउ रे, जीवन प्राण आधार रे नान्हड़ीया।
जोवत नयन थकित भए रे, सुंदर 'रिषभकुमार' रे ना०॥१॥
तेरी पूतम लेउ वलईया, जीवउ तेरे बहिनरु भईआ।
जंपइ मरुदेवा मईआ, मेरे अंगणि रे खेलण आवि रे ना०॥
मेरउ दूध न तूं पीयै रे, अमृत रस लयलीन रे ना०
मेरइ मनि तूं ही वसइ रे, ज्युं रयणायर मीन रे ना०॥२॥
राम रोम तनु हुलसइ रे, सूरति पर बलि जाउ रे ना०
कबही मोपइ आईयइ रे, हूं भी मात कहाऊं रे ना०॥३॥
पगि घूघरड़ी घमघमइ रे, ठमकि ठमकि धरइ पाउ रे ना०
बाँह पकरि माता कहइ रे, गोदी खेलण आउ रे ना०॥४॥
चिवुकारइ चिपटी दीयइ रे, हुलरावइ उर लाय रे ना०
बोलइ बोल जु मनमनारे, दंतिआ दोइ दिखाइ रे ना०॥५॥
तिलक बणावइ अपछरा रे, नयणा अंजन जोइ रे ना०
काजल की विंदी दियइ रे, दुरजन चाख न होइ रे ना०॥६॥
सोहइ चउ सिर सेहरउ रे, चंपक लाल गुलाल रे ना०
सीस मुगट रतने जड़यउ रे, भाल[1] तिलक सुविसाल रे ना०॥७

---

१ कुंडल झाक झमाल

घाट घड़ी रतने जडी रे, कनक दड़ी ले उट रे ना०
चोट करइ नीकइ तकी रे धोटांकइ सिर दोट रे ना०॥८॥
चटकइ चटपट चालवइ रे, वंगू लट्टू फेरि रे ना०
रंग रंगोली चक्कड़ी रे, फेरइ नीकइ घेर रे ना०॥६॥
बहिनी लूण उतारती रे,अइसइ द्यइ आसीस रे ना०
चिरजीवे तूं नानडा रे, कोड़ाकोड़ि वरीस रे ना०॥१०॥
बाललीला जिनवर तणी रे, सबही कइ मन भाइ रे ना०
'राजसमुद्र' गुण गावतां रे, आणंद अंग न माइ रे ना०॥११॥

## श्री ऋषभ जिन कर संवाद

राग—सामेरी

रिपभ जिन निरसन रान विहारो
पाणि परस्पर वाद मंडाणउ, तिण भोजन विधि वारी ॥१रि०
कनक दान मइं वंछित दीनउ, जगमइ सोह वधारी ।
अंत पंत ऊन मागत लज्जा, क्युं करि रहइ हमारी ॥२॥रि०
जिनवर पूजा लगन थापना, भोजन परणण नारी ।
तिलक करण भूपति अभिषेकइ, इहां तउ हूं अधिकारी ॥३रि०
इम उत्तम कारिज बहु कीने, तिण ए विधि न पियारी ।
दक्षिण कर वामइ प्रतइ युं कहइ, तुं होइ भिक्षाचारी ॥४॥रि०
वाम कर तब अइसइ बोलत, तुं झूठउ अहंकारी ।
जोतिष मूल गणत अभ्यासइ, मुझ अधिकाई सारी ॥५॥रि०
जग जीवन कारण कण वावण, लणिवा हुं उपगारी ।
जब संग्राम मुखइ भागइ तुं, तब हुं रक्षाकारी ॥६॥रि०॥

वच्छुर लगि वादइ जिन जंपइ, तुम्ह झगरउ मुझभारी ।
आदिदेव कीने दोऊ राजो, बहु विधि जुगति दिखारी ।७।रि०
दिग्वर धीर समीर ज्यु विहरत, प्रभु आए पदचारी ।
श्री श्रेयांसकुमर पडिलाभे, पूरब जा(ति संभारी) ॥८॥रि०

## श्री विमलाचल आदीश्वर स्तवन

श्री 'विमलाचज' सिर तिलउ, आदीसर अरिहंत ।
युगला धरम निवारण, भय भंजण भगवंत ॥१॥श्री०॥
मुझ मन ऊलट अति घणउ, सो दिन सफलगिणेस ।
सामी श्री रिसहेसरू, जब नयणे निरखेस ॥श्री०॥२॥
जगम तीरथ विहरता, साधु तणइ परिवार ।
आदि जिणंद समोसरया, पूरब निवाणु वार ॥श्री०॥३॥
अचिरा विजयानंदन, जग बंधव जग तात ।
इण गिरि चउमास रह्या, थिवर कहइं ए बात ॥श्री०॥४॥
पामइ शिवसुख सासता, गणधर श्री पुंडरीक ।
पुंडरगिरि तिण कारणइ, भगति करउ निरभीक ॥श्री०॥५॥
नमिनइ विनमि सहोदरू, विद्याधर बलवंत ।
शत्रुंजय शिखर समोसरया, जे गिरुआ गुणवंत ॥श्री०॥६॥
थावच्चो मुनिवर शुक, सहस सहस परिवार ।
'पंथक' वचने जाजियउ, सो सेलग अणगार ॥श्री०॥७॥
'पांडव' पांच महाबलो, सुणि यादव निरवाण ।
ते सीधा सिद्धाचलइ, सुरवर करइ वाखण ॥श्री०॥८॥

इम सीधा इण डूंगरइ, मुनिवर कोडाकोडि ।
पाजइ चढतां सांभरइ, ते प्रणमूं कर जोड़ि ॥श्री०॥६॥
जे बाघणि प्रतिबूझवी, ते दरवाजइ जोइ ।
गोमुख यक्ष कवड़ मिली सानिधकारी होइ ॥श्री०॥१०॥
विधि स्युं जे यात्रा करइ, सुरनर सेवक तास ।
'राजसमुद्र' गुण गावतां, अविचल लील विलास ॥श्री०॥११॥

**शत्रुंजय ( विमलगिरि ) तीर्थ स्तवन**

सांभलि हे सखि सांभलि मोरी बात चालउ हे,
सखि चालउ तीरथ परसरइ ।
साचा हे सखि साचा साजण तेह साथइ हे,
सखि साथइ जे इण अवसरइ ॥१॥
तीरथ हे सखि तीरथ 'विमलगिरिंद',
देखण हे सखि देखण तरसइ आखड़ी ।
किम करि हे सखि किम करि आयउ जाय,
दीधी हे सखि दीधी देव न पांखड़ी ॥२॥
मारगि हे सखि मारगि सहियर साथि,
चालण हे सखि चालण पगला चलवलइ ।
भेटण हे सखि भेटण आदि जिणंद,
मो मनि हे सखि मो मनि निसदिन टलवलइ ॥३॥
सूती हे सखि सूती पड़ूं जंजाल,
जागुं हे सखि जागुं भेट हुई सही ।
हेजइ हे सखि हेजइ नयण भराइ,
जागुं हे सखि जागुं तब दीसइ नहीं ॥४॥

झीणो हे सखि झीणो ऊडइ खेह,
मइला हे सखि मइला कापड़ थाइस्यइ ।
निरमल हे सखि निरमल थास्यइ देह,
पातक हे सखि पातक मल सवि जाइस्यइ ॥५॥
सो हिज हे सखि सो हिज सफल विहाण,
जिण दिण हे सखि जिणदिन डुंगर फरसीयइ ।
लीजइ हे सखि लीजइ लखमीं लाह,
सोवन हे सखि सोवन दाने वरसियइ ॥६॥
दीसइ हे सखि दीसइ आहीठाण,
तिम तिम हे सखि तिम तिम आदिल संभरइ ।
प्रभणइ हे सखि प्रभणइ 'राजसमुद्र',
अनुपम हे सखि अनुपम ते सिव सुख वरइ ॥७॥

## शत्रुंजय (विमलगिरि) तीर्थ स्तवन

मन मोह्यउ हे सखी गरुयइ 'विमल' गिरिंद,
खांति करी धन खरचीयइ ।म०।
आदिल आदि जिणिंद, चंदन केशर चरचीयइ ।म०।१।म०।
'पालीताणइ' पाजि, ललितासर लहिरा लियइ ।म०।
माता श्री मरुदेवि, दरिसण सुख संपति दीयइ ।म०।२।
चौमुख चंवरी च्यार, 'खरतर वसही' देखियइ ।म०।
पगला राइण पास, भाव भगति धर भेटियइ ।म०।३।
जिहां सीधा मुनि कोड़ि, चंगी चेलन तलावड़ी ।म०।
अनुपम उलखाड्डु झोल, सिधवड़ नी साखा वड़ी ।म०।४।
जूना अइठांणइ, जुगतइ फिर फिर जोइयइ ।म०।
पभणइ 'राजसमुद्र', मल कसमल सब धोइयइ ।म०।५।

## विमलगिरि (श्री ऋषभदेव) वधामणा गीतम्

राग—गुंड मल्हार

भाव धरि धन्य दिन आज सफलउ गिणुं,
आज मई सजनी आणंद पायो ।
हरख धरि नजरि भरि 'विमलगिरि' निरख करि,
कनक मणि रजत मोतिन वधायउ ॥१॥
मन रंगि उमंग धरि पंथ नितु पूछतां,
धन्न दोउ चलण जिण चलत आयउ ।
आज धन दीह जागी सुकृत की दशा,
आज धन जीह जिण सुजस गायउ ॥२॥
दूर दुरगति टरी यात्र विधि सुंकरी,
पुण्य भंडार पोतइ भरायउ ।
बदत मुनि 'राज' मनरंग सुरगिरि शिखरि,
ऋषभ जिणचंद सुरतरु कहायउ ॥३॥

## श्री विमलाचल यात्रा मनोरथ गीत

राग—धन्यासी

बरग बिछोहउ परिहरी, ध्यान धरइ निस दीस रे ।
पिण 'विमलाचल' वेगलउ, किम पूरवुं जगदीश रे ॥१॥
सुगुण सुगुण मो मन करहला, काइं सचीतउ आज रे ।
जउ मुझ वखत लिखित अछइ, तउ भेटिसु जिनराज रे ॥२॥
श्राम जपे जगगुरु तणउ, हीया म छंडे आस रे ।
अवसरि वंछित पूरिसुं, करिजे लील विलास रे ॥३॥
खायइ संबल दे करी, सहगू मेलि सुसाथ रे ।

जउ चालिस तूं मारगइ, तउ भेटिसु जगनाथ रे ॥४॥मु०॥
सोरठ देश सरस अछइ, चरिजे नागरवेलि रे।
रिषभ चरण लय लाइनइ, करिजे नव नव केलि रे ॥५॥मु०॥
कड़ुआ जंगल रूखड़ा, जे फल मेल्हथा चाखि रे।
ते तुं मत संभारिज्ये, सुरतरु सुं चित राखि रे ॥६॥ सु०॥
रयणि सचेतन तुं रहे, दिन म करे वेसास रे।
ऊभा दुरजन मूं किनइ, जास्यइ सही निरास रे ॥७॥सु०॥
देखो नइ पग मांडिजे, मूकि मूल सभाव रे।
अंतर जामी मुं सदा, राखे अविहड़ भाव रे ॥८॥सु०॥
पांच महाजन वसि करी, लाख वधारे लाज रे।
वइगउ फिरि घरि आविजे, इम जंपइ 'जिनराज' रे ॥९॥ सु०॥

## श्री विमलाचल विधि यात्रा गीत

राग—आशा

सुण सुण वीनतड़ी प्रिउ मोरा रे ललना
तीरथ भेटण विलंब न कीजइ,
इतना करूं निहोरा हो ललना ॥१॥
'विमलाचल' निज नयण निहारउ,
यात्रा करण पाउधारउ हो ल०।
आदिल आदि जिणंद जुहारउ,
दुरगति दूर निवारउ हो ल०॥२॥
प्राशुक एक भगत आहारी, सकल सचित परिहारी हो ल०।
मूकी निज मन हूंतो नारी, पंथ चलउ पदचारी हो ल० ॥३॥
पूजा करहु त्रिकाल संभारी, सूधा समकित धारी हो ल०।

काल उभय पड़िक्कमणउ सारी, रातइ भूमि संथारी हो ल०॥४॥
साथइ सद्गुरु पंचाचारी, श्रावक पर उपगारी हो ल० ।
गायन जिनवर ना सुविचारी, गुण गावैं विसतारी हो ल०॥५॥
गाम जीयइ जिणहर जाणीजइ, भावइ ते प्रणमीजइ हो ल० ।
प्राशुक दान सुपात्रइं दीजइ, नर भव लाहउ लीजइ हो ल०।६।
यात्र करउ इम अवसर पामी, तउ साचा शिवगामी हो ल० ।
'राजसमुद्र' प्रभु अंतरजामी, श्री रिसहेसर सामी हो ल०॥७॥

## श्री शत्रुंजय यात्रा मनोरथ गीत

सखी आणु हे नालेर रारूंख कै, आणु सदाफल ऊजलो ।
हूं पूछुं हो सखि जोइस सुजाण कै, आपइ मुहूरत अति भलो। १
सखि मो मन हे ऊमाहो एह कै, जाणूं विमलगिरि जाइयइ
भेटीजइ हो सखि नाभि मल्हार के,……… (अपूर्ण)

## आलोयणा गर्भित
## श्री शत्रुंजय स्तवनम्

कर जोड़ी इम वीनवुं, मोरा सामी हो सांभलि अरदास ।
बात कहीजइ तेहनइ, जे पूरइ हो प्रभु मन नी आस ॥क०॥१॥
'विमलाचल' सिर सेहरउ, मरुदेवा हो नंदन अवधारि ।
मुंकी मननो आमलउ, आलोवुं हो पातक संभारि ॥क०॥२॥
जनम मरण कीधा घणा, ते कहताँ हो किम आवइ पार ।
जे वेदन पामी तिहाँ, ते जाणइ हो तूंहिज करतार ॥क०॥३॥
आरिज देसइ अवतरी, मइ लाधउ हो सद्गुरु संजोग ।
छांडया मइ अछता छता, कायायइ हो पिर्णविहि संजोग ।क०।४।
जाण अजाण पणइ करी, मइ लीधउ हो संयम नो भार ।

ते हिव सूधउ नवि पलइ, किम कीजइ हो ए सबल विचार।क०।५।
लोक अवर जाणइ नही, तूं जाणइ हो सहु कोनो धात ।
तुझ अगलि स्युं राखीयइ,
कर जोड़ी हो कहुं वीतक वात ।।क०।।६।।
त्रिविध त्रिविधि व्रत ऊचरी, गुरु साखइ हो दिन मांहि छबार।
हेलायइं भांज्या वली मुझलागा हो केता अतिचार ।।क०।।७।।
आप सवारथ राचतइ, मन मांहे हो नाणी पर पीड़।
जीव विचारउ जाणिस्यइ,
जब थास्यइ हो भमतां भव भीड़।।क०।।८।।
पर अवगुण अछता कह्या, गुण लेवा हो ते तउ रहउ दूर।
अछता गुण पोता तणा, विस्तारी हो कहुं लोक हजूर।।क०।९।
परधन लीधउ अपहरी, मइ राखी हो थांपणि करि कूड़।
दुरजन वचन सह्या नही,
किम थास्यइ हो निज करम नउ सूड ।।क०।।१०।।
जउ हूं काया वसि करूं, चित चूकइ हो तउ पणि ततकाल।
पांचे इंद्रिय मोकला, मोरा सामी हो ए दूसम काल।।क०।।११।।
विषयामिष रस नइ वसइ, लपटाणइ हो मन मीन* दयाल।
विविध नरक तिरजंचनी,
न विमासी हो वेदन विकराल ।।१२।।क०।।
चंचल नयण करइ घणी, चपलाइ हो पर नारि निहालि।
व्यापक दोष वचन तणा,
जे लागइ हो ते न सकुं टालि ।।क०।।१३।।

* दीन

कीधी काम विटंबना, मद मातइ हो जे मइ जिनराज ।
हिवणां साहिब आगलइ,
ते कहितां हो मुझ आवइ लाज ॥क०॥१४॥
वात कहइ जे पाप नी, तिण साथइ हो करूं निवड़ सनेह ।
जउ को सीखामणि दीयइ,
तउ जाणु हो वाल्हउ वइरी एह ॥क०॥१५॥
माया मंडी कारिमी, पर वंच्या हो मइ अरि अनुकूल ।
परगह मेल्यउ कारिमउ,
न विचारयउ हो ए अनरथ मूल ॥क०॥१६॥
छती सकति मई गोपवी, तप वेला हो अंगि* आलस आण ।
बालक जिम रस लोभीयइ,
पचखी नइ हो भागा पचखाण ॥क०॥१७॥
चटकइ रीस चड़इ घणी, गुण पाखइ हो कीधउ अभिमान ।
आपणपणउ सरसव समउ,
चिहुं माहे हो कहुं मेरु समान ॥क०॥१८॥
आगम विरुध वचने करी, हठ मांडी हो मइ थाप्या तेह ।
बगसि गुनह ए बापजी,
हिव मोसुं हो धरि निवड़ सनेह ॥१९॥
धर्माचारिज हित भणी, जे आपइ हो सीखामणि सार ।
ए मुझ पापी प्राणियउ,
मन मांहे हो करइ अवर विचार ॥क०॥२०॥
बोल्या विद्यागुरु तणा, अभिमानइ हो जे अवरणवाद ।

* मइं

सालइ साल तणी परइ,

पर्रनिदा हो तिम जीभ सवाद ॥क०॥२२॥

द्रप करम किम कीजीयइ, इम दीधा हो पर नइ उपदेस।

आपणपइ ते आचरथा,ते जाणइ हो तूं हिज रिसहेस ।क०२३।

तीने रतन अमूलक मइ, पाम्या हो वंछित दातार।।

ते जिम जिम मुझ सांभरइ,

किम थास्यइ हो सामीछूटकवार ॥क०॥२४॥

लोकालोक प्रकाशक, प्रभु पासइ हो वर केवलनाण।

तिरण कारणि जगजीवन,

कहुं केतउ हो तूं आरपइ जाण ॥क०॥२५॥

हिव सरणागत ताहरइ, हूं आयउ हो निज नयण निहारि।

भवसागर बीहामणउ, तिण हूंती हो मुझ पार उतारि ।क.२६

इम 'विमल' भूधर कणयगिरि सिरि, सामि सुरतरु सारिखउ।

प्रगटियउ परमाणंद पेखी, पुहवि पूगउ पारिखउ ॥

युगपवर श्री 'जिर्नसिहसूरि' सीसइ,'राजसमुद्रइ' सुभ मनइ।

अरदास आदि जिणंद आगलि, कही मगसिर शुभ दिनइ ।२७।

॥ इति श्री आलोयण गर्भित आदिनाथ स्तवनम् ॥

## श्री आबू तीर्थ स्तवनम्

सुकलीणी प्रिउ नइ कहइ, एक सुणउ अरदास लाल रे।

चालउ तीरथ भेटिवा, पूरउ मुझ मन आस लाल रे॥१॥

आबू शिखर सुहामणउ, ऊंचउ गाउ सात लाल रे।

बारह पाजरची तिहां, रिसियइ एकण राति लाल रे॥२॥

'विमलविहार' जुहारियइ, सामी श्री 'रिसहेस' लाल रे।
'भीमगवसही' भाव सुं, कब नयणे निरखेस लाल रे ॥३॥
चउमुख तीन त्रिभूमिया, 'लूणगवसही' जौइ लाल रे।
कोरणियइ मन मोहीयउ, नवलख आला दोइ लाल रे ॥४॥
तीन महिश सर संधियइ, नरवर धार पमार लाल रे।
मंदाकिनी पासइ अछइ, अनुपम राय विहार लाल रे ॥५॥
'अचलेसर गढ ऊपरइ, चउमुख प्रतिमा बार लाल रे।
बीजा बिंब जुहारिवा, हीयड़इ हरख अपार लाल रे ॥६॥
पगलो डुंगर फरसीयइ, पातक दूर पुलाइ लाल रे।
'राजसमुद्र' भगतइ भणइ,समकित निरमलथाइ लालरे ॥७॥

## श्री गिरनार तीर्थ यात्रा स्तवन

मोरी बहिनी हे बहिनी म्हारी।
मो मन अधिक उछाह हे, हां चालउ तीरथ भेटिवा म्हा०॥
संवेगी गुरु साथ हे, हां तेड़ीजइ दुख मेटिवा ॥१म्हा०॥
चढिसुं गढ गिरनार हे, हां साथइ सहियर झूलरइ ॥म्हा०॥
सजि वसन शृंगार हे, हां गलि झाबउ मकथूल रउ ॥२॥म्हा०
राजल रउ भरतार हे, हां जादव नंदन निरखिसुं ।म्हा०।
पूजा सतर प्रकार हे, हां करिसुं हियड़इ हरखिसुं ॥३॥म्हा०
अदबुद आदि जिणिंद हे, हां "खरतरवसही" जोइसुं ॥म्हा०
अमियझरइ श्री पास हे, हां मल कसमल सवि धोइसुं ।४।म्हा०
तीन प्रदक्षिण देह हे, हां बीजा बिंब जुहारिसुं ॥म्हा०॥
गरुयउ गजपद कुण्ड हे, हां इद्रागम संभारिसुं ॥५॥म्हा०॥

चढिसुं साते टुंक हे हां, लाखावन सहसावनइ ।म्हा०।
मेघ मंडप जल ठाम हे हां, देखीसुं द्ध सुभ भावनइ ।६म्हा०
झूमवियउ रहनेमि हे हां, तेह गुफा राजुल तणी ।म्हा०।
करिसुं सफल जमार हे हां, बोलइ 'राजसमुद्र' गणी।७।म्हा०

## श्री बीकानेर मण्डन चौबीसटा आदिनाथ गीतम्

चालउ हिव चउवीसटइ, मुझ मन एह रुहाड़ि ।
पोसह व्रत उजवालियइ, करि जिणहर परवाड़ि ॥
परवाड़ि करिसुं चतुर चउविह, संघ साथइ माल्हतौ ।
मन मेलि भेली नव सहेली, गीत अभिनव गावती ।।
जिण भवण सुरगिरि सामि सुरतरु सेवतां कसमल कटइ ।
युगवर जिर्णसिंघसूरि साथइ चालउ हिव चउवीसटइ ।।१।।
तीन निसीही साचवी जिणवर भुवण दुवारि ।
देई तीन प्रदक्षिणा आगम वयण विचारि ।।
सुविचारि तीन प्रणाम त्रिकरण सुद्ध भूमि पमज्जणा ।
तिम त्रिदिश निरखण विरति परिहरि चउरासी आसातना
निज नयण निरखउ नाभि नंदण अवर पड़िमा नव नवी ।
संभारि दश त्रिक पांच अभिगम यथा जोग साचवी ॥२।।
दक्षिण कर जिनवर तणइ नर वाम करि नारि ।
देव जुहारण अवसरइ एह अछइ अधिकार ॥
अधिकार बारह सुपरि पण प्रणिपात दंडक पिण कही ।
श्री संघ सुविहित सुगुरु साथइ देव वंद्या गहगही ।
मन रली हुंति फली ते मुझ सहू 'राजसमुद्र' भणइ ।

पामियइ अविचल परमपद मुख दरसणइ जिणवर तणइ ॥३॥
इति श्री चउवीसटा गीतम्

**श्री बीकानेर मंडन सुमतिनाथ (भांडासर) गीतम्**

चउमुख तीन त्रिभूमिआ, नलिनी गुल्म समान।
ऊंचउ शिखर मुहामणउ, मेरु शिखर समान ॥१॥म०॥
मरुमण्डल सिर सेहरउ, "वीकमपुर" सिणगार।
'भांडइसाह' करावियउ, सुमति जिणंद विहार ॥२॥म०॥
भुवण सरिस भुवणंतरइ, भवणंतर नवि दीठ।
तिण रंग लागउ माहरइ, जाणे चोल मजीठ ॥३॥म०
भावइ भोली भामिनी, गउख गावइ गीत।
वचन विलास सफल करइ, चउमुख लाइ चीत ॥४॥म०॥
जिनवर नयण निहारतां, प्रगटयउ परमाणद।
'राजसमुद्र' मुनिंदर भणइ, जिणवर सुरतरु कंद ॥५॥म०॥

**श्री वासुपूज्य स्तवनम्**

बहिनी एक वयण अवधारउ, जिणवर भुवण पधारउ रे।
श्री वासुपूज्य जिणंद जुहारउ, बिंब अवर संभारउ रे ॥१॥बा०
जयणा सुं मारग चालीजइ, विकथा मूल न कीजइ रे।
दुरमति तिमिर जलंजलि दीजइ, नरभव लाहउ लीजइ रे ब०।२
जिम जिम मोहन मूरति दीसइ, हीयडउ हेजइ हीसइ रे।
हिव चउगइ जलरासि तरीजइ,
ध्यान धरउ निसि दीसइ रे ॥ब०॥३॥
अनुपम समता साकर कूजउ, इण सम कोइ न दूजउ रे।
चाहउ भविअण मुगति वधू जउ, तउ प्रहसम प्रभु पूजउ रे ।४।ब०

आइ मिलइ जउ हीरउ जाचउ, काच सकल मत राचउ रे।
'राजसमुद्र' साहिब ए साचउ, नयणे निरखी नाचउ रे।६।ब०

## श्री बीकानेर मण्डन नमिनाथ स्तवनम्

श्री 'नमिनाथ' जुहारियइ, मुगति रमणि उर हार लाल रे।
साचउ साहिब सेवीयइ, वंछित फल दातार लाल रे ॥श्री॥१॥
देव अवर सकलंक जे, ते मुझ मन न सुहाइ लाल रे।
सुरतरु अंगणि जउ फलइ,
कवण कनकफल खाय लाल रे ॥श्री॥२॥
धन मंत्रीसर 'करमसी' अविचल राख्यउ नाम लाल रे।
अवसर लाधइ आपणइ, कीधउ उत्तम काम लाल रे ॥श्री॥३॥
'बीकमपुर' सिर सेहरउ, निरुपम नवल विहार लाल रे।
भवियण नयणे निरखियइ,
ऊजलगिरि अणुहार लाल रे ॥श्री०॥४॥
जिणवर ना गुण गावतां, मन धरि भाव विसेस लाल रे
गोत्र तीर्थंकर बांधीयइ, 'राजसमुद्र' उपदेस लाल रे ॥श्री०॥५।

## श्री नेमिनाथ चतुर्मासकम्

राग - मल्हार

श्रावण मइ प्रीयउ संभरइ, बूंद लगइ तनु तीर।
खरीअ दुहेलोघन घटा, कवण लहइ पर पीर ॥
पर पीर जाणत पापी, पपीहउ प्रीउ प्रीउ करइ।
ऊमई बाहर घटा चिहु दिसि, गुहिर अंबर घर हरइ ॥
दामिनी चमकत यामिनी भर, कामिनी प्रीउ विण डरइ।

घन घोर मोर कि सोर बोले, श्याम इण रितु संभरइ ।।१।।
दूभर निशि भादू तणी, यादू विण क्युं जाइ ।
प्रेम पियालउ पीजीयइ, घन वरसइ झरु लाइ ।
झरु लाइ वरषइ सबहि हरषइ, अबहि राजुल पर वसइ ।।
तरफरइ नींद न परइ इक छिनु, नाह नयनन तुमइ वसइ ।
लोचन उनींदे मिलइ कबही सुपनि प्रीउ संगति वणी ।
जब झबकि जागूं तब न दीसइ दूभर निसि भादू तणी ।।२।।
संदेसउ सखि पाठवउ, आयउ मास कुमार
राति दिवस कइ कूकणइ, कबहु लगइ पुकार
पोकार प्रीउ दरबार करिओ, झूठ दोस पसू दियउ
दिल मांझि सुगति वधू वसी, तिण मोहनी मोहन कियउ
निसि कुसुम सेज निहेज सूती, दहइ ससि पावक नवउ
संदेस साचइ नेमि राचइ, सो सखी मिलि पाठवउ ।।३।।
कातिक रीति भई नई, उलटयउ विरह अगाध
राजुल वलि वलि वीनवइ, कउण कीयउ अपराध ।
अपराध विण परिहरइ यादव, कउण वात कहीजियइ
इक पाल मइ सउ वार सालइ, कंत विण क्युं जी जीयइ
इक पखउ क्युं करि नेह निवहइ, वइरागिणी राजुल भई
सिवमहल 'राजसमुद्र' प्रभु सुं, प्रीति तहांजौरी नई ।।४।।

## श्री नेमिनाथ गीतम्

राग—सोरठी

तउ तुम्ह तारक यादुराय जहु मोहि तारउ,
धरिहूं निसि दिन ध्यान तिहारउ ।।या०।।१।।

तबहि गरीब निवाज विराजउ,
हम से निज भगत निवाजउ ।।या०।।२।।
तेउ अरिगंजण मो मन रंजउ,
जउ सेवक से अरिअण गंजउ ।।या०।।३।।
जउ अंतरगति न लहउ सामी,
तउ तुम्ह कइसे अंतरजामी ।।या०।।०।।
जउ जाणउ 'जिनराज' हमारउ,
तउ मोहि करम निजरि निहारउ ।।या०।।५।।

## श्री नेमिराजीमती वियोग सूचक गीतम्

राग—केदारउ

मेरइ नेमिजी इक सयण ।
अउर ठउर न दउर करिहुं, कबहुं मो मन भयण ।।१।।मे०।।
सुण्यउ निसि भरि जबहि चातक, रटत पिउ पिउ वयन ।
पलक बादल वौचि उमड़े, सजल जलधर नयन ।।२।।मे०।।
विणु पीऊ कइसइ प्राण राखुं, पलक भर नहीं चयन ।
'जिनराज' राजुल कनक कुंदन, जोरि यादु रयन ।।३।।मे०।।

## श्री लोद्रवपुर पार्श्वनाथ स्तवनम्

जाति—मोरयानी

'लोद्रपुर' पास प्रभु भेटीयइ जी, मेटीय मन तणी भ्रंति ।
परतखि सुरतरु सारिखउ जी,खलक नी पूरवइ खंति ।१।लो०
निरुपम रूप निहालतां जी, कविजन करइ रे विचार ।

नख सिख ऊपरि वारियइ जी,अवर सुर असुर सउवार ॥२लो०
देव दीठा घणा देवले जी, सीस न नामणउ जाइ ।
मधुकर मालती रइ करइ जी अजवि अरणी न सुहाइ ॥३।लो०
एक पग त्राण ऊभा रही जी, सेवियइ जउ जगदील ।
लोचन तृपति पामइ नहीं जी,ए प्रभु अधिक जगीस ॥४॥लो०
पेखीयइ तोरण पइसतां जी, जे करइ स्वर्ग सु वाद ।
च्यार गति ना दुख छोदिवा जी,
चिहु दिसइ च्यारि प्रसाद ॥५॥लो०॥
'थाहरू' सुकृत नउ वाहरू जी, सलहीयइ मात तसु तात ।
संघवी संघनायक पखइ जी, अगमइ कवण ए वात ॥६लो०
कीजीयइ चोल तणी परइ जी, प्रीति परमेसर साण ।
श्री 'जिनराज' भवो भवे जी,तूं हिज देव प्रमाण ॥७॥लो०॥

## श्री लौद्रवपुर पार्श्वनाथ गीतम्

जाति मोमनडउ हेडाउ हे मिश्री ठाकुर बइदरउ एहनी

आज नइ वधावउ हे सहीअर माहरइ, आणंद अंगन माइ ।
सोहग निधि साहिब त्रेवीसमउ,नयणे निरख्यउ आइ ॥१आ०
प्रभु परतख न मिलइ पंचम अरइ वीस करूं वेषास ।
पिण मोहन मूरति जउ पेखीयइ, आवइ मनि वेसास ।२।आ०
दूर थको तीरथ महिमा सुनी, खरी हुती मन खंति ।
लाख कहउ लोचन दीठां पखइ,नेट न हुवइ निरंति ॥३॥आ०
मनहरणी तोरण ची कोरणो चिहुं दिसि जिणहरि च्यारि ।
तिम पगला नवला थिवरां तणा, ऊजलगिरि अवतार ।४।अ०

कमल कमल बिहसइ मन हुलसइ, रौमांचित हुवइ देह ।
मन नी होवीतग वात न कहि सकु ,नवलउ निवड़ सनेह ॥५॥अ०
मइ भूलइ भमतइ कीधी हुस्यइ, देव अवरनी सेव ।
ते अपराध खमावु आपणउ, चरण कमल पणमेव ॥६॥आ०॥
आज घड़ी सुघड़ी लेखइ पड़ी, जीवत जनम प्रमाण ।
भगति जुगति 'जिनराज' जुहारतां,आज भलइ सुविहाण ।७।आ०

## श्री गौड़ी पार्श्वनाथ स्तवन

घालेसर मुझ वीनती 'गउड़ेचा' राय, अलवेसर अवधार रे ग०
प्रगट थई पाताल थी ग० सेवक जन साधार रे ग० ॥१॥
आंखि थइ उतावली ग० दरसण देखण काज रे ग०।
पाणी न खमइ पातली ग० दे दरसण महाराज रे ग०॥२॥
तु साहिब सुपनंतरइ ग० मिलइ अछइ नितमेव रे ग०।
तउ पणि आयउ ऊमही ग० सइ प्रति करिवा सेव रे ग० ॥३।
जउ पोतानउ त्रेवड़उ ग० सगली भांति सदीव रे ग० ।
नीची ऊंची वात मइ ग० तउ मत घालउ जीव रे ग०॥४॥
देव घणाइ देवले ग० दीठा ते न सुहाइ रे ग० ।
इक दीठा मन हुलसइ ग० इक दीठा अउल्हाइ रे ग०॥५॥
काल्हे वाल्हे माहरइ ग० कीधी खरीय सबोल रे ग० ।
दरसण देवा तइ नकी ग० पाणी वलि पणि ढील रे ग०॥६॥
तइ कीधउ तिम तु करइ ग० राखी चिहु मइ लाज रे ग० ।
वलि अवसरि संभारज्यो ग० इम जंपइ 'जिनराज' रे ग०॥७॥

## श्री अमीझरा पार्श्वनाथ गीत

परतखि पास अमीझरइ, भेटीजइ भविअण भावइ रे ।

राति दिवस अमृत झरइ, तिण साचउ नाम कहावइ रे ॥१॥प०।
सुर सानिधि अंजन समइ, जग जीवन ज्योति जगावइ रे ।
श्रावक नइ सुपनंतरइ, दाखी दरसण परचावइ रे ॥२॥प०॥
भगत वछल निज भगत नइ, अरिगंजण अगम जणावइ रे ।
तो ते सेवइ स्या भणी, जउ परतउ मूल न पावइ रे ॥३॥प०॥
आपण पइ परगट थई, सेवक नउ वान वधावइ रे ।
जे कारिज करिवा करइ, ते पर नइ केम भलावइ रे ॥४॥प०॥
पुरिसादाणी पास जी, जउ इम अतिसय न दिखावइ रे ।
इण कलियुग ना मानवी, तउ यात्र करण किम आवइ रे ॥५॥प०
एकणि रहणि जे रहइ, नितु चरण कमल चित लावइ रे ।
सकल मनोरथ तेहना, प्रभु अलवि प्रमाण चढावइ रे ॥६॥प०॥
प्रभु विण देव अनरेड़ा, ते माहरइ मनि न सुहावइ रे ।
सुरतरु अंगणि जउ फलइ, तउ कवण कनकफल खावइ रे७प०
'भाणवड़इ' थिर थानकइ, अतुली बल अधिक प्रभावइ रे ।
मूकी मन नउ आमलउ, तिण कारणि सहु को ध्यावइ रे ।८।प०
अलिय विघन दूरइ हरइ, अरिअण नइ आण मनावइ रे ।
श्री 'जिनराज' सदा जयउ, दिन दिन चढतइ दावइ रे ॥९।प०।

## श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ गीतम्

करिवउ तीरथ तउ मूंकी रथ, धीर थई पगले चलउ ।
तिल पाप नथी आगमन थी, मन थी हो मूंकी आमलउ ॥१॥
वहता मारगम करउ कारग, तारग गुरु आगलि कीयइ ।
सवि एक मता वलि मन गमता, समताधर साथइ लीयइ ॥२॥

श्री 'संखेसर' पास जिणेसर, जे सरभर सुर को न छइ ।
नयणे निरखउ परतिख परखउ, परखउ लीकहि सउ पछइ ।।३।।
आप वसू रति थयइ सूरति, सूर तिसी परि पूजीयइ ।
इम गुण गावउ भावन भावउ, पावउ सुमति वधू जीयइ ।।४।।
आणइ वेधन खरचइ जे धन, ते धन धन जगि जाणीयइ ।
कुमति खोजि न आण इसी जिन, श्री 'जिनराज' वखाणीयइ।।५।

## श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ गीत

राग—सामेरी

पासजी की मूरति मो मन भाई ।
पग पग मग पंथियन कु पूछत आए तोकु ध्याई ।।१।।प०।।
आसापूरण निज भगतन की तबही दइति दिखाई ।
कउण विचार परे हम वरिया, इतनी वेर लगाई ।।२।।प०।।
मोकु कहा विरुद अपणइ की, आपहि लाज बड़ाई ।
'संखेसर' मंडण दुख खंडण, देहु दरस सुखदाई ।।३।।प०।।
मानव दानव कोइ न मेटत, दुनिया मांहि दुहाई ।
'राजसमुद्र' प्रभु 'श्री जिनसिहसूरि' सेवत संपति पाई।।४।प०।।

## श्री सहसफणा पार्श्वनाथ गीतम्

राग—केदारउ

देखउ माई पूजा मेरे प्रभु की अजब बणी रे,
या छबि वरणी न जाइ ।
जोवत जोति नई नई अलख सरूप रे,
मो मन अधिक सुहाइ ।।१।।द०।।
कुंकुम को अंगी रची, विचि विचि कुसुम भराउ ।

भाल तिलक सिर सेहरउ, कुंडल जरित जराउ ॥२॥दे०॥
मोहन मूरति सांउरी, कंठ कुसुम की माल ।
हार रच्यउ सिव नारि कुं, पांच रतन कइ थाल ॥३॥दे०॥
अनिमिष नयन थकित भए, देखि सलूणी देह ।
चंचल चित अटकी रह्यउ, इहु किछु नवल सनेह ॥४॥दे०॥
कलिजुग सुरतरु अवतरयउ, 'सहसफणउ श्री पास' ।
सो साहिब नितु सेवीयइं, अविचल लील विलास ॥५॥दे०॥
दाइम भगति निवाजिकइ, दीनउ काइम राज ।
विरुद गरीवनिवाज कउ, साच भयउ 'जिनराज' ॥६॥दे०॥

## श्री वाड़ी पार्श्वनाथ गीतम्

मेलिज जमक सव गावा तरसइ, मुझ रसना गुण गावा तरसइ।
नव नव लीला सरस लहीजइ, तिण प्रभु 'वाड़ीपुर' सलहीजइ।१।
अंग नवे प्रभुना चरचीजइ, आगलि नव नव नाच रचीजइ ।
विधि खप करतां वासव रीजइ,
नितु नवलउ जस वास वरीजइ ॥२॥
जिम जोई मूरति मन भावइ, देव अवर न को मनि भावइ ।
सुरतरु अंगणि भविक फलीजइ,
तउ स्युं संवल नउक फलीजइ ॥३॥
जीव तुरंग सिव पुरि वाहीस्यइ, सेव अवर नी करिवा हीसइ।
आपणपइ जउ विस वावीसइ, लुणियइ ईष न विसवा वीसइ।४।
सीझइ कारिज अवगाहीजइ, हेलइ अरिदल अगाहीजइ ।
मनछा अविचल राज भणीजइ,
तउ मुखि इक 'जिनराज' भणीजइ ॥५॥

## श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ गीतम्

नील कमल दल सांउली रे लाल,
मूरति सबही सुहाइ मन मान्या रे ।
कंचन की अंगी वणी रे लाल, या छबि वरणी न जाइ मन ।१।
मेरइ मन तूंही वसइ रे लाल श्री चिंतामणि पास ।।म०।
साचउ विरुद अपनउ करउ रे लाल,
पूरि हमारी आस मन० ।।२।।मे०।।
सीस मुगट रतने जड्यो रे लाल उर मोतिन कउ हार मन०
कुंडल की सोभा कहुं रे लाल,
रवि शशि कइ अणुहारि मन० ।।३।।मे०।।
दसन ज्योति हीरा जड़या रे लाल, अधर कि लाल प्रवाल मन० ।
चंपकली सो नासिका रे लाल,
भाल तिलक सुविसाल मन० ।।४।।मे०।।
सोभा सायर वीचि मइ रे लाल, झील रह्यउ मन मीन मन० ।
तइ कछु कीनी मोहनी रे लाल,
नयन भए लयलीन मन० ।।५।।मे०।।
दो कर जोड़ि वीनवुं रे लाल, देहु दरसन इक वार मन० ।
जउ अपणउ करि जाणिहउ रे लाल,
तउ करउ कउण विचार मन० ।।६।।मे०।।
मन सुधि सेवा साचवुं रे लाल, भाव भगति भरपूर मन० ।
परतखि परता पूरवइ रे लाल,
आपण होइ हजूर मन० ।।७।।मे०।।
साचउ साहिब सेवतां रे लाल सीझइ वंछित काज मन० ।

'राजसमुद्र' गुण गावतां रे लाल,
पायउ अविचल राज मन० ॥८॥मे०॥

## गुणस्थान विचार गर्भित पार्श्वनाथ स्तवन

नमिय सिरिपास जिण सुजण पडिबोहगं ।
कणयगिरि अचल जेसलनयर सोहगं ॥
चवद गुणठाण उत्तर पयडि बंध ए ।
हेतु करि सहित हूं कहिमु सह संध ए ॥१॥
पढम मिच्छत्त सासाण मीसाजयं ।
दंस पमत्त अपमत्त सुह नामयं ॥
नियट अनियट तिम सूहम उवसंतयं ।
खीण सहजोगि अजोगि गुण ठाणयं ॥२॥
पंच विह नाण आवरण दुग वेयणी ।
दंसनावरण नव वीस अड मोहणी ॥
आउ चउ भेय तिम गेय दुग मनि वसइ ।
अंतरायस्स पण भेय जिण उवइसइ ॥३॥
च्यार गय जाइ पणु वंग तिग पण तणु ।
तेम संघयण संठाण छग छग भणु ॥
च्यारि अणुपुव्वि चउवण गुरु लहु पणउ ।
त सग दस दुग गई दसग थावर तणउ ॥४॥
जिण पण घाइ उवघाइ निम्माण ए ।
आउ वुज्जोय उसास विजांण ए ॥
नाम कमस्स सतसट्ठि पयड़ी इहां ।
एम सय अनइ बावीस सवि मिलि तिहां ॥५॥

ढाल २ भव्य तणइ परिपाक एहनी.

ओथइ इगसय वीस बंध पयडी तणउ सम्म मीस मोहनि विनाए।
जिण परिणाम विशेष पुज रचइ तिग ते पुग्गल मिच्छातना ए ।६।
गुणठाणइ मिच्छत्ति सतर अधिक सत जिण आहारग दुग पखइ ए ।
जे भणी अनुक्रमि एह सुध समकित,
धर अप्रमत्त संजति कषइ ए ।।७।।
सासण इग सय एग अणुपुव्वी गइ आउ नरग तिग ए भण्यउ ए
तिम इग बिति चउरिंदि थावर,
अपजत साधारण सुखम गण्यउ ए ।।८।।
हुंडा तव छेवट्टि मिछ न पुरक ए सोल बंधइ नहीं ए ।
एह पर्थाड नउ हेतु मिछ नही इहां तिण नवि बंधइ ए सही ए ।६
मीसि चहुत्तरि बंध तिग तिरिया तणउ थीणधी तिग कुख गई ए।
दुभग दुसर ना देय पढ़मंतिम हुण चउ चउ संघणा गई ए ।१०
नीय गोय उज्जोय इछे वेय तिम च्यार कषाय पढम जुया ए ।
एपणवीस ना हेतु अण कोहाईय तेषा उर्वसि मिग हुया ए ।११
न मरइ इछ कयावि तिणि सुरनर आऊरि,
इम सगवीस पर्यड़ि टलइ ए ।।
हिम चउथइ गुण ठाणि सतहित्तरि,
भणी सुरनर आऊ जिण मिलइ ए ॥१२॥

ढाल

सतसट्ठि पयड़ि नउ देसइ बंध वखाण
नर तिग आइम संघयण उरल दुग जाण
जिण इण गुणठाणइ सुर गइ बंधइ एह

तिण नर तिरि वेयण जोग पयड़ि छग छेह ।
छेह हवइ वलि बीय कसायां जिण ए उदय न जावइ ।।
इम पंचमि थानकइ सवे मिलि दस ए बंधन आवइ ।
हिव छठ्ठइ थानकइ पमत्तइ तेसठि पयड़ी बंध ।।१३।।
अपमत्त गुणसठि अहवा अडवन थाइ ।
टलइ सोक अकित्ती अथिर असुभ असाय ।।
तिम अरइ सुराउ तणी भयणा सुविचार ।
आराहर अंगोवंग मिलइ इहां सार ।।
सारठ्ठ मगा नियट्ट तणा हिव भाग रचीजे सात ।
तिहां पहिलइ भागइ सवि बंधइ अडवन पुव्व विख्यात ।।
बीयादिक पण छपन्न निद्दा पयला दोइ ।
पयड़ि न बंधइ जिणइ तहाविह अज्जवसाण न होइ ।।१४।।
हिव सत्तम भागइ बंधइ पयड़ि छबीस ।
सुर गइ अणुपुव्वी इम पभणइ जगदीस ।।
तस नव नेउव्विय अंगों अंग निमाण ।
जिण नाम पणिदिय जाइ पढम संठाण ।।
गुणठाण भणीजइ तेय कम्म तणु वण गंध रस फास ।
अगुरुलहू उवथाय वली तिम परा थाय उसास ।।
आहारग दुख सुख गइ मिलीयां सव्व पयड़ि ए तीस ।
इह वट्टंतउ जीव न बंधइ तिम बंधइ छगवीस ।।१५।।
कीजइ अभियटना पंच विभाग उदार ।
बावीस पयड़ि तिहां भागइ पहिलइ धार ।।
रति हास दुगंछा भय ए न रचइ च्यार ।

बीय तीय चउथइ तिम पंचमि एह विचार ॥
एह विचार करीजइ अनुक्रमि ए चउपयड़ि विनास ।
पुरुष वेय तिम तिग संजलनउ वधतइ ज्ञाण विलास ॥
हिव दसमइ थानकइ भणइ सविस्तर पयड़ि जिनराज ।
नवि बंधइ संजलनउ लोह जे कम्म माहि सिरताज ॥१६॥
एगारमि बारमि तेरमि साय संयोग ।
थायइ इहां निसचय सोलस पयड़ि वियोग ॥
जस नाम वली पण अंतराय शुभ गोय ।
चउ दंसण ना वरणी पण संजोय ॥
जोग रहित तिम कम्म अबंधक ए चवदम गुणठाण ।
भासइ इम भगवंत भविक नइ केवलनाण प्रमाण ॥
बंध विहाण रहित हुइ जिणवर पाम्यउ शिवपुर वास ।
आप सरीखउ करिज्यो जिणवर ए सेवक अरदास ॥१७॥
तुह दंसण विणु जिण निगम्यउ काल अनंत ।
पहिलइ गुण ठाणइ वट्टंतइ भगवंत ॥
हिव सुकृत संयोगइ लद्धउ मइ जग भाण ।
हरे हर सेवा करिवा इण भवि पच्चखाण ॥
पचखाण सहित तुह दंसण लद्धउ सुरतरु कंद ।
निरतिचार पलइ तिम करिज्यो नत नर सुरपति वृंद ॥
तूं तिहुयण नायक तारक तूं सयल जंतु आधार ।
आससेन कुल कमल दिवाकर मुगति रमणि भरतार ॥१८॥

कलश

इय बाण रस ससिकला (१६६५) वच्छर,सह किसण नवमो दिने

गुणठाण चवदे कम्मपयड़ी,बंध विवरथउ सुभ मनइ।
'जिणचंदसूरि' जिर्णसिह' सीसइ, 'राजसमुद्र' इ संथुउ ॥
सिरि पास जिणवर भवण दिणयर, सयल अतिसय संजुउ ।१६

इति श्री विचार गर्भित श्री पार्श्वनाथ स्तवनम्

## श्री विक्रमपुर मंडन वीर जिन गीतम्

भाव भगति धरि आवउ सहिअरि, जिणहर बिंब जुहारीयइ
त्रिशलानंदन जगदानंदन, चंदण नयण निहारियइ ॥१॥
वीर जिणेसर भुवण दिणेसर सरणागत, साहरइ।
जे सिवगामी अंतरजामी, सामी जे इण भय माहरइ ॥२॥
वंछितदायक शासन नायक, पाय कमल तसु भेटियइ।
देखी दरसण दे परदक्षिण, आपण भव भय मेटियइ ॥३॥
मोहन मूरति अनुपम सूरति, दूर तिमिर भर अपहरइ।
'वीकमपुर' वर मेरु सिहरुवरि, सुरतरु सोभा अणुसरइ ॥४॥
साथ सहेली गरब गहेली, भेली भवजल निधितरइ।
'राजसमुद्र' गणि सक्रस्तव भणि,
इणि परि जन्म सफल करइ ॥५॥

## श्री वीर जिन गीतम्

हम तुम्ह 'वीरजी' क्युं प्रीति चलइगी,सुणु साहिब वरदाई।
जिण कुं तुम्ह मुह भी न लगाए, जिणसुं हम लय लाई।ह०।१
जाकउ तुम्ह सब वंश प्रजारथउ, उवे हम कीये सखाई।
जिण कुं तुम्ह वनवास दियउ थउ,
उहा हम आणि वसाई ॥ह०॥२॥
प्रेम मगन थे तुम्ह जिन सेती, उवा भी हम न मनाई।

तउ भी तुम्ह करिहउ अपणाई, या 'जिनराज' बड़ाई ।ह०।३।

## श्री वीर जिन गीतम्

राग–सारंग

'वीरजी' उत्तम जन की रीति न कीनी,प्रीति तंत ज्युं तोरी ।
बेग नहीं गोतम कहइ,किउ मोहि दूर कीयउ चित चोरी ।।१वी.
वीरजो जान्यउ अंचर गहिस्यइ,यातइ शिव पहुते मुझ छोरी ।
अंतर बहूत परयउ जिन सेती, कहा करूं अब दउरी ।२।वी०
वीरजी एक पखउ प्रेम रता नत, क्युं करि निवहइ जोरी ।
'राजसमुद्र' प्रभु केवल पायउ, मोह महीपति मोरी ।।३।।वी०

## श्री वीर जिन गीतम्

राग–वेलाउल.

साहिब 'वीरजी' हो मेरी तनुकि अरज अवधारउ ।
दीनदयाल अदीन दयानिधि, कूरम नजरि निहारउ ।१।सा०।
करहू महर भव जलधि जहर तइं,करि ग्रह पारि उतारउ ।
तइं गुनही भी तुरत निवाजे,तउ अब कहा विचारउ ।२।सा०
विरुद गरीबनिबाज सुण्यउ मैं, वीर जिणंद तिहारउ ।
'राज' वदति निज भगत निवाजउ,परतिख होइ पत्यारउ ।३सा०

## श्री जिन प्रतिमा सिद्धि वीर स्तोत्रम्

भविअ जण नयरण वरणसंड पड़िबोहगं ।
राय सिद्धत्थ कुल तरणि सम सोहगं ।।
थुणिसु जिरण नायगं भत्ति भर पूरिउ ।
पुव्वकय सुकय घरण रासि अंकूरिउ ।।१।।
सामि सग रयणि परिमाण परिमंडिअ' ।

तहयपलि अंक संठाण करि संठिअं ।
जिण भवण मज्झि जिण बिंब जह दीसए ।
हेल दे हियय मह हेज करि हीस ए ॥२॥
आज मह देवमणि कामघट तुट्ठउ ।
अमिय मय मेह मह उवरि किर वुट्ठउ ॥
आज घर अंगणइ कप्पदुम फलियउ ।
कणय तणु वीर जिणराय जउ मिलिअउ ॥३॥
जिण चवण जम्म वय नाण निव्वाण ए ।
गब्भ संकमणइ अनुज्झ कल्लाण ए ॥
जम्मि पुरि जाय ते नयण भर जोइयइ ।
सरिअ तुइह चरिअ निय कम्म मल धोइयइ ॥४॥
थापना रूप अरिहंत जे ऊथपइ ।
मुगध मन हरिण वसि करण ते इम जपइ ॥
कज्ज सावज्ज नाऊण किम कीजीयइ ।
तेहनइ मधुर वचने करी पूछीयइ ॥५॥
थापना रूप पिण साच जिणवर कहइ ।
एहनी साख ठाणांग मांहे लहइ ॥
चित्त कय कामिणी मोह भर कारगा ।
तेम जिण ठवण पावाण उवसामगा ॥६॥
बार व्रत धार पिण सुद्ध श्रावक करइ ।
दव्व थय कूव दिट्ठंत सो अणुसरइ ॥
साधु भगवंत मन सुद्धि पणवय धरइ ।
सो नदी पाय नावाइ जिम ऊधरइ ॥७॥

सुगुरु ना पयकमल मल थापि मुहणंत ए ।
अहवरय हरणि किय कम्म किर दित ए ॥
पडिकमण मज्झि विउसग्ग करतउ छतउ ।
दव्व पूआ तणउ साधु फल वंछतउ ॥८॥
लद्धि विज्जा जुओ साहु नंदीसरे ।
चेइ वंदण भणी जाइ जिण मंदिरे ॥
जाइवा सुर भवण राय असुरां तणउ ।
पंचमंगे सरण किद्ध पड़िमा तणउ ॥९॥
जिण वयणि सुरभवण मज्झि जिणहर अछइ ।
धूव जिणवर भणी एह अक्खर पछइ ॥
सतर विधि पूज जीवाभिगमाइ कही ।
वाणमंतर विजय किद्ध ते सद्दही ॥१०॥
सुहम गणहर नमइ वीर सासन धणी ।
बंभ लिवि पंच परमिट्ठि समवड़ि गिणी ॥
बंभ लिवि वयण नउ अरथ अक्खर सुण्यउ ।
नाम समवाय इम अंग चउथइ भण्यउ ॥११॥
दव्व पिण भावनी बुद्धि सुविशेषतां ।
कम्म रय हरणसुसमीर सम देखतां ॥
देखि जिण ठवण तिहां भाव आरोवई ।
भाव जिणवर तणा गुण कहइ दोवई ॥१२॥
बार वर परषदा मांहि गोयम दिसइ ।
आपणइ श्री मुखइ वीर जिण उवइसइ ॥
धन्न सुरियाभ सुर दव्व पूआ करइ ।

तासु फल कम्म खय अनुक्रमइ सिव वरइ ॥१३॥
तेण जिण भवण जिणराय अंतर नही।
भविअ समभाव करि जोइयइ ए सही॥
भव जलहि मज्झि निवडंत तारण तरी।
भाव वसि दव्व पूयावि सिव सुह करी॥१४॥
इणि परि जगगुरु 'वीर' जिणिद, संथुणियउ मइ श्री जिणचंद।
युगवर श्री'जिनसिंहसूरि'सीस, पभणइ'राजसमुद्र'सुजगीस।१५

इति श्री वीर स्तोत्रम्

## श्री जिन देव गीतम्

राग—धन्यासी.

लोनउ री मो मन जिन सेती लोनउ।
भव मइ डोलत कबहूं न पायउ,
करम विवर अब दीनउ री॥१॥मो०॥
अवर किछु न पिआरउ लागत, मानुं मोहन कीनउ।
अनिमिषि जोवत तृपति न होवत, रोम रोम तनु भीनउ री।२मो०
दरसण देखत छतिआ उलसत, रेवा ज्युं गज पीनउ।
'राजसमुद्र' साहिब सिव गामी, मो मन कनक नगीनउ रे।३मो०

## (२) प्रभु भजन प्रेरणा

राग - धन्यासी

कबहूँ मइ नीकइ नाथ न ध्यायउ।
कलियुग लहि अवतार करम वसि, अघ घन घोर बढायउ।१क०।
बालापण नित इत उत डोलत, धरम कउ मरम न पायउ
जोवन तरुणी तनु रेवा तट, मन मातंग रमायउ॥२॥क०॥
बूढापणि सब अंग सिथल भए, लोभइ पिंड भरायउ।

'राजसमुद्र' प्रभु तिहारइ भजन विगु,
युंही जनम गमायउ ॥३॥क०॥

## नवपद स्तवन

॥ दूहा ॥

दस दृष्टांते दोहिलउ, लहि मानव अवतार।
'सिद्धचक्र' आराहियइ, लहु तरियइ संसार ॥१॥
जिणिपरि जिणवर उइसइ, आगलि परषद बार।
तवन बंध तिण परि कहुं, भवियण जन हितकार ॥२॥

॥ ढाल १ ॥

चवदह पूरब सार, मंत्र भण्यउ नवकार।
पहिलइ पद अरिहंत, समरीजइ मन खंति ॥१॥
वीजइ पद मन दीजइ, सिव गय सिद्ध लहीजइ।
आचारिज पद त्रीजइ, आदर सुं आराहीजइ ॥२॥
चउथइ पदि चरचीजइ, सिरि उवझाय जपीजइ।
सुधा साधु महंत, पंचम पद विलसंत ॥३॥
दंसण नाण चरित्त, चउथउ तप सुपवित्त।
नवपद जगि जयवंता, भासइ इम भगवंता ॥४॥

॥ ढाल २ ॥

आसोज धवल सत्तमि दिवसइ, जिणवर पड़िमा थापी हरसइ।
आगलि सिधचउक सुथिर मांडी,
मन हुंती मद मछर छांड़ीं ॥१॥
गुरु मुख आंबिल तप पचखीजइ, दिन प्रति इक पद आराहीजइ।
पणवक्खर माया बीज धारइ,
नवपद समरीजइ मधुर सुरइ ॥२॥

जिनराज सहित सिद्धचक्र तणी, पूजा उत्तम श्रावक करणी ।
तिम वांदउ देव त्रिकाल सही,आगलि शक्रस्तव पाठ कही ॥३॥
करतां अट्ठोत्तर सय जेती, वेला लेखइ पड़ियइ तेती ।
काउसग सकति सारइ कीजइ,पूरबला असुभ करम छीजइ ।४।
आराधइ नवपद जे प्राणी, तिण कीधी साची जिन वाणी ।
निद्रा विकथादिक परिहरियइ,हेलइ सिवसुख संपद वरियइ।५।
पंचे इन्द्रिय वसि करियइ, परिहरिय पंच प्रमाद ।
समरंता परमिट्ठि पय, सयल टलइ विषवाद ॥१॥
क्रोधादिक चउ चउगुणिय, सोल कषाय निवारि ।
चउगइ दुख छेयण निउण, नाणादिक जगि सार ॥२॥
आज काज सीधा सयल, आज भलइ सुविहाण ।
आज पचेलिम पुण्य भर, जीवित जनम प्रमाण ॥३॥

॥ कलश ॥

जिण सयल जिनवर सिद्धि सुखकर वाणि अमृत उवइसइ ।
नवपद नवे दिन चैत्र ने पिण आराहउ मन नइ रसइ ॥
तिम गुपति निधि ससिकला (१६९३) वरसइ,
आसू सुदिसत्तमी दिनइ ।
जिनराज' सिव सुख काज 'जिनसिंह',
सीस पभणइ सुभ मनइ ॥४॥

इति श्री सिद्धचक्र स्तोत्र सं १६९५ वर्षे जेसलमेरौ
वा० दयाकीर्ति गणि शिष्य पण्डित गौड़ीदास लिखितं सा ।
गुणविजया शिष्यणी साध्वी शाहजादी पठनार्थम्

( कान्तिसागर जी संग्रह पत्र १ से )

## दादा श्रीजिनकुशलसूरि स्तवन

जीहो धन वेला धन सा घड़ी, दादा जब भेटूं तुम्ह पाय।
जी हो इम मन मइं धरतउ थकउ,
दादा हूं आयउ मुनिराय ॥१॥
'कुशलसूरि' पूरउ वंछित काज।
जी हो हूँ सेवक छूं ताहरउ,
दादा मुझ दुखियइ तुझ लाज ॥कु०॥२॥
जी हो जागइ जग माहे तु परगड़उ,दादा जाणइ इंद नरिंद।
जी हो कस्तूरी केसर करी, दादा नित पूजइ नर वृंद ।कु०३।
जी हो दुख दोहग दूरइ टलइ, दादा जपतां अहनिश नाम।
जी हो पुत्रअ दियइ पुत्रियां,दादा निरगुण करइगुण धाम।कु०४।
जी हो 'अहिपुर' मांहइ दीपतउ, दादा देराउर सुविशेष।
जी हो'जेसलगिरि'वरपूजियइ,दादा भाजइ दुख अशेष ।कु०५।
जी हो 'वीरमपुर' 'सोवनगिरइ', दादा'जोधपुरइ' विलसंत।
जी हो 'जइतारणि' वलि 'मेडतइ',
दादा लाछ दियइ बहु भंति ॥कु०॥६॥
जी हो 'अहमदाबाद' 'खंभाइतइ', दादा पाटणि पूरइ आस।
जी हो श्री 'सूरेत' 'विक्रमपुरइ', दादा तोड़इ आपद पास।कु०७
जी हो'लाभपुरइ'तिम 'आगरइ',दादा महिमा'महिम' मझार।
जी हो 'सांगानयरि' 'अमरसरइ',
दादा सेवक जन सुखकारि ॥कु०॥८॥
जी हो इम पुर पुर थुंभ प्रणमीयइ,दादा नासइ सहु विषवाद।
जी हो 'राजसमुद्र' इम वीनवइ,दादा समरयां देजो साद ।कु०९।

## श्री जिनकुशल गुरुणां गीतम्

राग – प्रभाती

जपउ कुशलगुरु' (२) नाम निसि वासरइ,
रिद्धि नइ सिद्धि आपइ सवाई ।
आपदा माहि तइ हाथ दे ऊधरइ,
तुरत दरसण दियइ आप आई ।।१।।
अवर सुर ध्यान धरियइ नही,
ध्याइयइ 'जिनकुशल' सूरि साचउ ।
आप वसि कनक नो कोड़ि छोडी करी,
कवण मूरख महइ लोह काचउ ।।२।
वाट घाटइ अइ जाइ अलगा टली, समरतां निरमलउ नीर पावइ।
देस परदेस धन राज कुशलइ मिलइ,
पूजतां मूल योखम न आवइ ।।३।।
एक मन एक रहणी सुगुरु जे रहइ, तां मन वंछित काज साधइ।
एक मुनि'राज' प्रभु चरण युग सेवतां,
दिन दिन अधिक प्रताप वाधइ ।।४।।

### राग धन्यासी.

'कुशल' गुरु अब मोहे दरसण दीजइ।
अइसी भांति करउ मेरे साहिब, इहु मन मूढ पतीजइ ।१कु०।
जल दातार विरुद अमृत रस, श्रवण अंजुलि भर पीजइ ।
सुरतरु सम दरसण विण देख्यां, कहउ नयण किम रीझइ ।२कु०
परम दयाल कृपाल कृपा करि, इतनो अरज सुणीजइ ।
परम भगति 'जिनराज' तिहारउ, अपणउ करि जाणीजइ ।३कु०

## भणशाली थिरु गीतम्

संघवी तूं कलियुगि सुरतरु अवतरयउ रे,
आठ पहर घरि दइ दइ कार रे ।
तूं तउ रांका केरउ मालवउ रे,
दुनियां रउ दुख भंजण हार रे ॥१॥सं०॥
खाटी तउ सलहीजइ ताहरी रे,वांटी जिण सारइ संसारि रे ।
कृपणां जिम माटी देई करी रे,
तउ तउ दाटी नहीं लिगारि रे ॥२॥सं०॥
लोद्रपुरइ, प्रासाद करावतां रे, विधि सुं पारसनाथ प्रतीठ रे ।
करण कनक दातार सुणीजतउ रे,
ते तउ परतिख नयणे दीठ रे ॥३॥सं०॥
जिणवर नइ कुंडल सिरि सेहरउ रे,
भाल तिलक वलि नवसर हार रे ।
श्रीवछ नइ श्रीफल गल वाललउ रे,
रतना जड़ित सोवन मइ सार रे ॥४॥सं०॥
इम आभरण चढावइ सामठा रे,तो विणु कुण खोटइ संसार रे ।
तइं चाढो नवली नव देहरइ रे,
मुखमल नी धज एकणि वार रे ॥५॥सं०॥
संघ चलावउ 'जेसलमेर' थी रे,भेटी नाभि नरिंद मल्हार रे ।
'पुंडरगिरि' निज पगले फरसतइ रे,
तइ तउ परत कीयउ संसार रे ॥६॥सं०॥
नगर नगर वरसंतइ लाइणे रे, देतइ नव नवारू चीर रे ।

जोतां आज विषम पंचम अरइ रे,
धन नउ तइ हिज मांग्यउ हीर रे ॥७सं०॥
मन सुध भगति करइ 'जिनराजनी' रे,
हरि घरिणी घरि थिर थिरपाल रे ।
संघ धुरा निरवाहण सलहीयइ रे,
तू तउ धोरी धवल कंधाल रे ॥८॥स०॥

इति भणशाली थिरु गीतम्

---

साधु व्रती गीत

## श्री शालिभद्र गीतम्

मुनिवर विहरण पांगुरया जी, तब बोलइ जगनाथ ।
मासखमण नउ पारणउ जी, थास्यै माइड़ी हाथ ॥१॥
महामुनि धन धन तुझ अवतार ।
रमणि बत्रीसे परिहरी जी, लीधउ संयम भार ॥२॥म०॥
तप करि काया सोखवी जी, अरस विरस आहार ।
घरि आव्या नवि ओलख्याजी, ए कुण छइ अणगार ॥३॥म०
महियारी वलतां छतां जी, दीठा मुणिवर तेह ।
रोम रोम तनु उलस्यउ जी, जाग्यउ नवल[१] सनेह ॥४॥म०॥
विहरो गोरस चीतवइ जी, जिणवर भाषित तेह ।
जगगुरु पूरव भव कही जी, टाल्यउ मन सदेह ॥५॥म०॥
कर जोड़ी जननी[२] कहइ जी, वांदी वीर जिणंद ।

---

१- नवलउ नेह २- भद्रा

नयण न देखूं नान्हडउ[3] जी, नंदण नयणाणंद ॥६॥म०॥
वीर कहइ[4] भद्रा भणी जी, बइठी परखद बार ।
रिष जो अणसण आदरयो जो, 'सालिभद्र' सुकुमार ॥७॥म०
शोकातुर धरणी ढलइ जी, कठिन विरह न खमाइ ।
जाणइ पुत्र विजोगणी जी, जे[5] दुख कवि न कहाइ ॥८॥म०॥
छाती[6] लागी फाटिवा जी, नयणे नीर प्रवाह ।
विगु जीवन जे जीवियइ जी,ते जीव्यउ स्या माहि ॥९॥म०॥
पेखि सिलापट ऊपरइ जी, पउढयउ पुत्र रतन्न ।
अविचल जोडि न वीछड़इ जी, पास धनउ धन धन्न ।१०म०
इतला दिन हुं जाणती जी, मिलिस्यइ वार विच्यार ।
हिव मुझ मेलउ दोहिलउ जी, जीवन प्राण आधार ॥११॥
धरि आवी पाछा वल्या जी, जंगम सुरतरु जेम ।
ए दुख वीसरस्यइ नही जी, हिव कहु कीजइ केम ॥१२॥म०
हरख न दीधउ हालिरउ जी, वहूअन पाड़ी पाइ ।
ते वांझणि होइ छूटिस्यइ जी, हु किम गान गिणाइ ।१३म०
तुझ सम अवर न वालहउ जी, भावइ जाण म जाणि ।
साल तणी परि सालस्यइ जी, ए मुझ आहीठाण ॥१४॥म०॥
वछ ए मेलउ छेहलउ[7] जो, हिव मुझ केहो सीख ।
नयण निहालउ नान्हडा जी, जिम पाछी दयुं वीख ॥१५म०।
देखी आमणदूमणी जी मोह वसइ मुनिराज ।
नयणि न निरखी[8] माइड़ी जी, सारया आतम काज॥१६म०॥

३- आंत्र लूहण दीसइ नहीं जी ४- सुभद्रा नइ कहइ ५- ते
६- धीरज जीव खमइ नही जी. ७- दोहिलउ जी ८- निहाली, दीठी

अनुत्तर सुर सुख भोगवी जी, लहि मानव अवतार ।
महाविदेहइ सीझस्यइ जी, 'राजसमुद्र' सुखकार ।।१७।।म०

## श्री अरहन्नक साधु गीतम्

नवलउ नवलइ वेस, विहरण वेलायइ रिष पांगुरयउ ।
नव वारी नगरीह, सेरी मांहे भमतउ पांतरयउ ।।१।।
ए माहरउ नान्हड़ीयउ, कहु किम नयणे निरखीयइ ।
ए माहरउ बालूयडउ, विग दीठां किम परखीयइ ।।
ए माहरउ 'अरहन्नउ', आवि मिलइ तउ हरखीयइ ।।आं०।।
आव्या सगला साध, दूर गया हुंता जे गोचरी ।
नायउ इक अरहन्न, तब जणणी जोइवा सचरी ।।२।।ए०।।
कंचण कोमल काय, तड़तड़इ तावड़ि ऊभउ रहइ ।
देखी रूप अनूप, इक नारी तेडावी नइ कहइ ।।३।।ए०।।
भोगवि वछति भोग, नीच करम भिक्ष्या कुण आचरइ ।
भागा एकवटाह, प्रेम विलूधउ मुनिवर आदरइ ।।४।।ए०।।
माता करइ विलाप, सास तणी परि खिण खिण संभरइ ।
साचउ साजण सोइ, आण मिलावइ जो इण अवसरइ ।५ग०
उयर धरयउ दस मास, जे सुत वीसारयउ नवि वीसरइ ।
ते मुझ झड़फी लीध, जोवउ न्याय नहीं जगदीस रइ ।।६।।ए०।।
किहां मारउ अरहन्न दीठ, सहु कोनइ घरि घरि पूछइ जइ ।
ए ए मोह विकार, गलीय गली भमती गहिली थई ।।७।।ए०।।
आपण पइ सुरराय, कहिन सकइ भद्रा नउ दुख गिणी ।
सो मइ किम कहिवाइ,जाणइ माता पुत्र वियोगिणी।।८।।ए०।।
सालइ अधिक सनेह, खिण चालइ खिण वइसी नइ रड़इ ।

भोगी भमर निहालि, महल थकी ऊतर पाए पड़इ ॥६॥ए०॥
खमिज्यो मुझ अपराध, हूँ पापी अपराधी ताहरउ ।
थोड़ी वेला मांहि, माइड़ी काज समारउ माहरउ ॥१०॥ए०॥
पउढउ पुत्र रतन्न, ताती लोहसिला इण ऊपरइ ।
तहत करइ सुवचन्न, रिषि अणसण माइड़ी मुख ऊचरइ ॥११ए०
पघलइ मांखण जेम, नान्हड़ीयइ अधिकी वेदन सही ।
ऊभी माता पास, हुलरावइ च्यारे सरणा कही ॥१२॥ए०॥
चउरासी लख जीव, योनि खमावी कसमल ऊतरइ ।
साची माता एह, दुर्गति जातउ नंदन ऊधरइ ॥१३॥ए०॥
अणसण निरतीचार, आराधी अरहन्न सुर सुख लहइ ।
धन धन साधु महन्त,
इण परि 'राजसमुद्र' मुनिवर कहइ ॥१४॥ए॥

## श्री वइर कुमार गीतम्

मइ दस मासि उयरि धरयउ धोटा, हुं तेरी मात कहाउं धोटा ।
नइकु नजरि भरि निरखियइ धोटा,
मइ तुझ परि वलि जाउं धोटा ॥१॥
घरि आवउ रे मनमोहन धोटा, मेरइ मनि तूंही वसइ धोटा ।
अउर किछू न सोहाइ धोटा,
दिन इत उत ढांढी रहु धोटा, रयणिदुहेली जाइ धोटा ।२घ०.
तू जीवन तूं आतमा धोटा, तूं मुझ प्राण आधार धोटा ।
तुझ विण पलक न हुं रहुं धोटा,
तउ क्युं जाइ जमार धोटा ॥३॥
जउ तइ कबही अवगणी धोटा, करि लोगण की काण धोटा

तउ परदेसी मीत ज्युं धोटा, ऊठि चलेसी प्राण धोटा ।।४।।
अउर नेह सो कारिमउ धोटा, जे छिणमइ पलटाइ धोटा ।
नाड़ि न चोरइ नातरउ धोटा,जउ वरिसा सउ जाइ धोटा ।।५।।
अजहु भलहु न रूसणउ धोटा, आप विमासी जोइ धोटा ।
पहड़इ पेट जउ आपणउ धोटा,
तउ कलिहु थल होइ धोटा ।।६।।
छगन मगन कइसे भए धोटा, अइसे निपट निठोर धोटा ।
मुनिजन कीनी मोहनी धोटा, तकत न मेरी ओर धोटा ।।७।।
मन की वात कहा कहुं धोटा, जाणत सिरजणहार धोटा ।
करि मीनति इतनउ कहुं धोटा,
आइ मिलउ इक वार धोटा ।।८।।
देखि 'सुनदा' उनमनी धोटा, चितवत 'वइरकुमार' धोटा ।
अब जउ मईया मुं मिलुं धोटा, बहुत वधइ संसार धोटा ।।९।।
कब लगि कठिन विरह महुं धोट,
तजि अंगज सी आथ धोटा ।
पञ्च महाव्रत आदरे धोटा, 'राजसमुद्र' प्रभु साथ धोटा ।।१।।
इति श्री वइर कुमार गीतम्

## श्री अइमत्ता ऋषि गीतम्

दीठा गोयम गोचरी जी, जाग्यउ नवलउ मोह ।
पड़िलाभी साथइ थयउ जी, जिण वयणे पड़िबोह रे ।।१।।
मुनिवर वंदियइ, 'अइमत्तउ गुणवंतो रे ।
वीर प्रशंसियउ, धन धन साधु महंतो रे ।।२।।मु०।।
नवि जाणु जाणु सही रे, मातामकरि सनेह ।

व्रत छट्ठइ वरसइ लियइ रे, मुझ मन अचरिज एह रे ।३।मु०।
ग्रहणा नइ आसेवना रे, सीखइ सिख्या दोइ ।
एक दिवस बाहिर गयउ रे, हरियाली भुइं जोइ रे ॥४॥मु०॥
साधु नजरि टाली करी रे, पूरब रीति संभालि ।
वहतउ पाणी थंभियउ रे, बांधी माटी पालो रे ॥५॥मु०
तरती मुंकी काचली रे, बालक रामति काज ।
जोवउ माहरी बेड़ली रे, पार उतारइ आज रे ॥६॥मु०॥
आव्या थिवर इसुं कहइ रे, ए कुण तुझ आचार ।
पंच महाव्रत आदरया रे, उत्तम कुल अणगार रे ॥७॥मु०॥
मुनिवर पचतावउ करइ रे, मइ कुण कीधउ काम ।
वात थिवर जेह्वइ कहइ रे, भगवन भाखइ तामो रे ॥८॥मु०
मा हीलह मा खिसहइ रे, मा निंदह करि रीस ।
चरम देहधर एह अछइ रे, अइमत्तउ मुझ सीसो रे ॥९॥मु०
आठे अरिअण निरदली रे, पाम्यउ शिवपुर वास ।
'राजसमुद्र' गुण गावतां रे,अविचल लील विलासो रे ।१०मु०।

## श्री सनत्कुमार मुनि गीतम्

जी हो सोहम इंद प्रसंसियउ जी हो रूपवंत धरि रेख ।
जी हो जोवा आव्या देवता हो जी दीठउ अति सुविशेष ॥१॥
महामुनि धन धन 'सनतकुमार' ।
जी हो तृण जिम राज रमणि तजी हो जो लीधउ संजम भार ।२।
जी हो राजसभा लगि आवतां हो जी प्रगटयउ रुहिर विकार ।
जी हो पाणी वल माहे थइ होजी देही अवर प्रकार ॥३॥
जी हो चउसठिउ सहस अंतेउरी हो जी करती कोड़ि बिलाप ।

जी हो ऋद्धि अवर पाछलि थई,
हो जी अलवि न निरखी आप ॥४॥
जी हो छट्ठ छट्ठ नइ पारणइ हो जी आछणची नउ भात ।
जी हो लबधि छता साते सहइ हो जी रोग वरस सय सात ॥५॥
जी हो न करइ सार सरीरनी, हो जी सूधउ साधु महंत ।
जी हो सुर वचने चूकउ नहीं, होजी धरि धीरज एकंत ॥६॥
जी हो लाख वरस संजम धरू, हो जी सारी आतम काज ।
जी हो मानव भव सफलउ कीयउ,
हो जी इम जंपइ 'जिनराज' ॥७॥

## श्री बाहूबली गीतम्

पोतइ जइ प्रति बूझवउ, बंधव अमलो माण
वनि आवइ बे बहिनड़ी, करि प्रभु वचन प्रमाण ॥१॥
वीरा 'बाहुबलि''बाहूबलि', वीरा तुम्हो गज थकी ऊतरउ,
गज चढयां केवल न होइ वी० ॥ आंकणी ॥
मूठि भरत मारण भणी, ऊगामी धरि रीस ।
आव्यउ उपशम रस तिसइ, सहिस्यइ ए मुझ सीस ॥२॥वी०॥
मद मछर माया तजी, पंच मुष्टि करि लोच ।
धीर वीर काउसगि रहयउ, इम मन सु आलोच ॥३॥वी०॥
आगलि लघु बंधव अछइ, किम वंदिमु तजि माण ।
ऊपाडिस पग ऊपनइ, इहां थी केवल नाण ॥४॥वी०॥
वेलड़ीए तनु वीटियउ, डाभ अणी पग पीड़ ।
मुनिवर नइ काने बिहु, चिडीए घाल्या नीड़ ॥५॥वी०॥
सहतां एक वरस थयउ जी, तिस तावड़ सी भूख ।

मउड़उ सउ काने पडयउ, बहिन वचन पीयूष ।।६।।वी०।।
राज रमणि रिद्धि मइ तजी, हय गय नेक अनीक ।
ब्राह्मी सुंदरि साधवी, न कहइ वचन अलीक ।।७।।वी०।।
प्रतिबूधउ आलोचतउ, अत्रर न एवड़ मूढ ।
हुं द्रव्यत गज परहरी जो, भावत गज आरूढ ।।८।।वी०।।
लघु बंधव पिण केवली, वंदिमु तजि अभिमान ।
पाम्यउ पग ऊपाड़तइ, अनुपम केवल नाण ।।९।।वी०।।
केवल न्यान न ऊपनउ, इतला दिन नी वेठि ।
चाप्यउ किम ऊकसि सकइ, बाहूबलि पग हेठि ।।१०।।वी०।।
झूरयउ बूझयउ ऊवरयउ, आज लगइ सोभाग ।
साधु तणा गुण गावतां, 'राज'तणउ वड़ भाग ।।११।।वी०।।

## श्री नंदिषेण गीत

साधु जी न जइयइ जी पर घर एकला,नारी नउ कवण वेसास ।
'नंदिषेण'गणिका वचने रह्यउ,बार वरस गृह वास ।।१।।सा०
मुकुलीणी वर कामिणी पंचसइ, समरथ श्रेणिक तात ।
प्रतिबूधउ बचने जिनराज नइ,व्रत नी काढइ वात ।।२।।सा०।।
भोग करम पोतइ अण भोगव्यां, न हुस्यइ छूटक वार ।
बात करइ छइ सासण देवता, लीधउ संजम भार ।।३।।सा०।।
कंचन कोमल काया सोखवी, अरस विरस आहार ।
संवेगी मुनिवर सिर सेहरउ, बहु विधि लबधि भंडार ।४सा०
वेश्या घरि पहुतउ अणजाणतउ, धरमलाभ द्यइ जाम ।
धरमलाभ नउ काम इहां नही,अरथलाभ नउ काम ।।५।।सा०
बोल खमी न सक्यउ गरबइ चडयउ, खांचइ घर नउ नेव ।

दीठउ घर सारउ अरथइ भरयउ, जाणउ परतखि देव ।६स०
हाव भाव विभ्रम वसि आदरइ, वेश्या सुं घर वास ।
पिण दिन प्रति दस दस प्रतिबूझवी मूकइ प्रभु नइ पास ।।७सा०
इक दिवस नव आवी नइ जुडया, न जुड़इ दसमउ कोइ ।
आसंगाइत हासइ मसि कहइ, पोतइ दसमउ होइ ।।८।।सा०।।
नंदिषेण फेरि संजम लीयउ, विषय थकी मनवालि ।
चूको नइ पिण जे पाछा वलइ, ते विरला इणि कालि ।।६सा०
व्रत अकलंकित जउ राखण करइ, इणि खोटइ संसारि ।
श्री 'जिनराज' कहइ तउ एकलउ,
पर घरि गमण निवार ।।१०।।सा०।।

## श्री गजसुकुमाल मुनि गीतम्

संवेग रस मांहि झीलतउ, मन सुं करइ आलोच ।
दोषी नउ जउ दहवट गमुं,
तउ मइ साधु रे स्युं करि लोच ।।१।।
यादवराय धन धन 'गजकुमुमाल,'
तेहनइ करूं रे प्रमाण त्रिकाल
प्रभुपासि संजम आदरयउ, तेहनउ ए प्रमाण ।
मन वच काया बसि करी, जउ हूँ पामूं रे केवलज्ञान ।।२।।
मुनि मुगति जाववां अलजयउ, पड़खइ न दिन दस वीस ।
जास्यइ तिका जावउ घड़ी जउ दिन जायइ रे तउ छह दीस ।३।
समसाण जइ काउसग्ग रहयउ, तिण सांझि प्रभु नइ पूछि ।
मुनिवर अवर मन चितवइ,एहनइ साची रे छइ मुंह मूछि।४।
मुझ सूतां विण अवगुण तजो, सोमल अगनि परजालि ।

सिगड़ी रची सिर ऊपरइ,

चिहु दिसि बांधी रे माटी नी पालि ॥५॥

वेदना जिम अधिकी वधइ, तिम वधइ मन परिणाम ।

चवदगइ गुणठाणइ चड़ी, मुनि पामइ रे अवचल ठाम ॥६॥

देवकी जामणि नइ थई, ते रयणी वरस हजार ।

वंदिवा आवी प्रहसमइ, पणि नवि दीठउ रे प्राण आधार ।७।

पूछतां प्रभु मांडी कहइ, राति नी वीतग वात ।

हरि देखी हियड़उ फूटिस्यइ,

तिण कोधउ रे रिषीजी नउ घात ॥८॥या०॥

उपसम सुधारस सेवीयइ, पामीयइ अविचल राज ।

मन रगे साधु महंतना,इम गुण गावइ श्री 'जिनराज' ।९या०

## श्री स्थूलिभद्र गीतम्

राग—कानड़ो

थूलिभद्र न्यारी भांति तिहारी, हुं तेरी बलिहारी ॥थू०॥

भोजन सरस युवति संगति तजि, होत अवर ब्रह्मचारी ।१थू०

वा चित्रसाली वा सुख सैय्या, पूरव परिचित नारी ॥थू०॥

भर यौवन अरु भर पावस रितु, षट रस कउ आहारी ।२थू०

राखी अपणी टेक अखंडित, गणिका भी निस्तारी ॥थू०॥

श्री 'जिनराज' कहालूं वरणइ, तेरउ तूं अनुहारी ॥३॥थू०॥

## श्री विजयसेठ विजया सेठानी गीतम्

राग—नट

आली धन वो प्रिय धन वा प्यारी ।

भरि योवन इक सेज कउं सोवन,
किसन सुकल पखि ब्रह्मचारी ।।१।।ध०।।
आठुं जाम रमे मन माने, दाव परइ न मरइ सारी ।
काजल वीचि रहास[1] रयण दिन,
लागइ रेख न का कारी ।।२।।ध०।।
प्रिया तरती अपणउ प्रीउ तारयो, तरतइ पीउ प्यारी तारी ।
'राज' वदति कलिके जोगीसर,
[2]तापरि सिरि वारु डारी ।।३।।ध०।।

## श्री दमयन्ती सती गीतम्

छोड़ि चल्यउ 'नलराइ', निसि भरि सूती 'दमयन्ती' सती ।
नवल सनेही नाह, नयण न देखइ ते जागी छती ।।१।।
ए मन मोहन नाह, नगीनउ किहां गयउ ।
ए मन मोहन माहरउ, प्रीतम मिलिवा अलिजयउ ।।आं०।।
साद कीयां दस वीस, पाछउ दीधउ साद न को कीयइ ।
प्रीउ प्रीउ करइ पुकार, प्रेम विलूधी उलंभा दीयइ ।।२।।ए०।।
कामिणगारइ कंत, मुझनइ सीख न का चालतइ कही ।
दरसण आइ दिखाइ, हासइ री वेला हिवणां नही ।।३।।ए०।।
मइ विरहउ न खमाइ, सास तणी परि खिण खिण संभरइ ।
जेहसुं निवड़ सनेह, ते तउ वीसारया नवि वीसरइ ।।४।ए०।
नेहा नेह अपार, जे जड़ि घालि चल्यउ उर अंतरइ ।
लाख मिलइ लोहार,तउ पिण ते जड़ किम ही न वीसरइ।।५ए०
अवसर बोल्या बोल, सालइ साल तणी परि माहरइ ।

१ रहत, २ (वाके) नख शिख परि डारुं वारी–

हिव मुझ करिज्यो सार, वइगो जउ मन मानइ ताहरइ ॥६ए०
कवण कोयउ अपराध, प्रगट थइ मुझ नइ समझावियइ ।
अबला करइ विलाप, नाह निहेजउ किम परिचावियइ ॥७ए०
कठिन विरह निसि दीस, प्राणी तुझ नइ सहिवउ छइ ।
सइगू साथ म मूकि,
एहवउ साथ न को मिलस्यइ पछइ ॥८॥ए०॥
आगलि मारगि दोइ, इक जास्यइ पीहर इक सासरइ ।
चोर लिखित संपेखि, पहुंचइ भीम सुता निज पीहरइ ॥९ए०
कीधा कोड़ि जतन, अनुपम शील रतन राखण भणी ।
आइ मिलै नल राय,
आस फली सफली हिव आपणी ॥१०॥ए०॥
आज भलइ सुविहाण आज घड़ी सुघड़ी लेखइ पड़ी ।
इम बोलइ मुनि'राज' सोहइ शील सुरंगी चूनड़ी ॥११॥ए०॥

## सती कलावती गीतम्

बांहे पहिरया बहरखा बांधव मूक्या जेह ।मन मोहन।
राणी सहियर आगलइ, एम कहै सुसनेह ॥मन०॥१॥
धन धन सती 'कलावती,' समरीजइ तसु नाम ॥म०॥
जग मइ साकउ राखियउ,
सुर नर करइ प्रणाम ॥मन०॥२॥ध०॥
मुझ मन मिलिवा अलजयउ, साचउ साजण सोइ ॥म०॥
जिण ए मुक्या बहिरखा,
तिण सम अवर न कोइ ॥मन०॥३॥घ०॥
धनवेला धन सा घड़ी, धन दिवस धन मास ॥म०॥

छडी नइ जाई मिलुं, पूरुं मन नी आस ॥४॥मन०॥ध०॥
एम वचन राजा सुणी, मन मांहि पडयउ संदेह ॥म०॥
कुसती रइ मन कुण वसइ, जे मुं निवड़ सनेह ॥मन॥५॥ध०
गरभवती एकाकिनी, मूकी अटवी मांहि ॥म०॥
कापी आण्या बहरखा, साथइ लागी बांहि ॥मन०॥६॥ध०॥
सील प्रभावि सती तणा, नव पल्लव कर होइ ॥म०॥
सील वड़उ भूषण कह्यउ,
- सील समउ नहि कोइ ॥मन०॥७॥ध०॥
ते नामांकित बहरखा देखी संख नरिंद ।म०।
पुत्र सहित निज कामिनी, आणी परमाणंद ॥मन०॥८॥ध०॥
सुजस थयउ महि मंडलइ, साचउ सील रतन्न ॥मन०॥
'राजसमुद्र' गुण 'गावतां',
लोक कहइ धन धन्न ॥मन०॥९॥ध०॥

## श्री मयणरेहा सती गीतम्

लघु बांधव जुगबाहु नइ रे हां,
जीवनप्राण आधार ॥मयणरेहा सती ॥
मणिरथ रूपइ रंजियइ रे हां,विरूआ विषय विकार॥म०॥१॥
मयणरेहा राख्यउ सील रतन्न,
कीधा कौड़ि जतन्न, तिण कारण धन धन्न ॥प्रा०॥
पापी मणिरथ निसि भरइ रे हां,मूक्यउ खड़ग प्रहार ॥म०॥
पिउ पासइ ऊभी रही रे हां, 'देही शरण' च्यारि रे ॥म०॥२॥
सील रतन राखण भणी रे हां, ते पहुंती वन मांहि ॥म०॥
पुत्र रतन जायउ तिहां रे हां, जल गज नाखी साहि ॥म०॥३॥

विद्याधर पडती ग्रहो रे हां, चूकउ देखि सरूप ।।म०।।
ते मुनिवर प्रतिबूझव्यउ रे हां, दाखी विषम विरूप ।।म०४।।
प्रीतम सुर आवइ तिहां रे हां,पाय प्रणमइ करजोड़ि ।म०।
सुर सानिधि व्रत आदरइ रे हां, माया ममता छोड़ि ।।म०।।५।।
नंदन नमिराजा थयउ रे हां, पूरब करम विसेष ।म०।।
शिव सुख पामइ सासता रे हां, जग मांहि राखी रेख ।।म०६
जे अवसर चूकइ नहीं रे हां, पालइ सील रसाल ।।म०।।
'राजसमुद्र' कहइ तेहनइ रे हां, करूं प्रणाम त्रिकाल ।।म०७।।

## श्री सीता सती गीतम्

राग—सोरठी.

जब कहइ तुझ वनवास रे, सारथी भरि नीसास रे ।
सासन रे तास न को लोपी सकइ रे।।
ऊलटयउ विरह अगाह रे, तब नयण नीर प्रवाह रे ।
वाहन रे नाह नगरि पाछउ तकइ रे ।।१।।
प्रीतम कीयउ कुण काम रे, अबला तजी वनि आम रे ।
आमन रे राम निठुर कीजीयइ रे ।
परिहरिनइ करि द्रोह रे, राखीवा निज कुल सोह रे ।
सोहन रे मोहन विणु क्युं जीजयइ रे ।।२।।
कीधी न का खल खंच रे, सांभली पिशुन प्रपंच रे
पंचन रे रंचन न प्रीउ पूछया वली ।।
पूरवी सउकि उमेद रे, हराविस्यइ ते द्रूवेद रे ।
वेदन रे खेद न वचन साभली रे ।।३।।
आवियउ लंक सहेज रे, सूतउ न सुख भरि सेज रे ।

सेजन रे ए जनकेश सुता अछइ ॥
पूगउ न आलोच रे तइ कीयउ करम आसोच रे ।
सोचन रे लोचन भरि करिस्यइ पछइ रे ॥४॥
तिरण कीया कोड़ि जतन्न रे, राखिवा सील रतन्न रे ।
रतन्न रे मन्न न चूकउ जेहनउ रे ॥
आदरयउ श्री 'जिनराज' रे, धोजनउ सीता साज रे ।
साजन रे आज नवल जस तेहनउ रे ॥५॥

## श्री सती सीता गीतम्

लखमणजी रा वीर जोहो जीवन जो हो जी,
दशरथजी रा नंदन कांइ मुझ परिहरो जी ।
सास तणी परि खिण खिण पीउ पीउ संभरइ रे,
तुझ विरहो न खमाई जी ॥१॥
तूं मुझ प्राणआधार जी०,
चतुर सनेही लाल राचि न विरचियइ रे ।
झटक न दीजइ छेह जी,
आगलि पाछलि वात विमासियइ रे ॥२॥
बहिनी घालइ घात जी०,
लहि अवसर अणहूँता अवगुण पिण कहइ रे ।
पर घर भंजा लोक जी०,
नित नित नवलउ नेह तिके किम सांसहइ रे ॥३॥
वीसरिया दिनतेह जी०, हुं वनवासइ आवी हुंती एकली ।
अवरि सहू ए नारि जी०,
प्रीतम दउलति री माखी आवी मिलि रे ॥४॥

हुं अबला निरधार जी०,
कीड़ी ऊपरि कंता कटक न कीजीयइ रे।
जउ तइं जाण्यउ दोष जी०,
लोक हजूरइ धीजइ साच करीजीयइ रे ॥५॥
एकलड़ी वन माहि जी०,
इण वेला मुझनइ तुझ विण कुण साहरइ रे।
कहीयइ केहनइ साथ जी०,
मन की बात रही मन माहि माहरइ रे ॥६।
आपण आदरीयांह जी०,
नवि ऊभगियइ तउ ते नेह सराहियइ रे।
उत्तम एह आचार जी०,
जिण मीटइ मिलियइ तिण अंत नीवाहीयइ रे ॥७॥
बार वरस नइ अंत जी०,
धीज करण 'सीता' वहि आवी मनरली रे।
राखी जगमइं रेख जी०,
नारि जाति सुविशेषइ कीधी ऊजली रे ॥८॥
सोनइ सामन होइ जी०,
सील प्रभावइ ते साची सोभा लहइ रे।
धन धन सीता नारि जी०,
इण परि मन रंगइ मुनि 'राजसमुद्र' कहइ रे ॥९॥

इति सती सीता गीतम्



## रामायण सम्बन्धी पद

### ( १ ) मंदोदरी वाक्यम्

राग—सामेरी

मंदोदरी बार बार इम भाखइ ।
दस[१] सिरि अरु गढ लंका चाहइ,
तउ परस्त्री जन राखइ ।।१।।मं०।।
पलटयउ दिवस विभीषण पलटयउ, पाज जलधि परि झाखइ ।
बोवइ पेड़ आक के आगण, अंब किहां थइ चाखइ ।।२मं०।।
जीती जाइ सकइ नहीं कोउ, वाणि एहि जगि आखइ ।
'राज' वदत रावण क्यु समझइ, होणहार लंकाखइ ।।३मं०।।

### ( २ ) मंदोदरी वाक्यम्

राग - सामेरी

आज पीउ सुपनइ खरी डराई ।
जलधि उलंघि कटक लंका गढ, घेरयउ परी लराई ।।१आ०।।
लूटि त्रिकूट हरम सब लूटी, त्रूटी गढ की खाई ।
लपक लंगूर कंगूर बइठे, फेरइ राम दुहाई ।।२।।आ०।।
जउ दस सीस वीस भुज चाहइ, तउ तजि नारि पराई ।
'राज' वदत हुणहार न टरिहइ,
कोरि करउ चतुराई ।।३।।आ०।।

---

१- जो दस सीस वीस भुज चाहइ.

## (३) मंदोदरी वाक्यम्

राग—गुण्ड मल्हार

सीय की भीर रघुवीर धायउ ।
बधी जब पाज तब नाव हाजति टरी,
अंगि अति अधिक उच्छाह आयउ ।।१।।
नीर निधि तीर गजराज सिरि गिरि शिखर,
झलहलइ सूर जिम दैवरायउ ।
घूक दसकंध तब अंध सउ होइ रह्यउ,
किरण लंगूर गढ लंक छायउ ।।२।।सी०।।
हाक हनुमान की जानकी पदमिनी,
प्रेमरस परम आनंद पायउ ।
वदत 'जिनराज' मंदोदरी कुमुदिनी,
सोच वसि बहुत संकोच खायउ[२] ।।३।।सी०।।

## (४) सीता विरह

राग—मारुणी.

सीय सीय करत पीय सीय विण सब सूनउ ।
दोउ नयण सावण भादु भये, ऐसी भांति रूनउ ।।१।।सी०।।
समरि समरि सीय के गुण, ऊमड़त दुख दूनउ ।
रयणि नीद न दिउस भूख, रहत ऊणउ झूणउ ।।२।।सी०।।
आठूं याम रटत जात, विगरि सीय अलूणउ ।
'राज' धार होत मन मिलइ···· ····अमूणउ ।।३।।सी०।।

---

२- पायउ

## (५) राम वाक्यम् सुभटानाम्

असुरपति आपणि कमाई तइं न डरिहै।
कोण जलनिधि जल तरिहै ॥अ०॥१॥
वांकउ गढ वांकी खाई, वांके हुइ जाके सहाई।
काहू कुं नजर मांहि न धरहइ ॥अ०॥२॥
जीते च्यारे दृग्गपाल, इन्द्र हुं कइ उरिसाल।
माता भी विधाता पाउ परिहइ ॥अ०॥३॥
लंका कउ कमार ठउर ठउर हूं को जयत वार।
गह भी भराए पाउ भरिहइ ॥आ०॥४॥
सीस दस वीस भुजईश की कृपा थैं पाए।
मार्‍यो भी काहू को न न मरिहइ ॥अ०॥५॥
बडे वडे वीरन कइ आगइ कहइ रघुवीर।
सीय की खबर कउन करिहइ ॥अ०॥६॥

## (६) हनुमंत वाक्यम्

जु कछु रघु राम कहइ सोऊ[1] करिहुं,
दशमुख थइं न न डरिहुं।
सीय की खबर सुतो बातन की वातहइ,
सीय भी कहउ तउ आण धरिहुं ॥१॥ज०॥
जलधि उलंघ गढ लंक भी उलंघि कइ,
कहउ तउ पलक मइ पकरिहुं।
पावक की पोट दे दे कंचन कउ कोट गारूं,
कहउ तउ निशाचर सुं लरिहुं ॥२॥ज०॥

१—सोइ

पाप कउ पहार परतीय कउ हरणहार,

कहउ तउ पलक मइ पकरिहु ।

पवन कउ पूत कहउतउ तउ हूँ तिहारो दूत,

'राज' को भराए पांउं भरिहुं ।।३।।ज०।

## (७) पुनः हनुमंत वाक्यं रामचंद्र प्रति

जउ पइ होवत राम रजारी ।

तउ तूं भी देखत मेरी मइया, दयत दयत कूं सजारी ।।१।।ज०।

दसउं सीस बल दयत दिसो दिसि,छीन लियत पचरंग धजारी ।

कन कन करूं कंगुरे गढ के,

करज बुरज पुरजा पुरु जारी ।।२।।ज०।।

फेरत आन दान मेरे प्रभु की,आपण वस कर सकल प्रजारी।

'राज' रजा विणु इया हुइ आई,

लंका लाइ हुडाग प्रजारी ।।३।।ज०।।

## (८) मंदोदरी वाक्यम्

राग– धन्यासी ( जयतश्री )

आज पिउ सोवत रयण गई

नायक निपुण दूध मइं काहे, कांजो आण ठई ।।१।।आ०।।

मेरउ कहयउ विलग जिन मानउ, हइ विषुवेल वई ।

विगरे काम कहउगे मोकुं, किण ही न खबर दई।।२।।आ०

सुणियत हइ गढ लंक लयण कुं, होवत राम तई ।

डरत न कहत 'राज' सुं कोऊ, कन कन बात भई ।।३।।आ०

## ( ९ ) रावण प्रति सीता वाक्यम्

राग – सोरठ

हरि कउ नाम लइ दसकंध, काहें तजइ कुल कउ माग ।
राम विगु परपुरुष मेरे, भाय कारउ नाग ॥ह०॥१॥
अति चतुर तूं मति होइ आतुर, इहां न तेरउ लाग ।
पतिव्रता कइ प्रेम षति सुं, अउर सुं वइराग ॥ह०॥२॥
तजि नीच गति भजि ऊंच संगति[१], वढइ[२] दिन दिन आग ।
रघुवीर रूड़इ 'राज' रावरा, किम रहइ सिर पाग ॥ह०॥३॥

## (१०) हनुमंत प्रति सीता वाक्यम्

राग - सोरठ

आगइ आइ ठाढउ रहयउ वनचर, कर चरण प्रणिपात ।
आन तजि जानकी पूछी, राम की कुसराति ॥१॥आ०॥
सहल सी हुं टहल करती, साग मूरी पात ।
चरण चेरी आण घेरी, मोहि कछु न वसात[१] ॥२॥आ०॥
रहत हइ किस भांति पीउ कइ, कउण हइ संघात ।
कहि देव दाणव 'राज' आगइ, कही मेरी वात ॥३॥आ०॥

## ( ११ ) विभीषण वाक्यम्

राग–सारंग

कहत अइसी भांति बिभीषण भ्रात ।
तूं दसकध अंध भयो जा परि, उवा दुहिता तूं तात ॥१क०
कहां गई तेरी चतुराई, जाण बूझ विष खात ।
नई हइ राज लाज भी जई हइ, परभव दुरगत पात ॥क०२॥

---

१- पदवी. १- चढइ १- सुहात.

अयसउ हुयो न हुइ कुबुधी, थिर रहइगो इया बात ।
'राज' न जोर चलइ भावी सुं, काहू कउ तिलमात ।।क० ३।।

## ( १२ ) पुनः विभीषण वाक्यम्

राग—सारंग

निपट हठ झालि रहयउ बेकाम ।
जानत हूँ मेरइ भायइ तू, खोयइ गउ सब माम ।।नि०।।१।।
कीनउ पात पात सब उपवन, रहयउ राम कउ नाम ।
अइसी आग व्रजागि लगाई, जरे कनक के धाम ।।नि०।।२।।
जा कइ दूत करी या करणी, सो कहा करहइ राम ।
समझउ 'राज' भेज दयउ सीता,
जनि कोउ करहु संग्राम ।।नि०।।३।।

## मोह बलवंत गीतम्

राग-मल्हार

मोह महा बलवंत, कवण जीपी सकइ रे क० ।
इण आगलि पग मांहि, रहइ दस वीस कइ रे ०द०।।
सहुनइ आण मनावइ, चउपट चउहटइ रे च०।
किण ही आगलि एह न, तिल भरि अउहटइ रे ति०।।१।।
'रिषभदेव'नी पूत, खबरि नवि को लीयइ रे व०।
'भरत' भणी 'मरुदेवा', उलंभा दियइ रे उ०।।
भूख तृषा तप सीत, सहतउ सांभली रे सा०।
झूरंतां निसि दीस, नयन छाया वली रे ।।न० ।।२।।
जामिणि नो अनुकंपा, मन मांहे वसी रे म०।
लीन रहयउ पाणी वलि, प्रभु एकणि दीसो रे प्र०।।

'महावीर' ल्यइ आम, अभिग्रह आकरू' रे ।
माता पिता जीवंता, हुं ब्रत नादरु' रे ॥कि०॥३॥
चउनाणी 'गोयम', गणधर धरणी ढलइ रे कि धर०।
बालकनी परि वीर विओगइ विल विलइ रे वी०॥
'सज्जंभव सरिखा पिण, इण मोहइ नड़या रे इ०।
'मनक' तणइ विउग, नयन आंसू पड़या रे ॥न०॥४॥
शिवगामी पिण 'राम', छमास विकल रह्यउ रे छ०।
'लखमण' तणउ करक, लेई खांधइ वह्यउ रे ले०॥
मात वचन जंजारे, सुत सूतउ कस्यउ रे सु०।
बार वरस गृहवास, फिरी 'आद्रन वस्यउ रे ॥फि०॥५॥
'अरहन्नक' नइ नेह, जणणि परवसि पड़ी रे ज०।
घरि घरि पूछइ जाइ, घणुं इक आरड़ी रे घ०॥
किहां माहरउ अरहन्नउ, दीठ कहउ ल्याउं जई रे क०।
भमती गलियां माहि, खरी गहिलो थई रे ॥६॥
इंद नरिंद फणिंद, विद्याधर मानवी रे वि०।
विनड़इ सहु नइ मोह, करी परि नव नवी रे क०।
पोतइ वीतग वात कि, मन माहे धरी रे कि म० ।
इम जंपइ 'जिनराज' प्रगट वचने करी रे ॥प्र०॥७॥

## वैराग्य गीत

राग—गउड़ी

सुख लोभी प्राणी सांभलउ जो, सीख सगुरु की सार ।
वरजउ विषय विकार, लेजो संजम सार ॥१॥सु०॥
लाधउ आरिजदेस मणुअ भव, लाधउ गुरु संजोग ।
छांरित नाही काहइ मूरिख, मधुबिन्दु सम ए भोग ॥२॥सु०

चउरासी लख भेष बणाए, जीव अणंती वार ।
करम वसइ भव माहे भमतां, लाजत नही गुमार ।।३।।सु०।।
तन धन योवन हइ सब चंचल, जइसइ पीपल पान ।
विरणसत वार न लागत इण कुं, ज्युं संध्या कउ वान ।।४।।सु०
जे सिर ऊपरि छत्र धराते, त्रिभुवन माहि प्रधान ।
ते भी काल कवल से कीने, तूं क्या करइ गुमान ।।५।।सु०।।
अवरहि द्यइ उपदेश विविध पर, आप न तजत लिगार ।
मासाहस पंखी परि करतउ, किम पामिस भव पार ।।७।।सु०।।
ग्यान समुद्र मइं मगन होइ करि, लेजे अरथ विचार ।
'जिनसिंहसूरि' सीस इम बोलइ, 'राजसमुद्र' सुखकार ।।७सु०

## पंचेन्द्रिय गीत

सुर नर किन्नर गाय आज्ञा हो,
आज्ञा हो जेहनी मन रंगइ वहइ हो ।
बारह परषद मांहि सामी हो,
सामी हो वीर जिरणेसर इम कहइ हो ।।१।।
फरस तरणइ विकार रावरण हो,
रावरण हो राजा दुखियउ रड़वड़इ हो ।
रसनायइ कंडरीक सातमी हो,
सामी नरकइ ततखिरण जे पड़इ हो ।।२।।
मंत्री जेम सुबंधत घ्राणइ हो,
घ्राणइ इण भव ना सुख सउ गमइ हो ।
दृष्टि तणइ विकार रूपी हो,
रूपि तिम वली लखमरण भव भमइ हो ।।३।।

सज्यापालक जेम तरुयउ हो,
तरुयउ अति तातउ श्रवणे सहइ हो
इणि परि इण जगि मांहि प्राणी हो,
प्राणी बहुला इण वसि दुख लहइ हो ॥४॥
रमणी रंग पतंग तिण सुं,हो तिणसुं राग रिती कबइ मत धरइ हो।
इणि रंग राता जेह मुगधा हो,
मुगधा पाप तणउ अपणउ भरइ हो ॥५॥
फल किंपाक समान देखतां हो,
देखतां सहु जन नइ सुख संपजइ हो।
कडूआ एह विपाक जाणइ हो,
जाणइ जब नाना विध दुख भजइ हो॥६॥
ताथइ विषय विकार मूकउ हो,
मूकउ जेम मुगति रमणी वरइ हो।
इम मुनि 'राजसमुद्र' मन मइ हो,
मन मइ एह भाव नित नित करइ हो ॥७॥

## निन्दा वारक गीत

राग—धन्यासी

सुणहु हमारी सीख सयाणे, जणि कहु दोष विराणे रे।
निंदक नर चण्डाल समाणे,
आगम मांझि कहाणे रे ॥सु०॥१॥
निंदक सोह न पावइ जगमें, काच सकल ज्युं नगमइं रे।
निंदक ठावउ गिणीयइ ठगमइ,
जइसइ काग विहग मइं रे॥सु०॥२॥

तात विराणी करइ गहेलउ, जाणइ नांहि महेलउ रे ।
सालइ कुवचन खरउ दुहेलउ,
ज्युं आंगुरी इत हेलउ रे ॥सु०॥३॥
रजक विचारउ पर मल धोवइ, सो भी लाहउ जोवइ रे ।
विण स्वारथ निंदक मल धोवइ,
आपहि आप विगोवइ रे ॥सु०॥४॥
जिण विण निरदूषण नहि कोइ, तउ भी कहणा जोई रे ।
झूठ गुमान कीयइ क्या होई, पछतावइगा सोई रे ॥सु०॥५॥
पर के वयण सुणी न पतीजइ, सो नर चतुर कहोजइ रे ।
जउ अपणे नयणे देखीजइ,
तउहु विचार करीजइ रे ॥सु०॥६॥
अपणी करणी पार उतरणी, पर की तात न करणी रे ।
'राजसमुद्र' पभणइ मन हरणी,
ज्युं पावउ शिव घरणी रे ॥सु०॥७॥

## आत्म शिक्षा ( विणजारा ) गीत

विणजारा रे वालंभ सुणि इक मोरी बात,
तूं परदेशी पाहुणउ वि० ।
विणजारा रे मकरि तूं गृहवास,
आज काल मइं चालणउ वि० ॥१॥
वि० रसिक न कीजइ मीत, वात न पूछइ विरह री वि० ।
वि० चउरासी लख नारि, तइ परणी तइ परिहरी वि०॥२॥
वि० जण जण सेती प्रीति, करि पीछइ पचताईयइ वि० ।
वि० जाकउ अविहड़ नेह, ताहोस्युं चित लाईयइ वि० ॥३॥

वि० आइ जुडइ जब साथ, तब तउ तूं न सकइ रही वि० ।
वि० अइसउ मंत न तंत, राखुं हूं अछर गही वि० ॥४॥
वि० भरि भरि नयण म रोय, करि कायर काठउ हीयउ वि० ।
वि० मो गल नवसर हार, मो साथइ संबल लीयउ वि० ॥५॥
वि० जे वउलाऊ साथि, तासुं म करे रूसणउ वि० ।
वि० दूजण न हसइ कोइ, काज न विणसइ आपणउ वि०॥६॥
वि० लाखीणउ दिन जाइ, चेतन तूं चेतइ नही वि० ।
वि० 'राजसमुद्र' इम सीख, अपणइ आतम कुं कही वि०।८।

## आत्म शिक्षा गीत

राग—गउड़ी

इक काया अरु कामिनी परदेसी रे,
अंत न अपणी होइ मीत परदेसी रे ।
संग न काहू कइ चलइ परदेसी रे, आप विमासी जोइ मी० ॥१
तास भरोसउ क्या करइ प० ने विछुरइ उखार[1] मी० ।
अइसउ साजण ढूंढिलइ प० जे पहुंचावइ पार मी० ॥२॥
आगइ सेज न पाथरी प० ले किछु संबल साथि मी० ।
पीछइ पछतावइ कीयइ प० आथि न आवइ हाथि मी० ॥३॥
घर बइठां दिन वहि गए प० केस भए सब सेत मी० ।
अजहु कछु विगरयउ नहीं प० चेत सकइ तउ चेत मी० ॥४॥
अपणउ अपणउ क्या करइ प० अंतर करहु विचार मी० ।
'राजसमुद्र' कहइ देखि लइ प० स्वारथ कउ संसार मी०।५।

---

१- जे हुवइ जावणहार

## आत्म शिक्षा गीत

राग—सारग

जीवन मेरे यहु तेरउ कउण विसेस ।
साधु कहात करत धन आशा,
ता तइ हो फिरत विदेस ।।१।।ज०।।
पेम कइ फंद परत जण जण मु, ता विण धरत अंदेस ।
देखि पर रमणि नयनो नचावत, अरु पठवत संदेस ।।२जी०
कूप परत कर दीप लई जो, तिण सु का उपदेस ।
'राजसमुद्र' भणि लहि परमारथ,सफल करउ इहु भेस ।।३जी०

## सीखामण गीत

राग—केदारा गउड़ी.

घर छोडि परदेस भमइ, मेलिवा बहु परि आथ ।
परलोक जातां जीवनइ कांई, नावइ रे ते पिण साथ ।।१।।
जीवन लाल सुगु इक मेरे सीख ।
जेहवी मीठी रे सरस रस ईख ।।जी०।।आंकणी।।
करि कूड परिजन पोषीयइ, ते सहु रंग पतंग ।
वोलाइ मरहट थी वलइ, कोइ नावइ रे ताहरइ संग ।।२जा०
गोरडी प्रमुख मिलो रडइ, स्वारथ पुकारइ ताम ।
पुण एम मनहि न चीतवइ,
पियुडइ पामइ रे किण गति ठाम ।।३।।जी०।।
वड़ बड़ा नरवर इम चाल्या, तूं करइ कवण आलोच ।
जिण वाय ऊडइ हाथिया, तिहां केही रे पूणी नी सोच ।।४जी०

इक चलइ आवइ एकलउ, भव रुलइ एक अनेक ।
आपणे कीधे करमड़े, जीव पावइ रे सुख दुख एक ॥५जी०॥
संसार सहु ए कारिमउ, कारिमउ ए परिवार ।
राय कुमर कोरव सउ पड्या,
ते गिणिया रे गान गंधार ॥६॥जी०॥
इम जाणि जिन ध्रम कीजियइ, जिम पामियइ भव पार ।
'राजसमुद्र' सीखामण दीयइ,
जीव चेतउ होयड़ा मझारि ॥७॥जी०॥

## जकड़ी गीत

राग—वेलाउल.

मेरउ नाह निहेजउ, अब मइ जाण्यउ री सहेली ।
अंतरगति न कही काहू सुं,आप विदेस चले जउ ॥१॥मे०॥
विछुरत पीर न होत विरह की, निस दिन रहत सतेजउ ।
मग जोवत कबहुं न पठायउ, काम दहूं कउरेजउ ॥२मे०॥
'अलख सरूपी कुं संदेसउ, तुम भी हिलि मिलि भेजउ ।
'राज' वदति फिरि जाब न पाउं,
करिहुं कठिन करेजउ ॥३॥मे०॥

## आत्म-प्रबोध जकड़ी गीत

राग—सारंग मल्हार

हमारइ माई कंत दिसावर कीनउ ।
आयइ जोर हुकम सांई कइ,
पल भरि रहण न दीनउ ॥हम०॥१॥
आब कहा दरगाह करइगउ, चलिहइ खाइ खजीनउ ।

दि गु छिणु घटत अवधि बूझी नहीं,
प्रेम सुधारस भीनउ ॥हमा०॥२॥
दुनिया देखि चिहुरवाजी सी, तउ भी प्रिउ न पतीनउ।
श्री 'जिनराज' वदन अउ चित मइ,
संबल साथ न लीनउ ॥हमा०॥३॥

## आत्म प्रीतम गीत

यब तुम्ह ल्यावउ माई री तुम्ह ल्याउ,
मेरो नाह मनाइ कइ ल्याउ।
दउरि दउरि तुम्ह पाइ परत हुं,
मइं हठ छारयउ री प्रेम बणाइ ॥१॥
देखउ तड उण की चतुराई, छार चलत हइ नेह लगाई।
कहा करूं पीहर मइ बइठी, अइसइ री मो दिन जाइ ॥२॥
जउ नायउ तउ मौन पकरि करि, संगि चलूगी गौत गवाई।
'राजसूरि' भणि अलख सरूपी,
आवइ जावइ री आप सभाई ॥३॥

## आत्मा-देह सम्बन्ध

राग — गउड़ी—केदारउ, विहागडो.

विदेशी मेरे आइ रहे घर[१] मांहि।
ना जाणुं कब गवण करइंगे[२],
मोहि भरोसउ नांहि ॥वि०॥१॥
मोपइ मोहन मंत्र नही किछु, राखुं पकरि करि[३] बांहि।

१- गृह २- करेसी ३- गहि

दिन दोउ रहत वचन के अटके, अंत विराणे जांहि ॥वि० १॥
विणुजारइ ज्युं छोरि चलइगे, जरती छारि[1] क भाहि ।
'राजसमुद्र' भणि रसिक शिरोमणि,
इक थानक [2] न खटांहि ॥वि०॥३॥

## परमारथ पिछानो

राग—जइतसिरी

तूं भ्रम भूलउ रे आतम हित न करइ,
आपणपउ नायउ नजरइ ॥१॥
पइठउ श्वान काच कइ मंदिर,
मूरखि भुसिहि भुसि मरइ ॥२॥तू०॥
अतुली बल केहरि जल पूरित,
कूया भीतरि कूद परइ ॥३॥तू०॥
दर्प्पण कइ परसरि आयइ थइ,
तुमचर कइसी भांति लरइ ॥४॥तू०॥
भीति फटिक की देखि दूरि थइ,
परिणत मइगल आइ अरइ ॥५॥तू०॥
परमारथ तउलुं न पछानइ तउलुं 'राज' न काज सरइ ॥६

## 'जागउ' प्रेरणा

राग—धन्याश्री

सोवन को वरीयां नाही बे, जागउ आपणइ घर मांहि बे ॥१॥
हेरू न विछांणा साही बे, आयउ अब[3] धवलउ धांही बे ॥२॥

---

१- भाहि जगाहि, पिछाहि २- ठौर - ३धुरी

छोरउ धणकइ गल बांही बे,
योवन धन धन लूटयउ काहीं बे ॥३॥
वाहर चाढंउ शुभ लांही, बे, न घिरइ धन जाही तांही बे ।४।
जागउ'जिनराज'मसांही बे,आयउ सिरि सूर सव्वांही बे ॥५॥

## जीव शिक्षा

राग—गूजरी

मेरउ जीव परभव थइ न डरइ ।
विथा करम बांधति बडूआ[1] जिम,
मुह मइ किछु न परइ ॥१॥मे०॥
दउरीं दउरी अउरन को अउरति, देखण चाह धरइ।
नवला नेह करि फिरि पचतावत,
जब लालन विछुरइ ॥२॥मे०॥
मइ क्या सीख दिउ नयनन कुं, जउ मन मउज करइ।
वखत लिखि 'जिनराज'[2] तखत तइ,
टारत ही न टरइ ॥३॥मे०॥

## परदेसी गीत

राग—धन्यासी

परदेसी मीत न करीयइ री,
करीयइ तउ विरह न करीयइ री ॥१॥प०॥

---

१- बटुआ २- मुनिराज

उवे उठि चलइ भर दरीयइ री,
कइसइ करि बांह पकरीयइ री ॥२॥प०॥
जउ पइ अंचुर गहि लरीयइ री,
तउ चिहुं मइ लाजुं मरीयइ री ॥३॥प०॥
काहू कउ चीत न हरीयइ री,
तउ काहइ परवसि परीयइ री ॥४॥प०॥
'जिनराज' वचन चित धरीयइ री,
तउ प्रेम कइ पंथ न खरीयइ री ॥५॥प०॥

## आत्म शिक्षा

भ्रम भूलउ ता बहुतेरउ रे,
न कीयउ जां मेरउ मेरउ रे ॥भ्र०॥१॥
ज्ञानी गुरु ज्ञान बतावइ रे,मेरउ मेरउ मोहि भावइ रे ॥२भ्र०
करि प्राणी दूध नवरेउ रे, मेरउ होइ हइ क्युं तेरउ रे ॥भ्र०३
मेरउ मेरउ जउ कहिहु रे,हेलइ भवसायर तरिहु रे॥भ्र०४
मेरउ छंड धरम सखाई रे,सो करि 'जिनराज' सदाई रे॥भ्र०५

## परमार्थ-साधन जकड़ी गीत

राग—गोड़ी

रे जीउ आपणपउ अब सोच ।
क्या खायउ अरु क्या जु कमायउ,
करि किछु इहु आलोच ॥१॥मे०॥
योवन मद मातइ तइ कीने, कुण कुण करम असोच ।
कपटी सुकृत करण की वरीयां, आण्यउ मन संकोच ॥मे०२॥

वारउ विषय वरग परि दउरत, मन बलवंत बलोच ।
परमारथ 'जिनराज' पिछाण्यउ[१],
क्या साध्यउ करि लोच ॥मे०॥३॥

## किणहू पीर न जाणी

पिउ कइ गवरिण खरी अकुलाणी ।
मिलण सहल पुनि मिलि करि विछुरण,
अयन जहर नीसाणी ॥१॥
सुधि बुधि सकल गई प्यारी की, धरणि ढरत मुरझाणी ।
सबही सइ चउ लइत छूटइ थइ, अइसी भईय विराणी ॥२॥
भउरहि सांग वणाइ विदा दी, जल बल छारि कहाणी ।
श्री 'जिनराज' वदत विरहणि की,
किणहू पीर न जाणी ॥३॥पि०॥

## पिउ-पाहुणो

राग—धन्यासी ( वेलाउल )

जब जाण्यउ पोउ पाहुणउ, तब तइसइ रहोयइ ।
विण चित सु चित लायकइ, कब लग दुख सहीयइ ॥१॥
समझायउ समझइ नहीं, कहा फइटउ गहीयउ ।
आपणउ राख्यउ ना रहइ, हल देवल,[२] कहीयइ ॥२॥ज०॥
प्रेम वणाइ पतंग सउ, उवा कइ संग न वहीयइ[३] ।
नयन नीर डारउ कहा, रोयां 'राज' ना लहीयइ ॥३॥ज०॥

---

१- न जाण्यउ २- दे बल ३- चाहियइ

## आत्म प्रबोध तेरा कौन ?

राग – केदारउ

जीउ रे चाल्यउ जात जहान ।
धोख मारम परयो निवहइ, बाल विरध युवान ॥१॥
कउण परि भंडार भरि हइ,अंत वासउ रान ।
छूटि इक अपणी कमाई, संग न आवइ आन ॥२॥
ग्रन्थ पढि पढि जनम वउरयउ, मिटयउ तउ न अज्ञान ।
तूं न का कउ न 'कउन तेरउ', समझि 'जिनराजान' ॥३॥

## स्पर्धा

कहा कोउ होर करउ काहू की ।
पीतर कनक होवत कबहू, देख्यउ निसि दिन फूंकी ॥१॥
केकेइ दसरथ कइ आगइ, बहुत भांति करि कूकी ।
राजा 'राम' भयउ उन आपणइ,
कुल की कार न मूकी ॥२॥क०॥
न टरत वखत लिखत जु छठीकउ, याही मइ सब छूकी ।
इण वचने 'जिनराज' पलक मइं, सारी खलक रजू की ॥३क

## जकड़ी गीत देह चेतन-वृत्ति

राग—जइतसिरी, धन्याश्री मिश्र

लालण मोरा हो, जीवन मोरा हो अब कित मौन गही,
मइ तेरइ पग की पनही ॥१॥
कोड़ि विलास किए तइ हिल मिलि,
क्या चित तइ उतरी अबही ॥२॥ला०॥

जउ तुम्ह अउर ठउर चित दीनउ,
तउ मोकु तजि करि गुनही ॥३॥ला०॥
छारि चलत हमरे विललाते,
किणहू अंतरि गति न लही ॥४॥ला०॥
श्री 'जिनराज' वदत सुकुलीणी,
संग चली पीहर न रही ॥५॥ला०॥

## पंचरंग कांचुरी देह, आत्मा संयोग, पंच तत्व की देह

राग—सारग

पचरंग कांचुरी रे बदरंग तीजइ धोइ।
बहुत जतन करि राखीयइ, अंत पुराणी होइ ॥पं०॥१॥
सीवणहारउ डोकरउ रे, पहिरण हार युवान।
चउथउ धोब खमइ नही हो,
मत कोउ करउ रे गुमान ॥पं०॥२॥
कारी का लागइ नही रे, खाचि न पहिरी जाइ।
बुगचइ बांधो ना रहइ रे इण कउ एह सभाइ ॥प०॥४॥
जब लगि इहु सयोग हइ हो, तब लगि हरि गुण गाइ।
लघु दामी सद्‌गुरु कहइ हो, वेर वेर समझाइ ॥पं०॥४॥

## जाति-स्वभाव अज्ञानी शिक्षा

कहा अग्यानी जीउ कुं गुरु ज्ञान वतावइ।
कबहुं विष विषधर तजइ, कहा दूध पिलावइ ॥क०॥१॥
ऊषर ईख न नीपजइ, कोऊ बोवन जावइ।
रासभ छार न छारि हइ, कहा गंग न्हवावइ ॥२॥क०॥
काली ऊन कुमाणसां, रंग दूजउ नावइ।

श्री 'जिनराज' कोऊ कहा, काकउ सहज मिटावइ ।।३।।क०।।

## परमार्थ अक्षर

राग - धन्यासी

तुम्ह पइ हइ ग्यानी कउ दावउ ।
पढि पढि ग्रन्थ कहा तत पायउ, सो मोकु समझावउ ।।तु० १।।
अच्छर बहुत सुण्या होइ झगरउ, सो जन मोइ सुणावउ ।
एक अच्छर मइ हइ परमारथ, अपढथउ सोइ पढावउ ।।तु० २
साथ रहत हइ नाथ निरंजरग, करि अंजण दिखलावउ ।
श्री 'जिनराज' तिहारउ चेरउ, आपो आप मिलावउ ।।तु० ३

## अकड़ी गीत, वहां की खबर

राग – सामेरी

मेरे मोहन अब कुण पुरी वसाई ।
निसि दिन मग जोवत सु सनेही,
पतिआं क्युं न पठाई ।।१।।मे०।।
बिछुरण की वरीया चितवत हो, आवत नयण भराई ।
हइ कोऊ अइसइ हितू हमारउ, जो ल्यावइ बहुराई ।।२।।मे०
किण ही खबर न दइ उहां की, अब हइ कउण सखाई ।
श्री 'जिनराज' वदत इक अपणी, आवत साथ कमाई ।।३मे०

## परदेशी प्रीति

राग—आसा

कबहुं न करि री माई मीत विदेसी ।
जउ पइ कोरि जतन करि राखुं, तउ भी अंत चलेसी ।।१।।
भमत भमत आयउ अब या घरि, दिन दस वीस रहेसी ।

या मइ हुकम भयउ साहिब कउ,तउ पलभर रहण न देसी ।२।
प्राणनाथ विछुरण की वेदन, निसि दिन कउण सहेसी ।
श्री 'जिनराज' नवल नवरंगो, बहुरि न खबरि गहेसी ।।३।।

## पश्चाताप

राग—नटनारायण

आली प्रीउ की पतयां हम न वची ।
कागद पर आखर हइ मसि के,
नीर झरत दोउ दृग हमची ।।आ०।।१।।
फेरि जबाब न कोऊ लिखाउ, पाछौ दे घालउ खरची ।
ऊपरि अउधि जाण लागे दिन,
मग जोवत जोवत विरची ।।आ०।।२।।
होवत प्राण तई निकसन कु, अब लगि क्युं ही क्युंहि वची ।
'राज' वदत विरहणि विरहातुर,
प्रीतम मिलिवा कुं ललची ।।आ०।।१।।

## सांइ नाम संभारो 'भव-भ्रमण'

राग—नट

आली मत आपउ परवसि पारइ ।
का कउ प्रिउ अर का की कामिणि,
हइ सब स्वारथ कइ सारइ ।।१।।आ०।।
पीउ पीउ करत कहा पीउ पईयइ, काहइ कुं धीरज हारइ ।
टरत न वखत लिखत इक रंचक,
झुरि झुरि दृग जल जण डारइ ।।२आ०।।

भव मइ भमत किते पीउ कीने,सो पीउ जो दुरगति टारइ ।
'राज' चतुर वनिता सांइ कउ,
नाम अहोनिसि संभारइ ।।३।।आ०।।

## आत्म प्रबोध

हिलि मिलि साहिब कउ जस वाचउ ।
हइ कछु पइ मज हथ इजाजित,
जागि बूझि जिन राचउ ।।हि०।।१।।
देखउ आइ वूढापइ दोनउ, गिरि परि सेत सराचउ ।
अब इत उत भटकत मन मरकट,
बहुत करत हइ काचउ ।।हि०।।२।।
आखरि आइ लगइ गउ इक दिन, जम कउ जोर तमाचउ ।
उण वरीयां तुम्ह याद करउ के,
'राज' रहत सोउ साचउ ।।हि०।।३।।

## झूठी दिलासा

वउरे मास वरस हु वउरे, मग जोवत दिन रइणि विहाई ।
विरहणि कब लगि धीरज धरिहइ,
पीउ की खबर न कोइ द्यइ आई ।।१।।व०।।
खरची की तउ बात सहल हइ,कागद तभी लिखि कइ न पठाई ।
झूठइ ही मन नइकु दिलासा, कबहू काहू सु न कहाई ।।२व०
ठउरि ठउरि अइसी ही करिहइ,दिन दस वीस रहो उठि जाइ ।।
श्री 'जिनराज' नवल नागर सु,
आली मेरउ किछु न वसाइ ।।३।।व०।।

## आत्म प्रबोध, सुख–दुख

राग – कान्हरउ

रे जीउ काहइ कुं पचतावइ ।
हइ किछु घाट कमाई तेरी, तउ अइसे फल पावइ ।।रे०।।१।।
छारि गुमान कही काहू कइ, आगइ दांत दिखावइ ।
वखत लिखित आवत हइ सुख दुख, रहि नइ अपणइ दावइ ।२रे०
बोवइ पेड आक कइ आंगणि, आंब कहां सुं खावइ ।
परम पुरुष संपद अरु आपद, 'राज' रहत सम भावइ ।।रे०३

## मन शिक्षा, माया जाल, घड़ी में घड़ियाल

राग – केदारउ

मन रे तूं छारि माया जाल ।
भमर उडि बग आइ बइठे, जरा के रखवाल ।।१।।म०।।
बाल बांधि सिला सिर परि वचइ कित इकु काल ।
चेत चेतन वाजि जइहइ, घरी मइ घरिआल ।।२।।म०।।
मात तातरु भ्रात भामणि, लाख के लेवाल ।
'राज' संग न चलइ वह भी, सामि नाम संभाल ।।३।।म०।।

## अस्थिर जग, श्वास का विश्वास ?

राग—केदारउ

कइसउ सास कउ वेसास ।
कुस अणी परि ओस कण की, होत कितक रहास ।।क०।।१।।
जाजरी सी घरी वाकइ, वीचि छिद्र पंचास ।
तिहां जीवन राखिवइ की, कउण करिहइ आस ।।क०।।२।।
रयण दिन ऊसास कइ मिसि, करत गवण अभ्यास ।

जग अथिर 'जिनराज' तामइ, लेहु थिर जस वास ।।क०।।३।।

## कोई जामिन नहीं, दस दिन पहिले पीछे

राग-गौडी

रे जीव काहइ करत गुमान ।
कुण कुण काल कवल से करिहइ,तूं मूरिख किसि गान ।।रे०१
इकु पल भर राखण कुं विचमइ, होत न कोउ जमान ।
को दिन दस आगइ कोउ पीछइ,अंत सबइ समसान ।।रे०२।।
देखत पलक[१] नीर नव नेजा, जाइ चढत असमान ।
श्री 'जिनराज' सखाइ मिलिहइ,होत सबइ आसान ।।रे०।।३।।

## कामिन गीतम् मदन का तीर

राग—धन्यासी

अब हइ मदन नृपति कउ जोरो ।
आपणे आयुध सजि करि रहोयउ,
जगि कोउ करउ नीहोरउ ।।१।।
जाइ मिले सो भी पचताणे, तउ काहे पग छोरउ ।
जो पग मंडि रहित तिण आगइ,भागउ जाइ भगोरउ ।।२अ०
झूठउ साचउ देखि दिवाजउ, भूल रहत मन भोरउ ।
इण आगइ 'जिनराज' अखंडित,राख्यउ अपणउ तोरउ ।।२अ०

## भ्रम-भ्रमण, भ्रम में भूला

राग-तोड़ी

अपनउ रूप न आप लहइ री ।
मोहि मिलिन कन्नि न सकइ केवल,
एक अनेक सभाउ वहइ री ।।१।।

---

१- खतक

फइल रहयउ घट मइ न छुहइ घट,
को काहू कउ गुन न गहइ री
हु अब भारो हु अब दुबलउ, भ्रम भूलउ सब कोइ कहइ री ॥२
ज्ञानी ज्ञान दोइ करि जानइ, क्यू चेतन लक्षन निवहइ री।
परम भाव 'जिनराज' पिछानइ,
तउ काहू की हाजति न रहइ री ॥३॥

## धर्म मर्म परम पुरुष कुण पावत ?

राग तोडी.

कउण धरम कउ मरम लहइ री ।
मीन कमठ गंगाजल झीलत,
खर नितु अंग बभूति वहइ री ॥१॥कउ०॥
मृग बनवास वसत निसि वासर, भूख तृषा तप सीत सहइ री ।
मौन लीयइ बग इत उत डोलत,
राम नाम मुख कीर कहइ री ॥२॥कउ०॥
मुंड मुंडावत सबही गर्डरिया, पवन अभ्यासी भुयग रहइ री ।
'राजसमुद्र' भणि भाव भगति विणु,
परम पुरुष कुण पावत हइ री ॥३॥कउ०॥

## काल का हेरा तेरा क्यों कर होगा ? कितने ही आगये ?
## ममता निवारण

राग–कनडउ

रे मन मूढ म कहि गृह मेरउ ।
आए किते किते आवइगे, क्युं करि हवइ गउ तेरउ ॥रे०॥१
हइ तेरइ पीछइ छाया छल, काल पिशुन कउ हेरउ ।

आगेवाण जरा आए थइ,चिहुं दिसि होइ गउ घेरउ ।।रे०।।२।।
उण वरीयां निकस चेतन तूं सोचइ गउ बहु तेरउ ।
साचउ इक 'जिनराज' पिछान्यउ,
काल[1] पिशुन कउ हेरउ रे ।।३।।

**संबल साथ में ले नहीं सका, परदेसी किसके वश ?**
**जकड़ी गीत**

उण मीत परदेसी विना मोहि, अउर किछु न सुहाइ ।
विरहन की वेदना भई, सा मइ कहीय न जाउ ।।१।।
मेरी बहिनी प्रीतम लेहु मनाइ, प्रीति की रीति बणाइ ।
बांह पकरि समझाइ ।।आंकणी।।
चिहुं साखि मात पिता दई, ऊग की न पूछी जाति ।
दिन आठ दस घर मइ रह्यउ,चलत न बूझी वात ।।२।।मे०।।
प्रेम विलूधउ प्राणियउ, कोऊ नेह न धरइ जोइ ।
पीछइ पछतावइ परइ, विछुरण अइसउ होइ ।।३।।मे०।।
मोहनी मोपइ किछु नही, लालन रहइ लपटाइ ।
अइसउ सुगुरु को नां मिल्यउ, जो ल्यावइ बहुराइ ।।४।।मे०।।
बे गुनही अबला तजी, प्रीउ चले काहि रिसाइ ।
अपराध जउ को मइ कीयउ, दीजइ सोउ बताइ ।।५।।मे०।।
इक पल संगन छोरतउ, अब बीचि दीए पहार ।
जा विणु घड़ी न जावती, ता विणु जाइ जमार ।।६।।मे०।।
वेखता मुझ इतनी परी, संबल न लीधउ साथ ।
मनरंग 'राजसमुद्र' कहइ,परदेसी किण हाथ ।।७।।मे०।।

---

१ वाट बीचिकउ डेरउ

## आतम काया गीत

राग—धन्यासिरी.

सुणि बहिनी प्रिउड़उ परदेसी, आज कि कालि चलेसी रे।
काहि कुण माहरी सार करेसी,
छिन छिन विरह दहेसी रे॥मु०॥१॥
प्रेम विलूधउ अरु मद मातउ, काल न जाण्यउ जातउ रे।
अच चित आंणउ आय उतालउ,
रहि न सकइ रस रातउ रे॥२॥सु०॥
वाट विषम कोउ संगि न आवइ, प्रीउ एकेलउ जावइ रे।
विणु स्वारथ कहि कुण पहुचावइ,
आप कीए फल पावइ रे॥३॥मु०॥
भमिसइ पुरि पुरि माहि एकेलउ,जिम गलीयां मइ गहलउ रे
ना जाणु कित जाइ रहेलउ,
बिछुरयां मिलण दुहेलउ रे॥४॥सु॥
पोतइ सबल साथि न लीधउ, बीजइ किणही न दीधउ रे।
मूल गमाइ चल्यउ अब सीधउ,
एको काम न कीधउ रे॥सु०॥५॥
प्रीतम विण हूं भइ रे विराणी,किण ही मनि न सुहाणी रे।
पीहर का मइं प्रीति पिछाणी,
जल बल छारि कहाणी रे॥सु०॥६॥
बहिरागी अंतर वइरागी, प्रीति मुणति नवि जागी रे।
'राजसमुद्र' भणि सो बड़भागी,नारी विणु सोभागी रे॥सु०७॥

## देह गर्व परिहार, आखिर छार है

राग—धन्यासी.

इया देही कउ गरब न कीजइ ।
देखत खलक पलक मइं पलटै, इया परि चतुर न धीजइ ।।१।।
जोवन वसि दिन दसि झूठी सी,हइ छबि छिन छिन छीजइ ।
इया मइ शुचि लव लेश न पइयइ,ज्ञान दृष्टि जब दीजइ ।२।
दाही किण हु' जलाई किण हु', आखर छारि चलीजइ ।
हुइ आवइ 'जिनराज' भलाई, तउ करि जउलू' जीजइ ।।३।।

## आत्म प्रबोध, कौन तेरा?

राग – केदारा.

तू' तउ धरउ आज अयान ।
ग्रन्थ पढि पढि जनम वउरयउ, मिटयउ तउ न अज्ञान ।।१।।
छूटि इक अपणी कमाई, संग न चलइ आन ।
तउ कहा भडार भरहइ, अयन कुगति निदान ।।२।।
वांट लइत न कोउ वेदन, मिल्यो कू' यन जहान ।
कउन काकउ कउन तेरउ, समझि 'जिनराजान' ।।३।।

## शील बत्तीसी

सील रतन जतने करि राखउ, वरजउ विषय विकार जी ।
सीलवंत अविचल पद पामइ, विषई रुलइ संसार जी ।।१।।
सीलवंत जगि मइ सलहीजइ, सीधइ वंछित कोडि जी ।
सुर नर किन्नर असुर विद्याधर,
प्रणमइ बेकर जोड़ि जी ।।२।।सी०।।
कड्डवा विषय विषम विष सरिखा, जे सेवइ नर नारि जी ।

ते भव भव दुरगति दुख पामइ,
न लहइ सोभ लिगार जी ॥३॥सी०॥
एक वार नर नारी संगइ, जीव मरइ नव लाख जी।
एकइ भागइ पांचइ भागा, द्यइ सज्जंभव साख जी ॥४सी०॥
करम वसइ रमणी देखी नइ, जे चूकइ गुणवंत जी।
तनु मन वचन वली वसि आणइ,
ते पिण साधु महंत जी ॥५॥सी०॥
आठ रमणि रूपइ रंभा सम, कनक निनाणु कोड़ि जी।
छोड़ी जंबू चरण करण धर,
कवण करइ तसु होड़ि जी ॥६॥सी०॥
कुलवालूयउ तप जप करतउ, रहतउ ते वनवास जी।
काणिक गणिका संग विजूयउ, पामइ नरकावास जी ॥७सी०॥
चेलणा वचन संभाली निसभर, श्रेणिक पड़्यउ संदेह जी।
सतिय सिरोमणि वीर वखाणी,
सिव सुख पामइ तेह जी ॥८॥सी०॥
सुकमालिका नदी माहि नांख्यउ, भूपति निज भरतार जी।
कुबज पुरप साथइ हतीयारी, दुखणी रुलइ संसार जी ॥९सी०
श्री रहिनेमि नेमि जिन बंधव, राजमती तसु देखि जी।
चूकउ पिण व्रत भंग न कीधउ, राखी राजुल रेख जी ॥१०सी०
अभया राणी दूपण दाख्यउ, क्षेत्रइ न खल्यउ जेह जी।
सूली फीटी थयउ सिंहासण सेठ सुदरसण तेह जी ॥११सी०॥
लकापति विद्या अतुली वल सुरपति पदवी सार जी।
तसु मस्तक रड़वड़िया धरती,
विरुया विषय विकार जी ॥१२॥सी०॥

चालणीइ जल काढि सुभद्रा चंपा बार उघाड़ि जी ।
सील प्रभावे महिमा वाधी,
नाख्यउ आल उपाड़ि जी ॥१३॥सी०॥
हंसी वायस जोड़ि दिखावइ, जाणी इण मुझ वात जी ।
मयण वसइ चुलणी मातायइ,
चितीयओ सुत घात जी ॥१४॥सी०॥
भरतहरी काउसग्ग वन मांहे, जपइ पिंगला नाम जी ।
डीबी मिसि गोरख समझावइ,
जोवउ विषय विराम जी ॥१५॥सी०॥
कलि कारग सहु कोई जाणइ, विरति नही पचखाण जी ।
तिण भवि शिव गामी ते नारद,
जोवउ सील प्रमाण जी ॥सी०॥१६॥
जिनरक्षित सायर विचि वहतउ, रयणा रूपइ भूल जी ।
खंडो खंड करी वलि दीधु, पड़तां मांडि त्रिशूल जी ॥१७सी०
जनक सुता वन मांहि इकेली, मूकावइ श्री राम जी ।
पावक गंगाजल सम कीधउ,
राख्यउ अविचल नाम जी ॥सी०॥१८॥
सील सनाह मंत्रीसर रूपइ, भूली रूपणि नारि जी ।
चक्षु कुसील पणइ दुख लाधा, नरय निगोद मझारि जी ॥१६सी
नल राजा देखी दमयंती पूरब भोग संभारि जी ।
जिम मन डोल्यउ तिम वलि वाली,
पामइ सुख अपार जी ॥सी०॥२०॥
पूरव परिचित वेश्या नइ घरि, थूलभद्र रह्या चउमासि जी ।

ब्रह्मचारि चूडामणि मुनिवर,
न पड़यउ नारि पासि जी ॥सी०॥२१॥
वलकलचीरि वसइ वन माहे, फल फूले आहार जी।
ते पिण गणिका केड़इ धावइ,
आवइ नयरि मझारि जी ॥२२॥सी०॥
सीलवती भूपति मंत्रीसर, नगर सेठ कोटवाल जी।
च्यारे पेटी माहे राख्या, पाल्यउ सील रसाल जी ॥२३सी०॥
बार हजार वरस छ्ट्ठ कीधा, वेयावच्च प्रधान जी।
नंदिषेण संजम फल हारयउ,कीधउ नारि निदान जी॥२४सी
भिडतउ भीम असुर मु भूखउ, आवइ माता पास जी।
सील प्रभावइ कुंता वचने, कादम अमृत ग्रास जी॥२५सी०
केस फरसि नीयाणउ कीधउ, पाली व्रत चिर काल जी।
ते संभूति बारमउ चक्रवर्ति,जाइ सत्तम पाताल जी ॥२६सी०
वेश्या संग तजी व्रत आदरि, नाचत चतुर सुजाण जी।
ते आषाढभूति संवेगी, पामइ केवल ज्ञान जी ॥२७॥सी०॥
अरध मंडित निज नारी छंडी, साधु भगति परिणाम जी।
ते भवदेव नागिला वचने,आवइ ठामो ठाम जी ॥२८सी०॥
पटराणी वचने नवि खलियउ, राजा नयन निहाल जी।
ततखिण वंकचूल नइ आपइ,
राज काज संभालि जी ॥२६॥सी०॥
आद्रकुमार रह्यउ गृहवासइ, छंडी व्रत नउ भार जी।
जीरण तृण जिम तेहिज परिहरि,
लाधउ भवनउ पार जी ॥३०॥सी०॥

इम जाणी नइ साधु साधवी, श्रावक श्राविका जेह जी ।
निर्मल व्रत पालइ मन सूधइ,
सिव सुख पामइ तेह जी ।।३१।।सी०।।
युगप्रधान जिनचंद्र यतीसर, तासु पाट गणधार जी ।
'जिनसिंहसूरि' सीस इम पभणइ,
'राजसमुद्र' सुविचार जी ।।३२।।सी०।

## कर्म बत्तीसी

करम तणी गति अलख अगोचर, कहइ कुण जाणे सार जी।
नाण वशे योगीसर जाणे, के जाणइ करतार जी ।।क०।।१।।
पूरव कर्म लिखत जे सुख दुख, जीव लहइ निरधार जी ।
उद्यम कोड़ि करइजे तो पिण,
न फलइ अधिक लगार जी ।।क०।।२।।
एक जनम लगि फिरइ कुआरा, एके रे दोय नारि जी ।
एक उदरभर जन्मइ कहीइ,एक सहस आधार जी ।।क०।।३।।
एक रूप रंभा सम दीसइ, दीसे एक कुरूप जी ।
एक सहू ना दास कहीये, एक सहू ना भूप जी।।क०।।४।।
सायर लंघवि गयो लंकाये, पवनपूत हनुमान जी ।
सीता खबर करी ने आव्यो, राम कछोटी दान जी ।।क०।।५।।
वेश्या घर अवतारे आवी, तनु दुर्गंध अपार जी ।
दुंगंधा श्रेणिक पटराणी, थाइ करम प्रकार जी ।।क०।।६।।
चौसठ सुरपति सेवा सारइ, महावीर भगवंत जी ।
नीच कुले आवी अवतरीओ, करम सबल बलवंत जी ।।क०७
रसकुंपी भरिवा नइ काजे, पइठउ जोगी ताम जी ।

करम वसि आकाशे वाणी,
भरि राका नइ नामि जी ।।क०।।८।।
कीधो द्वारिका दाह दीपायन, बइठउ कृष्ण नरेश जी ।
अर्ध भरत सामी विचितइं, आइं पांडव परदेश जी ।।क०६।।
सीता सती शिरोमणि कहीइ, जाणइ सहु संसार जी ।
तेहनइं राम तजी वनवासि,मूकि वचन संभारि जी ।।क१०
नीर वहइ चंडाल तणइ घरि, रही मसाणि नरिंद जी ।
जिह्न सुत खापण निजगड़ी लीधउ,
ते राजा हरिचंद जी ।।क०।।११।।
जात मात्र आकाश उपाडी, सुर नाखे वन मांहि जी ।
कुमर प्रजुन्न पानडा मांहि,राखिउ करमइ साहि जी।।क०१२
साधु वचन सांभलि सागरदत्त, दामन्नइ इकवार जी ।
मारण मांडिउ पणि नवि मुउ,
हुयउ ग्रहपति सार जी ।।क०।।१३।।
विविध रतन मणि माणिक देवी, वाभण एक अनाथ जी ।
रतनागर नी सेवा कीधी, दादुर लागु हाथि जी ।।क०।।१४।।
सोमदेव निज भगिनी परणी, पिण छंडी ततकाल जी ।
निज माता गणिका सुं लुबधउ,
करम तणउ जजालि जी ।।क०।।१५।।
यात्रा करण बारह व्रत धारक, श्रावक वीरउ नामजी ।
मारग वाघणि सीगें वीध्यौ,करम तणै परिणाम जी ।।क०१६
अल्प काल व्रत पाली पामइ, पुंडरीक भव पार जी ।
व्रत पालो चिरकाले जाइ, कंडरीक नगर मझारि जी ।।क०१७

एकणि वार गमाया गयवर, चउद सइं चिउंआल जी ।
कर्म वसे ते भिक्षा मांगइ,जूओ मुंज भूपाल जी ॥क०॥१८॥
मुनि वचने बाँभण रंधावी, मांजरि मिश्रित खीर जी ।
सेठि तनय तेहिज जीमीनइ, राजा थायै सुधीर जी ॥क०१६
नापित घरि दासी नो बेटउ, जाति हीन कुल मंद जी ।
ते पाडलि नयर नो सामी, नवमुं नंद नरिंद जी ॥२०॥क०॥
सुर पचवीस सहस निसि वासर, रहिता जेहने पास जी ।
ते सभूम लवण सायर विचि,
वहतौ गयौ निरास जी ॥क०॥२१॥
दोभागी पूरब भव हुंतौ, नंदिषेण इणे नाम जी ।
स्त्री वल्लभ वसुदेव कहांणउ,करम तणा ए काम जी ॥२२क
रिषभदेव त्रिभुवन नो नायक, लीधी निरुपम दीख जी ।
वरस लगइं आहार न पाम्या,
करम दीयइ इम सीख जी ॥क०॥२३॥
प्रसन्नचंद रिषि काउसग मांहि, नरक तणा दल मेलि जी ।
ततखिण निर्मल केवल पामी,करम करइ इम केलि जी ॥२४क
मृगापुत्र पल पिंड उपल सम पूरब करम विशेष जी ।
कडुआ कर्म विपाक कहीजइ,चितै गौतम देख जी ॥क०२५॥
चारुदत्त योगी उपदेसैं, पइठउ विवर मझारि जी ।
तउ पिण धन लवलेस न लीधउ,कीधा कोडि प्रकार जी॥२६क
हरिहर ब्रह्मादिक योगीसर राजा ने वलि रांक जी ।
विविध प्रकारे कर्म विटंबी, न करइ केहनी सांक जी ॥२७क
करम लिखत सुख संपति लहीइ, अधिक न कीजइ सोस जी ।

आप कमाया फल पामीजइ, अवर न दीजइ दोस जी ॥२८क
इणि परि करम विपाक विचारी, छेदउ करम कलेस जी ।
जिम अविचल सुख संपद पामइ, प्रणमइ पाय नरेश जी ॥२६क
नव षट सोल(१६६६) प्रमाणे वरसे, भादव वदि गुरुवार जो।
'करम बत्तीसी' निसि भरि कीधी, धरि संवेग अपार जी ॥३०क
'खरतर' गच्छ नायक जयवंता, युगप्रधान जिनचंद जी ।
तसु पाटे दिन दिन दोपंता, श्री 'जिनसिंहसूरिद' जी ॥३१क
तास सीस पभणइ मनरंगे, 'राजसमुद्र' सुविचार जी ।
भणतां गुणतां वलि सांभलतां, थाये हर्ष अपार जी ॥३२क०॥



# शालिभद्र धन्ना चौपई

सासण नायक समरीये, वर्द्धमान जिणचंद ।
अलिय विघन दूरे हरे, आपं परमाणंद ॥१॥
सहु को जिनवर सारिखा, पणि तीरथ धणीय बिशेषि ।
परणीबे ते गाइये, लोकनीत संपेखि ॥२॥
दान शील तप भावना, शिवपुर मारग च्यार ।
सरिखा छे तो पण इहाँ, दान तणो अधिकार ॥३॥
'सालिभद्र' सुख संपदा, पामे दान पसाइ ।
तास चरित वखाणतां, पातिग दूर पुलाइ ॥४॥
तास प्रसंगे जे थई, 'धन्ना' नी पणि वात ।
सावधान थई सांभलो, मत करज्यो व्याघात ॥५॥

## ढाल १ चौपाई नी.

मगध देश श्रेणिक भूपाल, पते न्योाय करे चोसाल ।
भाव भेद सूधा सरदहे, जिणवर आण अखंडित वहै ॥१॥
नित नवला करती खेलणा, मानीती राणी चेलणा ।
कोइ न लोपे तेहनी कार, मंत्रीसर छइ अभयकुमार ॥२॥
बारे पाडे नगरी वसे, राजगृही अलका नें हसे ।
सुखिया लोक वसे सहुकोइ, तो पण पग मांडे छे जोइ ॥३॥
रसना गुण लेवा चलवले, अवगुण वेला मूल न वले ।
परगुण देखण नयण हजार, संयम दूषण देखण वार ॥४॥
परधन लेवा जे पांगला, पर उपकारी जे आगला ।
कर उपर करवा नें हठी, न्याये लाछ करे एकठी ॥५॥
मालानी जे दथ को गालि, तो हरखित हुवे अरथ निहालि ।
विढतां कहे अकरमी कोई, कहिये विर होंस्यइ दिन सोइ ॥६॥



शालिभद्र चौपई का एक सचित्र पृष्ठ



परधन लेवा जे पांगला, पर उपगारी जे आगला ।
कर उपर करवा नै हठी, न्यायै लाछि करै एकठी ॥५॥
सालानी जे द्यै को गालि, तो हरखित हुवे अरथ निहालि ।
बिढता कहै अकरमी कोई, कहियं चिर होस्यइ दिन सोह ॥६॥
माता खोज गयो जो कहै, तो आसीस रुड़ी सरदहै ।
रमता पिण जे पासा सार, अर्लिव न आखे मारी मार ॥७॥
मूओ विणज तिसी परि करै, परदेसी धन धन उचरै ।
सकज पूत पीता अनुसरै, हिवडुण सीमे गोडा भरै ॥८॥
परब दिवस पोषध अनुसरै, अवसर बारह व्रत पणि धरै ।
परभव हुती जे थरहरै, वारू लाक वसै इण परै ॥९॥
धना नाम नारि अनाथ, सगम बेटो लेई साथ ।
घर नी आथि अगाउ चली, सालि गाम थी ते ऊचली ॥१०॥
राजगृह आवी नै रहै, पर घर काम करी निरवहै ।
सुख दुख वात न पूछै कोइ, आथि पखै किम आदर होइ ॥११॥
सगम बाहिर सागे दास, वाछरूया चारै निसदीस ।
चाराही आवै घर दीठ, पेट भराई थायै नीठ ॥१२॥
सगम किण ही परब विशेषि, खीर जीमता बालक देखि ।
पायस भोजन मनसा थई, मागै माता पासै जई ॥१३॥
धरनी परठ न छोरू लहै, दुख भर सजल नयन इम कहै ।
पूत न पहुचै कूकस भात, तो सी खीर खाडनी वात ॥१४॥
च्यार चतुर पाडोसण नार, आवी नै पूछै इण वार ।
स्यूं दीसै आमण दूमणी, माडी वात कहो सुत तणी ॥१५॥
एकण दूध अमामो दीयो, घृत नो बीड़ो बीजी लीयो ।
तीजी आपै बूरा खाड़, चौथी आपै सालि अखंड ॥१६॥

॥ दूहा ॥

हिव नीपजता खीर नैं, वारन लागी काय ।
कारण सकल मिल्या पछै, कारिज सिद्ध ज थाय ॥१॥

बोलावी बालक भणी, वैसाणी ससनेह ।
माता अति हरखित थई, खीर परीसें तेह ।।२।।
अति ऊन्ही जाणी करी, ठारै देई फूंक ।
थयो एक अचरिज तिसे, सुणज्यौ आलस मूंक ।।३।।

ढाल-२ आदया मेघ मुनि कांइ डमडोलैरे. ए जाति
जामण कारिज ऊपनें जी, जाइ जिसै घर माहि ।
अतिथि एक आयो तिसै जी, आण्यो करमैं साहि ।।१।।
साधु जी भलै पधारया आज, मुझ सारी वांछित काज ।।सा०
मास खमण नै पारणें जो, जगम सुरतरु जेह ।
शिव मारग अवगाहतांजी, खीण देह गुण गेह ।।२।। सा०।।
बालक मन हरिखित थयौ जी, दीठो मुनिवर तेह ।
रोम रोम तनु ऊलस्यो जी, जाग्यो धरम सनेह ।।३।। सा०।।
घर आगण सुरतरु फल्यौ जी, आज भलै सुविहाण ।
आज भली जागी दसा जी, प्रगटयौ आज निहाण ।।४।। सा०।।
जे भव भमता दोहिला जी, चित्त वित्त नै पात्र ।
कुण तीने लही एकठा जी, ढील करै खिण मात्र ।।५।। सा०।।
जे सामग्री दोहिलो जी, ते मैं लाधी आज ।
जो हु हिव सफली करु जी, तो पामु सिवराज ।।६।। सा०।।
कीधी कां न विचारणा जी, भाव भगति भरपूर ।
पायस थाल उपाडि नइ जो, आयो साध हजूर ।। ।।सा०।।
माडै पडघो जाणि नै जी, निरदूषण आहार ।
पडलाभै भावै चढयो जो, खीर अखंडित धार ।।८।। सा०।।
पात्र दान फल ए लहो जी, अंतराय मत होय ।
नाकारो न कह्यो तिणै जी, लालच न हूँतो कोय ।।९।। सा०।।
पुण्य जोग आवी मिल्यो जी, उत्तम पात्र विशेषि ।
दीधो दान तिसी परै जी, थाल रह्यो अवशेष ।।१०।। सा०।।

सात आठ पग साधु नै जो. पहुंचावो सिरनामि ।
करी प्रणाम पाछो वल्यो जी, बैठो ठामो ठाम ॥११॥सा०॥
बोध सुलभ जनमंतरै जी, लहिस्यै भोग प्रधान ।
इम सुपात्र आवो मिल्यो जी, दीजं अढलक दान ॥१२॥सा०॥
माता पिण आवो तिसै जी, खाली दीठो थाल ।
खीर परीसै थाकती जी, त्रिपतो थयो न वाल ॥१३॥सा०॥

॥ दूहा ॥

सगम वात न का कही, पाछलि बीती जेह ।
देई दान प्रकामस्ये, फल निगमस्यै तेह ॥१॥
देइ दान पमावस्य, वरय न पडस्यै तांह ।
फल तो तेहिज लेै रहया, जीभ न त्रूही जाह ॥२॥
वत्स नै देखी जीमतो, जामरा करै विचार ।
इतली भूख सदा खगै, धिग माहरो जमवार ॥३॥
निस भर थई विसूचिका, काल मास करी काल ।
साधु ध्यान धरतो थकौ. पामै भोग रसाल ॥४॥

## ढाल–३ राग-गुड, इक दिन दासी दोड़ती, ए जति

लाखे गाने लाखेसरी, सहू जेहनै हेठ रे ।
लाछिनो जे अछै धणी, तिहां गोभद्र सेठरे ॥१॥
दान उलट धरै दीजीयै, फलयतो सुविशेष रे ।
सगमै भव नरगै अतरै, लाधा भोग संपेख रे ॥२॥दा०॥
नारि भद्रा उरु कंदरा, मृगराज अरणुहार रे ।
काल करी बाल ते अवतरयो, फल्यो दान सहकार रे ॥३॥दा०॥
रयणि सुपनन्तर सालिनउ, दीठउ खेत्र निष्पन्न रे ।
फल कहइ सेठ हरखित हुयउ, हुस्यइ पुत्र रतन्न रे ॥४॥दा०॥
गर्भ नीं करै प्रतिपालणा, लेई ग्र थ नी साख रे ।
धेनड़ नो मुख जोइवा, धरै मन अभिलाष रे ॥५॥दा०॥

जीवदया प्रतिपालियै कीजीयै पर उपगार रे।
साहमी सुगुरु संतोषीयै, दीजीयै दान अपार रे ॥६॥दा०॥
इम मन गज मोजा दियै, ते तो गर्भ प्रभाव रे।
तिल तणौ तेल जे महमहै, तेतो कुसम सभाव रे ॥७॥दा०॥
सेठ गोभद्र भद्रा तणौ, विलखो मुख देख रे।
जे मन दोहला ऊपजै, पूरवै ते सुविशेष रे ॥८॥द०॥
इक दिन आवि दासी कहै, फल्या वछित काज रे।
दाजीयै सेठ वधामणी, जायो पुत्र सिरताज रे ॥९॥दा०॥
दूरी कीधो दासी-पणो, जलस्यु सिर धोय रे।
अगना आभरण आपी नै, राखी चौगुणी सोय रे ॥१०॥दा०॥
घरि घरि रग वधामणा, थयो जय जय कार रे।
सालिभद्र नाम दीधो इसौ, करिय सुपन विचार रे ॥११॥दा०॥
मात भद्रा हुलरावती, दीयै एम आसीस रे।
चिरजीवे तु नान्हडा, कोडाकोड़ वरीस रे ॥१२॥दा०॥

॥ दूहा ॥

तझ डडा पीडा पडो, खारे समुद्रे जाय।
तुझ हु ती अलगी रहो, पूत अलाय बलाय ॥१३॥
हु वड जेम साखे करी, वाल्हा वोस्तरी जेह रे।
पूत सकल परिवार नै, लोधा निरवह जेह रे ॥१४॥दा०॥
हु तुझ ऊपर वारणे, कीधी वार हजार रे।
साहिब जेम दिखावज्यो, एहनी वूरी वार रे ॥१५॥दा०॥

॥ दूहा ॥

हिव मुकलीणो सामठी, नारी बतीस नीहारि।
परणावी एकण समै, भोग समत्थ विचारि ॥१॥
हिव हु संयम आदरु, भव जल निधि बोहित्थ।
सकज सुत जे घर रहै, तासु जनम अकथ ॥२॥

वीर पास व्रत आदरी, उद्यत करै विहार ।
व्रत लीधो तेहनो खरो, जे पाले निरतीचार ॥३॥
करि अणसण आराधना, त्रिविध खमावै पाप ।
वैमानिक सुर सुख लहै, सालिभद्र नो बाप ॥४॥

**ढाल ४ राग-मल्हार, कुशल गुरु पूरो बंछित आज, ए जाति**

जीहो जाण्यो अवधि प्रजूंजनै जीहो पूरव भव विरतंत ।
जीहो सुन सनेह परवसि थयो जीहो सेठ जीव एकंत ॥१॥
चतुर नर पोखो पात्र विशेषि ।
जीहो सुर सानिधिते फलडा, जीहो सिव सुख फलै सपेखि ॥२॥च.॥
जी हो निसिदिन सुरपासै रहै, जीहो पूरै मन नी आस ।
जीहो करै कपूरे कउगला, जीहो विलसै लील विलास ॥३॥च०॥
जीहो परियागति पहिली हुंती, आथि अनेक प्रकार ।
जीहो सुर सानिधि तेहनो थयो, लाख गुणो विस्तार ॥४॥च०॥
जीहो स्नान करी उठं जिसै, जीहो नाह रमणी बत्रीस ।
जोहो गयण थकी पेटी तिसै, हाजरि होई तेत्रीस ॥५॥च०॥
जीहो नव नव भूषण नीसरे, भामणी नै परिभोग ।
जीहो रतन जड़ित सिर सेहरो, सालि कुमर ने जोग ॥६॥च०॥
जीहो जे को न लहै खरचतो, जीहो धननी कोडा कोडि ।
जोहो ते माणिक ऊपरि जडया, झलकं होड़ा होड़ि ॥७॥च०॥
जीहो पहिरीजं पहिले दिनै, जीहो आभरण अमूल ।
जीहो बीजै दिन ते ऊतरै, जिम कुमिलाणी फूल ॥८॥च०॥
जोहो ले कूआ मैं नाँखीयै, जीहो ते आभरण असेस ।
जीहो वलती गध न को लियै, जीहो ऐ ऐ पुण्य विसेस ॥९॥च०॥
जीहो न हुउ न हुस्यै जेहनै, जी हो चक्रवर्ति आवास ।
जीहो ते निरमाइल सालि नै, जीहो होवै सोवन नी रासि ॥१०॥च०

जीहो अउले खाले वहै, जीहो कस्तूरी घनसार।
जीहो आठ पहुर लगि सामठा, जीहो नाटिक ना दौकार ॥११॥च.
जीहो सालिकुमर सुख भोगवै, दोगदुक सुर जेम।
जीहो भामरिण स्युं भी भीनो रहै,जीहो दिन दिन दिन वधतै प्रेम।१२

॥ दूहा ॥

इण अवसर केइक भला, परदेसी मिल चार।
रतन कंबल वेचरण भणी, फिरय नगर मझार ॥१॥
ताप सीत भेदै नही, अति सुंदर सुकुमाल।
अग्नि झाल मे धोवता, मल छाडे ततकाल ॥२॥
जे पहिरस्यै सो जाणस्यै, अवर न जाणै भेव।
परदेसी ऊभा कहै, रतन कबल को लेव ॥३॥
छयल पूरष लेवा भणी, फिरै वीच दलाल।
पिण साटौ वाजै नही, कहै अमामो मोल ॥४॥
राजगृही नगरी भम्या, ऊंच नीच आवास।
कंबल कोई न संग्रहै, ते सहु थया उदास ॥५॥

ढाल–५ सिन्धुनी जाति

इण पुर कंवल कोइ न लेसी, फिर चाल्या पाछा परदेसी।
साल महल पासै ते आवै, दासी मुखि भद्रा तेडावै ॥१॥
व्यापारी दीसौ छौ वीरा, तो किरण कारण थया अधीरा।
परदेसी आवै व्यापारै, लाभ पखै अरण वेच्या सारै ॥२॥
वस्तु अम्हारी लेवा सारू, मिल्यो महाजन वारू वारू।
मोल सुणीने मुंह मचकोडै, वलतौ साटौ कोइ न जोडै ॥३॥
फिर पाछा वीरा मत जावौ, मोल कही ने वस्तु दिखावो।
सवा लाख धन खोलै घालै, एह सोल कंवल सो झालं ॥४॥
बहुवर एक निजर में दीठो, सी दिस खारी सी दिस मीठी।
कंवल सोल किम परचावुं, तिरण ए अरधो अरध करावुं ॥५॥

जिम जाणो तिम एह अवधारो, खंड करो बत्तीस विचारो
पहिली अम्ह नै दाम दिरावौ, पाछल मन मानै सो करावो ॥६॥
तेडि कहै साभलि भडारी, ए परदेशी छइ व्यापारो ।
वीस लाख सोनइया लेखै, कनक रजत आपौ सुविशेषै ॥७॥
कथन अपर तो मूल न आणो, नाणो गांठइ बाँध्यो जाणौ ।
मुझ साथै मू को एकरण नें, तिण नै दाम समापु गिणनै ॥८॥
कोठारी कोठार खुलावै, गिणवा त्रीजो जरण वोलावै ।
जातो कुरण जोवै रुपईया, पगसू ठेलीजै सोनईया ॥९॥
हीरा ऊपर पग दे चलै, माणिक कवण मंजूसे घालै ।
पार न को दीसै परवाले, काच तणी परि पाच निहाले ॥१०॥
लाखे गाने अछै लमणीया, मोती मूल न जाइं गिणीया ।
इण परि रिद्धि देखी थभाणो, पाछो फिर न सकै ले नाणों ॥११॥
अबर दूझै भूत कमावै, आकासे हूत वहै सभावै ।
तिण घरि ए पिण रिद्ध न दीसै, स्यु सपनौ देखु छु दोसै ॥१२॥

॥ दूहा ॥

माल हमालै वसि करी, डेरइ आव्या जाम ।
व्यापारी बोलावि नें, श्रेणिक भासै आम ॥१॥
राणी हठ मूकै नही, मैं पूरेवा हाम ।
कबल द्यो इक मोलवी, जिम तिम देइसु दाम ॥२॥
रोक दिराव्या दोकडा, कोधी न का उधार ।
सोलह कंबल सामठा, तिण ते लीधा सार ॥३॥
किण सोनईया सामठा वीस लाख गिण दीध ।
कुण धनवत इसौ अछै, जिण ते कबल लीध ॥४॥
सालिभद्र भोगी भमर नवि जाणे गृह काज ।
लेवो देवो मा वसु, तीण लोधा महाराज ॥५॥

ढाल–६ राग-परजीयो, पूरब भव तुम्ह सांभलो. ए जाति

श्रेणिक मन अचरिज थयो, हु बड भागो राजा रे ।
माहरी छत्र छाया बसै, सहु को दामे ताजा रे ॥१॥श्रे०॥

राज हुकम मंगावतां, मत भद्रा दुख पावै रे ।
रोके दामी राजवी, कंबल एक मगावै रे ॥२॥ श्रे०॥
अंतरजामी ऊपरा, जो तन धन वारीजै रे ।
तौ कंबल नौ स्यु अछै, पिण मुझ बात सुणीजै रे ॥३॥श्रे०॥
नारी कुंजर नो घसु, पहिरयाँ साथल घासै रे ।
ने तो मारू धाबला, पहिरै केम तमासै रे ॥४॥श्रे०
देव वसत पहिरै बहु, नर्जार न आवै तेई रे।
मै दे मूक्या मो किसा, पासौ मूक्या लेई रे ॥५॥श्रे०॥
न्हान करी ऊठी जिसै, ते नाँख्या पग लूही रे।
आपगयै जोवौ जई, निरमाइल खूही रे ॥६॥ श्रे०॥
निरमाइल किम दीजीयै, कूवा माथी काढी रे ।
अवर हुकम फुरमावस्यै, ते लेस्यु माथै चाढी रे ॥७॥श्रे०॥
सेवक जे मूंक्यो हतो, ने फिर पाछो आवै रे ।
राजा नै रांणी मिली, सगली परीठ सुणावै रे ॥८॥श्रे०॥
राजा नै राणी मिली, पूरब सुक्त सलीसै रे ।
इण ऋद्धि उण ऋद्धि आतरो, सर सायर सो दीसैरे ॥९॥श्रे०॥
जे को पहिर सकै नही, ते पग लूही नाखीजै रे।
परतख देखि पटंतरो, गरथ गरब किम कीजै रे ॥१०॥श्रे०॥
राजा अभयकुमार नै, मूकै भद्रा पासि रे ।
करि प्रणाम आवी तिसै, विनयवत इम भासै रे॥११॥श्रे०॥
भोग पुरंदर सालि नै, ए करसों नृप तेडै रे ।
दरसण देखण अलजयो, मूको माहरै केडै रे ॥१२॥श्रे०॥

॥ दूहा ॥

भद्रा अभयकुमार स्यु, आवै श्रेणिक पास ।
वस्तु अमोलिक भेटणै, देई करै अरदास ॥१॥
रवि ससि देन किरणधर, लागो न धरणी पाउ ।
दरसण को पावै नही, लख आवों लख जाइ ॥२॥

किए दिस ऊगे आथमे, जाणै राति न दीह।
जउ तिल कूड़ इहाँ अछे, तो हु काढूं लीह ॥३॥
किम तेड़ावो नान्हडो, लाछि लील भरतार।
राज भवण लग आवतां, थास्यै कोस हजार ॥४॥
राज पधारो आंगणे, मत को जाणों पाड।
जो छोरू करि जाणस्यो, तो पूरवस्यो लाड ॥५॥

**ढाल ७ राग-सिंधुड़ौ, चीत्रोडी राजारे मेवाडी राजा रे, एजाति**

मुझ लाज वधारो रे, तो राज पधारो रे,
मत बात विचारो डावी जीमणी रे।
आमगा पाव्वे रे, सहु कोनी साखे रे,
इम कोइ न भाखें राखें कड़ि धणी रे ॥१॥
मगधेश विमासे रे, मत्रोसर भासै रे,
तुझ आस अवासें, तू चली आगलै रे।
साहिब मतवाला रे, हुइ तो रढाला रे,
प्रधान वडाला, वालइ तिम वसे रे ॥२॥
हुता जे नेडे रे, ते साथे तेडे रे,
बीजा ने कडे केहै वेगा आ पडो रे।
देस्यै ओलभो रे, पाँणि वलि थभो रे,
सहु को नै अचंभो, देखण नो बड़ौ रे ॥३॥
मानी मछराला रे, वारू वीगताला रे,
ठकुराला छउगाला सहु आवें वहया रे।
वागे तन लागे रे, केसरीयें पागे रे,
वलि लोधे वागे आवि ऊभा रहया रे ॥४॥
वधि चल्यो वधाऊ रे, उलगाणो साउ रे,
द्यइ खबरि अगाउ, आव्यो अम्ह धणीरे।
पोषी पकवाने रे, दीजे अनुमाने रे,
कोई गिणै न ग्यानै रे, तास वधामणी रे ॥५॥

राजा घरि आयो रे, मन थयो सवायो रे,
भरी थाल वधायो मोती माणके रे,
सोवन वारीजै रे, पाटंबर दीजै रे,
तिम अघा तेडीजै, साथि हुता जिके रे ॥६॥
पहिली भूमि जोइ रे, हरख्या सहु कोइ रे,
नर भवण न होइ स्युं सुहिणो अछे रे।
बीजी भूमि आवै रे, अचरिज सब पावै रे,
मनभावै, सुर लोक थयो इण थी पछे रे ॥७॥
घन माल आलेखै रे, चिहुं पासै पेखै रे,
सुर भवन विशेषै हुं स्यौ अवतरयौ रे।
किणही भोलायो रे, मैं भेद न पायो रे,
अलिकापुरी आयो, इम संसय धरयो रे ॥८॥
हुं श्रेणिक नामइ रे, आयो कणि ठामइ रे,
इम अचरिज पामै समझि न का पडे रे।
सिर धूणो सोचइ रे, मनस्युं आलोचै रे,
पगभरी सकोचै, चलंतो लड़थड़ रे ॥९॥

॥ दूहा ॥

भद्रा आवी नै कहइ, स्युं जोवौ छो एह।
दासी दास इहां रहै, उपर जोवौ गेह ॥१॥
तीजी भोमी चढ्या जिसै, नयण न सकै जोडि।
घर अंगण जिम झलहलै, जाणे ऊगा सूर्य कोड़ि ॥२॥
चढता चउथी भूमिका, थंभाणा सवि तेह।
मानवगति दीसै नहीं, छै देवगति एह ॥३॥
सिंहासन आसन ठवी, भद्रा भासै आम।
तेड़ी ल्यावुं नान्हड़ो, राज करौ विश्राम ॥४॥

**ढाल ८ मीजवासै उपवासै गलै पहनी जाति**

वेग पधारो हो महल थी, वार म लावो आज।
घर आगण आव्यो अछै, श्री श्रेणिक महाराज ॥१॥वे०

रमणि बत्रीसे परिहरो, सेझ तजो इणि वारि ।
श्रेणिक घर आव्यो अछे, करिवो कवण विचारि ॥२॥वै०॥
पहला कदेय न पूछता, स्यो पूछो इण वार ।
जिम जाणो तिम मोलवी, ले नाखो भडार ॥३॥वै०॥
नाखण जोगो ए नहीं, त्रिभुवन माहि अमोल ।
तो हिव जिम तिम संग्रहो, मुंह मांग्यो दयो मोल ॥४॥वै०॥
किरियाणो श्रेणिक नही, बोलो बोल विचार ।
देस मगध नो छै धणी, इद्र तणे अणुहार ॥५॥वै०॥
जेहनी छत्र छाया वसै, जासु अखंडित आण ।
ते घरि आयो आपणै, जीवत जन्म प्रमाण ॥६॥वै०॥
प्रेम मगन रमणी रसे, रमतो नव नव रग ।
सेझ थकी तिण ऊठतो, आलस आणे अग ॥७॥वै०॥
आपण सरिखा जेहनै, लखमीधर लख कोडि ।
आगलि ऊभा ओलगै, रातिदिवस कर जोडि ॥८॥वै०॥
ए मंदिर ए मालिया, ए सुख सेज विलास ।
ता लगि आपणि वसि अछे, जां लगि सुनिजर तास ॥९॥वै०॥
जो आपण पर तेहनी, कहियै कुनिजर होइ ।
तो खिण माहे आथ नो, नथ हुयै कुज कोइ ॥१०॥वै०॥
तुरत करै अधराजियो, तुरत लगावे लीक ।
हियडो कोइ न लखि सकै, पाणी माँहि मधीक ॥११॥वै०॥
आस ईयारी की जीयइ, पिण केहवो आँसंग ।
दुबल काना राजवी, ते हुवे किम इकरग ॥ १२॥वै०॥
हास विनोद विलास जे, संपजस्ये सो वार ।
पिण रीझवतां राजवी, खरो कठिन विवहार ॥१३॥वै०

॥ दूहा ॥

पहला कदे न सांभल्यो, सुपनांतरि पणि जेह ।
वयण विषम विष सारिखो, मात सुणाव्या तेह ॥१॥

कली कचरतां नीगमी, मैं माहरी जमवार ।
आज लगं जाण्यो नहीं, सेवक नो विवहार ।।२।।
परम पुरुष विरण अवरनी, सीस न धारूं आरण ।
केहर कदेन सांसहैं, तुरीयां जेम पलारण ।।३
जे परवस बधरण पडया, ते सुख मारणे केम ।
गहनो गाडो लील नो, लाडो चिंतै एम ।।४।।

**ढाल ६ आप सवारथ जग सहु रे वहनी जाति**

पूरब सुकृत न मैं कीयो, पालि न जिनवर आरण ।
तिरण आगे अवर नरिंदनी, पालेवी हो मुझ ने सुप्रमारण ।।१।।
कुमर इसौ मन चीतवे, भरम भूलो रे इतला दिन सीम ।
परमारथ प्रीछयां पछे रे, गृहवासै हो रहिवा हिव नीम ।।२।।कु०
मन वचन काया वसि करी, सेव्या नही गुरु देव ।
तिरण हेत अवर नरिंदनी, करजोडी हो करवी हुइ सेव ।।३।।कु०
एतला दिन लग जारणतो, हु छुं सहुनो नाथ ।
माहरै पिरण जो नाथ छै, तोछोडिस हो तृरण जिम ए आथ ।४।।कु०
जारणतो जे सुख सासता, लाधा अछे असमान ।
ते सहु आज असासता, मैं जाण्या हो जिम सध्या वान ।।५।।कु०
ससार सहु ए कारिमो, कारिमो एह परिवार ।
कारमी इरण रिद्धि कारणे, कुरण हारै हो मानव अवतार ।।६।।कु०
वेसास सास तरणो किसो, जे घड़ि में घटि जाय ।
करणी तिका हिव आदरूं, जिम जामरण हो तिम मरण न थाय ।।७।
ए विषय विष फल सारिखा, जारण नही जाचंद ।
अंवडे अमृत फल जिस, तिरण साथै हो मांडै प्रतिबंध ।।८।।कु०
जे करै बे आंगुल खरी, रोपी रहै दृढ़ पाउ ।
जे आंप आपो अंगमै, तिरणआगै हो कुरण राणो राउ ।।६ ।कु०
बाबू तरणो भय रालि नै, बैठो करी इकतार ।
जे आप निरलोभी हुवै, तिरण आगै हो तृरण जिम संसार ।।१०कु०

घर आथि आप वसु करी, रूठो थको नर नाह ।
ते सहु में पहिली तजो, हिव मुझ नें हो स्यानी परवाह ॥११॥कु०
पण वचन हु माता तणो, लोपुं नहीं निरधार ।
तिण सेझ हुंती उठि ने, पाउधारइ हो साथे ले नारि ॥१२॥कु०॥

॥ दूहा ॥

श्रेणिक मन हरखित थयो, सूरति नयण निहार ।
देव कुमर स्युं अवतरयो, मानव लोक मझार ॥१॥
करि प्रणाम आगलि जिसै, ऊभो सालिकुमार ।
बैसारयो उछरंग ले, राजायै तिण वार ॥२॥
पर कर परसेवो चल्यो, मांखण जेम सरीर ।
चिहु दिसि परसेव चल्यो, जिम नीझरणे नीर ॥३॥
इण इण भवि कीधी नही, मुपनातरि पणि सेव ।
पर कर फरस न खमि सकै, ए पातलीयो देव ॥४॥
स्वेच्छाचारी पर वसै, रहि न सकै तिल मात ।
सीख समपो करि मया, मात कहै ए वात ।
उठ्यो आमणदूमणो, महल चढयो मन रग ।
फिरि पाछो जोवै नही, जिम कंचली भुयग ॥६॥

**ढाल–१० राग गोडी, भव तणौं परिपाक एहनी जाति**

बे कर जोडी ताम भद्रा वीनवै, भोजन आज इहां करो ए ।
भगति जुगति सी थायतोपणि साचवउं दास भाव हुं आपणो ए॥१
सहस पाक सतपाक तैलादिक करी मरदनीया मरदन दीयै ।
जव चूरण घनसार मृगमद वासित ऊपरि उगटणो कीयो ए ॥२॥
अछे गृंह नइ पासै जल खडोखलि सनान करण आवे तिहां ए ।
करता जलनी केलि पडती मुद्रडी जाणी पण न लहै किहां ए ॥३॥
ते मुझ माणिक आज दीसै छे गयो, सारभूत घर में हतो ए ।
ऊ चउ लेइ हाथ जोवै श्रेणिक पणि न कहै मुख लाजतो ए ॥४॥

देखी अडोली तांम श्रेणिक आंगुली जाण्यो पाडी मुद्रडी ए ।
दासी ने कर सँन जल कल चालवी कढावे भद्रा खडी ए ॥५॥
अंधारै उद्योत करता नव नव भूषण मणि रयणे जडया ए ।
देई श्रेणिक आदि ज्योति झिगमिग देखि सवि अचरिज पडया ए।६
चिंतामणि ने पासि जिम सेवंतरो मूक्यो सोभ जिसी लहै ए ।
तिम ते भूषण पास श्रेणिक मुद्रडी ततखिण ओलखी ने ग्रहै ए ॥७
चीतै मगधाधीश पुण्य पटंतर स्यो सेवक ने स्यो धणी ए ।
स्यो करिवो विषवाद देखी परधन घाटि कमाई आपणी ए ॥८॥
पप हिरेहिलं दीस भूषण भामिण बीजइ दिनते ऊतरै ए ।
जिम निरमाइल फूल तिम ए नाखीए वलती सारन को करै ए ॥९॥
मेवा नै पकवान प्रीसै व्यजन जाति भाति कर जूजूआ ए ।
द्यै ताजा तबोल ऊपरि नव नव सहु को मन हरखित थया ए ॥१०॥
मणि माणकनी कोडि लेई भेटणो राजा फिरि पाछउ गयो ए ।
हिव पाछलि जिनराज धरम करण भणी सालिकुमर उच्छक थयोए॥११

॥ दूहा ॥

तेजी सहै न ताजणो खेत सहै खग धार ।
सूर मरण ही साँसहै, पणि न सहै तूंकार ॥१॥
से बसि रांकपणउ भलो, स्यो परवसि रग रोल ।
वर पोता नी पातली, नाउ परायो घोल ॥२॥
बीजो नाथ न साँसहु, तो आण धरूं सिर केम ।
मानी सरभ न साँसहै, घन गर्जारव जेम ॥३॥
संजम लेता दोइ गुण, पर भव अविचल राज ।
इण भवि नाथ न को हुवै, एक पथ दोइ काज ॥४॥
करता एम विचारण, बोली घडी बिच्यार ।
मिलि बत्रीसे भामिनी, इणि परि करै विचार ॥५॥

**ढाल ११ नीबयारी जाति**

आज नहेजो रे दीसै नाहलो, कीजं कवण प्रकार ।
प्रेम विलुधो सुकुलिणी मिली, इणि परि करै विचार ॥१॥आ०

आऊंकार न मंदिर आवतौं, जाता न कहै जाउ ।
जोगीसर जिम लय लायि रह्यो, मूकी मूल सुभाउ ॥२आ०॥
कर जोडि आगलि ऊभा छता च्यार पहुर वहि जाइ ।
तो पिण किम ऊभा जास्यो किहाँ, वात न पूछै काइ ॥३॥आ०॥
वयण नयण पोता ना वसि कीया, कीधौ मन संकोच ।
रग तणा रटका मत जाणेज्यो, आछै अवर आलोच ॥४॥आ०
आपण भोगी भमर न दूहव्यो, केम पड़ी मन राई ।
बोलायो प्रीतम बोलै नहो, अंतरगति न लखाई ॥५॥आ०॥
देखो नै मुंह मचकोडै नहीं, रीस नही तिल मात ।
आपणपै पिण बोलै नहीं, एह अनेरी घात ॥६॥आ०॥
आज सही भभेरयो वालहो, न कहै मन नी वात ।
जे नितु नवलो नेह न साँसहै ते तो घालै घात ॥७॥आ०॥
कहियै नाह न दीठो रूसणों, दिन दिन वधतै प्रेम ।
पाणी वलि माँहे मन खाँचीयो, हिव कहो कीजे केम ॥८॥ आ०॥
अतरजामी आज अवाणगू, दीसै कवण विशेष ।
अलवि मोह मीट न मेलतो, जे जोतो अनिमेष ॥९॥आ०॥
मीठा बोल म बोलो वालहा, मूल म पूरो खत ।
जोवो सहज सलूणे लोयणे, तो भाजे मन भ्रंत ॥१०॥आ०॥

॥ दूहा ॥

आसण पूरी साधु जिम, बैठो ताली लाइ ।
आज अजब गति वालहो, किणहिं न लख्यो जाइ ॥१॥
जो मन का सल राखियै, तो वाधै विखवाद ।
छतै साल किम नीपजै, प्रेम रूप प्रासाद ॥२॥
अणबोल्यां सरिस्यै नही, वाधौ विरह अगाध ।
कीजै पूछ खरी खबर, कवण कीयौ अपराध ॥३॥
बेकर जोडी पूछियै, कामण गारो कंत ।
किण कारण ए रूसणौ, ते दाखो विरतंत ॥४॥

ढाल १२ राग-गोडी मल्हार मिश्र

अबला केम उवेखीयै, विण अवगुण गुणवंत ।
कहीयै कीडी उपरा रे, कटक न कीजै कंत रे ॥१॥
इम जोवो ससनेहो रे, कामण वीनवै ।
झटक न दीजै छेहो रे, सुणि सुणि वालहा ॥२॥
तूं तेहिज तेहिज अम्हेरे, ते मदिर ते सेज ।
इणि अणियाले लोयणे रे, तेह न दीसे हेजोरे ॥३॥सु०॥
जो तै अम्हनै अवगणी रे, करिय कठिन निज चित्त ।
प्राण हुस्यै तो प्राहुणा रे, जिम परदेसी मीतो रे ॥४॥सु०॥
नाह न कीजै रूसणो रे, जोवो हियै विमासि ।
इक पखो इम ताणतां रे, किम चलस्यै घर वासो रे ॥५॥सु॥
हांसै री वेला नही रे, इण हासे घर जाय ।
पाणी न खमइं पातली रे, हिव ए दुख न सुहायो रे ॥६सु०
जिण तुम्ह नै प्रीयु दूहव्यो रे, जिण तुझ लोपी कार ।
सीखामणि द्यो तेहनै रे, एकणि घाउ म मारो रे ॥७॥सु०॥
सुगुण सनेही वालहा रे, करतां कोडि विलास ।
ते दिन आज न सभरै रे, तिण तुम्ह नै स्याबासो रे ॥८॥सु०॥
दिवस दिवस वधतो हतो रे, इतला दिन इकलास ।
मुख दुख बात न का कहो रे, आज टल्यो वेसास रे ॥६॥सु.॥
चित न का व्यापार नी रे, कोइ न विणठो काज ।
केवल कामणि ऊपरा रे, सही खीवै छै आजो रे ॥१०॥सु०॥
जो को अवगुण दाखवो रे, तो आघो दुक्ख थाय ।
कुरुख करो ठाकुर छता रे, किम कहशो न जायो रे । ११॥सु०
गुनहो पाँचे हि दिनै रे, जो को जाणो नाह ।
मूल थकी तो छाँडिज्यो रे, तुम्ह नै सी परवाहो रे ॥१२। सु० ।
एह उदास पणो तजो रे, तूं अम्ह प्राण अधार ।
हिलि मिलि बोलावी मिलो रे, पूरव प्रीत संभारो रे ॥१३सु०



वैभारगिरि पर धन्ना शालिभद्र का सथारा



शालिभद्र अपनी ३२ स्त्रियों के साथ

॥ दूहा ॥

इम सहजइ घर विघ कहीं, दीन हीन वयरोह।
पिरण तन मन डोल्यो नही, रखे दिखावे छेह ॥१॥
जो निरदूषरण परिहरे, तो हिव केही लाज ।
गाडो उलालियै पछै किसौ विनायक काज ॥२॥
हिव वहिलो बाहर करो, बहिनी म लावो वार।
भद्रा सासु नै कहो, प्रीतम तरणौ प्रकार ॥३॥
बात भेद लाधां पछै, देखी कुमर उदास ।
भाखै सीख रुखा वचन, ऊंची चढि आवास ॥४॥

ढाल–१३ राग जैतसिरी

**सुगणसनेही मेरे लाला.वीनती सुणौ मेरे कंत रसाला, एहनी जाति**

नमरणी खमरणी नइ मन गमरणी, रमरिण बत्तीसे सोवन वरणी।
मुकुलीणी नइ सहज मलूणी, किण कारण ए ऊरणी भूणी ॥१॥
ए सवि नारि चलै तुझ केडै, थूक पडै तिहाँ लोही रेडै ।
कथन तुहारो काय न खडै, उडै सिस जिहा पग मंडै ॥२॥
जी जी करतां जीहा सूकै, मुह थी नाम न काई मूकै ।
तुझ सासेही काई न धापै, तो इवडो दुख स्यानै आपै ॥३॥
तुझ गायौ गावै सहु कोई, हुवै सुप्रसन्न सनमुख जोई।
इम बैठो तन मन सकोची, तूं तो मूल नही आलोची ॥४॥
जो परतखि अवगुरण देखीजे, तो परिण मन मे जारिण रहीजै ।
दीठउ परिण अरणदीठउ कीजै, नारि जाति नो अंत न लीजै ॥५॥
अटक भटकि किम छेह न दीजै, जो को दिन घरि रहिवा कीजे ।
नीत वचन चौथो संभारो, कामरिण ऊपरि कोप निवारो ॥६॥
जाण्यो हुवै तो दोष दिखाडो, परिण घर बाहिर बात म पाडो।
माहे तेड़ी नै समझावौ, दोखी जन ने कांइ हसावो ॥७॥
तूं तो आज अजब गति दीसै, हियड़ौ हेजे मूल न हीसइ ।
एहवी पूत पराई जाई, इम किम नांखउ छउ धसकाई ॥८॥

तूं देवर तूं जेठ सगीनो, तूं मन मोहन नाह नगीनो ।
तूं पीहर तूं सासर वासो, तुझ विण सूनो आसो पासो ॥६॥
इण परि विविध वचन कही थाकी, न रह्यो कहिवा जोगो बाकी ।
सालिकुमर मन मांहि विचारै, सहु को मोह महीपति सारै ॥१०॥
जे भामण सुं संग करावै, ते लेई दुरगति पहुचावैं ।
हित वंछक मावीत कहावैं, पिण अंतर गति कोइ न पावैं ॥११॥

॥ दूहा ॥

आवी दीघ वधामणी, वनपालक तिणवार ।
धर्मघोष आव्या इहां चोनाणी अणगार ॥१॥
सालिकुमर मन चिंतवै, भले पधारथा तेह ।
मुंह मांग्या पासा ढल्या, दूधे बूठा मेह ॥२॥
पहली पिण व्रत आदरण, मो मन हुंतो हेज ।
हिव जाणे निदालुयें, लही बिछाई सेज ॥३॥
कुमर साघ वंदण चल्यो, रिद्धि तणो विस्तार ।
पांचे अभिगम साचवी, बैठो सभा मझार ॥४॥
सवेगी सिर सेहरो, सूरि सकल गुण खाणि ।
भव सरूप इम उपदिसै, मुनिवर अमृत वाणि ॥५॥

## ढाल—१४ राग गोड़ी विणजारा नी जाति

प्रतिबूझोरे लहि मानव अवतार, तप जप संजम खप करो प्रतिबूझो रे।
प्रति० जिम हुवै छूटक वार, गर्भावास न अवतरो प्रति० ॥१॥
प्र० स्वारथीयो जग मांहि, मत को जाणो आपणो प्रति० ।
प्र० हाथ छछोहा वाहि, आज काल्हि मैं चालणो प्रति० ॥२॥
प्र० रहितां जिम तिम प्राण, जिण गामांतरि चालियै प्र० ।
प्र० ओलीजैं समसाण, घर आभोषो घालियै प्र० ॥३॥
प्र० काल न देखे कोई, ऊपरवाड़े रांचतो प्र० ।
प्र० जे सर अवसर होइ, वार न लावै खांचतो प्र० ॥४॥

प्रतिबूझोरे संग न आवै आथि, नावै परणी हाथरी प्रतिबूझोरे ।
प्र० संबल घालो साथि, आगलि सेझ न पाथरी प्र० ॥५॥
प्र० अटवी विषम अपार, साथे मन मेलू न छै प्र० ।
प्र० करज्यो एह विचार, पछतावै पडस्यौ पछै प्र० ॥६॥
प्र० रमणी रंग पतंग, फल किंपाक विष सारिखो प्र० ।
प्र० म करो तास प्रसंग, जो मन पूजै पारखो प्र० ॥७॥
प्र० संध्या राग समान, आठे मद छै कारिमा प्र० ।
प्र० दिन दस देही वान, आभरणे बहु भारिमा प्र० ॥८॥
प्र० म करो गरब गुमान, आथि अथिर जिनवर कही प्र० ।
प्र० जात न लागै वार, राखी पिण रहिस्यै नहीं प्र० ॥९॥
प्र० गिणता त्रिण संसार, जे सिर छत्र धरावता प्र० ।
प्र० ते अरियण घर बार, दीसै दास कहावता प्र० ॥१०॥
प्र० दे न सकै जगदीश, अधिकी एक घडी सही प्र० ।
प्र० ते दिन मांहि बत्रीस, जाती पणि जाणी नहीं प्र० ॥११॥
प्र० परहरि निंदानी वात, म करेज्यो दुरगति दीयइ प्र० ।
प्र० जोए न मिटै धात, तो आपणपो निंदीयै प्र० ॥१२॥
प्र० परतखि आप निहालि, मन आवै ए बात जो प्र० ।
प्र० लोभ थकी मन वालि, क्रोध मान माया तजो प्र० ॥१३॥
प्र० तो ल्यो संजम भार, जो भव भमता ओलजो प्र० ।
प्र० मूको विषय विकार, वाछो छाका छोल ज्यो प्र० ॥१०॥

॥ दूहा ॥

धरम देसना सांभली, हरख्यो सालिकुमार ।
कर जोड़ी आगलि रही, पूछै एक विचार ॥१॥
माथै नाथ न संपजै, किण करमै मुनिराय ।
परम कृपाल कृपाकरी, ते मुझ कहो उपाय ॥२॥
कहै साधु व्रत जे ग्रहै, तृण जिम छोडै आथि ।
नाथ न माथै तेहनै, होवै ते सहुनो नाथ ॥३॥

साधु वचन सवि सरदही, इहां किण मीन न मेष ।
आवी माता ने कहै, इण परि वचन विशेष ॥४॥

ढाल–१५ राग–खंभाइची

मानव भव लहि दोहिलो रे, तो पाछलि अलवि गमायो रे ।
सफल करूं हिव मात जी रे, तो हुं ताहरो जायो रे ॥१॥
मोरी मात जी अनुमति दयो सजम आदरूं रे ।
व्रत पालि नें भव जलनिधि हुं तरूं रे ॥२॥ मो०॥
जे मारग जाणें नही रे, ते तो भूलै न्यायइ रे ।
मारग जाण्या ही पछै रे, कहि कुण उवटि जायइ रे ॥३॥मो०
जग में को केहनउ नही रे, जोवो हियें विमासी रे ।
परभव जाता जीव नें रे, साथ न कोई आसी रे । ४॥मो०
मुह मीठा आवी मिल्या रे, मुझ नै पांच सखाई रे ।
ने धन लूटै माहरो रे, आज खबरि मैं पाई रे ॥५॥मो०
जेहनो गायो गावतो रे, जेह सुं रहतो भीनो रे ।
नें प्रधान माहे थई रे, करै खराब खजीनो रे ॥६॥मो०
पग भरि साथ खिसै नही रे, फोकट मिलि मिलि पोसें रे ।
बाल सखाई नो टल्यो रे, मुझनइ आज भरोसौ रे ॥७॥मो०
हिव हु देखो तेहनें रे, कवण कुलीक लगावुं रे ।
खरच न देउ गाठ को रे, विमणो काम करावुं रे ॥८॥मो०
मिलण न देस्युं मंत्रवी रे, सो घर भेद प्रकाशे रे ।
मयण अछै त्रेवीस जे रे, ते नावण द्युं पासै रे ॥९॥मो०
पूरो लेखो मांगिस्युं रे, पहिलै दिन थी लेई रे ।
खाधो विमणो काढिस्युं रे, मुहडै माटी देइ रे ॥१०॥मो०
च्यार अछै जे चोगुणा रे, इण घरना रखवाला रे ।
खाधो माल नहीं दीयें रे, होइ रहया मतवाला रे ॥११॥मो०
ए सीखामणि तेहनें रे, नाणु इण घर माहे रे ।
जोतइं पैमै छेवकै रे, तो काढुं गल साहे रे ॥१२॥मो०

जाण तिके नर जाणिये रे, जे आपो न ठगावै रे ।
जीवतडां न कलंकीयै रे, मूयां कुगति न जावै रे ॥१३॥मो०

॥ दूहा ॥

सालि वचन श्रवणे सुणी, भद्रा करे विचार ।
वचन जिसा उडथा कहथा, तजै सही संसार ॥१॥
पणि अनुमति देस्युं नही, हुं राखिसुं समझाय।
जो मुझ नै उवेखसैं, तो क्युं कहथो न जाय ॥२॥
धरम भणी जे गोठिसे, ते गिणस्यै मावीत ।
मुझने कदे न लौपसैं, ए नान्हडीयो सुविनीत ॥३॥

## ढाल–१६ राग-मल्हार

बाता म काढो व्रत तणी, अनुमति कोइ न देसी रे।
सुख भोगवि संसार ना, पाडोसी व्रत लेसी रे ॥१॥बा०
तूं तो इण परि बोलतो, लोकां माहि लजावै रे ।
मुंह बाहिर ते काढीये, ते फिर पाछो नावै रे ॥२॥बा०
जे जगदीस बडा किया, ते ऊंडौ आलोचै रे ।
न्यायै जिम तिम बोलतां, छोकरवाद न सोचै रे ॥३॥बा०
जे सांभलस्यै सासरा, तो करस्यै दुख गाढो रे ।
हासं कारण नान्हडा, एवडी बात म काढो रे ॥४॥बा०
तूं जाणे व्रत आदरूं, सूल किसौ छै पाछै रे ।
जो अम्हनै निरवाहस्यै, वीर अवर को आछै रे ॥५॥बा०
जे मैं तूं जायो हुतो, कहिनै कुण दिन काजै रे ।
वडपणि जामण छोडतो, स्युं मन माँहि न लाजै रे ॥६॥बा०
हु जाणुं मावीत नी, छोरू पीड न आणै रे।
पण संजम छै दोहिलौ, ते तुं भेद न जाणै रे ॥७॥बा०
विषम परीसा जे सहै, ते तो काय अनेरी रे ।
हु परि जाणुं ताहरी, तिण राखुं छुं घेरी रे ॥८॥बा०

माखण जिम तनु ताहरो, परसेवें परघलियो रे ।
ते वेला स्युं वीसर्यो, व्रत लेवा हलफलीयो रे । ६॥बा०
कुण अतुली बल संचरैं, सनमुख गग प्रवाहै रे ।
तिम सुरगिरि नें तोलिवा, कवण पुरुष उमाहै रे । १०बा०
मयण तणें दांते करी, लोह चिणा कुण चावें रे ।
सिला अलूणी चाटता, स्वाद कहो कुण पावें रे ॥११॥बा०
मन वंछित सुर पूरवैं, तिण देणो छैं पूरो रे ।
स्यु संजम ले साधिस्यो, स्यु छे इहां अधूरो रे ॥१२॥बा०
दुखिया तो दुख भाजिवा, संजम सु मन लावइ रे ।
पिण सुखिया सुख छोडिस्यइ, ते पडिस्यइ पछतावइ रे ॥१३बा०
परभवनी आस्या धरी, जे आया सुख छोडें रे ।
ते तो कडनी मूकि नें, आस्या ऊपरि दौड़ें रे ॥१४॥बा०
ते रामति किम कीजीयें जियें रामति घर जावें रे ।
महल पधारो नान्हडा, उठि बहुअर दुख पावे रे ॥ ५॥बा०
दुख ल्यें कवण उदीरनै, कुण घर माडी ढावे रे ।
स्यों पोताना पग भणी, कोई कुहाडी बावें रे ॥१६॥बा०
मोह विलूधा मानवी, ओछो अधिको भासें रे ।
ए ए दुरजय मोहनी, श्री जिनराज प्रकासे रे ॥१७॥बा०

॥ दूहा ॥

कहयो कुमर मानें नही, कही विविध परि वात ।
मीठे वचने तेड़ि नैं, मात कहै ए बात ॥१॥
सातां ही जो नवि रहै, तो पहिली करि अभ्यास ।
पावड़ीए चढता थका, पहुचीजें आवास ॥२॥
काज विचारी जे करैं, रहैं तियारी लाज ।
अति उच्छक उंतावला, ते विणसाड़ें काज ॥३॥
इम अनुमति उतावली, देता न वहै जीह ।
जो माता करि लेखवो, तो पडखो दस दीह ॥४॥

### ढाल–१७ राग-सोरठ,

व्रत नी मनसा जे आणो, तिण मांहि न पैसे पाणी ।
तिण दिन दस आगे पाछे, मैं संजम लेवो आछे ॥१॥
रहतां वैराग न छीजे, माता पिण संतोषीजे ।
हठ झालिने बैसि रहीजे, जिम तिम निज कारिज कीजे ॥२॥
अवसर लहि चतुर न चूके, लीधो पिण बोल न मूके ।
हठ छोडि चडयो चोवारे, माता हरखो तिण वारे ॥३॥

॥ दूहा ॥

भलो थयो दिन दस रह्यो, लाज रखी चिहुं साखि ।
गूंगो बेटो बाप नें, बाप कहैं ते लाख ॥४॥

यति—

जेहनी मीजी भेदांणी, पलटै किम तेहनी वाणी ।
लागो जी रंग मजीठो, दीठो ते किणही न फीटो ॥५॥

॥ दूहा ॥

जिम जिम मैं परणी हुती, तिम तिम छोडुं एह ।
परठि तिका माडी तिणें, पहली लाधो छेह ॥६॥
गुनहो जिको सो मे कियो, फल पिण लाधो तास ।
सडये पान जिम हुं तजी, अवर रही प्रीउ पास ॥७॥
स्यो पहिली परणी हुंती, पहली छोडण काज ।
ऐ ऐ मो मोभण तणी, वारु राखी लाज ॥८॥

ढाल यतनी–

बीजे दिन बीजी छोड़ी, पहली चिंते थई जोड़ी ।
मुझनें आधो दुख थास्यें, बिहु नें तो बांटयो आस्यें ॥९॥
रहिवो चित्रसाली मांहे, भामणि बेसें बिहु बाहे ।
किणही सुं नेह न लावें, बाते सहुने परचावें ॥१०॥
मुनिवर ना पिण मन-चूकें, कामण जो पासेढूकें ।
पण सालिकुमर ए जाणी, साची दुरगति सहिनाणी ॥११॥

तीजै दिन तीजी आई, ताली देई तास बोलाई ।
छोडी दीसै छै कंतै, आवी बैसी इण पंतै ॥१२॥
बोल कहती अम्ह मांहे, तुझ नैं पिण काढी सांहे ।
स्यो फेर जवाब न कीधो, त्रिहु पाने बीडो दीधो ॥ ३॥
परठ दीठी आजूअउ नी, गति थास्यै एक सहूनी ।
जे पांचे साही आवै, आधो दुख तास जगावै ॥१४॥

॥ दूहा ॥

स्यानै को केहनै हसो, मत को करो गुमान ।
वारु वासो जिम हुतो, तिम थास्यै अपमान ॥१५॥

ढाल यतनी–

हुंतौ आसंगा माथै, झगडौ करती प्रियु साथै ।
पिण मुझ नैं छेह न देतो, अवगुण पिण गुणकरि लेतो ॥१६॥
तेही जो हुवइ निसनेही, तो बात कहीजै केही ।
त्रीजी बैठी बिहुं पासै, इण परि सिर धूणी विमासै ॥१७॥
देखो छो बात जि काई, मन माहे ईयांरैं आई ।
निरदोष पराई जाई, ले नाखउ छउ धसकाई ॥१८॥
प्रहसम थास्यै मुझ वारी, इम चितवै चउथी नारी ।
आडौ तब कोई न आसी, मन जाइ लागौ आकासै ॥१९॥

॥ दूहा ॥

हुं जोई परणी हुती, खरी आणि मन खंति ।
स्युं मुझ नै बैसाणिस्यै, प्रीतम तेहनी पंति ॥२०॥
घडीयालै बाजे घड़ी, धूजण लागी देह ।
मुझ नैं पिण प्रीयु छोडसी, पहुरै चिहुं रैं छेह ॥२१॥
वात न का पूछी सकी, आडी आई लाज ।
पहर चिहुं रे आंतरै, वीछडिवो छै आज ॥२२॥

॥ यति ॥

अति आतुर नेह गहली, घर ऊपर चढी इकेली ।
हरिणांकी वहि ए जासै, मृगराज लिख्यो चिहुं पासै ॥२३॥

दिन प्रति कांमरण छोडंतां, दल मयरण तरणा मोडंता।
हिव जिरण परि धन्नो आवै, ते पिरण जिनराज सुरणावै ॥२८॥

॥ दूहा ॥

बहिन सुभद्रा तिरण नगर, धन्ने घरि सुविदीत।
मनान करावरण अवसरै, बंधव आव्यो चित ॥१॥
रोम रोम सालै अधिक, विरह विथा तिरण वार।
हीयडो लागो फाटिवा, नयरण न खंडे धार ॥२॥
दीसै घरणु दयामरणी, आज खरी दिलगीर।
कहि केरणइ दूजरण दूहवी, नयरण झरै तिरण नीर ॥३॥
सालिभद्र सरिखो अछै, बंधव अमलीमारण।
आठ रमरिण मे माहरै, तूं हिज जीवन प्रारण ॥४॥

**ढाल–१८ राग गोडी. चेतन चेत करी, एहनी जाति**

श्रेरिणक घर आया पछै रे, काय पडी मन भ्रंति।
दिन दिन एक कामरिण तजै रे, व्रत लेवानी खतोरे रे ॥१॥
वयरागी थयो, जामरण जायो वीरो रे।
ते मुझ सांभरयो, नयरण झरै तिरण नीरो रे ॥२॥ वैं०॥
सात भलो जो सासरो रे, तो पीहर आवै चीति।
विरण बंधव पीहर किसो रे, नेह रहित जिम मीतो रे ॥३॥वै०
वीर विहूरणी बहिनडी रे, निस दिन रहै उदास।
प्रीउ हटकी किरण आगलै रे, काढै मन नीसासो रे ॥४॥वै०
उभारै पीहर तरणै रे, गज न सकै कोय।
सकज वीर नी बहिनडो रे, दिन दिन नवली होयो रे ॥५॥वै०
कुरण कहिस्यै मुझ बहिनडी रे. केहनै कहस्युं वीर।
वार पर्व कुरण मूकस्यै रे, मुझ नै नव नव चीरो रे ॥६॥वै०
काल अजरामर तूं हुजेरे, मुझ पूरवे जगीस।
किरण आगलि ऊभी रही रे, देइसुं इम आसीसो रे ॥७॥वै०

हिव किए नै जीमाडि नै रे, सफल करिस भाई बीज ।
कास पयोहर वीछीली रे, हुं देखसु भात्रीजो रे ।.८।।वै०
केहनै बाँधिस राखड़ी रे, गाइम केहनै गीत ।
कुण मोसालो मूकसी रे, तिण विशेष सचितो रे ।।६।।वै०
एक घडी पिण जेहनो रे, कठिन विरह खग धार ।
तो जामण जायां पखै रे, किम जास्यै जमवारो रे ।।१०।।वै०

॥ दूहा ॥

मुह मचकोडी तिण समै, बोलै बोल रसाल ।
साहसीक सिर मुगट मणी, धन्नो धिंगडमाल ।।१।।
वलि वलि वीरो दोहिलो, न्याय तिणै दिलगीर ।
पिण कायर सिर सेहरो, सालिभद्र तूझ वीर ।।२।।
आरंभ्यो तेहनो सफल, जे कर घालै पार ।
पांणि वलि मांहे पेखतां, थायै अवर प्रकार ।। ।।
प्रेम मगन ते किम रहै, मन उपाडया जाह ।
आगलि पाछलि छोडवो, तो किसी विमासण ताह ।।४।।

### ढाल-१६ फूलडा गुजराति

बहिनि रहि न सकी तिसै जी.साभलि प्रीतम बोल ।
स्युं अवहेलो माहरौजी, इणि परि वीर निटोल ।।१।।
मोरा प्रीतम ते किम कायर होई ।
कथन न मानै माहरो जो, तो आप विमासी जोइ ।।२।।मो०
काची कोडी छोडता जी, वीस करै बेखास ।
आथि छती जे अवगिणै जी, तेह नै द्यो साबास ।।३।।मो०
रतन जड़ित घर आगणा जी, सोवन मय घर बार ।
इण अनुसारै जाणज्यो जी, रिद्ध तणो विस्तार ।।४।।मो०
वयातीत पोतै थयो जी, गलित पलित घर नार ।
ते पणि व्रत लेतो छतो जी, पड़खे वरस बि चार ।।५।।मो०

आप तरुण तरुणी घरे जी, कंचन कोमल गात ।
भोग थकी जे ऊभगे जी, ते राखे अखियात ॥६॥मो०
घर वरताऊ छोडतां जी, करे विमासण वीस ।
रूपे रंभा सारिखी जी, धन्न जे तजे बत्रीस ॥७॥मो०
साहसीक पाखें कहो जी, नारि तजे कुण आम ।
लोही तो हिज नीसरें जी, तोरी चीरीजे चाम ॥८॥मो०
जे करिस्ये ते जाणिस्ये जी, त्याग दुहेलो काम ।
मूल न जाणे बाभडी जी, व्यावर तणो वरियाँम ॥९॥मो०
कथनी करणी सारिखी जी, जो इण कलियुग होय ।
तो सिव सुख हुतो सही जी, उरे न रहतो कोय ॥१०॥मो०
बाते बडा न नीपजे जी, मोठे लागे दाम ।
कहै तिमो पोते करे जी, ते विरला वरियाम ॥११॥मो०
साधु पथ पोते कहै जी, तिण दिस न भरे वीख ।
आप न जावै सासरे जी, लोगां ने दे सीख ॥१२॥मो०
दिवस बतीसे छोडसी जी, वीर बत्तीसे नारि ।
पोते आठ अछे तिके जी, छोडी एकण वार ॥१३॥मो०

॥ दूहा ॥

कुलवंती पाखे कवण, दये इण परि उपदेश ।
अतर गति आलोचतां, कूड नही लवलेश ॥१॥
मन राजा तनु मंत्रवी, उपसम आगेवाण ।
तीने एक मतं थयां, चढस्ये काज प्रमाण ॥२॥
काम चुगल पासे कीयो, चितवि विषय विपाक ।
अतर जोति प्रगट थई, घटो आठ मद छाक ॥३॥
पाँचे मिली जोडयो हतो, तूटो सगपण तेह ।
हिव हुं भाई तूं बहिनड़ी, अविचल सगपण एह ॥४॥
अलगी रह तुं मुझ थकी, म करिस ताणो ताण ।
मैं मन सूधे ताहरो, कीधो वचन प्रमाण ॥५॥

धन्नो एक मन्नो थई, ऊठरा लागौ जाम ।
पालव झालि इमौ कहै, नारि सुभद्रा नाम ॥६॥

ढाल-२• राग सोरठ

जो मारास करि लेखवौ, तौ मति जावौ छांडि लाल रे ।
जास्यौ तो ही राखस्युं बालक जिम रढ माडि लाल रे ॥१॥
रहु रहु रहु रहु वालहा, ऋटकि म तोडो नेह लाल रे ।
सहज सलूणाँ मांणमा, इम किम दीजै छेह लाल रे ॥२॥रहु०
आसंगाइत जे हुसी, ते कहिस्यै सो वार लाल रे ।
पिण विरचरा देस्यै नही, करस्यै कोटि प्रकार लाल रे ॥३॥रहु०
ओछौ अधिको सांभली, हसीय गुदारै तेह लाल रे ।
अवगुण गुण करि लेखवै, साचा साजन तेह लाल रे ॥४॥रहु०
दाँतां विच दे आंगुली, लुलि लुलि लागे पाय लाल रे ।
हाँच विछाई नै कहु, हिवणां तजि मत जाय लाल रे ॥५॥रहु०
घरणी वचने घर तजै, सोभ न लहीयै एम लाल रे ।
माखी तो मारै नही, मुलको मारै तेम लाल रे ॥६॥रहु०
एवडो गुनहो न को कीयो, कार न लोपी काय लाल रे ।
जो छीकंता दंडिस्यो, तो क्युं कह्यो न जाय लाल रे ॥७॥रहु०
विरचरा हारा विरचस्यै, कूडौ ही देह दोस लाल रे ।
पिण पापी मन नवि रहै, सास हुवै ताँ सोस लाल रे ॥८॥रहु०
पोगों सासरीयाँ तणौ, पीहरडै न खमाय लाल रे ।
पीहरीयां रो सासरै, मूलि न खमाणो जाय लाल रे ॥९॥रहु०
बधव दुख दाधी हुती, ऊपरि प्रीतम गउरा लाल रे ।
जाणे दाधा ऊपरै, देवा मॉडयो लबरा लालरे ॥१०॥रहु०॥
देखो दुख वाटरा समै, अलिवी पडी मन राय लाल रे ।
लेणै थी देणै पड़ी, इम ऊभी पछिताय लाल रे ॥११॥रहु०

॥ सोरठा ॥

प्रीतम नो लवलेश, मन पिण ढलाणो नहीं ।
फेरि दियै उपदेश, भामिणि नै प्रतिबोधवा ॥१॥

जिम कीधो उपगार, तें तिम अवर न को करै ।
ते विरला ससार, जे जिम तिम प्रतिबूझवै ॥२॥
छोड़ि अधूरा काम, उठि चलेसी प्राहुणो ।
कोई न लेसी नाम, जगल जाइ वसाइसी ॥३॥
किरण्यु करै सनेह, परदेसी परदेस मे ।
आधी गिणैं न मेह, आए कागद उठि चलें ॥४॥

**ढाल-२१ राग-धन्यासी, मुणि बहिनी ओड्डो परदेसी पहनी**

इम धन्नो धण नै परचावै, नर भव अथिर दिखावै रे ।
ते हिज साचा सयण कहावै, जे जिन धरम सुणावै रे ॥१॥इ०
मेरो मेरो करै गहेलो, सब स्वारथ को मेलो रे ।
ऊठि चलैगो हम इकेलो, विछडीया मिलण दुहेलो रे ॥२॥इ०
हैं दिन दस गोवल मे चरणा, आखर इक दिन मरणा रे ।
राखणहार न कोई शरणा, तो एता क्या करणा रे ॥३॥इ०
को काहू के संग न जावै, फेर पाछे घर आवै रे ।
तिण सेती जे नेह लगावै, सो ऊखर मे बावै रे ॥४॥इ०
छोरि चलेसी आथी पोथी, करि काया सब थोथी रे ।
आगलि जाणैं ल्युं या पोथी, है माया सवि थोथी रे ॥५॥इ०
इत उत डोलत दिवस गमावै, सूता रयणि विहावै रे ।
दिन दिन चलणो नेडो आवै, सूरख भेद न पावै रे ॥६॥इ०
को दुख वांटि न ल्यै इक राइ, पापे पिंड भराई रे ।
निसदिन चिंता करै पराई, या देखो चतुराई रे ॥७॥इ०
चालण वरियां होत सखाई, आपणी साथ कमाई रे ।
फिर आवै पाछि लुगाइ, त्रूटि जाण सगाई रे ॥८॥इ०
सब मिली आपणो स्वारथ रोवै, प्रीय की गति कुण जोवै रे ।
स्वारथ जास न पूगो होवै, सो परि पूठ बिगोवै रे ॥९॥इ०
तब लगि सब हो के मन भावै, जब लग गायो गावै रे ।
काज सारया मुह भी न लगावै, छिन मे छेह दिखावै रे ॥१०॥

हुंती मामणि प्रेम विलूधी, ते पिण सुणि प्रतिबोधी रे।
वाली वलै सदा पडसूधी, पिण नवलै सिल सूधी रे ॥११॥इ०
पूरबली पणि प्रीति न तोडुं, नेह नवल हिव जोडुं रे।
हूं साहिब को सग न छोडुं, तिम आपो नवि छोडु रे ॥१२॥इ०
एक मतो कीधो मन रंगे, व्रत लीधो प्रभु सगे रे।
श्री जिनराज वचन आमगे, पार्ने प्रीति अभंगे रे ॥१३इ०

॥ दूहा ॥

घण थिर करी आव्यो वही, सालिकुमर नै पासि।
हर जिम आहूकी कहै, इण परि वचन विलास ॥१॥
हिव लालच करतां थकां, सबल पडै छै चूक।
करै सूर पौरस चटय, इकणि घाव वि टूक ॥२॥
प्रेम मीत दल मोड़िवा, कायर म करि संकाण।
हूँ पाछलि पूठी रखो, तूं हुइ आगेवाण ॥३॥
बोलाव्यो न रहै कदे, केहर आवै धाय।
बापूकारया जे रहै, ते किम सूर कहाय ॥४॥
वयणे मन विमणो थयो, बाध्यो मन उछरंग।
वार न लागै वेसता, पासै ऊपरि रंग ॥५॥
पहिली पण अधिको हुंतो, संजम ऊपरि प्रेम।
बहनेवी वचने थयो, हरि पाखरियो जेम ॥६॥
खरी खबरि आवी तिसै, समवसरया जिनराज।
सालि कहै हिव आपणी, आस फलेसी आज ॥६॥

ढाल-२२ नथ गई मेरी नथ गई ए जाति

आस फली मेरी आस फली आस फली पाउधारया वीर।
आगलि गौतम स्वाम बजोर ॥१॥मे०॥
संजम लेतां बाधी भीर, हिव पामिस भव जल निधि तीर ॥२॥मे०
व्रत लेवां नै जिनवर हाथ, इक घेवर नै बूरा साथि ॥३॥मे०

मन मेलू करि नै जगनाथ, घातिसु मुगति रमणि नै बाथि॥४मे०
प्रभु महथि ले सजम भार, खप करि पालिम निरतीचार ॥५॥मे०
करिसु अप्रतिबद्ध विहार, लेइसु निरदूषण आहार ॥६॥मे०
पहिरसु सील सुदृढ सन्नाह, भाजिसु मयण तणो भडवाह ॥७॥मे०
तो सरिखो साथी गज गाह. तो मुझ नै स्यानी परवाह। ८॥मे०
वहिला हो मत लावो वार, आपण बे थास्यां अणगार ॥९॥मे०
अनुमति लेवा नो आचार, तिण ए पूछेवो परिवार ॥१०॥मे०
धन्नो आवी निज आवास, मामहणि मजन नउ उल्लास ॥११॥मे०
मूल थकी मोडण भव पास, पहुतो वीर जिणेसर पास ॥११॥मे०

॥ दूहा ॥

वचन न लोप्यो ताहरो. मै कीधो अभ्यास ।
हिव अनुमति द्यो मात जी, सही तजिस घर वास ॥१॥
जे दिन जावे व्रत पखै, पडै न लेखै तेह ।
हु परदेसी हुइ रह्यो, हिव स्यो करो सनेह ॥२॥
आजूणो दीसे तिको, कहै तिसी परि वात ।
तृण जिम माया परिहरी, छोडि चलेसी मात ॥३॥
मरता नइ जाता थका. राखि न सकै कोय ।
पिण जो भास न काढियै, तो मन डी भोहोय ॥४॥

ढाल-२३ समय गोयम म करिस्स प्रमाद, ए जाति

धीरज जीव धरै नही जी, उलटयो विरह अथाह ।
छाती लागो फाटिवाजी, नयणे नीर प्रवाह रे जाया ॥१॥
तो विण घडी रे छमास,
माम वरस किम बोलस्यइ जी, जोवो हीयइ विमासि रे जाया ॥२॥
कुण कहस्यै मुझ माइडी जी, घडी घडी नै छेह ।
केहनै कहस्यु नान्हडो जी, सबल बिमासण एह रे जाया ।.३॥तो०
हरखि न दीधो हालरो जी, बहू न पाडी पाइ ।
ते वाँझणि हुइ छूटिस्यइ जी, हूँ किण ग्यान गिणाय ।४॥जा०

गह पूरीत गिणती नहीं जी, हूँ किण ही नै ग्यान।
मिहरिण लाखीणो जगो जी, एको लोख समान रे ॥५॥जा०॥
धीरप देती जीव नै जी, तुझ नै देखि सधीर।
जिम तिम मैं बीमारयो हतो जी, मैं नगदल रो वीर रे ॥६॥जा०
प्रांत लूहण तूं माहरो जी, कालेजा नी कोर।
तूं वछ प्राधा लाकडी जी, किम हुवे कठन कठोर रे ॥७॥जा०
चढती तुझ सुख जोइवा जी, दिहाडा मैं सोवार।
ते पिण भूंय भारण हुस्यें जी, कुण चढस्यें चोवार रे ॥८॥जा०
जो बालापण मभरे जी, सीयाला नी रात।
तो जामणि नै छोडिवा जी, सही न काढे वात रे ॥९॥जा०
वूढापणि सुखिणो हुस्यु जी, मोटि हुती प्रास।
घर सूनो करि जाइ छे जी, माता मूंकि निराश रे ॥१०॥जा०
दीसै प्राज दयामणो जी, ए ताहरो परिवार।
सेवक नै सामी पखें जी, अवर कवण आधार रे ॥११॥जा०
महल कवण रखवालस्यै जी, कवण करेसी सार।
एकणि जाया बाहिरो जी, सहु सूनो समार रे ॥१२॥जा०
वछ तूं भोजन ने समे जी, हियडें बेसिस प्राय।
वा माता करि लेखवो जी, तो तुं छोडि मत जाय रे ॥१३॥जा०
साल तणी परि सालस्यें जी, ए तुझ आहीठाण।
प्राण हुस्यें ते प्राहुणा जी, भावें जाणि म जाणि रे ॥१४॥जा०
सुत विरह दुख मात नो जी, कहि न सके कविराज।
जाणे पुत्र वियोगिणी जो, इम जंपे जिनराज रे ॥१५॥१५॥जा०

॥ दूहा ॥

सासू जी थाकी कहो, हिव आपण नी वात।
कहिवो छे आपण वसु, करिवो छे पिउ हाथ ॥१॥
कहिवो ऊबरस्ये जिक्युं, जाणा छा निरधार।
पिण इण प्रवसर नारि नो कहवानो विवहार ॥२॥

नेह गहेला मानवी, मूकी कुल आचार।
ते स्यु छे जे नवि कहै, वोछडवा नी वार ॥३॥
कवि जन जन मुख सांभलो, जोड़ वयण विचार।
पणि ए जो माहे वहै, जाणे तेहिज सार ॥४॥

ढाल– २४ राग– आस्या धाहडी गोडो वाग्रारी भावन री जाति
पालव झालि इमु कहै रे, लोक चिहुं री साखि।
ए पिण छोरू छैमा बापना रे,छोडो अवगुण दाखि ॥१॥
नाहलीयै विलूधी ग्रोलभा दियैरे, भामणि भरि भरि ग्राखि।
नेहलीयै गहेली मंक न का करै रे, कहै माथा वड़ि नांखि ॥२ना
दूर न करतो निजर थी रे, तूं ग्रह्म नै खिण मात।
ग्राज चलै छै ऊभी मूकि नै रे, चूकै छै इण वात ॥३॥नां०॥
सीख करै वाटै मिल्या रे, वीछडवानी वार।
ते तो ग्रह्म मुं सीख न का करी रे, ग्रनवड जेम विचार ।४ना।
तै छान्या राख्या हुंता रे, पिण जाण्या लक्षण तेह।
मुहू ऊपरली करतो तूं सहु रे, पिण नवि धरतो नेह ॥५॥नां॥०
ग्राप सवारथ चीतवी रे, छोड चल्यो निरधार।
देव न दीधो एक कूणु कडो रे, जे हुवै ग्रह्म ग्राधार ॥६॥ना०
ग्रासा लूधाँ माणसा रे, वाधा वरस विहाइ।
ग्रास किसी जमवारो गालस्यों रे ते द्यो कंत बताइ ॥ ॥नाँ०॥
पहली संग न छोड़तो रे, हिव दीठी न सुहाय।
तैं दोषी जिम मेर चढाविनै रे, धर नाँखी ध्रसकाय ॥८॥नां०॥
जीवदया मन में वसी रे, तिण ल्यो सजम भार।
ग्रारड़ती छोडो छो गोरडीरे, ए तुझ कवण ग्राचार ।६॥नां०॥
पुरुष कठोर हृदय हुवे रे, लोक कहै ते न्याय।
तिल भरि भीजै पिण छीजै नही रे, लाख लोक कहजाइ ॥१०ना
घड़ नवा भांजइ घड्या रे, रतने लावै खोड़ि।

दोषी देव न देखि सके रे, ए आपण नी जोड़ि ।।११।।नां०।।
बीज पड़ी जोसी तणी रे, पतड़ै उपरी काय।
जोडा बेडो करतो पातरथी रे, लोभे चित्त लगाय ।।१२।।नां०।।
घाट कमाई आपणी रे, अवर न दीजइ दोस।
पणि पडतो आलंबन ले सहु रे, करै अवर सु रोस ।।१३ना०।।
वाणी श्री जिनराजनी रे, वसी जिहा रे चीत।
ते तो भोलाव्यो भूले नही रे, राखे अविहड प्रीति ।।१४।।नां०।।

॥ दूहा ॥

भामण विविध वचन सुणी, डोल्यो नही लगार।
कानकाचल डोलै नही, जो बाजै पवन हजार ।।१।।
एक मनो सपेखि नै, दीनी अनुमति मात।
सदा नीहोरो निबल नो, नै सबला नी लात ।।२।
जेम जमाली संचरै, व्रत लेवानी खंत।
तिण परि रिद्धि विस्तारि नै, सालिकुमर पिण जंत ।।३।।
सालिभद्र धनै भणी, आपण पै जिनराज।
सै हथि व्रत देइ कहै, सारो आतम काज ।।४।।
ताम सुभद्रा पणि गहै, पच महाव्रत भार।
धरम करम हिलि मिलि करै, ते विरला ससार ।।५।।

ढाल– २५ राग सोरठा. हंसलो री जाति.

कर जोडी आगलि रही, लेइ परजन पासै रे।
दुख भरि छाती फाटती, भद्रा इण परि भासै रे ।।१।।क०।।
मै वछ थापण नी परै, आप्यो छै तुम्ह सारू रे।
कोड़ि जतन करि राखज्यो, मत घालो वीसारू रे ।।२।।क०।।
तू कारो दीघो नथी, सहु को करतो जी जी रे।
तिण कारण जगजीवनै, हटक म देज्यो खीजी रे ।।३।।क०।।

तप करतो ए नान्हडो, मुझ पीहर वारेज्यो रे।
उन्हाले आतापना, नीरती करिवा देज्यो रे ॥४॥क०॥
मैं कालेजो माहरो, दीधो छै तुम्ह सारू रे।
जिम जाणो तिम राखिज्यो, कहिवानो आचारू रे ॥५॥क०॥
सीख किसी सपरीछता, कहतां हुवै अवहेला रे।
पणि मावीत सदा कहै, व्रत लेवानी वेला रे ॥६॥क०॥
तु व्रत ले छै पालतां, पणि साचे मन पाली रे।
नांन्हा मोटा व्रत तणा, दूषण सगला टाली रे ॥७॥क०॥
पूत पनोता सु थया, संजम लीधा माटे रे।
जे तप करि काया कसै, फलतो ते हिज खाटे रे ॥८॥क०॥
निस भरि त्रीजी पोरसी, सूतो तृण संथारे रे।
सेज सकोमल ते तजी, ते तूं मत संभारे रे ॥९॥क०॥
चोथो व्रत रखवालिजे, वाड़ि म भंजण देज्यो रे।
चवद सहस अणगार मे अधिकी सोभा लेज्यो रे ॥१०॥क०॥
पर घर जातां गोचरी, मत अभिमान धरेज्यो रे।
आप मुरादो मत रहै, गुरु नी सीख चलेज्यो रे ॥११॥क०॥
वच्छ काछलीयें जीमता, मन मे सूग न आणे रे।
मत तूं ओछो ऊतरे, साधु तणे सहिनाणे रे ॥१२॥क०॥
सीह पणै व्रत आदरी, सीहपणै आराधे रे।
सो बोलें इक बोल छै, आप सवारथ साधे रे ॥१३॥क०॥
इम सीखामण दे करी, भद्रा फिरि घरि आवे रे।
एक घटी पिण मात नै, वरसा सौ सम जावै रे ॥१४॥क०॥

॥ दूहा ॥

पर उपगारी परमगुरु, साधु तणे परिवार।
संजम समपी सालिनें, करै अनेथि विहार ॥१॥
सालि साधु चित चितवै, धन्य दीह मुझ आज।
निरदूषण व्रत पालि नै, सारूं आतम काज ॥२॥

श्रीजिनवर साथे करै, अप्रतिबंध विहार।
ग्रहण नै आसेवना, सीखै शिक्षा च्यार ॥३॥
तप जप करि काया कसै, अरस विरस आहार।
सुमति गुप्ती नित साचवै, चरण करण आचार ॥४॥
गाम नगर पुर विहरता, राजगृही उद्यान।
भवसायर तारण तरण, समवसरया वर्धमान ॥५॥
पुत्र रतन आगम सुणी, हरखी भद्रा मात।
दीधी लाख वधामणी, कहि जिणै ए बात ॥६॥

**ढाल– २६ राग-मल्हार प्रोहितीयानी जाति.**

बे बे मुनिवर विहरण पांगुरया रे, लई श्री वीर कन्हा आदेश रे।
ए तन दुरजन विण भाडो दियइ रे, न खिसै पग भरि सदेस रे।१बे.
मासखमण नो तुम्ह नै पारणो रे, वच्छ थासै माइडी बे रै हाथि रे
इण परि चवद सहस अणगार मे, सै मुख भाखै श्री जिनराज रे ॥२
तप जप खप करि काया सोखवी रे, तिम वलि अरस विरस आहार रे।
घर आव्या पिण किणही नवि ओलख्या रे,
ए कुण छै बे अणगार रे ॥३॥बे०॥
जिणवर आगम सामहणी सजै रे, भद्रा नंदन वंदन काज रे।
किण कारण भिक्षुक ऊभा तुम्हे रे,
भिक्षा नो अवसर नही आज रे ॥४॥बे०॥
साच वचन करिवा जिनराज नो रे, फिरि आव्या वलि बीजी वार रे।
नो पिण पैसण न दिया पोलियै रे, रोकी राख्या घर नै बार रे।५बे०
इण घरि पैसण नांव को दियै रे, तो स्यो विहरण नो वेसास रे।
जिण घरि आउकार न आवतां रे,
तिण घरि सी भोजन नी आस रे ॥६॥बे०॥
वचन अलीक न थाइ वीर नो रे, पैसणि परिण न लहाँ घर माँझि रे।
ए स्युं उखाणो साचउ थयो रे, इक माँहरी माँनै बाँझ रे ॥७॥बे०॥

तिण कुल साधु न पैसे पांतरै रे, जिण घरि जातां हुवै अप्रीत रे ।
एम विमासी नै पाछा वल्या रे, एहिज सुविहित मुनिनी रीत रे ॥८बे.
हुंतो मासखमण नो पारणो रे, पिण मन डोलाव्यो न लिगार रे ।
अधिकेरो तप अणलाधाँ हुवै रे लाधँ देही नै आधार रे ॥६॥बे०॥
वलतां मारग महीयारी मिली रे, माथा ऊपरि गोरस माट रे ।
अभाणी पग भ र न सकै खिसी रे,
देखि सालिकुमर नो घाट रे ॥१०॥बे०॥
लोचन विकस्या तन मन उलस्यारे, रोमाँचित थई देह रे ।
झरवा लागो खीर पयोहरे रे, जाग्यो पूरब भवनो नेह रे ॥११बे०॥
बहिरावै गोरस भावे चढी रे, वहिरी ने चिते सुविनीत रे ।
कनकाचल चाले चालव्यो रे, न चले वीर वचन सुविदीत रे ॥१२बे
जगगुरु भासै स सो टालिवा रे, ए पिण पूरब भवनी मात रे ।
विरहण जातां आज कही हुँती रे,
मै पिण तुम्ह नै नीरती बात रे ॥१३॥बे०।
स गम नै भव हुँती माँडि नै रे, सगली वात कही जिनराज रे ।
सहु को मन अचरिज ऊपनो रे, करम तणा ए काज रे ॥१४॥बे०॥

॥ दूहा ॥

श्री जिनवर मुख साँभली, पूरब भव विरतंत ।
सालि विचारै करम गति, इण परि साधु महंत ॥१॥
वाछरुवा चारावतो, हु पाछलि दस वीस ।
इणि भवि किरीयाणो कीयो, श्रेणिक मगधाधीश ॥२॥
पाछलि मनसा खीर नी, पूरी हुंती नीठ ।
निरमाइल घाल्यो कनक, इणि भवि सगले दीठ ॥३॥
भव पहिलकै पहिरतो, माँगी पर नी खोल ।
इण भव बहू ए पग लूही, नाख्या कंबल सोल ॥४॥

## ढाल-२७ राग-चोपाई नी.

कीधो मासखमण पारणो, तनु आथाम जाणि आपणो।
*आगलि* करी श्री *गौतम* साम, ते पूछइ प्रभु अवसर पाम ॥१॥
जिण कारण भाडो दीजतो, हिव ते लाभ नथी दीसतो।
असनादिक चौविह आहार, तेह तणो करिवो परिहार ॥२॥
प्रभु भासे सुख थाये जेम, देवाणुपिय करिवो तेम।
तहत वचन करि बेऊं चल्या, गौतम सामि सखाइ मिल्या ॥३॥
मन वच कायाइं वसी करी, जे दूषण संजम आसरी।
*लागा हुता* ते संभार, आलोवै निंदे तिणवार ॥४॥
चौरासी लख जोनि खमावि, सबहू स्युं करि मैत्री भाव।
मन सुधि प्रणमी सयल जिनेश, धर्माचारिज वीर विशेष ॥५॥
अणसण ले पादपनी परै, इष्ट कंत काया परिहरै।
च्यार चतुर शरणा उचरै, आपणपै आपो ऊधरै ॥६॥
हिव धरती मन अधिकी जगीस, आगलि करि बहुयर बत्रीस।
भद्रा रिद्धि तणे विस्तार, समवशरण पहुती जिणवार ॥७॥
दे परदक्षण वीर जिणंद, वांदया अवर मुनीसर वृंद।
नयण न देखै साल महंत, कर जोडी पूछै भगवंत ॥८॥
चढि वैभार शिखर मुनिराय, आदरि अणसण छोडी काय।
प्रभु मुख एह बचन सांभली, भद्रा माता धरणी ढली ॥९॥
विविध विलाप तिसी परि कीया, जिण फाटे विरहातुर हीया।
साथे बहुले गिरिवर चढी, पोढयो, सुत देखी आरडी ॥१०॥
साथि श्रेणिक अभयकुमार, ते समभावै वारोवार।
गणियै तासु जन्म मुकयत्थ, जे व्रत धर साधे परमत्थ ॥११॥

॥ दूहा ॥

पेखि सिलापट ऊपरै, पोढयौ पुत्र रतन्न।
हीयड़ा जो तूं फाटतो, तो जाणति धन धन्न ॥१॥

रे हीयडा तुं अति निठुर, अवर न ताहरी जोड़।
इबडे विरह न विहसतां, जतन करें लख कोड़ ॥२॥
हीयडा तू इण अवसरें जो होवत सत खंड।
तो जाणत हेजालूयो, बीजउ सहु पाखड ॥३॥
मुझ हीयडो गिरि सिल थकी, कठन कीयो करतार।
घण घाए विरहा तणें, भेदयो नही लिगार ॥४॥

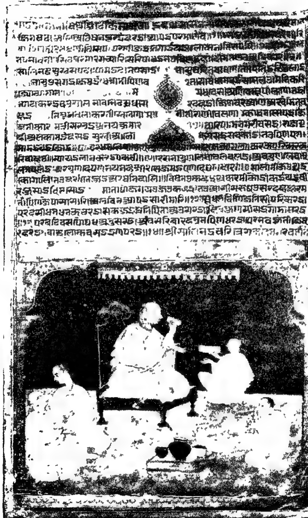
ढाल २८– राग केदारो, काची कली अनार की रे हां ए जाति

इतला दिन हुं जाणती रे हाँ, मिलस्यें बार बे च्यार मेरे नदन।
हिव वच्छ मेलो दोहिलो रे हा, जीवन प्राण आधार मेरे० ॥१॥
माइडी नयण निहारिने रे हाँ, बोलो बोल बि च्यार मेरे०।
अणबोल्याँ इणवार मे रे हाँ, थाये वेम करार मेरे० ॥२॥
इण अवसर ना बोलड़ा रे हाँ, जे बोलिस दस वीस मेरे०।
ते मुझ आलबन हुस्यें रे हा, संभारिस निस दीस मेरे० ॥३॥
तप करतो गिणतो नही रे हाँ, कया नो लवलेश मेरे०।
भैगू मासखमण आविने रे हा, इम कहितॉं स देश मेरे० ॥४॥
पण हूं साच न मानती रे हाँ, बैठोते हिज देह मेरे०।
पजररूप निहारिनें रे हाँ, साच मानुं हिव तेह मेरे नं० ॥५॥
भूख खमी सकतो नही रे हाँ, तिरस न सहतो तेम मेरे नं०।
मासखमण पाणी पखै रे हाँ, ते कीधा छे केम मेरे नं० ॥६॥
सुरतरु फल आस्वादतो रे हाँ, अन्ना तणउ आचार मेरे०।
तेइ किम कीधा पारणइ रे हाँ, अरस विरस आहार मेरे० ॥७॥
हाथे उछेरयो हतो रे हाँ, लहनी ताहरी ढाल मेरे०।
कहिनें स्युं छानो हतो रे हां, मां हु तो मोसाल मेरे० ॥८॥
व्रत लेतें छाडी हुती रे हां, तें जामण निरधार मेरे०।
हिवणाँ वलि अणबोलवें रे हाँ, खंत ऊपर द्यै खार मेरे० ॥९॥
चलतो इण गामंतरै रे हा, लाबो द्यै छै छेह मेरे०।

थास्यौ जन्मान्तर हिवै रे हां, हम तुम नवल सनेह मेरे० ॥१०॥
पाछलि वीतिक वीचस्यै रे हाँ, जाँगाइलो करतार मेरे०
जिम तिम रोवतां वउलस्यै रे हां, ए सारी जमवार मेरे० ॥११॥
इण डुंगर चढवा तणी रे हाँ, आज पडं छै सीम मेरे० ।
हाड़ी ल्यावे पंखीया रे हाँ, तो मत भाजो नीम मेरे० ॥१२॥
घर आवी पाछा वाल्या रे हाँ, जगम सुरतरु जेम मेरे०
ए दुख विसरस्यइ नही रे हाँ, हिव कहो कीजे केम मेरे० ॥१३॥
एकरस्यो घर आँगणं रे हाँ, सेंहथ प्रतिलाभत मेरे० ।
लाधो नरभव आपणो रे हाँ, तो हुं सफल गिणत मेरे० ॥१४॥
आजूणं अणबोलणं रे हाँ, भलो न कहस्यं कोइ मेरे० ।
पहिडं पेट जो आपणो रे हाँ, नो कलि उथलो होय मेरे० ॥१५॥
ए साजण मेलावडो रे हाँ, ते जाण्यु सहु कूड मेरे० ।
हिव लालच कीजइ किसो रे हाँ, आप मूआँ जग वूड मेरे० ॥१६॥
ते विरहीजन जाणस्यै रे हाँ, वीतक दुखनी वात मेरे० ।
नेहे भेदाणी हुस्यै रे हाँ, जेहनो माते धात मेरे० ॥१७॥
आसा लूधाँ माणमा रे हाँ, जमवारो किम जाय मेरे० ।
दैव निरास कियाँ पछै रे हां, पापी मरण न थाय मेरे० ॥१८॥
हु पापण सिरजी अछुं रे हाँ, दुख सहिवा ने काज मेरे० ।
दुखिया नै ऊतावलो रे हा, मरण न द्यै महाराज मेरे० ॥१९॥
मीठा बोल म बोलज्यो रे हाँ, मत करज्यो का सीख मेरे० ।
नयण नीहाल्यो नान्हडा रे हाँ, जिम पाछी द्य् दीख मेरे० ॥२०॥

॥ दूहा ॥

माता विविध वचन कहथा, धरती निवड़ सनेह ।
पिण समतारस भीलतै, नाणी मन मे तेह ॥१॥
भामिणी बत्तीसे मिली, कीधा कोडि विलाप ।
पण नायो मन ढूकडो, तसु विरहानल ताप ॥२॥



सं० १६८१ मे शालिवाहन चित्रित शालिभद्र चौपई
के आदिपत्र में श्री जिनराजसूरि जी



पं० लावण्यकीर्ति गणि व सा० भारमल्ल राजपाल
शालिभद्र चौ० का अंतिम पृष्ठ

ढाल– २६- राग-धन्यासी

इण अवसर श्रेणिक परचावे, भद्रा फिरि घर आवे जी।
पडलाभी न सकी प्रस्तावे, तिण गाढी पछतावे जी ॥१॥
सालिभद्र धन्नउ रिषिरायाः तासु नमुं नित पाया जी।
जे तप जप खप कसि करि काया, सूत्रा साधु कहाया जी ॥२॥सा०॥
नान्हा मोटा दूषण टाली, कलमल पंक पखाली जी।
चरम समय जिणवर संभाली,सूधो अणसण पाली जी ॥३॥सा०॥
बार वरस सजम आराधी, आप सवारथ साधी जी।
सुरगति करम निकाचित बाधी,सरवारथ सिद्धि लाधी जी ॥४॥सा०
सुर सारे सुर भवन विचाले, पिण नवि नाथ निहाले जी।
पोता नो बोल्यो संभाले, हरखित हुवे तिण काले जी ॥५॥सा०॥
सरवारथ सिद्ध हूती चविस्यै, मुनिवर नर भव लहिस्यै जी।
महाविदेहे व्रत आदरिस्यै, अविचल शिवसुख लहिस्यै जी ।६।सा०।
परतखि दान तणा फल जाणी, भाव अधिक मन आणी जी।
अढलक दान समापो प्राणी, ए श्री जिनवर वाणी जी ।।७।सा०॥
साधु चरित कहिवा मन तरसे, तिण ए भास्यौ हरसै जी।
सोलह सइ अठहुतरि (१६७८) वरसे,आसू बदि छठि दिवसे जी ।८सा०
श्री 'जिनसिंहसूरि' सीस मतिसारै, भवियण ने उपगारै जी।
श्री 'जिनराज' बचन अनुसारे, चरित कह्यौ सुविचारै जी ।६ सा०॥
इणि परि साधु तणा गुण गावै, जे भवियण मन भावै जी।
अलिय विघन सवि दूर पुलावै, मन वंछित फल पावै जी ।१०।सा०
एह सबध भविक जे भणस्ये, एक मना साँभलिस्यै जी।
दुख दोहग ते दूरइ गमस्यै,मन वंछित फल लहिस्यै जी ॥११॥सा०॥

इति श्री दान विषये शालिभद्र धन्ना चौपाई संपूर्णम्

# ॥ श्री गजसुकमाल महामुनि चोपई ॥

॥ दूहा ॥

नेमीसर जिनवर तणा, चरण कमल पणमेवि।
साधु साधु गुण गावता, सानिधि करि श्रुतदेवि ॥१॥
सूधउ मारग उपदिसइ, पालइ विसवा वीस।
दूमम कालइ तउ मिलइ, जउ मेलइ जगदीश ॥२॥
हुआ अपूरव पूरवइ, चारितधर चउसाल।
गातां जिम तिम गुण हुवइ, जातां जिम मउ* साल ॥३॥
कहइ केवली केवली, स्युं न कहइ ए सार।
साधु धरम दस विधि तहां, क्षमा तणइ अधिकार ॥४॥
सोहम वचन हियइ धरी, गजसुकमाल चरित्र।
कहिवा मुझ मन अलजयउ, करिवा जनम पवित्र ॥५॥
तास प्रसंग अनेक जस, प्रमुख चरित हितकार।
चतुर चतुर ×संगइ मिली, सुणउ+ भणउ मतिसार ॥६॥
सरस बचन तेहवा न छइ, पिण सरस चरित्र छइ तास।
साकर मेलवणी÷ पखइ, स्युं न धरइ मिठास ॥७॥

**ढाल १ राग–रामगिरी चौपई, मगध देश श्रेणिक भूपाल एहनी**

भरतक्षेत्र नयरी द्वारिका। धनद आप थापी छइ जिका।
गढ़ मढ मंदिर पोल प्राकार। जोतां अलकापुरि अवतार ॥१॥
नवमउ वासुदेव वसुदेव। नंदन कृष्ण करइ जग-सेव।
सलहीजइ जामणि देवकी। जासु भली जग माहेवकी ॥२॥
कोट माहे छप्पन कुल कोड़ि। यादव बाहिर बहुत्तर कोड़ि‡।

---

* मुहमाल × विधि सग + भणउ गुणउ ÷ केलवणी परे पखे ‡ जोड़ि

राजनीति पालइ राजवी। कुविसन पिण टालइ लाजवी ॥३॥
एक एक हुँती आगला। साहसीक नर रण वावला।
यादव कुमर खरा मछराल। तृणइ पडथइ पिण ऊठइ झाल ॥४॥
जासु चिहुँ मइ सोभा घणी। साड़ी सुहड़ विरुदना घणी।
परत वह इण* मुख भाजणी। अवर नारि जाणइ माजणी ॥५॥
रहइ राति दिन मद भीमला। जाणइ कोक भरतनी कला।
पिण परनारि सहोदर जेह। काछ वाच निकलंक निरेह ॥६॥
भोग पुरंदर लील विलास। घरणो सूं राखइ इकलास।
विषय जलधि हेलइ जे तरइ। छयल पुरुष को नवि छेतरइ ॥७॥
भोगी भमर कुमर दुरदंत। ते सोचइ मन सूं एकंत।
हरि हुरमतो राखइ विघटतो। कीजइ छइ गाढी *अघटती ॥८॥
वात सहु पोतानी करइ। न करइ पर निंदा पातरइ।
सीखामणि द्यइ एकण वार। वलती कौ न करइ ×नाकार ॥६॥
लाजवत अलविन को लड़इ। कवण चढ़इ चावइ +चउतरइ।
न हुवइ केहनइ माथइ दंड। प्रसादा सिर दीसइ दंड ॥१०॥
करइ अनीति न बध न पड़इ। बंधन केस पास नइ जुड़इ।
दोसइ बाजीगर माडीयउ। राजभुवन नवि को चाडीयउ ॥११॥
वधतउ माहोमाहि सनेह। दीवइ दीसइ घटतउ नेह।
गुण ना चोर न धनना चोर। मन ना चोर वसइ छइ जोर ॥१२॥
थोडइ थोडइ घन एकठउ। मेली नइ खरचइ सामठउ।
आठ पहुर घरि दय-दय कार। अलवइ कौ न करइ नाकार ॥१३॥
सतवादी नर सारइ दीस। गिण्या बोल बोलइ दसवीस।
पडथइ कसइन बोलइ भूठ। पडइ साख जेहनी पर पूठ ॥१४॥
पर दूषण न कहइ गुण ग्रहइ। तीन तत्व सूधा सरदहइ।
कोइ न लोपइ हरिनी कार। उत्तम यादव नउ परिवार ॥१५॥

[सर्व गाथा २२]

*रण *विघघति ×कणवार +चउतरइ

॥ दूहा ॥

गामागर पुर विचरता, निरमम निरहंकार।
नेमि जिणंद समोसर्या, साधु तणइ परिवार ॥१॥
साथे गणधर केवलि, चौदह पूर्व धार।
चौनाणी तप आगला, लब्धि तणा भण्डार ॥२॥
छट्ठ *छट्ठनइ पारणइ, आँबिल उझित आहार।
रसना वसि करि जनम लगि, विगइ तणउ परिहार ॥३॥
ऊंच नीच कुल गोचरी, केवल सीतल अन्न।
मौन ब्रत कारणइ पखइ, कै प्रतिमा प्रतिपन्न ॥४॥
पहर सात लगि काउसगि, चारित निरतीचार।
पहर एक मइ साचवइ, नीआवि आहार× ॥५॥
नव दीक्षित साथइ हुता, कचण कोमल गात्र।
छए अनीक जसा प्रमुख, मुनिवर चारित पात्र ॥६॥
विविध+ अभिग्रहना धणी, सूधा साधु महंत।
एक एक हुती अधिक, जे गरुआ गुणवंत ॥७॥

सर्व गाथा २६

**ढाल २ राग-केदारा गउडी, नमणी खमणी नइ मन गमणी एहनी**

पहिली पोरसि सूत्र संभारी। बीजी पोरसि अरथ विचारी।
जाणी त्रीजी पोरसि लागी। वसि वेदनी क्षुधा पिण जागी ॥१॥
सलहीजइ संजम जग सारइ। तेतउ देह तणइ आधारइ।
ते पिण न चलइ विण आहारइ। भाडउ देवउ ते आचारइ ॥२॥
इण परि सुध भावन भावी। साधु छए प्रभु पासइ आवी।
करि आवसही त्रिहुं सघाडे। विरहण पहुचइ ते त्रिहुं पाड़े ॥३॥

---

* अट्ठंनइ ×आ आगम व्यवहार +त्रिविध

दूषण भूषण* बइतालीसे। जे ×सवि जाणइ विसवावीसे।
ते आहार भमर जिम ग्रहता। श्री वासुदेव तणइ घरि पहुता ॥४॥
देखि सरूप कीया देवकीयइ। दीठा बे मुनिवर देवकीयइ।
सात आठ पग साम्हो जाई। करि प्रणाम देवकनी जाई ॥५॥
मुझ घर आंगण पावन कीधउ। जंगम +सुरतरु जो पग दीधउ।
पेखी पात्र चढ़ी सुभ भावइ। थाल भरी मादक विहरावइ ॥६॥
पडिलाभो मुख साम्हउ जोवइ। सारउ तनु रोमंचित होवइ।
जोताँ तिम लोचन थंभाणा। पाछा ले न सकइ लोभाणा ॥७॥
चंचल चित ते पिण अटकाणउ। नेह÷नवल तिण क्युं न कहाणउ
लाग गई इणि परिका ताली। जॉणे चित्र लिखित पचाली ॥८॥
वलि बीजउ सघाडउ आवइ। पिण अंतर तिल तुस न जणावइ।
आगलि भोजन घरि पाउधारउ। महिर करो मुझनइ निस्तारउ ।९
इण घरि‡ देवानी मति जागइ। तउ किणही बातइ दोष न लगाइ।
घरि बिमणो उलट निज अंगइ। पड़िलाभइ मोदक मन रंगइ ॥१०॥
पाणी §खलि पिण न पडयउ आडउ। आव्य त्रीजउ पिण संघाड़उ।
दीठा तिणी एकणि अनुहारइ। स्युं फिरि आव्या त्रीजी वारइ ॥११॥
आजूणउ दिन पडिस्यइ लेखइ। पडिलाभइ मोदक सुविसेषइ।
परभव नइ जे संबल संचइ। तेतउ देतउ हाथ न खंचइ ॥१२॥

सर्व गाथा ४१

॥ दूहा ॥

करइ तिसी खप विहरता, गिण गिण टालइ दोष।
पड़इ न चलता पांतरउ, लाधउ मारग धोख ॥१॥

---

*दूषित ×नवि +तीरथ ÷न बलि ‡परि देवीनी
§वलि

सावधान दीसइ तिसा, पगनउ तिसउ उपाड।
सिवपुर ए पहुँचइ सुखइ, पड़इ न का विचि धाड ॥२॥
त्रिकरण सुद्धइ तेहवा, दीसइ उपसमवंत।
गिण्याँ दिनाँ माँहे करइ, आठ करम नउ अंत ॥३॥
ल.लच किणही बातनउ, धरइ नही तिलभार।
बार-वार नावइ फिरी, विण कारणि अणगार ॥४॥
[ सर्व गाथा ४५ ]

ढाल-३ राग सोरठी* जाति मोरियानी वीर वखांणि × ऐ देशी
देवकी मधुर वचने करीजी, वीनवइ बे कर जोडि।
उत्तम पात्र पडिलाभीवाजी, कृपण पिण मन धरइ कोड़ि ॥१॥
साधु जी भलइ पधारियाजी, जीवित जनम प्रमाण।
सुकृतनी आज जागी दसाजी, आज ऊगउ भलइ भाण ॥२॥ स०
अयन अलिकापुरी द्वारिकाजी, कनकमइ नवल प्राकार।
पार दीसइ न को रिद्धि नउजी, लोक मुदि मुदित दातार ॥३॥स०
अतिथि आवी चढइ बारणइजी, जेतला राति दिन सीम।
पोषीयइ नव नवे भोजने जी, केवहइ एहवउ नीम ॥४॥स०
पारकउ दुक्ख देखि केतला जी, आप न खमी सकइ जेह।
वातनी वात माहे सहुजी, आथि ऊपाड़ि द्यइ तेह ॥५॥स०॥
हुंति अणहुंति न मिटइ लिखीजी, पिण न कोकरइ नाकार।
केइ घरणी भणी घर विघइ जी,एहवी सीख द्यइ सार ॥६॥स०॥
पात्र घरि आवि पाछउ वलइजी, के कहइ ए बड़ी खोड़ि।
दान देंन को त्रौटइ पड़यउजी,कृपण जोड़इ न को कोड़ि ॥७॥स०॥
विरूद केह वहइ एहवउ जी, दीजियइ जां लगइ होइ।
आथि साथइ न को ले गयउजी, ले न जासी वली कोइ ॥८॥

*धन्याश्री ×वीर वादि वलवा यका वो

आज चउथउ अरउ द्वारिका जी, माहि सत पीढ़िया साह ।
साहरइ जे दुनी डोलती जी, सहस लगि पउलि प्रवाह ॥६॥स०॥
परवदिन पौषध अनुसरइजी, साधुनउ जउ जुडइ योग ।
बारमउ व्रत पिण पारणइजी, साचवइ श्रावक लोक ॥१०॥स०॥
वात छइ अचरिज सारिखीजी, माहरइ मन न समाइ ।
स्वाद कहतां न को ऊतजइजी, विण कह्या पिण न रहाइ ॥११स०
ऊंच कुल नीच कुल गोचरी जी, अरसनइ विरस आहार ।
स्युं न मिलइ आया* फिरीजी, एकणि घरि त्रिह वार ॥१२॥स०॥

[ सर्व गाथा ५७ ]

॥ दूहा ॥

माया काया कारिमी, स्वारथ नउ परिवार ।
प्रतिबूधा बंधव छए, जिनवर बचन विचार ॥१॥
छठ× छठनइ पारणइ, लेई प्रभु आदेस ।
जावां पाड़े जू जूए, कीधउ नगर प्रवेस ॥२॥
जाणां छां आव्या हुस्यइ, पहिली मुनिवर च्यार ।
थोड़इ थोड़इ आंतरइ, तो पिण इण अणुहार ॥३॥
जिण अम्ह न दीठा हुस्यइ, हरि करि बार हजार ।
प्रायइ ते पिण पांतरइ, बोलावण री वार ॥४॥
आज इहां भिक्षा सुलभ, सहु को लोक समृद्ध ।
अरस विरस आहार ल्यइ, साधु न को रसगृद्ध ॥५॥

[ सर्व गाथा ६२ ]

---

*पधारया वलीजी ×छए

ढाल-४ मोमल* 'रउ' हेड़ाऊहो मिश्री ठाकुर मांहिंदरी
पहली जाति

नयण निहालइ हो हरि करि, देवकी ते बेवे अणगार।
रूप रूप ×महो हो अनोपम संपदा,कहतां नावइ पार ॥१त० आं०
निरख खमइ जे हो अनमिख जोवतां, लोचन तृपति न थाइ।
कमल कमल विकसइ होतन-मन उलसइ,अंतरगति न+लखाइ।२
खोड़ि न का जोता हो मींटइ (नवि) चढइ,नख सिख सीम सरीर।
आपण पइ करतइ हो करणीगरइ, कान करी तकसीर ॥३॥
तप तपिवउ हो विच-विच आतापना, ल्यइ नीरस आहार।
पिण तिल भरि न घटइ हो तनु लवणिमा,देव कुमर अवतार ॥४न.
इण अनहारइ हो सारइ जगत्र मइ, नयण न दीठउ कोइ।
भाति पडी न वली हो बीवइ÷ पखइ, तिण मुझ अचरिज होइ ॥५
सोभागी पिण यादव हो भलभला, कचण वरणी देह।
आख तलइ ते पिण आवइ नही, जउ दीठा हुवइ खेह‡ ॥६॥न०॥
रूप अवर अवसर मिटयौ पड्यो, जोबो पडिस्यै माड़।
आंबिल ए पूरी न हुवै किमइ, आंबा तणी रुहाड़ि ॥७॥न०॥
सगपण कोई हो नहो पिण उल्लसइ, हियड़उ सगपण जेम।
मुझ नइ सूधी हो समझि$ न का पडइ, इम किम प्रगटइ प्रेम ॥८न०
श्रावक नउ हो चारित्रियां ऊपरइ, हुवइ छइ धरमसनेह।
आम न कईयइ को परवस §पडइ, आवइ मन सदेह ॥६॥न०॥
मोहन मूरति हो जाइन मेल्हणी, नयण थया लयलीन।
चोल तणी परिजे हो रातउ अछइ,किम करिस्यइ मन मीन ॥१०न०
आपणपइ मन सूं आलोचतां, लागी खिण इकवार।
काम सरयइ स्यानइ हो ऊभा रहइ, नारि पास अणगार ॥११॥न०
सर्व गाथा ७२

*मोमन हेडाऊ, प्राज न वधाग्रो-ऐ जाति ×तणी हो निरुपम
+कहाइ ÷बीबै, बीजा, ‡तेह, ऐह $खबर §कहियइ

॥ दूहा ॥

करइ विमाणमण देवकी, हूँ बलिहारी तांह।
भर जोवन माया तजी, संयम लीधउ जाह ॥१॥
एकणि नालइ जनमिया, जिण ए पुत्र रतन्न।
रतन जनेता सलहीयइ, ते जामिण धन धन्न ॥२॥
अनुमति देतां व्रत समय, किम वूही छइ जीह।
जामिणी ए जायाँ पखइ, किम नीगमस्यइ दीह ॥३॥
इण गति इण मति इण उगति, इण छवि इण अणुहार।
जउ क्युं छइ तउ हरि अछइ, बलि जाणइ करतार ॥४॥

सर्व गाथा ७६

## ढाल—५ हंसलानी*

साधु बचन विघटइ नही, वेसास सहूनइ पूगइ रे।
पूरव सूरज ऊगतउ, ते पिण पच्छिम ऊगइ रे ॥१॥सा०॥
अमृत हालाहल हुवइ, ससिधर वरसइ अंगारो रे।
सुरतरु वंछित आपतउ, विरचइ केहनइ वारो रे ॥२॥सा०॥
कवण गुहिर सायर समउ, तो× पिण मरयादा मूकइ रे।
कामगवी घरि दूझती, ते करम विसेषइ सूकइ रे ॥३॥सा०॥
सुरगिरी थिरि सिर सेहरउ, ते पिण डोलायउ डोलइ रे।
पिण धरतो न 'पडिइ' किमइ, अलवइ जे मुनिवर बोलइ रे ॥४सा०
अइमत्तउ अतिसय निलउ, सहुनां संदेह हरंतउ रे।
पुर पोलास समोसरयउ, जंगम तीरथ जयवंतउ रे ॥५॥सा०॥
मुनिवर नइ मींटइ पडी, बालापणि बाली भोली रे।
घरि आंगणि रमती छती, साथइ ले सहोयर टोली रे ॥६॥सा०॥
नील कमल दल सामला, आठे एकणि आकारइ रे।
कुलदीपक सुत थाइसी, नल कूबर अणुहारो रे ॥७॥सा०
क्षेत्र भरत मइ तेहवा, जणस्यइ का अवर न नारी रे।

*हंसला री, कर जोड़ि मागलि रही—ऐ देशी × ते

विण पूछ्यां मुनिवर कह्यउ, पोतइ मन मुं निरधारी रे ॥८॥स०
एक कान्ह मइ जनमीयउ, रिषिजी भाख्यउ* अहिनाणो रे।
जोता तास पटंतरउ, को नाव दीसइ राउ राणो रे ॥९॥सा०॥
पुत्र छए जिण जनमिया, तेतउ छइ नारि अनेरी रे।
साधु वचन × हुवइ वृथा, मुझनइ परतीति घणेरी रे ॥१०॥सा०॥
नेइ नवल तिम ऊजमइ, तिण परि भेदाणो मीजो रे।
ए हरि बंधव हू कहुँ,न हुवरइ जउ जामिणि वीजी रे ॥११॥सा०॥
सर्व गाथा ८७

॥ दूहा ॥

करतां एम विचारणा, वउली घडी विच्यारि।
समवसरयउ प्रभु सभरयउ, संसय भजणहार ॥१॥
संसय तिमिर +करणइर, केवल किरण पहाणु।
भविक कमल प्रतिबोधिवा, ऊगउ अभिनव भाणु ॥२॥
चाली सइ मुखि पूछिवा, खरी आणि मन खति।
श्री जिनराज मिल्या पखइ, किम भाजइ मन भ्रंति ॥३॥
च्यारे अभिगम साचवी, वधतइ मन परिणाम।
परदक्षिण देनी करइ, इण परि प्रभु गुण ग्राम ॥४॥
सर्व गाथा ९१

### ढाल ६ जीरानी जाति

बाल्हेसर सिवादेवी केरउ नद,
दीठउ हे दीठउ सजन जलद समउ ÷ सामलियो नेमि --ध्रु०
सोभागी राजुल भरतार,
मोहन हे मोहन मूरति नितु नमउ ॥सा०॥
तुम्हे गावउ हे गावउ मन धरि प्रेम,
जेम न हे जेम न भव सायर भमउ ॥१॥सा०

---

*भाषित ×न हुवै मृषा +निकर हरण ÷मरघो

चिरजीवउ गिरधरजी नउ वीर भेटया हे भेट्यां आस सहु फली ।
अतुली बल साचउ अरिहंत,जीतउ हे जीतउ मोह महाबली ।।२ सा०
वूठउ आज अमीमय मेह,अम्ह घरि रे अम्ह घरि आज बधामणा ।
भावइ भोली नयण निहालि, भामिणि लेती भामणा ।।३।।सा०।।
जय जय जग जीवन जिनचंद, जादव हे जादव कुल सिर सेहरउ ।
मुगति रमणि उर नवसरहार जंगम हे जंगम सोहग देहरउ ।।४ सा०
बलिहारी वार हजार, अनूपम हे अनूपम नख सिख ऊपरइ ।।सा०।।
जिनवर चरण कमल लयलीण,

मोमन हे मोमन मधुकरनी परइ ।।५।।सा०।।

मन धरि भाव भगति भरपूर, गावइ हे गावइ तुझ गुण अपछरा ।
आपइ वलि विचि विचि आसीस,

जीवउ हे जीवउ कोडि संवच्छरा ।।६।।सा०।।

लागउ चोल तणी परि रग,बीजउ हे बीजउ चित न को चड़इ ।।सा.
करि सुरतरु संगति परिहार,

कावलि हे कावलि वांवलि सूं अडइ ।७।।सा०।।

कावलि सूं खलि खावा जाइ, मेवा हे मेवा मन गमता लही ।।सा०।।
मद वहतउ गइ घर बार, वेसर हे वेसर मन मानइ नहीं ।।८सा०
सिर धरि परम पुरुषनी आण,

जमची हेजमची आण न को वहइ ।।सा०।

करगत कोड़ि कनकची छोडि,

काचउ हे काचउ लोह न को ग्रहइ ।६।।सा०।।

हे लवीयउ हीयडउ हो रेह.तेतउ हे तेतउ फिटक नरइ करइ ।।सा०।
काच सकल किम आवइ दाइ,

जोतां हे जोतां पाच पटंतरइ ।।१०।।सा०।।

देव कुमर धरती धसकाइ *सूकड़ हे सूकड ×हेक चढ़ावीयइ ।।सा.

---

*स्पुंकड़ ×रौंक

सफलकरण मानव अवतार,
इणपरि हे इण परि भावन भावीयइ ॥११॥सा०॥
सर्व गाथा १०२

॥ दूहा ॥

आगलि भावी साचवी, त्रिकरण सुद्ध प्रणाम ।
बे कर जोडि पूछिवा, जगगुरु भासइ ताम ॥१॥
आव्या हुँता विहरवा, मुनिवर निरखी तेह ।
रोम रोम तुनु उलसइ, जाग्यउ नवल सनेह ॥२॥
नारि अवर सावति थई, जिण जाया सुत एह ।
साधु वचन पिण (न) हुवइ मृषा, मन मइ* थयउ सदेह ॥३॥
ते तूं आवी पूछिवा, एस× अत्थ समरत्थ ।
हंता भासइ देवकी, कहउ हिरइ परमत्थ ॥४॥
बइठो बारह परखदा, भासइ इम भगवंत ।
अलवि अलीक न उचरइ, अतिसय वत महंत ॥५॥
सर्व गाथा १०७

ढाल-७ यतिनी

भद्दिलपुर रिद्धि समृद्ध । तिहां नाग घरणि सुप्रसिद्ध ।
कोसीसां कलस विचालइ । सुलसा निरदूषण पालइ ॥१॥
भावी सुभ असुभ विचारइ । जे सामुद्रकग्रणु सारइ ।
देखो तनु लक्षण वोथी । वहतइ इम वात कही थी ॥२॥
संतान सही सूं थासी । पिण माछि+ छता मरि जासी ।
भावी सूं जोर न चालइ । ते बोल अहोनिसि सालइ ॥३॥
संतान पखइ संसारी । दिलगीर हुवइ नर नारी ।

---

*इम ×एम, ए सहु +माहि

सुलसा सिर धूणी सोचइ । इण परि मन सूं आलोचइ ॥४॥
बालक घरि माहि* न दीसइ । रिद्धि देखी न हयउ' हीसइ ।
नाची पग साम्हउ जोवइ । जिम मोर नयण भरि रोवइ ॥५॥
पाछलि जउ एक नमूनउ । न हुवइ तउ सहु जग सूनउ ।
जायइ पाखइ कुण राखइ । मुलकति सहुकोनी साखइ ॥६॥
आगलि अंगज जउ हालइ । सहु दुख विसारी घालइ ।
वसती जिण जायइ थायइ । जामिणो वसती कहइ न्यायइ ॥७॥

॥ दूहा ॥

जिनवर वचन विचारता, निश्चय नइ व्यवहार ।
ओछउ (नइ) अधिकउ नही,नय बिहुँ माहि लिगार ॥८॥
भावी मेटि न को सकइ, ए निश्चय नय सार ।
जे उद्यम मूंकइ नही, ते राखइ व्यवहार ॥९॥
एकण भावी ऊपरइ, बइसी न रहइ कोइ ।
पहिली उद्यम आदरइ, तउ भावी फल होइ ॥१॥
पडग्रउ अछइ निश्चय घणो, वाते विसवावीस ।
तउ पिण उद्यम पड़िवजइ, आपण पइ जगदीस ॥११॥

॥ यति ॥

सोहमपति सेबक धूनउ । पायक दल माहि न मूनउ ।
गुण ग्राहक परउपगारी । सुरवर सुध समकित धारी ॥१२॥
मद मच्छर माया छाड़ी । पहिरी जल भीनी साड़ी ।
मन सुध तसु सेवा सारइ । सुलसा निज कुल अणुसारइ ॥१३॥
ऊभा सहु कारिज मूंकइ । ते वेला किमही न चूकइ ।
दिन प्रति नव नेवज चाढ़इ । तउ घर बाहिर पग काढइ ॥१४॥
सेवा करतां अटकाणी । मुंह माहि न घालइ पाणी ।
साची सेवा विधि जाणी । कारिज सिद्धनी सहिनांणी ॥१५॥

---

*माम्हि

तिल भरि नवि माहे वांक, दूषण न लगावइ टांक ।
इण परि सुर संतोषाणउ, पिण एकण बोल लजाणउ ॥१६॥
फलती दीसइ नही आसा। झूठी किम थाइ दिलासा।
केड़इ लागो ते केडउ। किम मूकइ एह कुहेडउ ॥१७॥
छूटई कुण भावी आगइ। उद्यम पिण करिवउ लागइ।
सोहम सुरलोक निवासी । आपणपइ आप विमासी ॥१८॥

सर्व गाथा १२५

॥ दूहा ॥

तूं नइ सुलसा करमगति, सुर सानिधि आधान।
अवसर एकणि जिम धरउ, तिम प्रसवउ संतान ॥१॥
करइ कंस जे कल विकल, फलइ न तिल भर तेह।
मारथा ते न मरइ किमइ चरम देहधर जेह ॥२॥
जउ साहिब राखण करइ, तउ मारी न सकइ कोइ।
वाल न वांकउ करि सकइ, जउ जग वयरी होइ ॥३॥
नल कूबर सम सलहीयइ, रूपवंत धरि लीह।
जात मात्र सुर संग्रही, अनुक्रमो छए अबीह ॥४॥
अंगज तुझ आगलि धरी, पूरइ जासु उमेद।
तास धरइ तुझ आगलइ, पिण को न लहइ भेद ॥५॥

सर्व गाथा १३०

**ढाल ८ बेवे मुनिवर विहरण पांगुरया रे—एहनी**

संतोषी इण परि सुलसा भणी रे। निज थानक सुरवर ते जाय रे।
करम निकाचित को टालइ नही रे।
तउ पिण सीझइ दाय उपाय रे ॥१॥स०॥
चरम समइ छतइ पूरइ हुयइ रे। सुलसा जनमइ मूया बाल रे।

सुर निज वाणी साच करण भणी रे।
तिण ठाँमइ आवइ ततकाल रे ।।२।।सा०
इम अनुक्रम बालक निरजीवते रे। आँणी आँणी मूकइ पास रे।
पिण तूं भेद न जाणइ देवकी रे।
देव सगति तिहाँ किसी विमासि रे ।।३।।स०
तुझ अंगज रस मित हरि सारिखा रे।
सुलसा पासइ मूकइ तेह रे।
निज सुर* तरूनी परि पालइ सदा रे।
तिल भरि ओछउ नहीं सनेह ।।४।।सं०
तिण ए सवि × अंगज सुलसा तणा रे। नंदन तुझ जाणे निरधार रे।
नयण जणावइ नेह तिणइ घणउ रे।
अधिकउ मोह करम अधिकार रे ।।५।।सं०
श्री नेमीसर बचन इसा सुणी रे।
उलसइ (तिण) निज अंग अपार रे ।
पान्हा हुंती प्रगटइ पयतणी रे।
तिण अवसरि बत्रीसे धार रे ।।६।।सं०
लोचन विकसइ कंचुक उकसइ रे। बलियाँ माँहि न मावइ बाँह रे।
हरखइ रोमंचित काया थई रे।
दूरि टल्यउ सगलउ दुख दाह रे।।७।।सं०
जाँण्याँ पाम्इ पिणजउ अति घणउ रे।
तिण अवसरि तसु हुंतउ नेह रे।
अवरिज स्यउ थायइ जाण्या पछइ + रे।
अधिकउ दूर टल्यउ संदेह रे ।।८।।स०
अनमिष लोचन ते सुत ÷ देखिनइ रे।
जाण्यउ सफल जनम मुझ आज रे।

---

*सुतनी ×नवि अंगज +पाखइ ÷नमु

सांमल वरण छए हरि सारिखा रे।
घन-घन सारथा आतम काज रे ॥९॥सं०
श्रीनेमीसर चरण कमल नमी रे। भाव सहित बलि वदी तेह रे।
मन न वलइ पाछउ वलतां छता* रे।
सुत दीठां तिण अधिक सनेह रे ॥१०॥सं०
चित चिंतइ मारग थिरती थकी रे।
प्रभु जपी अचरिजनी वात रे।
लोकालोक प्रकासन नउ कहयउ रे।
नवि विघटइ किण (विधि) तिल मातरे ॥११॥सं०
हरि आवइ भावइ मन भावना रे गुण गावई प्रभुना संभारि रे।
मन अंदोह घणउ सुत विरहनउ रे।
अंतर लागइ जिम असि धारि रे ॥१२॥सं०

सर्व गाथा १४२

॥ दूहा ॥

इतला दिन जाण्या नही, तिण न हुतउ मुझ राग।
प्रेम जलधि दुत्तर हि वइ अधिकउ एह अथाग ॥१॥
हिव ए दुख किण नइ कहुँ, लोक माहि मुझ लाज।
कहतां वात वणइ नही, मुष्टि भली वछराज ॥२॥
राखी न सकी आंपणीx अगज सरिखी आथ।
मइ हिव माखो नी परइ, घस्यां सू होवइ हाथ ॥३॥

सर्व गाथा १४५

---

*बकां xपापिणी

ढाल-६ आप सवारथ जग सहु रे—एहनी

चिंतवइ गल हत्थइ दियइ, घूणिति विचि विचि सीस।
अवतार ए पिण माहरउ, मत पाडइ हो लेखइ 'जगदोस ॥१॥
ते जामणि जग सलहियइ रे, निज अंगज पोतानइ हाथि।
उछेरइ छाती कनइ रे, राखइ जिम हो दुरबल नी आथि ॥२॥ते•
खेलनउ खिणमइ बिलकतउ*, मुरकतउ× मुक्ख लडेह।
जामणि अमीणे लोयणे, जोति होवइ हो रोमांचित देह ॥३॥ते•
हुलरावती द्यइ हालरा, नव नवइ सरलइ साद।
माथइ फिरी तेहनइ दलुं, जे देखी हो आणइ विषवाद। ४॥ते•
रोतउ किमइ न रहइ तिसइ, कारिमी सी करि रीस।
हेल दे उलसतइ हियइ, घवरावइ हो जे धाइ बत्रीस ॥५॥ते०
दक्षिण पयोधर धावतउ, वामइ ठवइ निज पाणि।
अति हेजे खीर झरइ तरइ, अंगरखी हो बाधइ कस ताणि ॥६॥
सीखवउ+ बचने बोलवउ, लेले सहुना नाम।
दिन राति लाड करावति,हटकइ पिण हा हटकण री ठाम ॥७॥ते
मामणे बचने बोलतउ, हठ मांडि साडी साहि।
हर काइ मागइ सूखडी, ते आपइ हो आणी घर मांहि ।।८।। ते०
पदमिनी ने पासइ सूयइ, भीनी दीसइ निज पूठि।
कोमल करि कमले करी, न्हवरावइ होजे प्रहसमऊठि ॥९॥ते•
न रहइ नजरि लागि पखइ, केहनी मांहे छेह।
कांठलि काली राखड़ि, जे बाँधइ हो निगरण सु सनेह ॥१०॥ते•
उछांछलउ ऊछ्रांमणउ, वय देह करमी एह।
नाकनी टीसी ऊपरइ, काजलनो हो टीबी द्यइ जेह ॥११॥ते०

[सर्व गाथा १५६]

---

*खिलकतउ ×बूलकतउ +सीखवइ बाभिण

॥ दूहा ॥

बइठी आंगण दूमणी, नयणे नीर झरंति ।
दुखणी देखी देवकी, हरि पूछइ एकंति ॥१॥
मइ माहरउ जाण्यउ न छइ, आज लगइ को चूक ।
लोही रेडुं हूं जिहां, पड़इ तुहारउ थूक ॥२॥
जउ जाण्यउ हुवइ माहरउ, किणही वातइ वांक ।
सीख समापउ दाखवी, सी छोरू नी सॉक ॥३॥
अलवि वचन लोपइ जिको, ते हूं काढूं साहि ।
तुम्ह उपरांति* कहउस्युं अछइ, इण खोटइ जग माहि ॥४॥
दरसण करिवा आवतउ, हे× हे जइयइ इयइ तुझ तीर ।
हियड़उ हेजइ विह सतउ,+ सो÷ हिवणइ दिलगीर ॥५॥
हू इण भव इण देह घर, काइ‡ न लोपूं कार ।
तुम्हची आण वहूं सदा, ए मुझ अंगीकार ॥६॥
[ सर्व गाथा १६२ ]

**ढाल-१० धाल्हेसर मुझ वीनती गोड़ीचा एहनी**

हूं तुझ आगलि सी कहुं कान्हइया,
वीतग दुखनी वात रे कान्हइया लाल ;
दुखणी तउ काका अछइ कान्हईया,
ते ऊमति हूं भाति रे कान्हईया लाल ॥१॥ हुँ०
कीधउ कोइ न संभरइ कान्हईया,
इण भवि करम कठोर रे कान्हईया लाल ।
जनमतर कीधा हुस्यइ कान्हइया,
मइ के पाप अघोर रे कान्हइया लाल ॥२॥ हुँ०
आज लगइ हूं जाणती कान्हइया,
पूरव करम विसेष रे कान्हइया लाल ;

*ऊपर होउस्युं ×हूं +हीसतउ ÷स्यइ ‡कोइ

प्रासुक जाया मइ छए कान्हइया,
इहां *कण मीन न मेख रे कान्हइया लाल ॥३॥हुँ०
ते वाघ्या सुलसा घरइ कान्हइया,
परतखि दीठा आज रे कान्हइया लाल।
वात सहु मांडी कही कान्हइया,
आंपण पइ जिनराज रे कान्हइया लाल ॥४॥हुँ०
सोल वरस छांनउ वध्यउ कान्हइया,
तूं पिण यमुना तीर रे कान्हइया लाल।
नद यसोदा नइ घरि कान्हइया,
कहवाणउ आहीर रे कान्हइया ॥५॥हुँ०
वाल्हेसर वारीजी ती कान्हइया,
तउ पिण माहे छेह रे कान्हइया लाल।
परब दिवस हूं आवति कान्हइया,
मुख जोवा सुसनेह रे कान्हइया लाल ॥६॥हुँ०
जाया मइ तुझ सारिखा कान्हइया,
एकणि नालइ सात रे कान्हइया लाल।
एको ˣघवराव्यउ नही कान्हइया,
गोदी ले खिण मात रे कान्हइया लाल ॥६॥हुँ०
हाथे उछेरयउ नही कान्हइया,
एको पुत्र रतन्न रे कान्हइया ला[illegible]
नारि जाति माहे जोवतां कान्हइया,
इवडो काइ अधन्न रे कान्हइया लाल ॥८॥हुँ०
बालापण रे बोलड़े कान्हइया,
पूरी कउनी आसरे कान्हइया लाल।
आसा लूधी हूं जिक्युं कान्हइया,

*इण किण

भार मूई दसमास रे कान्हइया लाल ॥६॥हुँ॥०
रोतउ मइ राख्यउ नही कान्हइया,
पालणडइ पोढाडि रे कान्हइयालाल।
हालरीयइ देवा तणी कान्हइया,
मो मन रहिय रूहाडि रे कान्हइया लाल ॥१०॥हुँ०
देखी ग्रामण दूंमणा कान्हइया,
हियडा ग्रागलि चाँपिरे कान्हइया लाल।
काल्हे वाल्हे नान्हडउ कान्हइया,
मइ न मनायउ ग्रांप रे कान्हइया लाल ॥११॥हुँ०
ग्राडउ माडि न दूहवी कान्हइया,
मुझ नइ माहरइ पेट रे कान्हइया लाल।
ऊगमी हासइ मिसइ कान्हइया,
मइ कईयइ न चपेट रे कान्हइया लाल ॥१२॥हुँ०
ग्रागण न करावी थडी कान्हइया,
ग्रांगुलियइ बलगाइ रे कान्हइया लाल।
पंग मांडया लाहया नही कान्हइया,
ते जामिणं न कहाइ रे कान्हइया लाल ॥१३॥हुँ०
साही साही सांभली कान्हइया,
बेऊं बांह पसारि रे कान्हइयालाल।
ग्रायउ दोडि मिल्यउ नही कान्हइया,
ते दोभागिणि नारि रे कान्हइया लाल ॥१४॥हुँ०
हाऊ बइठउ बारणइ* कान्हइया,
ग्रागलि मा मत जाइ रे कान्हइया लाल।
न कह्यउ कोनइ × कीकीयउ,
हूंस रही मन माँहि रे कान्हइया लाल ॥१५॥हुँ०
रोवाडयउ किणही किमइ कान्हइया,
मइ सतोषण काज रे कान्हइया लाल।

*चिह्न ×को नहीं किये, के नहीं की कियो

न कहयउ एह नउ सासरउ कान्हइया,
करिसौं तावड़ आज रे कान्हइया लाल ॥१६॥हुँ०
मोटी जगि मइ मोहनी कान्हइया,
उदय थई मुझ आज रे कान्हइया लाल ।
बीजउ कोइ नवि लखइ कान्हइया,
जाणइ ते जिनराज रे कान्हइया लाल ॥१७॥हुँ०
[ सर्व गाथा १८० ]

॥ दूहा ॥

एम मुणि मन चिंतवइ, हरि इवडो अदोह ।
मातानउ मोटु नही, तउ न रहइ मुझ सोह ॥१॥
स्यउ मुझ नउ* समरथ पणउ, नवि फेडुं दुख एह ।
माता तणउ जउ× माहरइ, मुखि जन देस्यइ खेह ॥२॥
करि न दिखावुं जा लगइ, ताँ न मिटइ ए सोक ।
भूख न जायइ भामणइ, जाणइ सिगला लोक ॥३॥

[ सर्व गाथा १८३ ]

ढाल-११ कोइलउ परवत धूंधलउलो रे+— एहनी
माता ना ÷ आस्वामना रे लाल, आपी चितवइ एम रे वाल्हेसर ।
मात मनोरथ विण फल्याँ रे लाल,
सोभ रहइ मुझ केमरे वाल्हेसर ॥१॥
विनयवंत नर सलहियइ रे लाल, साचा ते ससारि रे वा० ।
मात पिता गुरु ऊपरइ रे लाल,
भगति धरइ निरधारि रे वा०॥२॥वि०॥
सकज (इ) पूत मावीतना रे लाल, पूरइ वंछित कोड़ि रे वा० ।

*म्हारो ×तो +कहिनें किहां थी आवियो रे लाल—एहनी ÷नइ

सगपण बीजा पिण अछइ रे लाल,
मात तणी कुण होडि रे वा०॥३॥वि०॥
दुखनो वेला‡ संभरइ रे लाल, माता अधिकी तेण रे वा० ।
मात तणा गुण तेहवा रे लाल,
खीर जलधि जिम फेण रे वा०॥४॥वि०॥
मुझ लघु बंधव जाँ लगइ रे लाल, न हुवइ ताँ लगि मात रे वा० ।
काल एह किम नीगमइ रे लाल,
दुख सहती दिन राति रे वा०॥५॥वि०॥
चितातुर मन चितवइ रे लाल, हरि हर करि मन माहि रे वा० ।
सुर सा निधि कारी छताँ रे लाल,
मुझ नइ सी परवाह रे वा०॥६॥वि०॥
पोसहसाला आविनइ रे लाल, निश्चल मन धरि आपरे वा ०।
अट्ठम भत्त नियम धरइ रे लाल, करतउ सुरनउ जाप रे वा॥७वि०
दूर दोहिलउ साधतांरे लाला, कारिज जे छइ क्रूर रे वा० ।
तप करताँ सुर सानिधइ रे लाल,पूजइ वंछित पूर रे ॥८॥वि०॥
सुर परतिखि हुई इम कहइ रे लाल, लघु बंधवनी आसरे वा० ।
तुझ रुफनी थास्यइ सही रे लाल,
आणे मुझ वेसास रे वा०॥९॥वि०॥
हरिणे गमेषी इम कहइ रे लाल,सांभलि वाल मुझ बात रे वा० ।
देवलोक थी चवि करी रे लाल,
कोइक सुर विख्यात रे वा०॥१०॥वि०॥
तुझ जननी कुखि अवतरी रे लाल, सकल मनोरथ पूरि रे वा० ।
तरुण पणइ व्रत आदरी रे लाल,
तरिस्यइ नेमि हजूरि रे वा०॥११॥वि०॥
देव तणी वाणी सुणी रे लाल, हरि मन हरखित थाय रे वा० ।

---

‡ वरिया ।

वचन कही सुर एहवउ रे लाल,
निज सुर भवरगइ जाय रे वां०॥१२॥वि०॥
देव वचन सुरिग देवकी रे लाल, हरि मुख थकी सहेज रे वा० ।
सीह सुपन एकरिग निसइ रे लाल,देखइ पउढी सेज रे वा०॥१३वि०
हरखी मन संतोष सू रे लाल, स्वपन तरगइ प्रनुसार रे वा० ।
पुत्र रतन मुझ थाइस्यइ रे लाल,
देव कुमर अनुहार रे वा०॥१४॥वि०॥
सुखइ गरभ वहती थकी रे लाल धरती चित्त उमेद रे वा० ।
पूराईजइ डोहला रे लाल,
तिरग नवि मन को खेद रे वा०॥१५॥वि०॥
सर्व गोथो १६८

॥ दूहा ॥

नवे मासे पूरे थए, कोमल कमल समान ।
पुत्र रतन तिरिग जनमियउ, गुरग गरग करि असमान ॥१॥
जासू बंधक लाख रस, पारिजात नव जेम ।
तरुरग दिवाकर सारिखउ, ओपम* वरगइ एम ॥२॥
नयन कत गज तालूआ, सरिखउ कोमल गात ।
रूपइ तृपति न पामीयइ, जोवंता दिन राति ॥३॥
[सर्व गाथा २०१]

ढाल१२ वालु रे सवायुं वयर हू माहरउ रे-"एहनी
लगन महूरत वेला सुंदरू रे उच्च ग्रह अधिकार ।
वारवली तिथि योग विचारतां रे, उत्तम रयरिग उदार ॥१॥
शुभ लक्षरग सुत जनमइ देवकी रे, पामइ हरख पडूर ॥२॥शु०॥
सुप्रसन सगला दिसी तिरग समइ रे, वायु वायइ अनुकूल ।
कोइन हुवइ इरग परि सूचवइ रे, पुण्य उदय प्रतिकूल ॥३शु॥०॥

*उपसम

घरि घरि उछव रंग वधामणा रे, बाँध्या तोरण बारि ।
राजभुवन मंगलघट मांडिया रे,अधिक अधिक अधिकार ॥४॥गु०॥
केसर कुंकम मृग मद छाँटणा रे, करता यादव लोक ।
माहो माहि वधाई आपता रे, वंछित सगला थोक ॥५॥गु०॥
चार चरड जे हरि रोक्या हुता रे, अपराधी अति घोर ।
कारागार थकी ते काढिया रे धन आपी हरि रोर ॥६॥गु०॥
किण पासइ को रण मागइ नही रे, नवि को राखइ तेम ।
हाम पूरवें हरि सिगला भणी रे, तुरत देवतरू जेम ॥७॥गु०॥
गावइ गीत गुणीजन अति घणा रे, नाटक ना बहु भेद ।
करता केलि कतूहल बहु परइ रे, धरता चित उमेद ॥८॥गु०॥
हरख भरइ महुजन विमणा थका रे, लोक कहइ ते न्याय ।
पहिलो* लाँबी नगरि द्वारिका रे,पिण नर-नारि न माय ॥९गु०॥
कवि जन मन कल्पित कलपना रे, मत को जाणउ एम ।
पाधरसी पिण राजा आचरइ रे, यथा सगति विधि जेम ॥१०गु०
माता सुख पामइ सुत दरसणइ रे, अचरिज स्यउ इण बात ।
नगर लोक नी सांभलतां सुखइ× रे भेदी साते धात ॥११॥गु०॥
दस दिन माहे जे करणी हुवइ रे ते ते सगली कीध ।
दय दय कार थयउ याचक भणी रे,मन वंछित धन दीध ॥१२गु०
दिवस बारमइ सुभपकवान सू रे, पोषा परजन न्यात ।
मात पिता कर जोडी इम कहइ रे आगलि मन नी वात ॥१३गु०
हाथी नउ जिम होवइ तालूअउ रे तिम ए सुत सुकमाल ।
नाम एह तिण तुम्ह साखइ करां रे, गहअउ गज सुकमाल ॥१४गु०
[सर्व गाथा २१५]

॥ दूहा ॥

वाधइ कनकाचल विषइ, जिम सुरतरू अंकूर ।
धवल बीज नउ चाँदलउ, दिन दिन तेज पडूर ॥१॥

*पिहुली ×थकी

तिण* गुण लक्षण सोहतउ, जिम जिम वाधइ तेह।
मात पिता परिजन तणउ, दिन दिन अधिक सनेह ॥२॥
गुण अवगुण ससार मइ, सहु माँहि संजोड़ि।
पिण तिण माँहि विचारता, नवि का दीसइ खोड़ि ॥३॥
सोम पणइ ससि सारिखउ, तेज करी जिम सूर।
दस दिसि माँहे महमहइ, सुजस जेम कपूर ॥४॥
[सर्व गाथा २१६]

## ढाल १३ चूनडीनी

अति तेजइ सूरिजनी परइ, सोहइ जसु भाल विसाल हो।
सारीखउ राति दिवस सदा, करतउ जे झाक झमाल हो ॥१॥
सोभागी सुंदर कुमरजी, देखी हरखइ नर नारि हो।
जसु रूप सरूप विचारतां, नल कूबर नइ अणुहार हो ॥२॥सो०॥
पूरित मोहग मकरंद सूं, जसु नयण कमल सम जाणि हो।
भु हारे दोऊं भमर से, कविजन नित करत वखाण हो ॥३॥सो०॥
जसु दीपसिखा सम नासिका, सरली सोहइ गुण गेह हो।
अचरिज अति तेजइ दीपती, वधारइ तरतर नेह हो ॥४॥सो०॥
मुख पूनिमचंद तणी परइ, दसनावलि किरण समान हो।
अकलंकित ग्रह दूषित नहीं, दिन रयण वधइ सुभ वान हो ॥५सो०
रसना अमृत रस वेलडी, सुभ वयण अमृत रस पूर हो।
जिण हुँनी प्रगट होवइ सदा, सुणतां दुख जावइ दूरि हो ॥६सो०
कांने कुंडल सोहइ सदा, जाणे ऊगा दोई सूर हो।
आनन सुर गिरि पाखती*, दीपइ अति तेज पडूर हो ॥७॥सो०॥
दोइ कांधा सुर घट सारिखा, गल सोहइ संख समान हो।
वृक्षस्थल थाल तणी परइ, नाभी पंकज उपमान हो ॥८॥सो०॥

---

*तिम ×दुइपांखणी

भुज लांबी यूप तणी परइ, साथल कदली सम सोह हो।
जंघा गज सूंडि तणी परइ, जोवता वाधइ मोह हो ॥९॥सो०॥
जसु चरण कमल कच्छप समा, नख सोहइ जिण विध सीप हो।
उद्योत करइ दिन राति जे, दीपइ जाणे बहु दीप हो ॥१०॥सो०॥
नख सिख इम रूप विचारतां, कहतां न जुड़इ उपमान हो।
तउ पिण कविजन मन कलपना,
आणइ निज मति अनुमान हो ॥११॥सो०॥
[ सर्व गाथा २३० ]

॥ दूहा ॥

चउदह विद्या चउंपसूं, सीखइ ओझा पासि।
सगली आई सामठी, थोड़इ ही अभ्यास ॥१॥
कला बहुत्तरि पुरुषनी, जाणइ चतुर सुजाण।
तउ पिण तिल भर मद नही, ए उत्तम अहिनाण ॥२॥
विद्या गुरु हुँती वध्यउ, विनय तणइ परसाद।
सुर गुरु पिण जीपइ नही, करतउ जिण सूं वाद ॥३॥
भाव भेद जाणइ भला, अलंकार उपमान।
वडा कवीसर वरणवइ, जिणनइ सूकी मान ॥४॥
[सर्व गाथा २३४]

ढाल—१४ मुझनइ हो दरसण न्यायन नूं दीयइ* ए जाति

सोमिल माहण तिण नगरी वसइ हो, रिद्धिमंत मतिमंत।
च्यार वेद जाणइ कुल थिति ×रहइ हो,
सुचि थापइ एकंत ॥१॥सो०॥
सोमसिरी जसु नामइ सुंदरी सोभागिणि सुकमाल।
जाणइ रमणी नी चउसठि कला, नवि को मन जंजाल ॥२॥सो०॥

*कागलिउ करतार भणि सी परि लिखू —एहनी ×तिथि घरे हो

तेह तणी सोमा नामइ सुता हो, रूपइ साची रंभ।
अनमिष नयण नही त्रिण लोक मइ हो,
अधिकउ करइ अचंभ ।।३।।सो०।।
जिण मुख कतइ जीतउ चंद्रमा हो, विलखउ थयउ विच्छाय।
अधिकउ ओछउ एक रूखउ नही हो, माहि कलक वहाय ।।४।।सो०
हरिणी जीती नयण गुणे करी हो, ते सेवइ वनवास।
आंपणनी अधिकाइ वांछती हो, सहइ भूख सी ष्यास ।।५।।सो०।।
वाणी आगइ साकर हारि नइ हो, तृण संग्रहइ सदीव।
कंठ सोभ करि सख पराभव्यउ हो, अह निसि पाडइ रीव ।।६।।सो०
अंग उपग तणी सोभा घणी हो, कहतां नावइ पार।
सुभ निरमाण करम स्यु नवि करइ हो,
पुण्य तणइ विसतार ।।७।।सो०।।
ते कन्या किणहीक अवसर करइ हो, मज्जन सुचि जल सग।
पहिरि वस्त्र अमोलिक अतिभला हो, ओपइ जे निज अंग ।।८।।सो०
तिलक हार कुंडल वलि बहिरखा हो, कंकण बाजूबंध।
अति सोहइ अंगुलियइ मुद्रिका हो सोवन मणि सबंध ।।९।।सो०।।
कटि तट लटकंती कटि मेखला हो, चरणे नेउर नाद।
अंग अनइ आभरण विचरतां हो, सोभा वादोवाद ।।१०।।सो०।।
इम सिणगार करी दासी तणइ हो, परवारइ मन मेलि।
राज मागि आवइ गति माल्हती हो, करिवा उतम केलि ।।११।।सो०।।
विच मइ मूको सोवन नउ दड़उ हो, रमति निज मन रंगि।
जन जाणई रूपइ रति ए सही हो, सुकृतइ लहीयइ सग ।।१२।।सो०
सर्व गाथा २४६

।। दूहा ।।

इण बिधि कन्या क्रीड़ती, जे जे देखइ तेह।
जाणइ रूप नवउ नवउ, खिण खिण वधतइ नेह ।।१।।
हिव सुणिज्यो मन भाव सूं, हरि बंधव संबंध।

मति करिज्यो परमाद नी, वात तराउ प्रतिबंध ॥२॥
[सर्व गाथा २४६]

**ढाल-१४ मृगावती राजा मनि मानी* — एहनी**
**राग— केदारा गोड़ी**

नीन वरण× साधतउ भली परि,सुखम + गमावइ कालो रे ।
मात पिता भाई नैं वल्लभ, गुणवंत गजमुकमालो रे ।१।।
इण अवसरि श्री नेमी जिणेसर, समवसरया सुखकारो रे ।
चउनाणी पगनाणी श्रुतधर, साथइ बहु परिवारो रे ।।२।।इ०
चउविह सुर मिलि समवसरण थिति विरचइ विविह प्रकारो रे।
रजत हेम वर रयण तणा वलि मंडे तीन प्रकार रे ।।३।।इ०।।
जानु प्रमाण कुसुम ऊंधइ÷ मुख, वरषइ सुर धरि भावो रे ।
ऊपरि फिरताँ घिरताँ नवि दुख, पामइ जिनवर परभावो रे ।।४इ०
गगा नीर तणी परि निरमल, चामर वीजइ देवो रे ।
तीन छत्र सिर ऊपरि सोहइ, सुरवर सारइ सेवो रे ।।५।।इ०।।
भामलड प्रभु पूठइ सोहइ, वूठइ घन जिम सूरो रे।
प्रभुनी कति ठवइ तिण माहे, अधिकउ तेज पडूरो रे ।।६।।इ०।।
हेम तणउ सिहासन सोहइ, पादपीठ संजोडी रे।
अण हूंतइ पिण पासइ भासइ, बइठी सुरनी कोडि रे ।।७।।इ०।।
मधुर‡ ध्वनि (सुर) दुंदुभि तिहा वाजइ,लहकइ वृक्ष असोको रे।
अतिसय अधिका देखी प्रभुना, अचरिज पामइ लोको रे ।।८।।इ०।।
वनपाल दीधी आइ वधाई, समवसरया जिनराजो रे ।
कृष्ण विचारइ निज मन माहे, सफल दीह मुझ आजो रे ।।९।।इ०
प्रीतिदान आपी तिणनइ बहु, सुभ वचने संतोषी रे।
नगर लोक नइ भेला करिवा, इसी करइ उदघोषी रे ।।१०।।इ०
पातकहर आया नेमीसर, तिण हरि वंदण जायो रे ।

*इम धन्नो धण नै परचावै -एहनी ×वरग +सुखै ÷ऊंचे ‡मधुकर

इण अवसरि को ढील म करिस्यउ,
कुण निबलउ कुण रायो रे ॥११॥इ०॥
हरि आदेस अनइ सुकृत हरि, तिण सहु हरखित थायो रे।
मेह तणइ आगम जिम मोरा, आणंद अंगि न मायो रे ॥१२इ०॥
जग उद्योत करण जगदीसर, भेटयाँ जागइ भागो रे।
सहु कोनइ मन मांहे वधतउ, अधिक धरम नउ रागो रे ॥१३॥इ०
एक एकथी चलता आगइ, भाव अधिक मन* मानो रे।
देव तणी परि नरवर सोहइ, चढिया यान विमानो रे ॥१४॥इ०॥
वरस सरस ए मास आस सुख, पूरण वासर खासो रे।
पहर घडी× पल अमृत सरिखउ,
क्षण + ए क्षण सु प्रकासो रे ॥१५॥इ०॥
इम विचार करता मन माहे, लाखे गाने लोको रे।
मारग माहे याचक जन नइ, देता वंछित थोको रे ॥१६॥इ०॥
कृष्ण नरेसर वदन चालइ, चउविह सेना साथो रे।
मेघाडंवर छत्र विराजइ, चामर युगल सनाथो रे ॥१७॥इ०॥
हरि नगरी माहे निकलता, सोमा रूप निहालि रे।
चितव्यउ इण सारिखी कन्या, अवर न इण संसारी रे ॥१८॥इ०॥
रूप अनइ जोवन लावन गुण, तीने अचरिज हेतो रे।
जउ सारीखउ वर न मिलइ तउ, विधि नउ खोटउ वेतो रे ॥१९इ०
[ सर्व गाथा २६७ ]

॥ दूहा ॥

कोटंबिक पुरुषां भणी, तेडावी हरि एम।
भाखइ देवानुप्रिया, वचन सुणउ धरि प्रेम ॥१॥
जावउ सोमिल नइ घरे, कन्या मांगी एह।
मुझ अंतेउर मइ ठवउ, तुरत आपिसी तेह ॥२॥
बंधव गजसुकमाल नइ, रमणी जीव समान।

---

*नवि ×दुख जहर +लक्षण क्षण, क्षण ए पिण

वास्यइ ए तिरग मुझ भरगी, हरख एह असमान ॥३॥
सेवक मुख हुंती सुरगी, सोमित्र ए हरि आंरग।
हाथ जोडि मन कोड सू तुरत करइ परमारग ॥४॥
कन्या अंतेउर ठवी, सामी तुझ आदेस।
सेवक बोलइ सामिनी, आरग सदा जिम सेस ॥५॥
सहस्रावन आविनइ, साचवि अभिगम पंच।
हरि सेवइ श्री नेमिनइ, छोडी मन परिपंच ॥६॥
तिहां वारह परषद मिली, सामी द्यइ उपदेस।
सुरगता वचन सुहामरगा, न हुवइ कोइ कलेस ॥७॥
[ सर्व गाथा २६४]

## ढाल—१६ राग गोडी विणजारानी

जीव जागउ रे माथा ढलीयउ* सूरि। ऊडी ऊ घ न आंखथी जी०।
वाजरग लागा तूर। कटक पडचउ चिहुँ पाखती।
जोवउ हियइ विमासि। सूतां कुरग वेला थई जी०
जुड़िस्यइ किम धन रासि। सारी मुहुसम वहि गई ॥२॥जी०॥
नारगउ नीद्र नजीक। आया अवगुरग हुइ जिरगइ जी०
वचन अछइ लोकीक। सूता री पाडा जिरगइ ॥३॥जी०॥
द्यइ जिरगवर प्रतिबोध। बात नही विगडी अजी जी०।
परिहर विषय-विरोध। मोह मिथ्यात निद्रा तजी ॥४॥जी०॥
पलगउ अरियरग साथ। काया गढ भेल्यउ न छइ जी। जी०
हाथ वसु करि आथ। न कहथउ जे कहिस्यउ पछइ ॥५॥जी०॥
धारू तउ जउ पालि। पांरगी पहिली बाधीयइ। जी०
तूटउ धनुष निहालि। स्यु थायइ सर साँधीयइ ॥६॥जी०॥
लाखीरगउ दिन जाइ। चेतन को चेतउ नही। जी०

---

*ढलियो

बगला बइठा आइ । भमरउ को न सक्यउ रही ॥७॥जी०॥
घडीय घड़ी नइ छेह । दड पडथऊ धन किम रहइ । जी०
सोरठ ऊपरि जेह । पड़तउ इम सहु नइ कहइ ॥८॥जी०
निसि दिन गमन अभ्यास । श्रास उसासइ मिस धरइ । जी०
तेहनउ स्यउ वेसास । जो जाऊं जाऊं करइ ॥९॥जी०॥
पगि पगि दोसो* जाल । किमही न रहइ नाखतउ । जी०
तरुणउ गिणइ न बाल । काल रहइ नितु झांखतउ ॥१०॥जी०॥
ते को मत नइ तंत । यत्र न को वाल ते जडी । जी०
अतुलो बल अरिहंत । टाली न सकइ ते घड़ी ॥११॥जी०॥
करबी ते करतूत । धाडिन का विचि मइ पडइ । जी०
पाडोसणि ग पूत । ताती किम बाहर चड़इ ॥१२॥जी०॥
परजन लोका लाज । दसड गला पहुचावासी । जी०
जंपइ इम जिनराज । साथि कमाई आवसी ॥१३॥जी०॥
[सर्व गाथा २८७]

॥ दूहा ॥

वाणि सुणी जिनराज नी, आवइ अवर न दाइ ।
मोहथउ मधुकर मालती, अलबि अरणि न सुहाइ ॥१॥
कलिमल पक पखालिवा, निरमल गग तरंग ।
चोल तणी परि माहरउ, लागउ अविहड़ रंग ॥२॥
लागइ भूख न का त्रिखा, ऊभा रहइ छम्मास ।
कईयइ कोनइ उभगइ, सुणतां वचन विलास ॥३॥
सांभलता सुख सपजइ, ते किणही न कहाइ ।
गूगउ गुल खाधउ कहइ, काख बजाइ बजाइ ॥४॥
सूधि वाणी न सरदही, लहि मानव अवतार ।
मा धुरति* मारी पछइ, धरती मारइ भार ॥५॥
टालइ जनम मरण जरा, वाणि सुधारस रेलि ।
मोहइ बारह परषदा, साची मोहणवेलि ॥६॥

*दशी ४धरति, धुरिषि

इम मन माँहि चितवी, पभणइ गजसुकमाल।
मात पिता पूछि करी, व्रत लेस्युं ततकाल ॥७॥
प्रभु वाँदी पाछउ वली, आवी माता पास।
वइरागी इण विधि करइ, वचन तणउ परकास ॥८॥

[ सर्व गाथा १८३ ]

**ढाल-१७ करतां सूं नउ प्रीति सहु हींसी करइ रे एहनी जाति**

हास विलास विनोद, विविध सुखमाणतउ रे। वि०
दुरगति भय लवलेस अलवि नवि आणतउ रे। अ०
खातां पीतां सरग हुस्यइ इम जाणतउ रे। हु०
पोताना मति सीख, समापी ताणतउ रे ॥१॥स०॥
वाणी श्री जिनराज, तणी काने पडी रे। त०
जाँमिणि बेवे आँखि, आज मुझ ऊघडी रे॥ आ०
फल किंपाक समान, विषय सुख त्रेवडा रे। वि०
वाल्यउ मन वइराग, सफल* मुझ ए घड़ी रे ॥२॥ए०
पाडोसणि रा पूत, मरइ छइ तउ मरउ रे। म०
मुझ हुंती ए काल, सही रहिस्यइ परउ रे॥ स०॥
यादव चउ परिवार, अछइ मुझस्यु खरउ रे। अ०
आज लगइ इण भांति, हतउ मन माहरउ रे ॥३॥हु०॥
जमची× आँण अखड, जगत ऊपरि जकइ रे। ज०
आगलि पाछलि आवि, चढ़इ सहु को धकइ रे॥ च०
इंद नरिंद जिणंद, न को छूटि सकइ रे।
सार मरइ निरधार, पड़ी आवी कंछइ रे ॥४॥प०॥
तीन लाख छत्रीस, सहस सुरपति तणी रे। स०
आतम रक्षक देव, रहइ रक्षा भणी रे। र०

---
*सफल सफल ×जमनी नाण

अनुलो बल अरिहंत, अकल त्रिभुवन धणी रे ॥ अ०
सेवइ चउसठि इंद, जास महिमा घणी रे ॥५॥जा०॥
चक्रवर्त्ति सुर सोले, सहस सेवा करइ रे । स०
जासु आण षटखंड, वहइ सिर ऊपरइ रे ॥ व०
वासुदेव बलदेव, भुजाबल आपरइ रे । भु०
युद्ध तीनसइ साठि करइ जयश्री वरइ रे ॥६॥क०॥
ते पिण पुरुष प्रधान, विधाता संहरथा रे । वि०
परभव दीन अनाथ, तणी परि संचरया रे ॥ त०
सूधा साधू महंत, सु सिद्धि वधू बरया रे ।
काल करम चंडाल, थकी ते ऊबरीय रे ॥७॥थ०॥
मिलइ न्याति दिन राति, मुखइ हाहा कहइ रे । मु०
पाणी बल पिण कान, न को थोभी रहइ रे ॥ न०
जिम मृगलउ मृगराज, उपाडी नइ वहइ रे । ऊ०
खाँडी हांडी साथि, आथि के संग्रहइ रे ॥८॥आ॥
लहि मानव अवतार, सुकृत करिस्यइ नही रे । सु०
पछतावइ परलोक, जई पडिस्यइ सही रे । प०
कही बात भगवंत, सहु मइ सरदही रे ।
लागी मीठी जेम दूध साकर दही रे ॥९॥दू०॥

[ सर्व गाथा ३०४]

॥ दूहा ॥**सोरठी**॥

काल्हा काल्ही वात, करतउ स्युं लाजइ न छइ ।
जउ साँभलिसी तात, चलता* भुंइ भारणि हुस्यइ ॥१॥
काने पड़िसी ज्यांर, हरि रूड़ा समझाविस्यइ ।
तूं तउ जाणिसि त्यार, इतली वोसी सउ हुवइ ॥२॥
ते हासउ ही बालि, जिण हासइ घर ऊपड़इ ।
ते किम कीजइ आलि, आगलि जिण अनरथ हुवइ× ॥३॥

[सर्व गाथा ३०७

* चलतां × वधे

**ढाल १८—प्रियु चले परदेस, सबै गुण ले चले*—एहनी**
**राग—केदारा गउडी**

त्रिविधि त्रिविधि करि च्यार महाव्रत पालिवा,
नान्हा मोटा दोष अहोनिसि टालिवा।
नीर मात्र पिण राति पडी किम चाखिवउ,
कंठ प्राण गत सीम नीम ए राखिवउ ॥१॥
नेमिनाथ प्रभु हाथ महाव्रत आदरी,
आणिमु मात× न वात कही+ परमादरी।
पालिसु निरा तिचार करीसु खप आकरी,
मूल थका जड काढ़िसु करम विपाकरी ॥२॥
धीर वीर बावीस परीसह धाड़िसी,
चलता सिवपुर वाट विचालइ पाडिसी।
मेल्यउ माल कमाइ, गमाइ किता वह्या,
वृंदन बाहिर काइ, आखि मसली (बेसि) रह्या ॥३॥
करिवी पडिस्यइ राडि, धाडि आवी पडयाँ,
रहिसु सेस सिरि रोप, भरिस पगनीवडया।
जिहाँ साहस तिहा सिद्धि, करिसुवलि जाबतउ,
देखे राखु जेम, तयोंधन सापोलउ ॥४॥
सयम लीधा पूत, पनउता म्युं थया,
मन सुध विसवावीस, न पालइ जउ दया।
रहिवउ गुरुकुल वास, प्रमाद न सेवणउ,
करिवउ पग-२ धीज, कठिन आछइ धणउ ॥५॥
पीहर जे षट जीव, निकाय तणा हसी,
दूहविस्यइ किम जतु,÷ मात ते माहसी।
अप्रमत्त गुरु तत्व, वचन आराधसी,

*नदी जमुना की तीर उडे दोइ पंखियाँ-एहनी ×तात +कही ÷जीव

गिणसी दुख सुख रासि, सुगति तउ साधिसी ॥६॥
मोह कटक भट निपट, छछोहा लूटिसी,
चरण करण धन माल, अमामउ लूटिसी।
कारयउ पीज्यउ सूत, कपासज थाइसी,
नरवर रा नीसाण, घडाया वाजसी ॥७॥
माल क्षमा गढ माहि, द्वारि रहसा *चढी,
बार भेद तप योध, तणी चउकी खडी।
बार भावना नालि, चढाई कागुरे,
मोह कटक बल छोड़ि, पइसिसी भागुरे ॥८॥
दूषण बइतालीस, रहित नित गोचरी,
करवी मधुकर जेम, सोच तिम लोचरी।
कनक कचोला छोडि, लीयइ वछ काछलि,
संभारइ मनि वीतग वात न पाछली ॥९॥
देसइ जे आधार, महामुनि देहनइ,
खप करता किम दोष, लागिस्यइ तेहनइ।
आजूणउ धन दोह, गिणता जीइस्यइ×,
काछलीए चिरकाल, लेई व्रत जीविस्यइ ॥१०॥
महस बहुत्तरि मात, तात वसुदेव नइ,
जोवन प्राण समान, कान्ह बलदेव नइ।
भावज सहस बत्रीस, तणउ रामेकडउ,
तुझ अनुमति देवा कुण, करिस्यइ एकडउ ॥११॥
मवि स्वारथ परिवार, मिलइ आवी भलइ,
परभव जातां जीव, न को साथे चलइ।
पलटइ+ जेहनउ रंग, पतंग तणउ जिसउ,

---

*मुजडी, वड़ी ×जाग्यइ +एटलइ

तिण* ऊपरि वेसास,×करूं जामिणि किसउ ॥१२॥
कंचण कोडि म छोडि, पुत्र गज-गामिनी,
परणावि सु दस बीस, सकोमल कामिनी।
संयमनउ ए काल, न बालक वय अछइ,
सुख भोगवि संजम्म, बेवइ लेस्याँ पछइ ॥१३॥
जाण्यउ अनरथ मूल, अरथ तिण परिहरूं,
चलती हुइ जो साथ, आथि तउ आथरूं+।
अनिवड थातां वार, न लागइ÷ जे सगा,
त्रोडइ जूनी प्रीति, पलक मइ ए पगा‡ ॥१४॥
महिला दुरगति खाणि, तिके किम आदरइ,
भव सागर तरिवा, नो जे मनसा धरइ।
काम भोग मधु बिंदु, जिसा मन माहरइ,
विद्याधर जिनराज, मिलइ तउ साहरइ ॥१५॥
पोतानइ मन माहि, मनोरथ उपजइ,
कीजइ ते जाण्यउ, हुवइ काल सरूप जइ।
जे पड़ख्या ते हाथ, बिन्हे घसता गया,
माखी नी परि पछतावइ, सोधा थया ॥१६॥
ए संसार असार, रयण सुपनउ तिसउ,
लाधउ धरम अमूलिक, चिंतामणि जिसउ।
जाणु छुं दूखण, न लाविस$ काहरी,
धावी धार बत्रीस, अछइ जउ ताहरी ॥१७॥

॥ दूहा ॥

[सर्व गाथा ३२४]

वयण सुणी इम मात नां, उत्तर आप्या जेह।
तउ पिण मन आण्या नहीं, इण नउ अधिक सनेह ॥१॥

---

* जिण × जंजाल + आदरूं ÷ लावे ‡ सगा $ लगाविसु

ताणी तोड़ीजइ नही, अरज तणउ हिव काम।
माता नइ ऊवेखतां, न रहइ जगमइ नाम* ॥२॥
व्रतनी जे मनसा धरी, ते न किणइ मेटाइ।
तउ पिण म संतोषिवा, कीजइ दाय उपाय ॥३॥
[सर्व गाथा ३२७]

**ढाल–१६ राग गउडी —मोरो मन मोह्यो इण डूंगरे-एहनी**
वीनति एक अवधारीयइ, बीनवुं बी कर जोडि रे।
पूरवइ कवण जामणि पखइ, पुत्र ना लाड़ नइ कोडि रे ॥१॥
मात मुझ अनुमति दीजियइ, जिम लीयुं सयम भार रे।
पार संसार सागर तणउ, पामिवा इण अवतार रे ॥२॥मा०॥
भव थकी मुझ मन ऊभग्यउ, खिण इक ढील न खमाइ रे।
सारथवाह सिवपुरि तणउ, नेमि जिणवर मिल्यउ आइ रे ॥३म०
रडवडथउ एकलउ जीवडउ, आज लगि काल अनंत रे।
पुण्य संयोग आवी जुडथउ, भव भय हरण भगवंत रे ॥४॥मा०॥
नरक तिरयंच भव नव नवी, जेह वेदन विकराल रे।
ते थकी आज मुझ छोडिवइ, यादव परम दयाल रे ॥५॥मा०॥
सरस मदिरा जीसी मोहनी, एहनी अति घणी छाक रे।
परवसि पडियउ जीवडउ, अति कटुक करम विपाक रे॥६॥म०॥
विषय रस विरस मई जाणिया, सरस संयम तणउ संगरे।
प्रभु वचन भव तप× मेटिवा, सीतल जेह्वउ गंग रे ॥७॥मा०॥
अरथ नइ काम पिण धरम थी, धरम विना सहु धंध रे।
आज मइ कारिमउ जाणियउ, सकल संसार संबंध रे ॥८॥मा०॥
करम मल हिव पडथउ पातलउ, प्रभु वचन ओषध जेमरे।
परम आरोग्य कारण हुस्यइ, तिण घणउ अमस्युं प्रेम रे ॥९मा०
सुगति मारग भणी जाइवा, सुद्ध ए साधु नउ वेष रे।

* जनम मे नाम × तपति

मात तिण हेतु पडखुं नही, धरम विण एक निमेष रे ॥१०॥मा०॥
कुल तणउ तिलक श्रीनेमिजी, हित भणी जे कही वात रे
तुरत भेदी सुणी माहरी, सात ए धरम सूं धात रे ॥११॥मा०॥
नेह मुझस्युं अछइ तांहरउ,मात निज चित्त विचार रे।
व्रत पलइ माहरउ भव थकी, किम हुवइ छूटकवार रे ॥१२॥मा०॥
मानवी बीनती माहरी, मा नवी जेम* नवि थाय रे।
मानवी गति वली दोहिली, मानवो गत कहिवाइ रे ॥१३॥मा०॥
खिणइ पूराइ खिण मइ गलइ, पुदगल तिण रची काय रे।
अथिर एह तिण कारणइ, धरम आवइ चित दाय रे ॥१४॥मा०॥
काम किपाक तणी परइ, भोग ए जाणि भुयग रे।
कामिनी कटकनी दामिनो, सारिखी किम करूं संग रे ॥१५॥मा०
नेमि पामउ हिव आदरूं, सुमति गुपति धरूं सार रे।
दाव पूरइ करम जीपिनइ, हेलिसूं वरूं सिवनारि रे ॥१६॥मा॰
सीख री बात कहसी खरी, सिव भलउ किनां संसार रे।
हित हुवइ ते मुझ नइ कहउ, अवर मत करउ विचार रे॥१७म०॥
सकज कुल मांहि होवइ निको, आपणउ भणी ओठभरे।
आपि नइ ऊंच पदवी दियइ, सुकृत थी सहुय सुलंभ रे ॥१८॥म०
नेमि जिणवर तणी मुझ भणी, आपणउ जाणि ए माग रे।
सुद्ध कहचउ शिवपुर तणउ, अधिक तिण एहवइ राग रे ॥१९म०
ताहरइ मात ऊपर हुथइ×, सीझस्यइ सकल मुझ काज रे।
नेमि परसादि वधारिस्युं, लोक माहे अधिक लाज रे ॥२०॥मा०॥
[सर्व गाथा ३४७]

॥ दूहा ॥

वचन तिसी परि ए कहइ, सही तजइ घरबार।
इण सम बीजउ को नहा, जीवन प्राण आधार ॥१॥

---

जे × हुवै

माता इम मनि चिंतवइ, वलि काढ़ूं मन भास।
मानउ भावइ नवि मनउ, जिम सउ तिम पंचास॥२॥
[सर्व गाथा ३४६]

ढाल-२० आज लगइ धरि अधिक जगीसे-एहनी

ताहरउ भार वह्यौ* दस मास। मन माहे छइ मोटी आस।
जउ तूं वीस करइ वेपास। अलगउ न करूं जा घटि सास॥१॥
नीठि जुडइ दुग्वल घरि आथि। तिम तूं लागउ छइ मुझ हाथि।
जे मइ दुख दीठा तुझ साथ। तेतउ जाणइ छइ जगनाथ॥२॥
ग्वमि न सकूं विरहउ खिण मात।
तउ किम बउलइ मुझ दिन राति।
संजम ल्यइ न कहुं इण जाति।
लोहडइ लोक× पटोलइ भाति॥३॥
गुणतां सबल चढइ छइ टाढि। मुझ आगलि ए वात म काढि।
एक पखउ इम करतउ गाढि। तूं चाढइ छइ विमणउ वाढि॥४॥
किम छोडिसि बाध्यउ जेवडइ। गलि बधन मुझ सूं बेवडइ।
जउ मुझ नइ जामिणि त्रेवडइ। तउ मन घालइ दुख ए वडइ॥५॥
इलकइ+ कुंभ पलक वेगलइ। जलधर जेम नयन वे गलइ।
किम नीकलइ बचन ए गलइ। मुझ नइ तजि सयम वेग लइ॥६॥
तूं तउ छइ माहरउ केलव्यउ।
पिण किणही दीसइ छइ भोलव्यउ।
आज मनोरथ तरू पालव्यउ। ऊपाडि नाखइ तिम÷ लव्यउ॥७॥
जे जामणि नइ दुख द्यइ जाणि। काचउ तासु धरम अप्रमाण।
निपट करिस जउ खांचोतांण।
प्राण हुस्यइ तउ आगेवाण॥८॥

---

*मुई ×लोह +ढलके ÷तेन ‡ताणी

दिन मांहे देखुं सउवार । तउ हूं सफल गिणुं अवतार ।
तूं मुझ जीवन प्राण आधार । तुझ पाखइ सूनउ संसार ॥९॥
सीयाला नी निसि स भरइ । तउ इवडी कचमूल न विकरइ ।
वारयउ न रहइ किणही परइ । हरि नइ कहिस रहिस तूं तरइ ॥१०
कीधी तुझ ऊपरि वारणइ । मुह बाहिर हासइ कारणइ ।
बात म काढिस घर बारणइ । सुणता चित्त न रहइ धारणइ ॥११
न कहइ फेरि वचन जउ किसा । तइं अनिबड़ जाणी तो दिसा ।
दीसउ वड वइरागी जिसा । ए वइराग कहउ किण मिसा ॥१२॥

[ सर्व गाथा ३६१ ]

॥ दूहा ॥

हरि जाण्यउ बंधव ग्रहइ, व्रत तिण आवी पास ।
ऊभउ तिण अवसर कुमर, इसी करइ अरदास ॥१॥
भाई आगलि भाखतां, हीण पणिइ सी लाज ।
हरि सुप्रसन हुयइ सहू, सीझइ वछित काज ॥२॥

[ सर्व गाथा ३६३ ]

ढाल-२१ सुणि मिरगावती—एहनी

सुणि मुझ बंधव ए अरदासा रे,
व्रतनी मनसा पूरवि* आसा रे ॥१॥सु०॥
हरखित होई मुझ अनुमति आपउ रे,
थिर मन करि नइ पूठी थापउ रे ॥२॥सु०॥
तुझ परसादइ बहु सुख मइं माण्या रे,
इतला काल न जाता जाण्या रे ॥३॥सु०॥
मनमी काधा शत्रु नमाया रे,
पांचे इंद्रिय विषय रमाया रे ॥४॥सु०॥

*पूरण

दय-दय कार दान पिण दीधा रे,
समुद्र लगइ कीरति फल लीधा रे ॥५॥सु०॥
आगलि ऊभी सेवक कोडि रे,
जय-जय कार करइ कर जोड़ि रे ॥६॥सु०॥
देव विमान सरिस आवासा रे,
हरषित हास विनोद विलासा रे ॥७॥सु०॥
मुझ्ण माहे पिण दुख नाया रे,
पूरव सुकृत तणा फल पाया रे ॥८॥सु०॥
तुझ परसाद न को तुझ सांकउ रे,
वाल करी न सकइ कोई वांकउ रे ॥९॥सु०॥
यादव नउ परिवार जु* जोरइ रे,
तीन खंड सामी तुझ× तोरइ रे ॥१०॥सु०॥
तिणि कुल माहे लहि अवतारा रे,
पूंर मनोरथ मनना सारा रे ॥११॥सु०॥
हिव जाणुं आपणपउ तारूं रे,
विषय विलास थकी मन वारूं रे ॥१२॥सु०॥
कृष्ण कहइ सांभलि लघु भाई रे,
व्रतनी मनसा किम तुझ आई रे ॥१३॥सु०॥
सोल सहस नरपति मुझ+ केड़इ रे,
थूक पडइ तिहां लोई रेडइ रे ॥१४॥सु०॥
आण जिको तुम्हची नवि मानइ रे,
तुरत करूं हू तिण नइ कानइ रे ॥१५॥सु०॥
तुझ भत्रीजा अछइ अनाड़ी रे,
किणहीक ठाम मिल्या वन वाड़ी रे ॥१६॥सु०॥

---

*मुझ जोरै रे ×तूं सबलै तोरै रे +तुझ

जउ तुझ नइ किणही संतायउ रे,
तउ ते फल लहिस्यइ घर आयउ रे ॥१७॥सु०॥
नगर लोक पिण तोसू राजी रे,
मोह घणउ पणि राखइ माजी रे ॥१८॥सु०॥
भावज मन उल्लासइ मुख जोई रे,
सहु को पौरजन हरखित होई रे ॥१९॥सु०॥
व्रत नउ काल नही छइ वीरा रे,
जोवन एह अमोलक हीरा रे ॥२०॥सु०॥
भोगवि भोग पछइ ग्रहि दिख्यारे,
श्री जिनवर नी पाले सिख्या रे ॥२१॥सु०॥
समय कियउ सगलउ ही सोहइ रे,
पावडिए मंदिर आरोहइ रे ॥२२॥सु०॥
ऊंतावलि नउ काम न आछइ रे,
पछतावइ पड़िथइ जिण पाछइ रे ॥२३॥सु०॥
मात पिता वलि मोटा भाई रे,
सबंधी पुर लोक रुखाई रे ॥२४॥सु०॥
सहु नइ पूछी कारिज कीजइ रे,
आपण नउ हठ नवि ताणीजइ रे ॥२५॥सु०॥
[सर्व गाथा ३८८]

॥ दूहा :-सोरठा ॥

हरि ना वचन सराग, ते पिण उर लागा नही।
माखउ ए वइराग, गिणियइ गजमुकमाल नउ ॥१॥
मात पिता वलि भाय, विषय तणी विध मुझ भणी।
कहइ घणुं दीपाय, तिल भर मन मानइ नही ॥२॥
अबला केरइ अंग, श्रोत अपावन नितु वहइ।
गुण तिण सु करि संग, केहउ भाई जी कहउ ॥३॥
हरिनी लोपी कार, मात पिता मन चितवइ।

इणि जाण्यउ संसार, बाजीगर बाजी जिसउ ॥४॥
एक पखउ हिव नेह, कितलइ काल लगइ करां।
तउ तउ दाख्यउ* छेह, जाणइ तिम करि नांन्हड़ा ॥५॥

[सर्व गाथा ३६३]

### ढाल-२२ श्री चंद्रप्रभु प्राहुणउ रे— एहनी

हरि जंपइ बांधव सुणउ रे, तुझ विरहउ न खमाइ रे ।
एक घडी पिण दोहिली रे, किम जमवारउ जाइ रे ॥१॥ह०॥
वार वार कहतां हिवइ रे, न रहइ काई सोभ रे ।
काने झाल्या हाथिया रे, केम रहइ थिर थोभ रे ॥२॥ह०॥
बलिहारी तुझ बांधवा रे, दुक्कर करणी कार रे ।
च्यार महाव्रत पालिवा रे, कठिन अछइ निरधार रे ॥३॥ह०॥
तइ अम्हमु मन चोरियउ रे, हूअउ जावण हार ।
जातां नइ मरता थकां रे, कहि कुण राखण हार रे ॥४॥ह०॥
लूखउ छइ मन ताहरउ रे, तिण नवि लागइ नेह रे ।
पिण× अम्ह माहे वीचिस्यइ रे, जाणइ करता तेह रे ॥५॥ह०॥
पलक मांहि अनिवड हुअउ रे, तिण तुझ नइ साबासि रे ।
जनम लगइ जाण्यउ हुतउ रे, नवि छोड़िसि अम्ह पासि रे ॥६॥ह०
मात पिता बाधव तणा रे, रह्या मनोरथ मांहि रे ।
एक सहोदर ताहरउ रे, तूं हिज साची बांह रे ॥७॥ह०॥
डोकर पण माना भणी रे, छडइ छइ तूं धीठ रे ।
सुर सानिधि मुख ताहरउ रे, दीठउ थउ तिणि नीठ रे ॥८॥ह०॥
एक वचन मुझ मानिवउ रे, इण नगरी नउ राज रे ।
एक दिवस लगि आदरी रे, पूरवि वंछित काज रे ॥९॥ह०
सांभलि अणबोल्यउ रह्यउ रे, कीधउ अंगीकार रे ।

---

*दिखाड़्यो ×जे

हरि कोटंबिक तेड़िनइ रे, भाखइ एम विचार रे ॥१०॥ह०॥
गजसुकमाल तणउ करां रे, राज तणउ अभिषेक रे।
सुचि तीरथ जल आणिबउ* रे, वलि ओषधी अनेक रे ॥११॥ह०
स्नान करावो शुचि जनइ रे, सुभ ओषधि संयोग रे।
नगर माँहि उच्छव घणा रे, मुदित हुआ सब लोग रे ॥१२॥ह०॥
सधव वधु गुण गावती रे, विधि विधि द्यइ आसीस रे।
जइतवार तू जगत मइ रे, हुइजे विसवावीस रे ॥१३॥ह०॥
हार आवी लटकउ करइ रे, सोन सहस राजान रे।
मुखि जपइ प्रभु ताहरी रे, आंण धरां असमान रे ॥१४॥ह०॥
छत्र अनइ चामर भला रे, नरवर ना सहिनाण रे।
गज सुकमाल तणइ सिरइ रे, सोहइ जगि सिर आण रे ॥१५॥ ह०
राज ग्रहयउ पिण अति घणउ रे, चारित ऊपरि चाह रे।
लोक विचारे एहने रे, आ मति आई काह रे ॥१६॥ह०
एक दिवस नगि आदरचउ रे, मुझ आदेसइ राज रे।
हिव मुझ अनुमति दीजियइ रे मरूं आतम काज रे ॥१७॥ह०॥
बंधव वचन इसा सुणी रे भजइ हरि मुणि भाइ रे।
कहतां जीभ वहइ नही रे, करि ज्युं आवइ दाइ रे ॥१८॥ह०॥
नयण थकी आसू झरइ रे, धीरिज न धरयउ जाय रे।
सुहुको मोह तणइ वसइ रे, प्राणी परवसि थाय रे ॥१९॥ह०॥
राज तणउ उच्छव कीयउ रे, व्रत उच्छव नीवार रे।
अवसर चूकिजइ नही रे, हरि इम करइ विचार रे ॥२०॥ह०॥
नगर सहु सिणगारियउ रे, घरि घरि मंगलचार रे।
गीत विनोद विलास सूं रे, नाटक ना दोंकार रे ॥२१॥ह०॥
[ सर्व गाथा ४१४ ]

॥ दूहा ॥

सिबिका आणावी कहइ, हरि सुणि× गज सुकमाल।
इणि चढि भाई ताहरी रे, फलि मनोरथ मालि ॥१॥

*पणिने ×सामलि

एह वचन सुणि सुख थयउ, ते किण ही न कहाय।
भव हुँतो जे ऊभगइ, थिर मन ते इम थाइ ॥२॥
वीटयउ यादव कोडि सूं, सोहइ अति आणंद।
ग्रह तारा गण परिवरयउ, जिम पूनिम नउ चंद ॥३॥
जिम सुरतरु फल फूल सूं, लब झंब सोभाय।
हार बंधव नउ भूषणे, तिम सोभा कहिवाय ॥४॥

[ सर्व गाथा ४१८ ]

## ढाल--२३ काम केलि रति हास-एहनी

यादव ना कुल कोडि, मन मइं कोड धरइ रे।
धन धन गज सुकमाल, यहु संसार तरइ री ॥१॥
भारी करमा जीव, धरम न चित्त धरइ री !
उत्तम केई एक, करणी एह करइ री ॥२॥
मंदिर चढि २ नारि, गावइ मधुर सरइ री।
जय जय तूं चिर नंदि, वयण इसा उचरइ री ॥३॥
अनमिष नयण निहारि, अपछर सोह* लहइ री।
पंचाली जिम तेह, निश्चल काय रहइ री ॥४॥
काई जपइ नारि, सोमाप एण× तजी री।
सोभागिणि संसारि, काई होइ अजीरी ॥५॥
वचन अनेक प्रकार, सुणतउ एणि परइ री।
नवि डोलावइ चित्त, सुभ परणाम खरइ री ॥६॥
पंच सुभट वसि आणि, सिवपुर वेग लहउ री।
मागध द्यइ आसीस, अपनी टेक रहउ री ॥७॥
तूं कुल केतु समान, दरसण पाप हरइ री।
कृष्ण प्रमुख सवि लोक, कहि कहि पाय परइ री ॥८॥

---

*सोभ ×ऐणि

च्यार महाव्रत धार*, सूधउ तू निबहइ री।
तिण तुझ वचन प्रमाण, सहु को लोक कहइ री ॥६॥
सोनइ न लागइ स्याँम, जाणइ लोक सहीरी।
तिम इणना परिणाम, न डिगइ दीख ग्रही री ॥१०॥
सहस्रांबवन माहि, सिबिका थी उतरइ री।
इम चढतइ परिणाम, जेह हुवइ× सुतरइ री ॥११॥
नेम जिणेसर पासि, आवी वचन कहइ री।
अगनि तणी परि कर्म, इणि संसार दहइ री ॥१२॥
तुझ देसन जल धार, सगम सीत थयउ री।
ए प्राणी मइ आज, सुकृत बीज बयउ री ॥१३॥
लेस्युं संजम आज+, एह कुटंब तजी री।
पामिसु सिव मकरंद, तुझ पय कमल भजी री ॥१४॥
जिम सुख थायइ तेम, मा प्रतिबंध करउ री।
देवानुप्रिय एम, भगवंत वचन खरउ री ॥१५॥
सचित्त भिक्षा प्रभु एह, हम आदेश ग्रहउ री।
मात-पिता कहइ एम, इनकी लाज वहउ री ॥१६॥
पंचमुष्टि करी लोच, गजसुकमाल ग्रहइ री।
सूधउ संयम भार, प्रभुनी आण वहइ री ॥१७॥
सामाइक उच्चार, करि सावद्य तजइ री।
क्रोधादिक परिहार, करि सम भाव भजइ री ॥१८॥
सुत सुणि जपइ मात, तुझ नइ सीख किसी री।
तउ पणि मुझ सुणि वात, मीठी ईख जिसी री ॥१९॥
राखे त्रिकरण सुद्ध, जीव निकाय सही री।
देजे तनु आधार, शुद्ध आहार लही री ॥२०॥
न कहे वचन अलीक, जिण थी सोभ घटइ री।
मुख थी जंपे साच, जिय थी पाप कटइ री ॥२१॥

*भार, पाळि ×इम हुवइ मु तरैरी, जे हो वस तरइ रे + मार

न ग्रहे वस्तु अदत्त, इण भवि लोक हणइ री।
परभव दारुण दुक्ख, जिणवर एम भणइ री ॥२२॥
व्रत ए भाव विसुद्ध, चौथउ पालि खरउ री।
सोहागिणि सिव नारि, करणी एणि वरउ री ॥२३॥
परिग्रह अनरथ मूल, तेम कषाय तजउ री।
संयम सतर प्रकार, साचइ भाव भजउ री ॥२४॥
[ सर्व गाथा ४४३ ]

॥ दूहा ॥

सीखामणि इम सुत भणी, देई विविध प्रकार।
दुख करती पाछी वलइ, माता ले परिवार ॥१॥
जल धरती परि हरि नयण, वरसइ आँसू धार।
पीत वसन जे पहिरिया, ते दामिनि अनुहार। २॥
वाटइ पाटइ तिम हियउ, बलतां न वहइ पाय।
हार जाणइ सूनउ हियउ, जग रिछडतइ भाय ॥३॥
प्रभु पासइ व्रतआदरी, हिव श्री गजसुकमाल।
ग्रहणा नइ आसेवना, सीख ग्रहइ ततकाल ॥४॥
[सर्व गाथा ४४७]

ढाल—२५ सामाचारी जूजूई—एहनी

पासइ जिनवर नेमि नइ रे, मुखि* भासइ एम।
तिण हिज दिवसइ मन रसइ रे, धरि उपसम रस प्रेमो रे ॥१॥
मुनिवर वंदीयइ, गुण निधि गजसुकमालो रे।
चरण करण धरू, जीव दया प्रतिपालो रे ॥२॥मु०॥
मुझ ऊपरि करुणा करी रे, सामी द्यउ आदेस।
प्रतिमा एक रयण तणी रे, विधि खप करीय बिसेसो रे× ॥३॥मु०

*आवी ×वहेसो

धीर वीर जाणी करी रे, जंपइ इम जग नाहो रे ।
जिम सुख देवानुप्रिया रे, पूरवि मन उच्छाहो रे ।।४।।मु०।।
सांभलि मन हरखित थयउ रे, वंदइ जिनवर पाय ।
सीह मनइ वलि* पाखरयउ रे, साहस विमणउ थायो रे ।।५मु०
सहस्रांब वन उद्यान थी रे, नीकलि साहस वंत ।
म्हाकाल समसान मइ रे, आवइ ते एकलो रे ।।६।।मु०।।
साहस न रहइ देखता रे, भूत भल भलकइ झाल ।
मार मार मुख थी कहइ रे, व्यंतर अति विकरालो ।।७।।मु०।।
भीषण वचन शिवा तणा रे, श्रवण कटक न खमाइ ।
मुख पिसाच फाडइ इसा रे, गिरि पिण माँहि समायो रे ।।८।।मु०।।
डोलइ डाइण साइणी रे, मुख धरती पल खंड ।
तीखी हाथइ कातरी रे, तुरत करइ सत-खंडो रे ।।९।।मु०।।
लांबा ताल तणी परइ रे, दीसइ ताल पिसाच ।
अंतर भेद न को लखइ रे ए छइ भूठ कि साचो रे ।।१०।।मु०।।
धीरज किण नउ नवि रहइ रे, राति समइ तिण ठाम ।
ऐ ऐ साहस साधु नउ रे, बलिहारी जसु नामो रे ।।११।।मु०।।
बडी नीति लघु नीति ना रे, रिषवर थंडिल ठाम ।
पडिलेही काउसग करइ रे, धरतउ प्रभु गुण ग्रामो रे ।।१२।।मु०।।
प्रतिमा एक रयण तणी रे, आदरि त्रिकरण सुद्ध ।
कर्म शत्रु जीपण भणी रे, जाणे मांडयउ जुद्धो रे ।।१३।।मु०।।
[सर्व गाथा ४६०]

॥ दूहा ॥

द्वारवती नगरि थको, सोमिल नामइ विप्र ।
इण अवसरि ते नीकलइ, खंति धरी मनि क्षिप्र ।।१।।

---

*मनें जिम

साम घेयनइ कारणइ, काष्ट डाभ कुश बंधि ।
तुरत तेह पाछउ वल्यउ, सांझ तणी तिण* संधि ॥२॥
होणहार सुख दुख तणउ, कारण किम मेटाय ।
चोट जुडइ जिम दूखतइ, कांणउडइ भेटाय ॥३॥

[ सर्व गाथा ४६३]

ढाल—२५ नायक मोहि नचावीयउ—एहनी-देशी
सोमिल देखी मुनि भणी, कोप करी विकरालो रे ।
चितइ इण पापी तणउ विरुअउ एह हवालो रे ॥१॥सो०॥
इण छडी मुझ कन्यका, तिणनी गति सी थासी रे ।
निरधारइ ते एकली, आप थयो वनवासी रे ॥२॥सो०॥
तिल भर इण नोठुर तणउ, तिणि ऊपरि नवि रागो रे ।
माथइ लगि कब× आवसी, अंगूठा री आगो रे ॥३॥सो०॥
जमवारइ लगि जाणनो, ए नवि देसी छेहो रे ।
नेह एहनउ कारिमउ, टार तणउ जिम त्रेहो रे ॥४॥सो०॥
आदर ऊभगियइ नही, उत्तम ए आचारो रे ।
मुझ कन्या इण परिहरी, अधम एह निरधारो रे ॥५॥सो०॥
मइ दीठउ हरि सामहउ, छोकरवाद न सोच्यउ रे ।
हिव पछतावउ अति घणउ, नवि पहिली आलोच्यउ रे ॥६॥सो०॥
आंत्रलूं हण माहरइ हुंती, जे कन्या परधानो रे ।
किम सहसी ते एहवउ, कठिन विरह असमानो रे ॥७॥सो०॥
इण नइ मति सी ऊपनी, अनरथ एह स्यउ कीधउ रे ।
इमही जनम अफल कियउ, नवि खाधउ नवि पीधउ रे ॥८॥सो०॥
विण दूषण इण पापीयइ, तुरत तेह किम छंडी रे ।
अंतर खबर न का पड़इ, मुंड थयउ पाखंडी रे ॥९॥सो०॥

---

*उण ×कबि

लोक लगावूं एहनइ, जाणइ इम नवि कीजइ रे।
खूह पड़ी भारी हुवइ, जिम-जिम कंबल भीजइ रे ॥१०॥सो०॥
इण नीलज सेती हिवइ, राग नहीं मुझ कोई रे।
सोढइ मूंकी चाटसूं, जिम भावइ तिम होई रे ॥११॥सो०॥
करतां स्युं कीजइ नहीं, एह महिणउ लागइ रे।
निरगुण भेदीजइ नही, मुझ ए बांजइ तागइ रे ॥१२॥सो०
[सर्व गाथा ४७५]

॥ दूहा ॥

सालइ साल तणी परइ, जउ चूकूं अवसाण।
पिड मांहि राखुं नही, पापी इण ना प्राण ॥१॥
वाल्हउ वइरी इम मिलइ, कीजइ किसउ विलंब।
ए पिण जाणइ किम कदे, आक न लागइ अंब ॥२॥
ध्यान धरी ऊभउ अछइ, थिर मन करि जिम थंभ ॥।
पिणि इणि विधि वेदन करूं, दूरि टलइ जिम दभ ॥३॥
[सर्व गाथा ४७८]

ढाल-२६ कागलीयउ करतार भणी सी पर लिखूं—एहनी
कुमति धरी तिणि पापी पापनी रे, दस दिसि सनमुख देखि।
रिषि मारण साहस सबलउ कीयउ रे,
हरिनउ भय ऊवेखि ॥१॥कु०॥
सरस सरोवरनी माटी ग्रही रे, जिहां किण गजसुकमाल।
तिण थानिक ते निरदय आविनइ रे, माथइ बांधइ पालि ॥२॥कु०
फूल्या केसू जिम राता हुवइ रे, तिसा अरूण अंगार।
जलती चहि* हुंती आणी करी रे,
रिषि सिर ठवइ गमार ॥३॥कु०॥

*चिह, चह

मन मांहे भय सबलउ ऊपनउ रे, पापी नइ तिण वार।
आयउ तिम पाछउ वल्यउ रे, आवइ निज आगार ॥४॥कु०॥
वेदन अधिकी रिषि नइ ऊपनी रे, सहतां दुक्कर जेह।
मन चिंतइ नरकादिक वेदना रे, आगलि केही एह ॥५॥कु०॥
परवसि पड़ीयउ प्राणी सहु खमइ रे, गुण थोड़उ तिण बात।
सइवसि एक घड़ी पिण जउ खमइ रे,
करइ करम नउ घात ॥६॥कु०॥
सोमिल नउ दूषण तिल भर नही रे, पूरब करम विसेष।
मन माहे इम मुनिवर चिंतवइ रे, धरइ न तिल भर द्वेष ॥७॥कु०
हाड़ परजलइ काठ तणी परइ रे, चट-चट वाजइचाम।
साते धात दहीजइ सामठी रे, तउ पणि मुनि मन ठाम ॥८॥कु०॥
काया सेती नेह किसउ करूं रे, आखर विणसी जाय।
सडण पडण छइ धरम सरीर नउ रे, जिनवर जंपइ न्याय ॥९कु०
तिम छंडुं जिम वलि मंडुं नही रे, काया सूं संवास।
अंत जेह छोडइ तिणनी कहउ रे, केही कीजइ आस ॥१०॥कु०॥
इणि परि ते वेदन खमितां थकां रे, उलसतइ* सुभ ध्यान।
अधिके गुणठाणे चढता थकां रे, पाम्यउ केवल न्यान ॥११॥कु०
करम च्यार वलि हणिय अघातिया रे, तुरत लहइ सिव ठाँम।
अजर अमर अक्षय सुख अति घणा रे,
अनंत पंच अभिराम ॥१२॥कु०॥
दस विध साध धरम माहे बडा रे, क्षमा धरम ते न्याय।
गज सुकमाल तणी परिजे धरइ रे, तिणि नां वंदूं पाय ॥१३॥कु०
[सर्व गाथा ४६१]

॥ दूहा ॥

रिषि महिमा करिवा भणी, आवइ सुर तिण ठांम।
दिव्य सुरभि गंधोदके, वृष्टि करइ अभिराम ॥१॥

*उलसै ते, उलसै तइ

पंच वरण फूलां तणउ, वरषण करि सुभ भाव।
बिमल वस्त्र ऊ चउ करइ, दिसि दिसि वधतइ दाव ॥२॥
सुर सुभ वाजे वाजते, गावइ मधुरा गीत।
सुणतां तिल डोलइ नही, चंचल पिण ए चीत ॥३॥
[सर्व गाथा ४६४]

**ढाल-२७ खंभाइती राग,-मोरी मानजी अनुमति द्यो-एहनी**

कृष्ण नरेसर प्रहसमइ रे, बाहिर साला आइ रे।
अम्यगन मज्जन करी रे भूषण अंग वणावइ रे ॥१॥
मन माहे उतकठा वांदण तणी रे,
नेमीसर हो सुरतरू मम त्रिभुवन धणी हो ग्रांकणी।
कोरट माल सहित भलउ रे, माथइ छत्र विराजइ रे।
धवल चामर बिहुं गमइ रे, पेखि गगजल लाजइ रे ॥२॥म०॥
टोले टोले नर घणा रे, लाखे गाने केडइ रे।
भाव भगति धरि अति धणी रे, एक-एक नइ तेडइ रे ॥३॥म०॥
द्वारवती नगरी तणइ रे, विचि मइ चलतउ आवइ रे।
प्रभु वंदी देसण सुणुं रे, एह भावना भावइ रे ॥४॥म०॥
जरा करी जीरण घणुं रे, देह किलामण पामइ रे।
ईंटि रास हुंती ग्रही रे, एक एक निज धामइ रे ॥५॥म०॥
ईटि सचारइ डोकरउ रे, परसेवइ परघलतउ रे।
हरि सेना देखो करी, एकणि पासइ टलतउ रे ॥६॥म०॥
देखी हरि निज चित्तमइ रे, दीनदयाल विचारइ रे।
खिन्न खेद ए नर हूअउ रे, वार वार इणि भारइ रे ॥७॥म०॥
एक ईंटि आपण ग्रही रे, तसु मंदिर पहुचाइ रे।
तिमहीज लोक सहू करइ रे, सेवक पति अनुयाई रे ॥८॥म०॥
ईंटवाह हरि साँनिधइ रे, मुदित हुअउ इम बोलइ रे।
पर उपगारी तूं जयउ रे, तुझ गुण कोइ न तोलइ रे ॥९॥म०॥

इम हरि अनुक्रम चालतउ रे, नेमि जिणेसर पासइ रे।
आवी परदक्षिण करी रे, वंदइ मन उल्लासइ रे ॥१०॥म०॥
बंधव किम दीसइ नही रे, हरि मना माँहि विमासइ रे।
नजरि न आवइ माहरइ रे, दीठउ आसइ पासइ रे ॥११॥म०॥
प्रभु नइ पूछइ माहरउ रे, बंधव किम तुम्ह पासइ रे।
नवि दीसइ जिन इम सुणी रे, साची वाणी भासइ रे ॥१२॥म०॥

[सव गाथा ५०६]

॥ दूहा ॥

कृष्ण सुणउ तुम्ह बाँधवइ, भली वधारी लाज।
विषम परीसह तिम सहथउ, सारथा आतम काज ॥१॥
काल्हे अम्हनइ पूछिनइ, महाकाल समसान।
काउसग्ग जाई करइ, धरतउ धरमनो ध्यांन ॥२॥
एक पुरुष तिहां आवियउ, तिणनइ अधिकी रीस।
मुनि नइ देखी ऊपनी, जाण्यउ बालु सीस ॥३॥
पाल्न करी माटी तणी, ऊपरि ठवि अंगार।
अधिकी वेदन तिणि करी, रिषि पाम्यउ भव पार ॥४॥
कारिज साध्यउ आपणउ, मन मत करिज्यो* खेद।
कीधउ थोड़इ काल मइ, आठ करम नउ छेद ॥५॥

[सर्व गाथा ५११]

ढाल—२८ काल अनंतानंत-एहनो

प्रभु जंपी ए वात, साँभलि नइ हरि हो सोक करइ घणउ।
पाणी वलि न खमाइ, कठिन विरह दुख हो भाई तुझ तणउ ॥१॥
मिलिस्यइ वार बिच्यारि, बंधव मुझ नइ हो व्रत माँहे छतउ।
एह मनोरथ साच, आज घडी लगि मन माँहे हुतउ ॥२॥

---

*धरिज्यो

सास सीम वेसास, श्राम नजी हिव हो मइ मिलवा तणी।
मनि वीचइ छइ जेह, ते परि सगनी हो जाणइ जगि धणी ॥३॥
हियड़उ वज्र समान, तुझ वेदन मंण हो जिण* फाटउ नही।
किसउ जणावुं नेह,× लोका श्रागलि हो हिव वचने कही ॥४॥
यादव बहु+ परिवार, काम न श्राव्यउ हो तुझ नइ तिणि समइ।
श्रधिकउ सालइ दुक्ख, तिणि मन मांहि हो कोई नवि गमइ ॥५॥
वीरा तुझ दीदार, विण दीठा किम हो मन धीरिज रहइ।
तुझ विरहउ असमान, श्रागि तणी परि हो मुझ श्रंतरि दहइ ॥६॥
प्रभुनइ पूछइ एम, हरि कुण निदत हो नीच इसउ श्रछइ।
मुझ बंधव नइ मारि,जीवित वंछइ हो पापी कुंण–पछइ ॥७॥
प्रभु जंपइ स्यउ कोप, तिणमुं जिण नर हो श्रोठभउ दीयउ।
ईंटि वाहक नइ जेम, मारग माहे हो तइं बहु गुण कीयउ ॥८॥
इम निमुणी सहु वात, हरि हर भांतइ हो जाणइ जिण हण्यउ।
हूं किम लखिस्युं तेह,नेमि जिणेसर हो नाम नथी भण्यउ ॥९॥
वलि पूछइ कर जोड़ि, बधव घातक हो प्रभु किम जाणीयइ।
उत्तर भासइ सामि, संसय भंजक हो श्रंतर वांणीयइ ॥१०॥
तुझ नइ देखी जास, काया थावइ÷ हो प्राण रहित खिणइ।
तेतूं जाणे साच, रिपि संहारयउ हो पापीयइ तिणइ$ ॥११॥
[सर्व गाथां ५२२]

॥ दूहा ॥

कृष्ण नरेसर इम सुणी, वंदी जिणवर पाय।
वर कुंजर चढि नगर मइ, जावा उद्यत थाय ॥१॥
सोमिल मन मइ चिंतवइ श्रधिक न्यान विन्यान।
प्रभु भासइ§ तिणि हरि भणी,सहु कहिस्यइ सहिनांण॥२॥
मुझ नइ कुमरण मारिस्यइ, वासुदेव ए जोर।
किण भांतइ तजिस्यइ नही, लाख£ करूं जउ निहोर ॥३॥

*जे ×देज +सहु ÷जे ‡थायें $इणें §पासइ £करता लाख निहोर

घर हुंती ते निकलइ, धरतउ मन मइ बीह।
मृगलउ वन मइ नवि रहइ, देखी सबलउ सीह ॥४॥

[सर्व गाथा ५२६]

ढाल २८—अनंतवीरज मइ ताहरउ* ए जाति

कृष्ण नरेसर प्रहसमइ× पहमण लागउ जाम।
हूंणहार न टलइ किमइ, सोमिल मिलियउ ताम ॥१॥
हरि देखी भय ऊपनउ, प्राण रहित ते थाय।
आउखो तूटण तणउ, भय पिण कारण न्याय ॥२॥
धसकइ ते धरणी ढल्यउ, देखी कृष्ण नरेस।
भाषइ करम चंडालइ, पापी बाभण वेस ॥३॥कृ०॥
सहु को लोको सांभलउ, सोमिल बाँभण एह।
एणइ मुझ बंधव भणी, दहि कीधउ निरदेह ॥४॥कृ०॥
ए अपरथिय पत्थियउ, इण नइ हिव सी मारि।
इणि भवि ना इणि भविद+, विरुआ करम विकार ॥५॥
राँढू सेती बाधिनइ, पापी ना पग हाथ।
नगरि परि सरि फेरवउ, जंपइ इम यदुनाथ ।६॥कृ०॥
छेदी दस दिसि बलि करउ, ए छः अम्हची आंण।
सेवक ते तिमही÷ करइ, प्रभु नउ वचन प्रमाण ॥७॥कृ०
जल सेती छाटी करी, पवित्र करइ ते ताम।
विलखउ विरहइ बंधु नइ, हरि आवइ निज धाम ॥८॥कृ०॥
सोकातुर धरणी ढली, मात सुणी ए वात।
वात‡ तणइ योगइ पड़इ, जिम तरुवर नो पात ॥९॥

---

*श्री जिनशासन जगि जयो—ऐ देशी ×नगर में +पच्या ÷हि तिमहिज
‡वायु

सीतल जल चंदन करी, तेह सचेतन थाय ।
तिम २ नेह घणउ* दहइ, सोक जलण बहु ×काय ॥१०॥कृ०॥
विरह विलाप घणा किया, सुत विरहइ जे मात ।
जाणइ ते सुत विरहणी, जिण नइ बीतक वात ॥११॥कृ०॥
सोक जलंजलि आपिनइ, मात पिता धरि प्रेम ।
अधिकउ कृष्ण नरेस स्युं, नित वरतइ सुख खेम ॥१२॥कृ०॥
जवहर नी परि जोवता, यादव वंस स नीर ।
बलि विसेष सुरमणि समउ, हूअउ हरि लघुवीर ॥१३॥कृ०॥
[सर्व गाथा ५३९]

॥ दूहा ॥

गुण बहु गजसुकमाल ना, जडमति हुं इक जीह ।
पूरा ते न हुवइ किमइ, जउ कहियइ लख+ दीह ॥१॥
क्षमावंत संसार मइ, हुइसी हुआ अनेक ।
वरतइ छइ पिण एहनी, जग मइ अधिको टेक ॥२॥
विषम परीसह ए सहयउ, नामइ गजसुकमाल ।
घन घन करणी एहवी, नमियइ चरण त्रिकाल ॥३॥
[सर्व गाथा ५४२

ढाल—३० राग धन्यासिरी, शांति जिन भामणड़इ जांउं एह जाति

साधुजीनी भावना ÷ भावुं, मनवछित फल पावुं वे ॥१॥सा०॥
गजसुकमाल सदा सलहीजइ,
जिम सिव वास लहीजइ वे ॥२॥सा०॥
हेम जेम कसवटि कसीयउ,
अधिकि वान+ जिम लहीयउ वे ॥३॥सा॥
समता घर अधिकउ सोभागी, बय चढ़ती बयरागी वे ॥४॥सा०॥
चदननी परि जसु मन ताढउ, सोमिल ऊपरि गाढउ वे ॥५॥सा०॥

*तरणे उदं ×वहुकाय +नित ÷भावन

सत्रु मित्र ऊपरि सम भावइ, इम हुइ ते सिव पावइ बे ॥६॥सा०॥
त्रिकरण सुद्ध क्षमा गुण धारी, तेह तणो बलिहारी बे ॥७॥सा०॥
क्रोध थकी दुरगति पामीजइ, क्रोध तिणइ नवि कीजइ बे ॥८॥सा०
क्रोध करम चंडाल कहीजइ, चारित तुरत दहीजइ बे ॥६॥सा०॥
जाणी एम क्षमा नितु धरीयइ, मुगति वधू जिम वरीयइ बे ॥१०सा
संवत सोलह १६ निन्नांणू ६६ वरसइ,

वइसाखइ सुभ हरखइ बे ॥११॥सा०॥

सुदि पंचमी ५ सुभ दिन सुभ वारइ,

एह रच्यउ सुविचारइ बे ॥१२॥सा०॥

श्रीजिणसिंघसूरि गुणधारा, खरतरगच्छ उदारा बे ॥१३॥सा०
श्री जिनराज तासु परभावइ,

इणि विधि मुनि गुण गावइ बे ॥१४॥सा०॥

ए संबंध सदा सांभलिस्यइ, तासु मनोरथ फलिस्यइ बे ॥१५॥सा०॥
माठमइ अंग तणइ अणुसारइ,जोड़ि रची मति सारइ बे ॥१६॥सा०
कवि कलपन* अधिक रची जइ,मिच्छादुक्कड़ दीजइ बे ॥१७॥सा०
श्री जिन धरम तणइ परसादइ,

अधिक सदा जस वाधइ× बे ॥१८॥सा०॥

मंगल मुख सोहग+ पामीजइ,जिनवर चरण नमीजइ बे ॥१६सा०

[सर्व गाथा ५६१]

इति श्री गजसुकमाल महामुनि चितुष्पदिका समाप्ता।
सर्व ढाल ३०, सर्वइलोक संख्या ८००। श्री रस्तुलेखक वाचकयो।
संवत १७४३ वर्षे, फाल्गुन मासे ६ तिथौ गुरुवासरे।
श्री जेसलमेरू वास्तव्य सुश्रावक, पुन्य प्रभावक कोठारी।
विद्याधर तत्पुत्र कोठारी अमीचंद तत्पुत्र कोठारी वशविभूषण
अभयचंदजी पुत्र चिरंजीवी केसरीचंद पठन हेतवे लिखितेयं पुस्तिका

*कल्पनं, कल्पित ×वाधै +साता

## तीर्थराज गीतम्

पगि पगि आव्या समरता, ललणा अहो प्यारे
आज भलइ सुविहाण कि शेत्रुंज भेटीयइ ललणा।
आज मनोरथ मझ फल्या ललणा अहो प्यारे,
जीवित जनम प्रमांण कि ।।शे०।।१।।
पालीताणइ देहरा ल० ललितसरोवर पालि कि ।।शे०।।
पाजइ चढता पादुका ल० प्रणमुं नयण निहालि कि ।।शे०।।२।।
पगि पगि पाप पखालतां ल० सायइ संघ झकुंड कि ।।शे०।।
भाव भगति धरि भेटीयइ ल० पासनाह कलिकुंड कि ।।शे०।।०।।३।।
केसर भरी कचोलडी ल० पूजू रिषभ जिणंद कि । शे०
रइणि तलि पगला भला ल० पेख्या परमाणंद कि ।।से०।।४।।
चउमुख देहरा देहरी ल० पुंडरीक गणधार कि ।।शे०
खरतर वसही देखतां ल० सफल करूं अवतार कि ।।शे०।।५।।
मरुदेवा गयवर चडी ल० अदबुद बिंब सरूप कि ।।शे०
मन माहरउ मोहीरह्यउ ल० देखी रूप अनूप कि ।।शे०।।६।।
मूल टूक ऊपरि अछइ ल० चउमुख नवल प्रसाद कि ।।शे०
उंचउ शिखर सुहामणउ ल० कइइ सरग सुवाद कि ।।शे०।।७।।
साची शेत्रुंज (य) नदी ल०, सिधवड उलखाझोल कि ।।शे०
दीठी चेल तेला वडी ल०, आजु थयउ रग रोलि कि । शे० ।८।।
तीरथ जिण भेटयउ नही ल०, ते नर गरभावास कि ।।शे०
'राजसमुद्र'मुनिवर भणइ ल०, सफल फली मन आस कि ।।शे०।।९।।
इति तीर्थराज गीतम्

( पत्र १ तत्कालीन हमारे संग्रह में )

## तीर्थ यात्रा मार्ग निरुपक गीतम्

खि भोजिग भाट चारण, गुणिजण बीजा वली !
मरुदेवि कूंट प्रसाद अनुपम मंडाव्यउ मन नी रली ।।१४।।

करइ सजाइ संघवी, भेटण गढ गिरनार।
संघ प्रवर 'तत्र' वीनवइ, मारग विषम अपार॥
अति विषम मारग आकरी रितु, नीर लागइ तिहा तणउ।
समझावि इण परि संघ आवां, पास भेटण थंभणउ॥
निज न्याति साहमी घरे लाहिण दियइ पुर पुर नवी।
मारगइ तीरथ प्रवर भेटी, घरे आवी संघवी॥१५॥
श्री खरतर गच्छ चिर जयउ, परगल पुण्य पडूरि।
गरुयउ गछनायक जयउ, जुगवर जिणसिंघसूरि॥
युगवर जिणच दसूरि पाटइ, दिवसपति ओपम धरइ।
धनवंत श्रावक पुण्य करणी, मोकलइ मन इम करइ॥
घन गछ खरतर सुगुरु श्रावक सुजस महिमंडलि थयउ।
गिरि राजसमुद्र दिणिंद तां लगि,श्री खरतर गछ चिरजयउ॥१६॥
इति श्री तीर्थ यात्रा मार्ग निरूपकं गीत।
( पत्राक तीसरा हमारे संग्रह मे )

## सुदर्शन सेठ सज्झाय

जी हो कूड कपट तिहाँ केलवो, जी हो तेडावी घर माँहि।
कामातुर वचने थई, जोहो कपिला बिनगी बांहि॥१॥
सुदरसण धन धन तुम अवतार।
जो हो सील रतन जतने करो, जी हो राख्यउ च्यारे बार॥२सु०॥
जी हो सेठि कहइ मुझनइ हतो, जी हो कहि कदि पुरुषाकार।
जी हो रूपं रूडे फूलडे, जी हो राचं कवण गिवार॥३॥सु०॥
जी हो हाथ बिन्हे धरतो पडया, जी हो सबल लजांणी तेह।
जी हो ते तो पछतावइ पडे, जी हो करइ विचार न जेह॥४॥सु०॥
जो हो गहि पूरित अभया कहें, जो हो कपिला नी बात।
जी हो भोली तूं तिण भोलवी,जी हो पुरुष रम्यौ लहिघात॥५सु०॥
जी हो तौ हू जउ तेहने, जी हो हेलि मनावुं हार।

जी हो छेल पुरुष जे छेतरइ, जी हो साची तेहिज नारि ॥६॥सु०॥
जी हो परव दिवस तेड़ाविनइ, जी हो कीधा कोड़ि प्रकार ।
जी हो आप रूप अभया थई जी हो मूंकी अभया नारि ॥७॥सु०॥
जी हो अणीयाले अणीए मिलै, जी हो धार रहइ पय थोभ ।
जी हो अणीय जुडे ताकइ गली, जी हो ते किम पामइ सोभ ॥८सु०
जी हो आपो आप विलूरनइ, जी हो लागी करण पुकार ।
जी हो चतुर न को पामीमकै, जी हो नारि चरत नो पार ॥९॥सु०॥
जी हो कुमरण मारण माँडीयो, जी हो कोप चढ्यो भूपाल ।
जी हो सूली फीटी नै थयौ, जी हो सिंहासन सुविसाल ॥१०॥सु०॥
जी हो थाइ छडी ता ऊजला, जी हो सोनइ शामि न होइ ।
जी हो सेठ महाव्रत आदरै, जी हो चूक पडै मत कोइ ॥११॥सु०॥
जी हो धाय अवर नगरी गई, जी हो करि गणिका सु संच ।
जी हो धरि तेडावो साधुनै, जी हो करि करि नवल प्रपंच ॥१२सु०
जी हो ते विरती मर वाहनी, जी हो पिण न पडयो नीसाण ।
जी हो साँझ समै ऊपाडि नइ जी हो ले मूक्यों समसाण ॥१३॥सु०॥
जी हो आवी अभया व्यतरी, जी हो रचि माया गभीर ।
जी हो मुनिवर नइ डोल इवा जी हो कीध न क तकसीर ॥१४॥सु०॥
जी हो पावडीए चढि साधुजी, जी हो लहि केवल प्रासाद ।
जी हो जैतह थइ जिणनारि नो, जी हो एम उतार्यउ नाद ॥१५॥सु०
जी हो सील सुरंगा मानवी, जी हो पामइ शिवपुर राज ।
जी हो सील अखंडित राखीयै जी हो इम जपइ जिनराज ॥१६सु०॥
इति सुदर्शन सेठ सज्झाय । वा० भुवनविशाल लिखितं

## श्री जिनसिंहसूरि गीतम्

श्री जिनसिंहसूरीश्वर गुरु प्रतपउ जी निलवट अधिकउ नूर ॥एह गुरु०
दरसण आणंद संपजइ गुरु० दुख जाइयइ सवि दूरि ॥एह॥१॥
बुद्धइ सुरगुरु अवगण्यउ गुरु० सायर जेम गंभीर ॥एह०॥

तेजइ सूरिज ज्युं सदा गुरु०, गिरवर जेम सुधीर ॥एह०॥२॥
कोकिल कलरव अभिनवउ गुरु०, सब जननइ सुखकार ॥एह०॥
निरमल मोति तणी पंक्ति गुरु०, दंत पंक्ति अतिसार ॥एह०॥३॥
केलि थुंभ ज्युं नासिका गुरु०, भांपणि पत्र संभार ॥एह० ॥
नयण कमल विकस्या जिसा गुरु०,खरतर गच्छ शृंगार ॥एह०॥४॥
सोभागी महिमानिलउ गुरु०, चाँपसी शाह मल्हार ॥एह०॥
राजसमुद्र मुनि इम कहइ गुरु०,गच्छपतिमंड सिरदार ॥एह०॥५॥

श्री जिनसिंहसूरि वाणी महिमा गीतम्

गुरु वाणी जग सगलउ मोहीयउ, साचा मोहणवेलो जी।
सांभलतां सहुनइ सुख सपजइ,जाणि अमीरस रेलो जी ॥१॥गुरु०॥
बावन चंदन तइं अति सीतली, निरमल गंग तरंगो जी।
पाप पखालइम विमल जल तणा,
लागो मुझ मन रंगो जी ॥२॥गुरु०॥
वचन चातुरी गुरु प्रतिबूझवी, साहि सलेम नरिंदो जी।
अभयदान नउ पड़हो वजावियउ,
श्रीजिनसिंहसूरिंदो जी ॥३॥गुरु०॥
चोपड़ा वंशइ सोभ चढ़ावतउ, चापसी शाह मल्हारो जी।
परवादी गज भंजण केसरी, आगम अर्थ भंडारो जी ॥४॥गुरु०॥
युगप्रधान सइ हाथइ थापिया, अकबरशाहि हजूरो जी।
'राजसमुद्र' मन रंगइ उचरइ, प्रतपउ जां ससि सूरो जी ॥५॥गुरु०

श्री जिनसिंहसूरि द्वादशमास

॥ दूहा ॥

पुरसादाणी पास जिण, निमल आपउ नाण।
गुरु जिणसिंहसूरि गाइसुं, भविक कमल वन भाण ॥१॥
जग जाणीता जुगपवर, सिरि जिणचंदसूरिंद।

भवसायर तरवा भणी, नित नित नमइ नरिंद ॥३॥
सुणी वाणी सहगुरु तणी, ए संसार असार।
इम जाणी मन आपणइ, आणि वइराग अपार ॥ ॥
विनयवंत इम वीनवइ, संजम लेसुं सार।
मुझ अनुमति द्यउ मातजी, पामु जिम भव पार ॥५॥
मात कहइं सुणि मानसिंघ, बारह मास उदार।
सुख भोगवि संसार ना, विषम साधु व्यापार ॥५॥

ढाल सिंधू १ मल्हार २

चौंपलदे चित चोखइ इम कहइ रे, श्रावण मइ सुख स्वाद।
बीजलड़ी चमका चिहुँ दिसि करइ रे,
केकि करइ कल नाद ॥चां०॥६॥
दादुर दादुर गहकइ गडगड़इ रे, मानु मदन नीसाण।
पहिर्या पंच प्रकार वसन धरा रे, खेलइ चतुर सुजाण ॥चां०॥७॥
भला भला भाँदु मइ भोगवइ रे, भोगी भामिन संग।
कीन ना मइ कामी क्रीडा करइ रे, रस लुबधा अर रंग ॥चां०॥८॥
सहिवा सही बावीस परीसहा रे, धरम ध्यान चित चंग।
गिरिवर गहिर गुफा मइ गुण निला रे,
गोपवि अंग उपंग ॥चां०॥९॥
अधिक आणंद आसोज मइ संपजइ, बाजइ सीतल वाय।
दीपतउ गयणगण चंद्रमा रे, भोगीजन मन भाय ॥चां०॥१०॥
पंकज परिमल पसरइ चिहुँ पखे रे, नवलउ जागइ नेह।
विरहणि वनिता नर विरहाकुलो रे दाझइ अहनिसि देह ॥चां०११॥
धान नवा कातिक मइ नीपजइ रे, निरमल तिम वलि नीर।
दीवाली परवइ दिन रलो रे, चतुर वणावइ चीर ॥चां०॥१२॥
आहार निरंतर नीरस आविसइ रे, उन्हउ उदक असार।
दूषिण दूषित ते पिण ल्यइ नही रे, किम करिस सुकुमार ॥चां०१३

ढल—मेरउ मन मोहयउ, एहनी

वच्छ ए वात तइ वनी विमासवी मोटउ म करि प्रयासो जी।
कठन कह्यउ मुनि मारग जिणवरइ,
ताथइ करि गृहवासो जी।.वछ०॥१४॥
सरवर निरमल इत लहियाँ लियइ, मगसिरि रयणि महंतो जी।
राजहंस महिमंडल संचरइ ठामि ठामि विलसंतो जी॥वछ०१५॥
पोषइ नवे नवे पकवानडे, सिगला लोक सरीगे जी।
साकर दूध तणा गटका भला, पोष मास सुधीरो जी॥वछ०॥१६॥
गरम खाना माह मासइ गुण करइ, तेलादिक परिभोगो जी।
परम नरम पटकूल नउ पहिरवउ,सुकृत तणइ संयोगो जी॥वछ०१७
सीत सबल निसिवासर संभरइ किणि किय सीतल वायो जी।
निस नर सबल वसन विणु वालहा,
किम करि रयणि विहायो जी॥वछ०॥१८॥
फाग रमइ फागुण मइ सहु मिली, लाल गुलाब अबीरो जी।
माहो माहि पिचरकी वाहता, भरि भरि केसूं नीरो जी॥वछ०१९
पंच महाव्रत मनसुं पालिवा, नित नित निरतीचारो जा।
कठिन ब्रह्मव्रत तिणमइ पगि बहुनु,
चतुर नु एह विचारो जी॥वछ।२०॥

ढाल मल्हारनी

रायवेल रलियावणी वछजी, मरुयइ नउ महकार।
परिमल पसरइ केतकी बछ जी मास वसंत उदार॥२१॥
'सुगरे' नान्हडीया सुख भोगवि तुं स मार ना रे॥आंकणी॥
वैसाखइ वन 'फूलिया वछजी, सहु जननइ सुखकार।
कूजइ कोकिल मन रली, वछजी, साख चढी सहकार॥२२॥सु०॥
दमतां इक इक दोहोलउ, वछ, इंद्री रूप गयंद।
तो पाचे वसि राखिवा,वछ; जियां जीता नर वृंद॥२३॥सु॥०

आवासे सात-भूमीए, वछ, गरूया गउख मंडाण ।
सयन करइ तिहां सुख भणी, वछ, जेठ मास जगि जाण ॥२४सु०॥
रवि साम्हो आतापना, वछ, करतां दिवस विहाय ।
रातइ भूमि संथारडइ वछ, केलि गरभ सम काय ॥२५॥सु०॥
थाला खाने बइसवउ, वछ, वीजण वीजइ वाय ।
फूल्या फूल गुलाब ना, वछ, मोटी दाम सुहाय ॥२६॥सु०॥
ईरज्या सुमतइ चालतां, वछ, जाइवउ गोचरि काज ।
ऊंच नीच घरि वहिरवउ, वछ, जेम कह्यउ जिनराज ॥२७॥सु०॥

ढाल—धरम हीयइ धरउ, बहनी

मान कहइ सुण मातजी रे, नहीय करूं गृहवास ।
माया दीसइ कारिमी रे, तिण मुं केही आसो रे ॥२८संजम आदरूं
तणु धन योवन कारिमउ रे, स्वारथ सहु परिवार ।
खिण खिण छीजइ आउखउ रे दीसइ सहु असारो रे ॥२९सं०॥
इम जाणी माता पिता रे, दीधउ व्रत आदेस ।
आदरसुं श्री गुरु कन्हइ रे, ल्यइ मुनिवर नउ वेसो रे ॥३०॥सं०॥
ग्रहणा नइ आसेवना रे, सीखइ सिख्या सार ।
अनुक्रमि चवद विद्या तणउ रे, मुनिवर थयउ भंडारो रे ॥३१सं०
युगप्रधान गुरु थापिया रे, अकवर साहि हजूर ।
'करमचंद' कुलचंदलउ रे, उच्छव करइ पडूरो रे ॥३२॥सं०॥
श्री जिनसिंहसूरीसरू रे, दिन दिन अधिकइ नूर ।
त्रिकरण सुद्धइं वांदतां रे, दुख जायइ सहु दूरो रे ॥३३॥सं०॥
साहि सलेम प्रतिबोधनइ रे, वरतावो रे अमारि ।
छम्मासांलगि त्रिहुं खडे रे, जाणइ सहु संसारो रे ॥३४॥सं०॥
'जेसलमेरू' जगि परगडउ रे, राउल भीम सुजाण ।
संवत सोलइ चउसठइ (१६६४) रे नमि कातिक वदि जाणो रे ॥३५सं०
मनसुं भणतां गावतां रे, अधिक हुइ आणद ।
'राजसमुद्र' मुनि इम कहइ रे, प्रतपउ जाम गिरिंदो रे ॥३६॥सं०॥
इति श्री गच्छाधीश्वर श्री जिनसिंहसूरि राजानां द्वादसमास वर्णनम्
समाप्तं पंडित लब्धिकुंयर मुनिना लेखि । पत्र २ संग्रहमे नं०७६१२

पं० जयकीर्त्ति गणि कृत

# श्री जिनराजसूरि रास

धरम जागरीया छट्ठी राति, कीजइ दीजइ धन बहु भांति ।
इम करतां दिन आयउ दसमउ, थयउ दसूठण करिवा नउ समउ ॥४॥
स्नान मज्जन करि असुचि उतारी, न्यांत तेड़ावइ हिव अवतारी ।
अति सखरी करि लापसी माहो, मेलि जीमाड़इ लोक वेवाही ॥५॥
ऊपरि दीजइ फोफलपान, केसरि छाटणा बहु सनमान ।
इम जीमाड़ी लोक समक्षइ, नाम दीयउ खेतसी बहु हरषइ ॥६॥
लोक सहू मन मइं गहगहता, आँप आपणे मंदिर ते पहुता ।
हिव धरमसी साह नइ बहुमान, पुण्यइ बाधइ वसुधा वान ॥७॥
मात पिता ना मनोरथ फलीया, धरम प्रसादि थया रंग रलीया ।
दिन दिन कुमर बधइ सुखकंद, कलायइ वधइ जिम बीजिनउ चंद ॥८
हरख धरी माता धवरावइ, दिन प्रति कुमर नइ वलि न्हवरावइ ।
आखे काजल कानि अवगनिया, माथइ तिलक पाए पानहियां ॥९॥
बाँहे बहिरखा कठइ हार, कुमर नइ सोहइ सोल शृंगार ।
चांदलउ करि पहिरावइ वागउ, बालूड़ा नइ दृष्टि म लागउ ॥१०॥
प्रेम नजरि भरि माता निरखइ, खिण खिण देखी हीयड़इ हरखइ ।
कईयइ कठइ कईयइ छाती, कुमर लगावइ माता राती ॥११॥
कईयइ बयसारइ आपणइ खोलइ, कईयइ पालणइ राखि हीड़ोलइ ।
कईयइ माता कुमर रमाडइ, कईयइ झालि ऊंचउ ऊपाडइ ॥१२॥
कईयइ बोलावइ बाह पसारा, आवउ बेटा हुं तुझ वारी ।
कईयइ कुमर नइ माता तेड़ेइ, कईयइ कुमर नइ जायइ केड़इ ॥१३॥
कईयइ चुंबि माता पुचकारइ, ऊतारणउ कईयइ ऊतारइ ।
इणि परि माता कुमर खिलावइ, अधिक आणंद मन मांहे पावइ ॥१४

ठम ठम चालतउ कुमर विराजइ, घूघरडी पाए वनि छाजइ।
फेरइ लट्टू चकरडी फेरिइ, फिरकडी फेरि नजरि भरि हेरइ ॥१५॥
पंचेटे खेलइ सारी पासा, सोलही जाणइ खेल तमासा।
पंचरंगी वजाड़इ गोटा, इणि परि रमइ धारलदे ढोटा ॥१६॥
मामणा वचन वदन सुखकारी, मात मनोरथ पूरइ अवतारी।
सात वरस नउ थयउ सोभागी, कुमर नइ भणिवा नी मति जागी ॥१७

[ सर्व गाथा ४६ ]

॥ दूहा ॥

मात पिता सुत देखिनइ, करइ विमासण एह।
कोइक जोवउ पडियउ, पुत्र भणावइ जेह ॥१॥
माता वेरिण तेहनइ, पिता सत्रु कहिवाय।
छतइ सयोगइ पुत्र नइ, न भणावइ मनलाय ॥२॥
विधवा कन्या ठोठ सुत २, भोग काजि धन जाय ३।
वृद्धपणइ मरइ भारिजा ४, ए चारे दुखदाय ॥४॥
सभा माहि बयठउ निगुण, सगुण नयन की चोभ।
हंस पंति जिम बक रह्यउ, कबहु न पामइ सोभ ।.५॥
तिणि कारणि ए पुत्र नइ, जिम तिम करी उपाय।
तुरत भणाव्यउ जोइजइ, पंडित सुत सुखदाय ॥६॥

## ढाल त्रीजी, जाति चउपई नी, राग-रामगिरी

जोसी तेड़ि मुहूरत जोवइ, मात पिता बहु हरषित होवइ।
माह तणी सुदा पाँचमि सार, भणिवा मुहूरत अति श्रीकार ॥१॥
मेलि महाजन वाटणा कीध, ऊपरि परिघल तंबोल दीध।
हाथ माहे मुंक्यउ नालेर, अश्व ऊपरि चढयउ जिसउ कुबेर ॥२॥
सनान मजन करि सोल शृंगार, कुमर दीसइ जाणे देवकुमार।
बाजइ ढोल दमामे घाई, पंच सबद बाजइ सरणाई ॥३॥
अक्षत द्रोब सोहइ मंगलीक, ब्रह्मा रह्यउ जाणे नालीक।

प्रति सखरी सुंखडी अणावइ, मात पिता खोलउ भरावइ ।।४।।
धरमसी साह करइ महगट्ट, दान मान लहइ चारण भट्ट ।
इणि परि कुमर लेसालइ आवइ,गुरुजी कुमर नइ पाए लगावइ।।५
बेकर जोडा बयनइ आगइ, गुरुजी पासि विद्या हिव मागइ ।
भले भणावि कहइ गुरु एम,भिलिजे सहु सुं करे वेढ़ि नउ नेम ।।६
भणि गुणि गुरु पूजा करि ऊठइ, तेहवइ सरसति माता तूठइ ।
चटड़ा नइ सु खडी खवरावइ, खड़िया लेखणि वलि दिवरावइ ।।७
इणिपरि भणवा मुहरत साध्यउ,कुमर तणउ जस सगलइ वाध्यउ।
भलेरे भणइ भणइ अंक विचार,सिद्धो समान भणइ मति सार ।।८
चाणायिक नीति शास्त्र उदार,कुमरइ भण्या ग्रंथ विविध प्रकार ।
षड भाषा चउद विद्या निधान, चतुर विचक्षण कुमर प्रधान ।।६।।
पुरुष नी बहुत्तर कला जाणइ कुमर संसार तणा सुख माणइ ।
भणि गुणि गुरुना पूजइ पाय,तिणि समय आठ वरस नउ थाय ।।१०

[ सर्व गाथा ६४ ]

।। दूहा ।।

कुमर वधंतइ ए वध्या, अंगि लाज मुखि रूप ।
सिद्धि हाथे मन बुद्धि इम, विद्या हृदय अनूप ।।१।।
नयन कमल दल नासिका चचु कीर मुख चंद ।
दसन जोति हीरा जिसी, वचन सुधारस कद ।।२।।
कंबु कंठ पल्लव करग, केलि जंघ हियउ थाल ।
पद कच्छप नख तंब मइ, राता अधर प्रवाल ।।३।।
सीतल ससि रवि तेज गुण, सायर गुण गभीर ।
करण दाता हरिचंद सत, सोवनगिरि गुण धीर ।।४।।
गुण सगला निज थानकइ, अवगुण देखि अनेक ।
अवगुण रहित कुमर तणइ, अंगि वसय सुविवेक ।।५।।
नव नवा वागा पहिरि नइ, सुगुण सुलक्षण जाण ।
गज गति चालइ मल्हपतउ, मान दीयइ राय राण ।।६।।

धर्म गोष्टि ध्रम थानकि, करइ दिवस नइ राति।
धर्म बुद्धि मन मइं धरइ, करइ नही परताति ॥७॥
तिरिण अवसर आव्या तिहाँ, खरतर गछि सिरणगार।
श्रावक लोक वाँदइ सहु, जिनसिंहसूरि गरणधार ॥८॥
आवइ कुमर तिहाँ करिण, वादी सदगुरु पाय।
बेकर जोड़ी साँभलइ, गुरु वखारण सुखदाय ॥९॥

ढाल चउथी राग—गउडी जाति प्रीतम रहउ रहउ सनतकुमार

नर अवतार संसार मइं लहतां, दसे दृष्टांते दोहिलउ।
जीवा जोनि चउरासी लख मइं,
भवमतां भवि भवि सोहिलउ ॥१॥
भविक जन सुरगउ सुरगउ धरम विचार,
तुम्हनइ थायइ भव निस्तार॥ भ०॥आंकणी॥
नरभव सार भलउ कुल लहियइ, कुल|थी धरम प्रकार।
धरम सार सरदहणा कहियइ, तेहथी बीरिज सार ॥२॥भ०॥
श्रावक नउ कुल लहि ध्रम कीजइ,धरम सामग्री जां छइ।
बत्रीस लाख विमान नउ स्वामी,
इंद्र श्रावक कुल वाँछइ ॥३॥भ०॥
विषया सुख मइं सुर लपटाणा, नारकि नइ दुख भोग।
नही विवेक तिरजंचां माँहे, तिरिण मानव ध्रम जोग ॥४॥भ०॥
अनंतकाय बत्तीस विवर्जइ, वलि बावीस अभक्ष।
मदनइ माँस माँखरण लधु एहना, दोष कहया बहु लक्ष ॥५॥भ०॥
श्रावक नउ कुल पामी न करइ,वंच अनइ अपमान।
कूड़ कपट पर निंदा न करइ, करइ ध्रम नइ ध्यान ॥६॥भ०॥
काल अनतइ श्रावक कुल लहि, मिथ्यामति प्रतिबुद्ध।
व्रत बारह इकबीस गुणे करि, जे श्रावक ते सुद्ध ॥७॥भ०॥
दस विध साधु धरम कहिवायइ, धरमां माँहि प्रधान।

पंच महाव्रत भार धुहेलउ, पांचां मेरु समान ॥८॥भ०॥
अढार सहस सीलांगरथ जाणइ, गुण माँहे सातवीस ।
अमम अमाय अकिंचण निरमद. न करइ लोभ न रीस ॥६॥भ०॥
एक दिवस नी दीक्षा लहियइ, निश्चय देव विमान ।
जावजीव पालइ जउ चारित, तउ सुख केहइ गान ॥१०॥भ०॥
असार संसार जाणी जे विरमइ, ते नर कहियइ जाण ।
कटुक विपाक तुच्छ सुख माँहे, मुंझि रहइ ते अयाण ॥११॥भ०॥
संध्या समय मिलइ जुं रूंखे, पंखो सगला आय ।
राति रही एकठा परभाते, उडि उडि दइ दिसि जाय ॥१२॥भ०॥
इम करम तणइ वसि जीव भमीनइ, पामइ कुटंब नउ मेलउ ।
पांच राति रही कुटंब संयोगइ,चालइ अंति इकेलउ ॥१३॥भ०॥
धन धन जोवन आउखउ, जाणे नय नउ वेग ।
डाभ अग्रजल चंचल जीवित, जाणि धरउ संवेग ॥१४॥भ०॥
स्वारथ नउ सहुयइ छइ जगि मइ, स्वारथ विण नहिं कोई ।
इम जाणी नइ कारज्यो संबल, धरम नउ जोई सोई ॥१५॥भ०॥
चिलातीपुत्र अनइ परदेसी, दृढप्रहारी वंकचूल ।
इत्यादिक नर तारथा धरमइ, कीधा सुख अनुकूल ॥१७॥भ०॥
कामकुंभ चिंतामणि सरिखउ, धरम मुगति दातार ।
इम जाणी नइ धरम करउ जिम, सफल थायइ अवतार ॥१७॥भ०

[ सर्व गाथा ६० ]

॥ दूहा ॥

सहगुरु नी वाणी सुणी, ऊठयउ जाणे सीह ।
दयउ दीक्षा मुझ नइ तुम्हे, कुमर वदइ अणबीह ॥१॥
चलता सहगुरु इम भणइ, मात पिता आदेस ।
लेइ आवउ दीजियइ, दीक्षा विलंब न लेस ॥२॥
कुमर वदइ कर जोड़िनइ, आवी माता पासि ।
सदगुरु वांदथा धम सुण्यउ, माता दयइ साबासि ॥३॥

दीक्षा नउ भाव ऊपनउ, मुझ नइ तिणि प्रस्ताव।
दयउ आदेश तुम्हे मुंनइ, ल्युं दीक्षा सम भाव ॥४॥
वलती माता इम कहइ, वच्छ सुणउ वड़ भाग।
जोवन वय सुख भोगवउ, नही दाक्षा नउ लाग ॥५॥
दीक्षा नी बात दोहिली, सांभलता पणि कांनि।
भोगवि भोग पछइ दीक्षा, लेज्यो वचन ए मानि ॥६॥
दुकर दीक्षा पालतां, लेतां सोहिलो होइ।
लेई नइ रूड़ी परि, पावइ विरला कोइ ॥७॥
वच्छ कहइ सुणउ मात जी, जे तुहे कहउ ते साच।
कायर कापुरसाँ नरां, दोहिली दीक्षा वाच ॥८॥
सूर वीर जे साहसी, अतुली बल महाधीर।
व्रत दुक्कर नही तेहनइ, जां लगि धरइ सरीर ॥९॥
वाला जायइ बात मइ, वलती नावइ तेह।
धरम बिलंब करइ नहीं, पुण्यवंत नर जेह ॥१०॥
मात पिता देखाडीयउ, घणउ संसार नउ लोभ।
तउ पिण कुमर रहइ नही, हिव दिक्षा लेता सोभ ॥११॥
सहगुरु पणि समझाविनइ, चीतराव्यउ निज बोल।
व्रत आदेस दीयउ हिवइ, दीक्षा ल्यइ रंग रोल ॥१२॥
[ सर्व गाथा १०२ ]

**ढाल—पांचमी राग-मारूणी जाति--जीतउ जीतउ हो यदुपति राय वसुदेव करउ वधामणा रे एहनी**

कीजउ कीजउ हो उच्छव आज दीक्षा नउ रूडी परि हो।
धरमसी साह नइ वारि गह मह सबल थइ घरि हो ॥१॥की०॥
बंडित जोसी पूछि कीधी मुहूरत थापना हो।
तपतोदक न्हवराय कुमर नी सहु फली कामना हो ॥२॥की०॥
वागइ नउ वणाव करि पहिरइ आभ्रण भला हो।

माथइ मउड़ सुचंग, कांनि गंठोड़ा जोडला हो ॥३॥की०॥
उरि मोतिन कउ हार, बाँहि मनोहर बहिरखा।
बाजूबंद सोवन्न दसे, आंगुली वेढ सारिखा हो ॥४॥की०॥
कडिए कंचण दोर, पाए वाजइ घूघरी हो।
विनायक वयसारि, लाहइ लापसी घूघरी हो ॥५॥की०॥
भाल तिलक सुविशाल, अंजन आंखे सोहियउ हो।
कुमरइ सोल शृंगार, कीधा जन मन मोहियउ हो ॥६॥की०॥
तिलका तोरण वारि, घरि घरि मांडया मांडणा हो।
सहु महाजन मेलि, कीधा केसरि छांटणा हो ॥७॥की०॥
तरल तुरंगम आणि, ऊपरि कुमर बइसारीयउ हो।
फिरइ वरनोला एम, सकल कुटंब परिवारियउ हो ॥८॥की०॥
सूहव गायइ गीत, ताजा नेजा फरहरइ हो।
ढोल सबल नीमाण, नादइ अंबर घरहरइ हो ॥९॥की०॥
बाजइ ताल कंसाल, भेरि नफेरी हूकलइ हो।
सांख झालरि झणकारि, ऊंची गूडी ऊछलइ हो ॥१०॥की०॥
भोजिग चारण भाट, कुमर तणउ जस ऊचरइ हो।
वरनोलइ फिरि गाम, पोसालइ आवी ऊतरइ हो ॥११॥की०॥
वांदइ गुरु ना पाय सधव वधू करि गूंहली हो।
वास लेइ सुणि श्लोक, कुमर आवइ घरि मनरली हो ॥१२॥की०॥
इणि परि सगलउ संघ, दयइ वरनोला निज घरा हो।
आडंवर माम सीग, कीअउ अति हरखी धरा हो ॥१३॥की०॥
संवत सोल सतावनइ, मगसिरि वदि दसमी दिनइ हो।
सबली नांदि मंडावि, लीधी दीक्षा शुभ मनइ हो ॥१४॥की०॥
[ सर्व गाथा ११६ ]

॥ दूहा ॥

तिहां दीक्षा लेई नइ, मुनिवर करइ विहार।
सीखावइ सिक्षा दुविध, जिनसिंहसूरि गणधार। १॥

पांच समिति त्रिरिण गुपित मइं, पालइ प्रवचन मात।
छजीव नी रक्षा करइ, करइ नहीं परतांति ॥२॥
सामाचारी साधुनी, जाणइ दसे प्रकार।
सत्तावीस गुणे सहित, राजसीह अणगार ॥३॥
मुनिवर मोटउ महीयलइ, निरमल चारित्र पात्र।
विषय कषाय रहित सदा, सुप्रसन वदन सुगात्र ॥४॥
तप वहाडि मांडल तणा, दीधी वडी सु दीख।
राजसमुद्र दीयउ नाम ए, सूधी पालइ सीख ॥५॥
उपधान वूहा भाव सूं, आगम नां जे जोग।
तप सगला कीधा तुरत, सहू वखाणइ लोग ॥६॥
गच्छनायक गुरु जे कहइ, मानइ वचन तहत्ति।
सीस सिरोमणि चुंप सुं, गुरु पासइ भणइ झत्ति ॥७॥
[सर्व गाथा १२३]

## ढाल—छट्ठी राग--मारुणी जाति-जोल्हण वहिला आविज्यो रे वहनी-

गुरु पासइ आवी करइ रे, सास्त्र तणउ अभ्यास।
विनय करी विद्या भणइ रे, वारू वचन विलास ॥१॥
भणिवा मांडियउ रे, आंपणड़इ मन रंग ॥भ०॥आंकणी॥
श्री गुरु आगइ हरख सुं रे, वयसइ बे कर जोड़ि।
मुंहड्इ देइ मुहपती रे, भणइ नित आलस छोडि ॥२॥भ०॥
आचारांग १ सूत्र सूगडांग२ रे. ठाणांग ३ समवायांग ४।
भगवती ५ ग्याता धरमकथा ६ रे,
उपासकदसा ७ अंतगड ८ चंग ॥३॥भ०॥
अणुत्तरोववाई ९ प्रसन नउ रे, व्याकरण १० विपाक ११ सिद्धांत।
अंग इग्यार भण्या वली रे, अरथ लीयउ अभ्रांत ॥४॥भ०॥
उववाई १ रायपसेणिका २ रे, जीवाभिगम ३ विचार।

पन्नवणा ४ सूर ५ जंबू६ चंदपन्नती ७,
निरियावलीय ८ उदार ॥५॥भ०॥
कपिप्या ९ कप्पवडंसिया १० रे, पुप्फिया ११ वन्हि १२ उपंग।
सुबुद्धियइ बारह भण्या रे, श्री सदगुरु नइ संग ॥६॥भ०॥
पिंड १ ओघनिज्जुत्ति २ ने रे, दसवीकालिक ३ सार।
उत्तराध्ययन ४ प्रधान ए रे. मूल सूत्र भण्याचार ॥७॥भ०॥
चउसरणउ १ विज्जाचंद थी रे २, आउर ३ महा पचखाण ४।
भत्तपरिन्ना ५ तंदुलवेयाली ६ गणिविज्जा ७ नउ जाण ॥८भ०
मरणसमाही ८ देविदत्थउ रे ९ संथारा १० दस एह।
पइन्ना जाण निसीथ १ वलि रे, महानिसीथ २ भणइ तेह ॥९भ०
पंच ३ दसश्रुत खध ४ सहु रे, जीतकल्प ५ विवहार ६।
छ छेद ग्रंथ छाना भण्या रे, पइंतालीस आगम सार ॥१०॥भ०॥
काव्यतर्क ज्योतिष गणित रे, जाणइ व्याकरण छंद अलंकार।
नाटक नाम माला अधिक रे, जाणइ शास्त्र विचार ॥११॥भ०॥
तेरे बरसे आगरइ रे, भण्यउ चितामणि तर्क।
सगली विद्या अभ्यसी रे, भटाचारिज संपर्क ॥१२॥भ०॥
चउदह विद्या चालवइ रे, ससमय परसमय जाण।
बादइ को जीपइ नहीं रे, पंडित राय प्रमाण ॥१३॥भ०॥
बादि मतंगज केसरी रे,वादि कंद कुद्दाल।
राजसमुद्र विद्यानिलउ रे, सकल छात्र प्रतिपाल ॥१४॥भ०॥
श्री जिनचंदसूरि सतसटुइ रै, वाचक पदवी दीध।
अहमदावादि आसाउलइं रे, जिहां सबल प्रतिष्ठाकीध ॥१५॥भ०॥
बाचक राजसमुद्र तिहां रे, समसद्दी सिकदार।
रंजी चोर चउवीस नइ रे, छोड़ावइ उपगार ॥१६॥भ०॥
घंघाणी प्रतिमा तणी रे, बाँची लिपि महाजाण।
अंबिका साधी मेड़तइ रे, केता करंय वखाण ॥१७॥भ०॥
श्री सिद्धाचल फरसीयउ रे, तेणि समय त्रिणि वार।

रतनसी जूठा ग्रासकरण, संघ साथि सुखकार ॥१८॥भ०॥
जात्र करी चउथी वली रे, देवकरण संघि उदार ।
उतकृष्टी करणी करी रे, सफल कीयउ ग्रवतार ॥१९॥भ०॥
मानइ मोटा महिपती रे, मानइ मुकरबखान ।
राउल राणा अति घणुं रे, दे सदगुरु नइ मान ॥२०॥भ०॥
मुकरबखान वखाणियउ रे, ग्रागइ श्री पतिसाह ।
पाट जोग लायक ग्रछइ रे, राजसमुद्र गज गाह ।।२१॥भ०॥
ठाम ठाम श्रावक बड़ा रे, वसि कीया वड़भाग ।
वचन कला रंज्या धरा रे, गुरु ऊपरि बहु राग ॥२२॥भ०॥
देस प्रदेसे विचरता रे, जिनसिंहसूरि गणधार ।
चउमासउ चावउ करइ रे, बीकानेर मझार ॥२३॥भ०॥
तिणि ग्रवसरि जिणसिंह नइ रे, तेड़ावइ जहांगीर ।
चाली ग्राव्या मेटतइ रे, लह वह्यउ तेथि सरीर ॥२४॥भ०॥
ग्रवसर जाण तिसइ समइ रे, बोलइ राजसमुद्र ।
सरदहिज्यो तुहे पूजजी रे, ग्राणी भाव ग्रक्षुद्र ॥२५॥भ०॥
गछ पहिरावीसि मुंकिसुं रे, भंडारइ सुजगीस ।
पुस्तक सखर लिखावि नइ रे, छलाख सहस छत्रीस ॥२६॥भ०॥
उपवास करिसुं पांचसय रे, नाम तुहारइ जेह ।
ते पुण्य थाज्यो तुम्ह नइ रे, सुसीस नी करणी एह ॥२६॥भ०॥
ग्रणसण करि ग्राराधना रे, श्री जिनसिंहसूरिंद ।
देवलोकि थया देवता रे, सेव करइ सुर वृन्द ॥२८॥भ०॥

[ सर्व गाथा १५१ ]

॥ दूहा ॥

पाटि प्रभाकर ऊठीयउ, ग्रतुली बल जाणे सीह ।
बखत बलइ पायउ तखत, राजसमुद्र ग्रणबीह ॥१॥

वत सोल चिहुत्तरइ, फागुण सुदि शनिवार ॥
शुभ वेला शुभ लगन मइ, सातमि दिवस अपार ॥२॥
आसकर्ण संघवी करइ, उच्छव अति विस्तार।
पद ठवणइ रउ भाव सुं, द्रव्य तणइ अणुसार ॥३॥

[सर्व गाथा १५४]

## ढाल—सातमी, जत्तिरी राग—सोरठि

पद ठवणइ उच्छव कीजइ, संघवीयइ सोभाग लीजइ।
जस श्रवण अंजलि भरि पीजइ,
सहुनइ दान तिहां कणि दीजइ ॥१॥
सखरी धरती समरावइ, तिहां चउकी सखर वणावइ।
तिहां सवली नांदि मंडावइ, सहु संघ भणी तेड़ावइ ॥२॥
दल वादल सरिखा देरा, मुखमल दरियाइ केरा।
नीलक पंच वरण नवेरा, ऊंचा ताण्या वहुतेरा ॥३॥
चंद्रोदय मांहि विराजइ, जरबाफ मसजर साजइ।
विधि विधिना बाजा वाजइ, नादइ करि अंबर गाजइ ॥४॥
मिलिया माणस ना थट्ट, करइ गीत गान गहगट्ट।
जय जय भणइ चारण भट्ट, संघवी राखइ कुलवट्ट ॥५॥
पाटोधर तेथि पधारइ, लोकां मांहि माम बधारइ।
तिहां हेमसूरि गणधारइ, दियउ सूरिमंत्र अधवारइ ॥६॥
भट्टारक पाद पयउ, मिलि सूहव नारि बधायउ।
श्री श्रीजिनराज सबायउ, खरतर गच्छ अधिक दीपायउ ॥७॥
सोल कला मुखि सोहइ, नर नारी ना मन मोहइ।
जिनराजसूरि सम को हइ, जगि भविक लोक पड़िबोहइ ॥८॥
जिनसागरसूरि सबाई, आचारिज पदवी पाई।
तेहिज नांदइ अविकाई, सयं हथि थाप्या सुखदाई ॥९॥

खरचइ धन आसकरण्ण, जाणे दूसरउ राजा करण्ण ।
पोषइ बलि चार बरण्ण, महिमागर मोटइ मण्ण ॥१०॥
जिणरइ घरि आदि बडाइ, माला संग्राम सवाई ।
दीपकदे कउ सुखदाई, कचरइ सहु करणी दीपाई ॥११॥
उदयवंत अमरसी तात, संघवणि अमरादे मात ।
अजाइबदे नारि कहात, इम आसकण्ण विख्यात ॥१२॥
अमील कपूरहचंदह, भाई जेहनइ निरदंद ।
कंधोधर सुवखना कंद, सेव करइ नर वृंद ॥१३॥
ऋषभदास सूरदास, पुत्र बेई बुद्धि निवास ।
सुख भोगवइ लील विलास, ईहणाँ नर पूरइ आस ॥१४॥
आसकरण इंद्र अवतार, चोपडां वंसइ दिनकार ।
वड़ वखती वड़ दातार, जाणइ सगलउ संसार ॥१५॥
सेत्रुंजइ संघ चलायउ, घरे सत्रूकार मंडायउ ।
देहरउ सखरउ कारायउ, धमकरणी कुल दीपायउ ॥१६॥
पद ठवणइ दीजइ दान, साहमी पामइ सनमान ।
संघवी आसकरण प्रधान, बसुधा माँहि वाध्यउ वान ॥१७।

॥ दूहा ॥

[ सर्व गाथा १७१ ]

देस प्रदेशे सांभली, पदठवणउ विख्यात ।
संघ सहू हरषित थयउ, ए थई जुगतो वात ॥१॥
भट्टारक पद पामिनइ, सूरीसर जिनराज ।
सुख समाधि मइ भोगवइ, खरतर गच्छ नइ राज ॥२॥
तेड़ाव्या तिणि अवसरइ, राउल कल्याणदास ।
जेसलमेरि पधारि नइ, श्रीसंघ पूरउ आस ॥३॥
लाभ जाणि आग्रह थकी, तिहाँ थी करी विहार ।
देस वंदावी आविया, जेसलमेरि मझार ॥४॥

[ सर्व गाथा १७५ ]

### ढाल—आठमी, जाति वेलिनी, राग-आसाउरी

श्री जिनराजसूरीसर आवइ, परिवरया मुनिवर थाट।
आया एम वधाऊ बोल्यउ, जोता जेहनी बाट ॥१॥
आगम सांभलि संघ सहू को, हरखित थयउ अपार।
वधाऊ नइ वधाई देई, संघ वांदइ गणधार ॥२॥
एह वात सुणि राउलजी पणि, संतोषाणा मूंकइ।
कुमर मनोहरदास नइ मोटा, अवसर थी नवि चूकइ ॥३॥
जीवराज भणसाली भावइ, पइसारउ करि आण्या।
आग्रह मानि चउमासउ रहिया, सगले लोके जाण्या ॥४॥
श्री गुरुराज प्रभावि घणा मेह, वूठा थयउ सुगाल।
देस माँहि जस सबलउ गुरु नउ, बोलइ बाल गोपाल ॥५॥
धरम तणी महिमा थई सबली, देहरइ पूजी स्नात्र।
सामायक पोषउ पड़िकमणउ, पोषीजइ सद पात्र ॥६॥
सूत्र सिद्धांत वंचावइ श्री संघ, संभलइ अधिकइ भाव।
परजुषणा परबइ संघ परघल, धन खरचइ लहि दाव ॥७॥
अमरसिंह सुत साह सवाई, धोरी जीवउ साह।
पोसीता नइ दीयइ रूपईयउ,सेर खांड उच्छाह ॥८॥
वांदिवा कुमर पधारइ दिन प्रति, राउल दे बहुमान।
भोजिग भाट गंध्रप जे आवइ, पामइ वंछित दान ॥९॥
कुसल खेम चउमास करीनइ, जेहवइ करइ विहार।
तेहवइ परतीठ करावइ बिबनी, श्रीमल साह मल्हार ॥१०॥
धरम धुरंधर धरम तणी करइ, करणी विविध प्रकार।
सात खेत्र वितवावरइ आपणउ, सफल करइ अवतार ॥११॥
लोद्रपुरइ जीरण प्रासाद नउ, जिणि कीधउ उद्धार।
गामि गामि खरतर गच्छ माँहि, भरावइ ज्ञानभंडार ॥१२॥
दीन हीन दुखियांनइ धरथइ, मंडावइ सत्रूकार।

चिहुं ए अठाई प्रतिमा पूजइ, चारिसय चारिहजार ॥१३॥
नीलक मुखमल दरियाई, जरबाफ मन उल्लास।
तेह तणो धजा चाढो साते, देहरइ दीसइ खास ॥१४॥
गीतारथ गुरु पासि सिद्धान्तना, सांभलइ अरथ विचार।
त्रिणि कालि करइ पूजा देहरासरि, समरइ नित नवकार ॥१५॥
इत्यादिक सबली धम करणी, करतउ थाहरूसाह।
पुण्यवंत परतीठ करावइ, चोखइ चित घरी चाह ॥१६॥
संवत सोल पंचोतर वरसइ, मगसिर सुदि सुभवार।
सिद्धियोग बरसि सुभ दिवसइ, मुहुरत अति श्रीकार ॥१७॥
तिहाँ कणि श्री जिनराजसूरीसर, करइ प्रतिष्ठा सार।
सहसफणा चितामणि बेई, पारसनाथ सुखकार ॥१८॥
बीजा पणि बिब प्रतिष्ठा मांडया, लोद्रपुर देहरा मांहि।
मूलनायक चिंतामणि स्वामी, सघनइ करइ उछाह ॥१९॥
तेणि समय इंद्रमाल अनोपम, बि सय रूपईया देइ।
लीधी जीदइ साह उच्छाह सुं, मन मइ भाव धरेई ॥२०॥
श्री जिनराजसूरि पहिरावइ, साहनइ आपणइ हाथि।
सकल महाजन मांहे मोहइ, जीवराज सुत साथ ॥२१॥
देस प्रदेस नउ सघ घणउ मिल्यउ, राउल श्री कलियाण।
राज लोक कुमार सुं आवइ, संतोषण अब जाण ॥२२॥
अवसर जाणि थिरु भणसाली, वरसइ सोवन धार।
तिहुं रूपईए असरफी नाणउ, लाहइ वड़ दातार ॥२३॥
संतोष्यउ द्रव्य देइ भाभउ, राउल कल्याणदास।
भोजिग भाट चारण जे मिलिगया, तेहिनी पूरइ आस ॥२४॥
जाचक दे आसीस प्रतीठइ, लीधउ सबल सोभाग।
हरराज मेघराज संघाति, चिरजीवे बड़भाग ॥२५॥
भट्टारक जिनराजसूरीसर, एह प्रतीष्टा कीधी।
तेहवइ संघपति रूपजोनी चीठी, नफरइ आणी दीधी ॥२६॥

लाभ जाणी नइ चालइ जेहवइ, तेहवइ करमसी साह ।
महियलि मोटिम माल्हू अरजुन, संघ करइ उच्छाह ॥२७॥
बेई संघ करीनइ चाल्या, गहमह सबल दिवाजइ ।
भट्टारक जिनराजसूरीसर, साथि सोभा काजइ ॥२८॥
गामि गामि लाहणि परभावना, देता वंछित दान ।
आया एम सेत्रुंजइ तीरथ, देखी द्यइ बहुमान ॥२९॥
संघ चढी पुंडर गिरि ऊपरि, भेट्या आदि जिणंद ।
रायण तलि पगला पूजीनइ, पाम्यउ परमाणंद ॥३०॥
मुंछाल भुजाल हायाल देईधन, फरसी तीरथ सार ।
संघवी करमसी अरजुन आंपणउ, सफल कीयउ अवतार ॥३१॥
हिव एक बात सुणउ सहु कोई, रूप जी साह अधिकार ।
सोमजी साह सिवा बे बाँधव, खरतर श्रावक सार ॥३२॥
वस्तुपाल तेजपाल तणा आज, परतखि ए अवतार ।
एह तणी उत्तम छइ करणी, कहतां नावइ पार ॥३३॥
संबत सोल चिमाला वरसइ, शत्रुंजय संघ कराया ।
अवह मारग जेणइ वहराया, पुण्य भंडार भराया ॥३४॥
वले प्रतिष्टा सबल करावी, अहमदाबाद मझारा ।
खंभायत पाटण संघ तेडया, पहिराया सुप्रकारा ॥३५॥
राणपुरि गिरनारि सेरीसउ, गउडी आबू जात्र ।
सहु तीरथ ना संघ कराया, पोष्या साहमी पात्र ॥३६॥
खरतर गच्छ मइं सगले देसे, लाहिणि कीधी एह ।
घरि घरि दीधउ आधउ रूपईयउ, बूठउ जाणे मेह ॥३७॥
साहमी नइ वलि वेढ सोना ना, पहिराव्या बहुवार ।
सेत्रुंज ऊपरि चैत्य करायउ, सांतिनाथ सुखकार ॥३८॥
सोमजी साह तणा सुत उत्तम, रतनजी रूपजी जाण ।
रतनजी पुत्र सुंदरदास सिखरा, दीपता दइ दीवाण ॥३९॥
रूपजी साह करायउ आठमउ, सेत्रुंज नउ उद्धार ।

बोल फब्यउ मोटउ खरतर गच्छि, सहु जाणइ संसार ॥४०॥
संवत सोल छिहुत्तरा वरसइ, वैसाख सुदि शुभवार ।
सरब सिद्धा त्रयोदशी दिवसइ, प्रतिष्ठा चउमुख सार ॥४१॥
पुण्यवंत रूपजी संघवीयइ, आणीमन मांहि भाव ।
परतिष्ठा आठमइ उद्धारनी, करावइ तिण प्रस्ताव ॥४२॥
सिद्धाचल ऊपरि आगे हूवा, सात उद्धार उदार ।
बड़वखती जिनराज प्रतिष्टइ, आठमउ ए उद्धार ॥४३॥
उद्धार तणी प्रतिष्ठा करतां, अखी थयउ गुरु नाम ।
रूपजीयइ पणि राख्यउ नामउ, करतइ मोटउ काम ॥४४॥
परिघल द्रव्य देइ संतोषो, भोजिग चारण भाट ।
मारू संघ अनइ गुजराती, आयउ घरि बहि वाट ॥४५॥
तिहां थी श्री जिनराजसूरीसर, संघ सुं करी विहार ।
नवइ नगरी आवीनइ सदगुरु, चउमासउ करइ सार ॥४६॥
करावी भाणवड़इ साह चापसी, बिब प्रतिष्ठा जेह ।
अमीभरघउ बिब देह तिहा कणि, श्री गुरु महिमा तेह ॥४७॥
मेड़तइ आसकर्ण्ण तेड़ावी, भट्टारक जिनराज ।
शाँतिनाथ परतीठ करावइ, सोल सतहोत्तरइ आज ॥४८॥
बीकानेर चउमास करीनइ, सिंधु देस बदावइ ।
मुलताण मरोठ फतैपुर देरा, श्री संघ साम्हउ आवइ ॥४९॥
मुलताणी संघ घणउ धन खरचे, लीधउ सबल सोभाग ।
गणधर सालिभद्र नइ पारिख, तेजपाल बड़भाग ॥५०॥
संघ करी जिनराजसूरीस नइ, करावइ दादा जात्र ।
देराउरि जिनकुशल सूरीसनी, पोषइ उत्तम पात्र ॥५१॥
सिंधु देसि जस सबलउ लेई, मानवी पांचे पीर ।
बीकानेर नगर पधारया, श्री गुरु साहस धीर ॥५२॥
करमसी साह तेड़ाया आया, रिणी करी चउमास ।
जेसलमेरे पधारया श्री गुरु, बीजी वार उल्लास ॥५३॥

सबल बिछित्ति करी पयसारउ, अरजुन माल्हू राय ।
दसारणभद्र राजानी परि, वांदइ सदगुरु पाय ।।४५।।
नांदि मंडाविं चउथउ व्रत लेई, गुरु मुखि करमसी साह ।
गाम माहे हूवासी लाहे, लीधउ लखमी लाह ।।५५।।
जेसलमेर चउमास करीनइ, पाली पाटण आवइ ।
चैत्य प्रतीठ करी रह्या तेहवइ, संघवी भूठइ तेड़ावइ ।।५६।।
नगर सेठ नेतउ साह वांदइ, श्री संघ सुं गुरु पाय ।
पाटणि नगरि रह्या चउमासउ, राजसूरि निर पाय ।।५७।।
अहमदाबाद नउ श्री संघ आवी, आग्रह करी अपार ।
श्रा जिनराज सुगुरु नइ राख्या, चउमासुं सुविचार ।।५८।।
पाठक वाचक दीक्षा देई, सगलउ गच्छ सन्तोषइ ।
वस्त्र पात्र अन पान संघाति, साधु पात्र नइ पोषइ ।।५९।।
चउरासी गछ माँहि भट्टारक, को नही ताहरइ तोलइ ।
श्रीजिनराजसूरि चिरजावे, जयकीरति इम बोलइ ।।६०।।

[ सर्व गाथा २३५ ]

॥ दूहा ॥

बड़ वखती बड़ साख जुं, थाप्यउ तुझ परिवार,
सीस सवाई ताहरइ, घणा थया सुखकार ।।१।।
पार्श्वनाथ नी सानिधि, कीधी ए अखियात ।
घांघणी प्रतिमा तणी बाँची लिपि विख्यात ।।२।।
सहगुरु साधी अंबिका, थई कहइ परतक्ष ।
भट्टारक पद पाँचमइ, वरसइ पामिसि दक्ष ।।३।।
मिल्या जिके कह्या अंबिका, बीजा बोल पचास ।
करइ सानिधि गुरु राज नइ, हाजरि रही उल्लास ।।४।।
जयतिहुअण समरपा थकी, अहिरूपइ धरणिंद ।
बोल्यउ थाइसि बच्छ तुं खरतर गच्छ मुणिंद ।।५।।

आज थकी चउथइ वरसि, फागुण सुदि सुभवार ।
सातमि दिवसइ नु'लहिसि, भट्टारक पद सार ॥६॥
तिहुँ दिहाड़े थाकते, तइ' जाण्यउ जिनराज ।
मरणउ जिनसिंहसूरि नउ, ए सबल करामति आज ॥७॥
बालपणइ परिण ताहरउ, पूरवउ परतउ एक ।
थिराद साचोर विचइ तुरत, अबिका राखी टेक ॥८॥
राउल भीम सभा चढ़ी, जेसलमेरि कहाय ।
वाद करी हाराविवउ, सोमविजय उवज्झाय ॥९॥
गच्छ पहिरायउ, लाख छह, पुस्तक सहस छत्रीस ।
भंडारइ उपवास सय, पांच किया सूरीस ॥१०॥
विद्यावलि कीयउ भलउ, सारी सिन्धु विहार ।
पांच पीर सानिधि करी वरत्यऐ जय जय कार ॥११॥
श्री सिद्धाचलि आठमउ, परतिष्ठयउ उद्धार ।
अविचल कीधउ आपणउ, नाम सुजस संसार ॥१२॥
जेता ही दिन ताहरा, तेता ही अवदात ।
एक जीव हु किम कहु, कहिया जे विख्यात ॥१३॥
वडभागी महिमानिलउ, सोभागी सब जाण ।
चिरजीवे जिनराज गुरु, उनय करइ जाँ भाग ॥१४॥
[सर्व गाथा ३४९]

ढाल-नवमी राग धन्यासिरी

जाति-तीर्थंकर रे चउवीसे मइ संस्तव्यारे एहनी
चिर जीवउ रे श्री जिनराजसूरीसरू रे,
खरतर गच्छ सिणगार, संघ उदय करू रे ॥१॥चि०॥
पाटइ रे श्री जिनसिंहसूरीस नइ रे, धरमसी साह मल्हार ।
कुल वोहिथ भलउ रे सोभागी रे रूपकला गुण आगलउ रे ॥२॥चि०
इहाँ संवत रे सोलइ सय इक्यासीयउ रे, जेसलमेर मझार ।

राणडी पूनिम दिनइ रे, श्री पूज्य नउ रे,
रास भण्यउ मइं शुभ मनइ रे ॥३॥चि०
खरतर गच्छि रे जुगप्रधान जिनचंदजी रे 'सकलचंद' तसु सीस ।
'समयसुन्दर' पाठक वरू रे,
वादी राय रे 'हर्षनन्दन' आणदकरू रे ॥४॥चि॥
तसु सीसइ रे 'जयकीरति' रलियामणउ रे, रास कीयउ सुजगीस ।
जिनराजसूरि नउ रे मनि आणी रे।
भाव अधिक गुरु राज नउ रे ॥५॥चि०
श्री गुरुनउ रे रास भणइ सोहामणउ रे, साभलइ जे नरनारि ।
नव निधि तसु तणी रे, जयकीरति रे,
दिन दिन महिमा अति घणी रे ॥६॥चि०॥

इति श्री श्री श्री श्री श्री जिनराजसूरीश्वराणा रासः

ग्रंथाग्र० २५५ (गाथा) कृतश्च पंडित जयकीर्ति गणिना । श्री जेसलमेर नगरे । शुभभवतु । लेखक पाठकयोः ।। लिखितोय श्री जेसाणनगरे ।। श्री स्तात् ।।

[पत्र २ से ८, श्री अभय जैन ग्रंथालय प्रति नं० ७६१३ ]

## अमिझरा पार्श्व जिन स्तवन

परतिख पास अमीझरउ, भेटीजइ अभिग्रण आवइ रे।
राति दिवस अमृत झरइ, तिण साचउ नाम कहावइ रे ॥१॥प०।
भगतवछल निज भगतनइ, दाखो दरसण परिचावइ रे ।
तउ थे सेवइ स्या भणी जउ, परतउ मूच न पावइ रे ॥२॥प०॥
अपणपइ परगट थई, सेवक नउ वान वधावइ रे ।
कारिज करिवा करइ, ते परनइ केम भलावइ रे ॥३॥प०॥
पुरिसादाणी पास जी, जऊ इम अतिशय न दिखावइ रे।
इणि कलजुग रा मानवी, तउ जात्र करण किम आवइ रे ॥४॥प०
एकणि रहणी जे रहइ, नित चरण कमल चितलावइ रे ।
सकल मनोरथ तेहना, प्रभु अलवि प्रमाण चढावइ रे ॥५॥प०॥
प्रभु विण देव अनेरडउ ते माहरइ मनि न सुहावइ ।
सुरतरु अंगणि जउ फलइ, तउ कवण कनकन खावइ रे ॥६॥प०
आलिम्र विघन दूरइ हरइ, अरिअण नइ आण मनावइ रे ।
श्री 'जिनराज' सदा जयउ,इम दिन दिन चढ़तइ दावइ रे ॥७॥प०

इति श्रीभाणवड नगर मंडन भट्टारक युगप्रधान श्री जिनराज सूरि प्रतिष्ठित श्री अमिझरा पार्श्व जिन स्तवनं

( पत्र १ वृहत् ज्ञान भंडार अबीरजी सं० बं० १६ )



# राजस्थानी शब्द कोश

## भावार्थ

### अ

| शब्द | पृष्ठ | अर्थ |
|---|---|---|
| अंगोवग | ५६ | अगोपांग |
| अदोह | १८१ | खेद |
| अउल्हाइ | ४९ | सकुचितहोना |
| अउले | १२६ | तरल, अवलेह |
| अउहटइ | ३८८९ | दूर हटना |
| अकिनी | ५६ | अकीर्ति |
| अखियात | १४७ | आख्यात यश |
| अखी | २४० | अक्षय |
| अगुरु लहु | ५६ | अगुरु लघु पर्याय |
| अच्छक | १३४ | उत्सुक |
| अछता | ३८,३९ | अनहोने |
| अछेप | ६ | अस्पृष्ट |
| अज्जवसाण | ५६ | अध्यवसाय, परिणाम विशेष |
| अजोगी | ५४ | अयोगी |
| अटकाणउ | १६५ | अटक गया |
| अमटठ् तप | १८२ | तेला, तीन उपवास |
| अड | ५४ | आठ |
| अडवन | ५६ | अठावन |
| अडोली | १३४ | आभरण हीन |
| अढलक | १२३ | अखूट |
| अण | ५५ | बिना |
| अणपुव्वि | ५४,५५ | अनुपूर्वीसे |
| अणहार | १८५ | अनुकार |
| अत्थ | १७२ | अर्थ |
| अथिर | ५६ | अस्थिर |
| अपमत्त | ५४ | अप्रमत्त |
| अनइ | ५५ | और |
| अनियट | ५४ | अनिवृत्ति |
| अनिवड़ | १९६, २००, २०३ | |
| अनेथि | १५५ | अन्यत्र |
| अनेरडउ | २४४ | दूसरा |
| अपजत | ५५ | अपर्याप्त |
| अपत्थिय | २१५ | अप्रार्थित |
| अणबीह | २२९ | निर्भय |
| अबीह | १७४ | निर्भय |
| अमलीमाण | ७४, १४५ | अगंजित |
| अमामो | १२१ | अमूल्य |
| अयाण | २२९ | अज्ञान |
| अरइ | ५६ | अरति |
| अरणि | १९१ | जंगली |
| अरियण | १९० | अरिजन, शत्रु |
| अलजयउ | ७६,७८, ७९, १२८, १६२, | |
| लअवइ | १६१ १६३ | क्रीडा मात्रसे सहज विनोद लीला लहरसे |
| अलवि | १, ५, ९, ४५, ५०, ७४, १३५,१४०, १४८,१६३ १७२, १९१, १९२ | |
| अलवेसर | २८ | प्रभु, प्रियतम ऐश्वर्यशाली |

| | | |
|---|---|---|
| | | ऐश्वर्य शाली |
| अलसाणउ | १४ | आलसी हुआ |
| अलीक | १५६ | मिथ्या |
| अवगण्यउ | २२० | अवगणना की |
| अवगणियां | २२५ | कर्णाभरण |
| अवदात | २४२ | विरुद |
| अवसाण | २१० | मौका |
| अवाणगू | १३५ | गुमसुम |
| अविहड़ | १९१ | अविघटित |
| असाय | ५६ | असाता |
| अहल्यउ | ३२४ | व्यर्थ |
| अहारग | ५५ | आहारक शरीर |
| अहिनाणे | १७० | अधिज्ञानसे |

**आ**

| | | |
|---|---|---|
| आत्र लूहण | २०९ | आत्मज |
| आंबिली | १६८ | इमली |
| आतलूहण | १५२ | आत्मज |
| आइम | ५५ | आदिम |
| आउ | ५४ | आयु |
| आउकार | १३५ | आवकार, स्वागत |
| आउखउ | २२९ | आयुष्य |
| आखडी | २० | नियम |
| आक्षेप | ६ | आक्षेप |
| आछणची | ७४ | निरस |
| आछइ | १९४, २२० | है |
| आछे | १४१,१४२ | है |
| अजूणउ | १६५ | आज का |

| | | |
|---|---|---|
| आड़इ | ७ | हठ करके |
| आडउ | १८० | हठ |
| आडी | १४४ | रुकावट में |
| आडी आवै | ८ | रुकावट डालती है |
| आडौ | १४४ | काम आना |
| आणतउ | १९२ | लाता हुआ |
| आणि | २३१ | ला कर |
| आथ | ७२,१३२,१७६, १७७ | धन, अर्थ |
| आथमै | १२९ | अस्त होता है |
| आदरण | १३८ | लेने का |
| आपणड़इ | २६२ | अपने |
| आपतउ | १६९ | देता हुआ |
| आफाणी | १० | स्वयमेव, अपने आप |
| आभोगो | १६८ | |
| आमणदूमणी | १७७ १८० | उदास |
| आमलउ | ३८, ५० | |
| आरडी | ५०, १५८ | रोने लगी, चिल्लाकर |
| आल | ११४ | कलक मिथ्यारोप |
| आलोवुं | ३८ | आलोचना करूं |
| आवसही | १६४ | धर्मस्थान से निकलते बोलने का शब्द (निवृत्ति से प्रवृत्तिमे आना) |
| आवसी | १९१ | आवेगी |

| | | |
|---|---|---|
| आससेन | ५७ | अश्वसेन (भ० पार्श्वनाथ के पिता) |
| आसंगा | १२९,१४४ | आशका |
| आसग | १३१ | आश्रय |
| आसगायत | ७६, १४८ | आश्रित |
| आहीठाण | ३५, ६९, १५२ | अधिस्थान |

**इ**

| | | |
|---|---|---|
| इकलास | १३६, १६३ | प्रीति |
| इगसय | ५५ | एक सौ |
| इच्छे वेय | ५५ | स्त्री वेद |
| इवड़ | १५९ | ऐसे |

**ई**

| | | |
|---|---|---|
| ईहुणा | २३६ | इच्छुक |

**उ**

| | | |
|---|---|---|
| उकसइ | १७५ | उत्कर्षित |
| उखाणो | १५६ | कहावत |
| उगतउ | १६९ | उदय होता |
| उच्छक | १४२ | उत्सुक |
| उछलइ | २३१ | फहराती है |
| उछाछलउ | १७७ | चंचल |
| उछहामणउ | १७७ | |
| उछेरइ | १७७ | (बच्चे को) खेलाना |
| उछेरयउ | १५९, १७८ | खेलाया पाला पोषा |
| उज्जोय | ५५ | उद्योत |
| उझित | १६४ | |
| उतावला | १४२ | जल्दबाज |
| उदीरनै | १४२ | उदयमे (कर्मो को) प्रयत्नसे लाना |
| उन्हालै | १५५ | उष्णकाल |
| उपरवाड़ | १३८ | ऊपरी मार्ग |
| उपाड़ | १६६ | उठाव |
| उपाड़िस | ७४ | उठाऊंगा |
| उभग्यउ | १९७ | उद्भग्न हुआ |
| उभगइ | १९१ | उथप जाना अधा जाना |
| उरै | १४७ | इधर |
| उलगाण | १२९ | सेवक |
| उलट | १६५ | उल्लास |
| उलभा | ७८ | उपालभ |
| उललिये | १३७ | उलट जाने |
| उवइसइ | ५४ | उपदेश देते हैं |
| उलसतइ | २११ | उल्लासमान हो |
| उवघाइ | ५४ | उपघात |
| उवटि | १४० | उन्मार्ग |
| उवसंत | ५४ | उपशात |
| उवसिमिग | ५५ | औपशमिक |
| उवेख | २७ | उपेक्षा |
| उवेखसे | १४१ | उपेक्षा करेगा |
| उसास | ५४ | उच्छ्वास |

**ऊ**

| | | |
|---|---|---|
| ऊंघ | १९० | निद्रा |
| ऊकसि | ७५ | उत्कर्षित |
| ऊगटी | ९ | |

| | | |
|---|---|---|
| ऊगामी | ७४, १८० | |
| ऊगै | १२९ | उदय होताहै |
| ऊघड़ी | १९२ | खुल गई उद्घटित |
| ऊणी झूणी | १३७ | उदास, न्यून, मदध्वनि |
| ऊन्ही | १२२ | उष्ण |
| ऊभगियइ | ८३, २०९ | उकताना तग आना, विपरीत |
| ऊभगी | २० | तग आना, उब जाना |
| ऊभगै | १८७ | उब जाय |
| ऊपाडइ | २२५ | उठाना |
| ऊपाडि दे | १६६ | उठादिया |
| ऊबरयउ | ७५ | बचगया |
| ऊवेखि | २१० | उपेक्षा कर |
| **ए** | | |
| एकणबार | १६३ | एक ही बार |
| एकणि | १६९ | एक ही |
| एकरस्यो | ६० | एक बार |
| एग | ५५ | एक |
| एगारमि | ५७ | ग्यारहवा |
| एवड | ७५ | ऐसा |
| **ओ** | | |
| ओझा | १८६ | उपाध्याय, शिक्षक |
| ओठम | १९८, २१४ | |

| | | |
|---|---|---|
| ओलगइ | २, ७, ८, १४, २१,२८, १३१ | सेवा करते है। |
| ओलजो | १३९ | |
| ओलीजे | १३८ | |
| **क** | | |
| कइयइ | १८० | कभी |
| कउगला | १२५ | कुल्ला |
| कचरता | १३ | रोदता है |
| कचोलडी | २१८ | कटोरी |
| कडनौ | १४२ | गोद का |
| कडि | १२९ | कटि |
| कडै | १२९, १७४ | पीछे |
| कन्हा | १५६ | पास |
| कनकाची | १७१ | सोने की |
| कनकफल | २८८ | धतूरा |
| कमाई | १९८ | उपार्जित |
| कम्म | ५६ | कर्म |
| कयावि | ५५ | कदापि |
| कहाणउ | १६५ | कहा जाना |
| कसै | १५१ | कष्ट दे |
| काठलि | १७७ | काठ मे |
| काख बजाइ | १९९ | उल्लास व्यक्त करना |
| काच सकल | ४५ | काचका टुकड़ा |
| काचली | ७३ | लघु काष्ट पात्र |
| काछ वाचनिकलक | १६३ | लगोट और जबान का सच्चा |

| | | |
|---|---|---|
| काछली | १५५, १९१ | लघु काष्ट पात्र |
| काठउ | ९४ | कठोर |
| काढ़इ | १७३ | निकालती है |
| काढिसु | १९४ | निकलूगा उखाड़ुंगा |
| काण | ७१ | लिहाज |
| कामगवी | १६९ | कामधेनु |
| कामण | १४३ | कामिनी |
| कारग | ५० | हल्ला |
| कारिमउ | ७२ | व्यर्थ |
| कारिमा | १३२ | व्यर्थ |
| काल्हा | १९३ | भौदू, अज्ञानी |
| काल्हे वाल्हे | ९४ | |
| का वलि | ७१ | कौन फिर |
| किलामण | २.२ | कष्ट |
| किसण | ६७ | कृष्ण पक्ष |
| कीकीयउ | १८० | गीगा, बच्चा |
| कुजकोइ | २९, १३१ | हरेक |
| कुलीक | १४० | |
| कूड | १४७ | कूट, मिथ्या |
| केड | २ | पीछा |
| केडइ | १३७, २०१, २२५ | पीछे |
| कितला | १६६ | कितने ही |
| केरउ | १७० | का |
| केहर | १३२ | कशरीसिंह |
| केही | २१३ | कैसी |
| कोहाईय | ५५ | क्रोधादि |

**ख**

| | | |
|---|---|---|
| खड़िया | २२७ | दवात |
| खडोखलि | १३३ | पानीका हौद |
| खप | २५ | आवश्यकता |
| खमइ | २११ | क्षमा करे, सहै |
| खमी | ७५ | क्षमाकर, सहन |
| खाडी | १६३ | खडित |
| खाटै | १५५ | भोगे, प्राप्तकरे |
| खाधउ | १९१ | खाया |
| खिसै | १४० | सरक जाय |
| खीजी | १५८ | खीज कर |
| खीण | १२२ | दुर्बल |
| खीणा | ५४ | क्षीण |
| खीबे | १३८ | कडकै, चमकै |
| खह | २१० | स्कन्धा |
| खेलणा | १२० | क्रीड़ा |
| खोड़ि | १५, १६६, १८५ | दोष, त्रुटि |
| खोलउ | २२७ | गोद, वस्त्रमे मेवा मिष्टान्न का खोला भराना |

**ग**

| | | |
|---|---|---|
| गठोडा | २३१ | कान का आभरण |
| गध्रप | २३७ | गन्धर्व गवैये |
| गउण | १४८ | गमन |
| गइ | ५५ | गति |
| गण्यउ | ५५ | गिना जाना |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गय | ५४ | गति | चउरिंदि | ५५ | चौरिन्द्रिय चार इन्द्रिय वाले जीव |
| गलिसाहै | १४० | गला पकड़कर | चउसाल | १६२ | |
| गाने | १८९ | ज्ञाने | चकरडी | २२६ | काठ की चकरी (खिलौना) |
| गुणठाणे | २११ | गुणस्थानक | चटडा | २२७ | छात्र |
| गुहिर | १६९ | गंभीर | चन्द्रोदय | २३५ | चन्द्रोवा, चादनी |
| गूडी | २३१ | पतंग | चरड | १८३ | चोर डाकू |
| गुरुलहु पणउ | ५४ | | चहि | २१० | चिता |
| गोठिसे | १४१ | संलग्न करेगा | चाख | ३१ | दष्टिदोष, नजर |
| गोरस | १५६ | दूध | चाखिवउ | १९४ | चखना |
| **घ** | | | चाम | २११ | चमडी |
| घरणी | १६३ | गृहिणी | चीतराव्यउ | २३० | याद दिलाया |
| घाइ | ५४ | घात | चांदलउ | १८४ | चन्द्र |
| घाट | १०७, १७७ | न्यून | चादलउ | २१५ | तिलक |
| घातिसु | १५१ | डालूगा | चाप्यउ | ७५ | दबाया |
| घालइ | १७३ | डालती है | चावइ | १६३ | चाहता है |
| घासैं | १२८ | घिसती है | चिंतवी | १६२ | सोचकर |
| घिरइ | ३ | लौटते हैं | चीर | १४५ | वस्त्र ओढणा |
| घोल | १३४ | दही का गाढा घोल | चूक | १७८ | भूल |
| **च** | | | चौनाणी | १३८, १६४ | देखोः— चउनाणी |
| चउ | ५४, ५६ | चार | चौवारे | १४३, १५३ | |
| चउतरइ | १६३ | चौंतरा | चोलणा | ८ | बेश |
| चउनाणी | १८८ | चार ज्ञान (मनः पर्यवज्ञान) धारी | | | |
| चउंप | १८६ | चतुराई | | | |

छ

छग ५४ छः
छछोहा ३, १३८, १९५
छउगाला १२९ तुर्रां कलंगी वाला
छंडी २०९ छोड कर
छगवीस ५६ छब्बीस
छडी २२० एकेली हाथ मे लेकर चलने की पतली लकडी
छडुं २११ छोडुं
छाक १९७ नशा
छाका १३९
छाटणा २३१ छीटे
छानउ १७९ गुप्त
छाना २३३ गुप्त
छीपइ ६ स्पर्श करे
छेनरइ १६३
छेतरइ २२० छलती है
छेबका १४० छिपकर
छेवट्टि ५५ छेवट्टा सस्थान
छेहलउ ६९ अ तिम
छोकरवाद १४१, २०९ लड़कपन
छोरूनी १२९, १७८ टाबर की, पुत्र की
छोलज्यो छिलना

ज

जपइ १९१, २११ जल्पति कहता है
जगीस १४५ आशा, इच्छा
जणस्यइ १६९ जन्मेगी
जनेता १६९ माता
जमची १७१, १९२ यमकी
जमार ७१ जन्म, भव
जरवाफ २३५, २३८ वस्त्र विशेष
जाबतउ १९४ यत्न
जामण १३२ जन्म
जामण जाया १४६ भाई
जामणि ७७,१६२,१६९,१७७ माता
जायउ १८० पुत्र (जन्म) दिया
जीमणी १२९ दाहिनी
जीह १४२ जिह्वा
जुया ५५ जुदा
जुहार ४२, ४३ नमस्कार
जूजूआ भिन्न भिन्न
जूजूई २५ भिन्न भिन्न
जूनी १९६ पुरानी
जेवड़इ १९४ रस्सी
जेतला १६६ जितना
जोड़ला २३१ जोड़ी
जोवा १७९ देखने के लिए
जोसी १५४ ज्योतिषी
जोगे १३८ योग्य

**झ**

| | | |
|---|---|---|
| झाक झमाल | १८५ | जगमगाहट |
| झाझउ | २३८ | बहुत सा |
| झाण | ५७ | ध्यान |
| झाबउ | ४२ | झोला |
| झाल | १२६, १६३. | ज्वाला |
| झालि | १४८, १५३, २२५ | पकड कर |
| झीणी | ३५ | बारीक |
| झूलरइ | ४२ | झुंड |

**ट**

| | | |
|---|---|---|
| टाढि | १९१ | ठंढ |
| टीबी | १७७ | टीकी |
| टीसी | १७७ | नाक की डांडी |

**ठ**

| | | |
|---|---|---|
| ठकुराला | १२९ | ठकुराई वाला |
| ठवी | १९० | रखी |
| ठार | २०९ | ठंड |
| ठारै | १२२ | ठंडी करना |
| ठावउ | ९२ | ठिकाने सर |

**ड**

| | | |
|---|---|---|
| डगला | १९१ | कदम |
| डावी | १२९ | बायी |
| डिगल | २०६ | विचलित हो |
| डोकरउ | १०३, २१२ | वृद्ध |
| डोकर पण | २०३ | वृद्धावस्था |
| डोलइ | १६९ | कम्पित हो |
| डोलती | १६७ | कांपती |
| डोलायउ | १६९ | कम्पाने से |
| डोलाव्यो | १५६ | विचलित |
| डोहला | १८२ | दोहद |

**ढ**

| | | |
|---|---|---|
| ढाढी | ७१ | डोलती, घूमती फिरती |
| ढूकडो | १६० | निकट |
| ढूकै | १४३ | पहुचे |

**त**

| | | |
|---|---|---|
| तंत | ९४ | तंत्र |
| तणउ | २११ | का |
| तहत्ति | २३२ | प्रमाण, तथास्तु |
| तहाविह | ५६ | तथाविध |
| तात | ९३ | निन्दा |
| तावड | १८१ | धूप |
| तावडि | ७० | धूप में |
| ताहरी | १९६ | तुम्हारी |
| तिग | ५५ | तीन |
| तिहुयण | ५७ | त्रिभुवन |
| तुम्हची | १७८ | तुम्हारीच |
| तुहारइ | २३४ | तुम्हारे आपके |
| तूठइ | २२७ | तुष्ट होती है |
| तुरियां | १३२ | घोड़े |
| तूस | १६५ | लेश मात्र |

तेड़ाविनइ २२० बुलाकर
तेडीजय ४२ बुलाना
तेय ५६ तेज
तेरमि ५७ तेरहवा
त्रिखा १९१ प्यास
त्रिह १६७ तीन
त्रेवड़ी १९२ मान लिया
त्रेवड़िस्यइ १५ मानोगे
त्रेह २०९ वर्षाके पानी से पडी दरार
त्रोटइ १६६ टोटा

थ

थडिल ठाम २०८ स्थडिल भूमि
थभाणा १३० १६५ स्तभिन हो गये
थट्ट २३५ ठाठ
थकी २३६ से
थडी १८० बच्चे को खड़ा होने का अभ्यास कराना
थाइसि २४२ होऊ गा
थाकते २४२ रहते
थाकी १३८ थक गई
थापण १५४ धरोहर
थांपणि ३९ धरोहर
थास्यइ १८२ होगी
थिवरा ४८ स्थविरो, वृद्ध साधु
थोणधी ५५ निद्रा
थोक १८९ बहुतायत

द

दसण आवरणी ५७ दर्शनावरणीय कर्म
दय दयकार १६३, २०१ दान दिया जाता है
दरियाई २३५, २३८ वस्त्र विशेष
दसग ५४ दस
दमूठण २२५ जन्मसे दसवें दिन का उत्सव
दहीजइ २११ जलती, दग्ध होती है
दाग्वउ ७, १९ दिखाओ
दाधी १४८ दग्ध
दिखाडो १३७ दिखाओ
दिणयर ५८ दिनकर
दियइ १७७ देकर
दीठ १२१ प्रति
दीठउ ७६ देखा
दीसइ १६६ दीखता
दीह १२९, १४२ दिन दिवस
दुक्कर २११, २३० दुष्कर
दुग ५४, ५५ दो
दुगचा ५६ घृणा दुर्गछा
दुनी १६६ संसार

| | | |
|---|---|---|
| दुभग | ५५ | दुर्भाग्य |
| दुसर | ५५ | दुस्वर |
| दूजण | १४५ | दुर्जन |
| दूझती | १६१ | दूध देती हुई |
| दूहवी | १४५, १८० | दुख दिया |
| दूहव्यो | १३६ | कष्ट दिया |
| देखाडीयउ | २३० | दिखाया |
| देस | ५४ | देशविरति |
| देइसबंध | ५५ | देश बंध |
| दोभागिणि | १८० | दुर्भागिनी |
| दोहिली | १२२ | दुर्लभ |

**ध**

| | | |
|---|---|---|
| धण | १५० | धनस्त्रीय |
| धणी | १६३ | स्वामी |
| धरती | १९१ | पृथ्वी |
| धवरावइ | १७७ | दुग्धपान कराती है, पालन पोषण करती है |
| धवराव्यउ | १७८ | पालन पोषण किया |
| ध्रसकइ | २१५ | भय से |
| ध्रसकाई | १३७, १४४ | छिटकाना |
| धाड | १६६ | डाका |
| धाड़िसी | १९४ | डाकुओं का दल आवेगा |
| धाड़ि | १९१ | डाका |
| धावतउ | १७७ | स्तन पान करते |
| धावी | १९६ | धाय |
| धिंगड़माल | १४६ | जबरदस्त |
| धीज | ७२, ८३ | परीक्षा |
| धुरीन | २६ | धुरंधर |
| धूजण (लागी | १४४ | कापने लगी |
| धैनड | १२३ | पुत्र |
| धोख | १६५ | स्तोक ढगला नमस्कार |
| धोटा | ७१, २२६ | पुत्र |

**न**

| | | |
|---|---|---|
| नजीक | १९० | निकट |
| नफरइ | २३८ | डाकिया |
| नय | २२९ | नदी |
| नरग | ५५ | नरक |
| नाक नमणि | २९ | सिर नवाना |
| नाखतउ | १९१ | गिराता हुआ |
| नाखो | १३१ | डालो |
| नातरउ | ७२ | सम्बन्ध |
| नाणउ | १९० | मत लाओ (न आणउ) |
| नादेय | ५५ | अनादरणीय |
| नान्हडा | १४१,२०३ | बच्चा,पुत्र |
| नाम कम्मसस | ५४ | नाम कर्म का |
| नामणउ | ४८ | नमन करना |
| नालइ | १६९ | नाल द्वारा |
| नावइ | १६८ | न आवे |

| | | |
|---|---|---|
| नाह | ७८ | नाथ |
| नाहलीयै | १५३ | नाथ |
| निगमस्यै | १२३ | गवावेगा |
| निद्दा | ५६ | निद्रा |
| निम्माण | ५४ | निर्माण |
| नियट | ५४ | निवृति |
| निरतिचार | ५७ | अतिचाररहित |
| निलउ | १६९ | निलय, घर |
| निगरण | १७७ | गालना |
| निहाण | १२२ | निधान |
| नीड | ७४ | माला, घोंसला |
| नीम | १३२, १९४ | नियम, त्याग |
| नीय गोय | ५५ | नीच गोत्र |
| नीलक | २३५, २३८ | वस्त्र विशेष |
| नीलज | २१० | निर्लज्ज |
| नीवडचा | १९४ | समाप्त होने पर |
| नीआवि | १६४ | |
| नीगमस्यइ | १६९ | निर्गमन करेगी |
| नीगमी | १३२ | विताई |
| नीठ | १२१ | कठिनतासे |
| नीरती | १५७ | |
| नेट | २७ | अन्त मे |
| नेडै | १२९ | निकट |
| नेव | ७५ | नल |
| नेवज | १७२ | नैवेद्य |

**प**

| | | |
|---|---|---|
| पचाली | १६५, २०५ | पूतली |
| पचेटे | २२६ | बालको का एक खेल |
| पडियउ | २२१ | पण्डित |
| पतै | १४४ | पंक्ति में |
| पइसण | २१५ | प्रवेश करना |
| पखइ | २३, १६२ | बिना |
| पखालिवा | १९१ | धोनेके लिए |
| पखै | १२६, १२९ | बिना |
| पग | ५४ | पाव |
| पगले | ४० | पैदल |
| पच्चक्खाण | ५७ | प्रत्याख्यान, त्याग |
| पटोलइ | १९९ | वस्त्र |
| पणनाणी | १८८ | केवली |
| पडखइ | ७६ | प्रतीक्षा कर |
| पडख्या | १९६ | प्रतीक्षा की |
| पडखु | १९८ | प्रतीक्षा करूं |
| पडखो | १४२, १४६ | प्रतीक्षा करो |
| पडिबोह | ५४ | प्रतिबोधक |
| पड़िलाभी | ७२ | प्रतिलाभ देकर |
| पडिलेही | २०८ | प्रतिलेखना कर |
| पडिस्यइ | १६५ | पड़ेगा |
| पडूर | १८३ | प्रचुर |
| पढम | ५४, ५१ | प्रथम |
| पण | ५४ | पांच |
| पणवीस | ५५ | पचीस |
| पणिदिय | ५६ | पंचेन्द्रिय |

| | | |
|---|---|---|
| पतइ | १५४ | पंचाग |
| पदठवणी | २३६ | पदस्थापना |
| पनोता | ११५ | |
| पमज्जणा | ४३ | प्रमार्जन |
| पभणइ | १९२ | कहता है |
| पमावस्यै | १२३ | गर्व करेगा |
| पयडि | ५४, ५६ | प्रकृति |
| पयला | ५६ | प्रचला |
| पयसरउ | २४१ | प्रवेशोत्सव |
| परघलनउ | २१२ | पिघलता हुआ |
| परचावइ | ५० | धैर्य देना |
| परचाबू | १२६ | राजी करू |
| परजलइ | २११ | प्रज्वलित होना है |
| परजालि | ७६ | जला कर |
| परठि | २८, १४३ १८४ | |
| परतउ | ५०, २८२ | परिचय चमत्कार |
| परतिखि | १८२ | प्रत्यक्ष |
| परतीठ | २३८, २८० | प्रतिष्ठा |
| परतीति | २३२ | परनिंदा,ईर्ष्या |
| पर पूठ | १६३ | पीठ पीछे |
| पर समय | २३३ | पराये शास्त्र |
| परसरइ | ३४ | |
| परसेवइ | २१२ | पसीयना प्रस्वेद |
| पराभव्यउ | १८७ | हार कर |
| परियागति | १२५ | परपरागति |
| परीठ | १२८ | वृतात |
| परीसै | १२२ | परोसती है |
| पवाड़इ | ७ | दिलाता है? |
| पसाइ | १२० | प्रसाद से |
| पहुडइ | ७२ | |
| पहडे | २७, ७२ | |
| पहाग्गु | १७० | प्रधान |
| पहिडे | १६० | |
| पहिराविसि | २३४ | पहनाऊ गी |
| पाखती | १८५ | पास, तरफ, निकट |
| पाखलि | ६ | पीछे |
| पागे | १२९ | पगडी |
| पाजइ | ३४ | पद्या सीढी |
| पाड | २८, १२९ | आभार उपकार |
| पाडइ | १७७ | हिसाबमें डालना |
| पाडी पाइ | ६९ | पैरोमे लगाना |
| पाडे | १६८ | मुहल्ले |
| पाडो | १३७ | नकालो |
| पाणीवल | ६, २०, २१, २३' ४९, ७३, ८९, १३५ १४६ | |
| पांतरइ | १६३, १६७ | धोखा खाना, धोखा देना |
| पातरउ | १६५ | प्रमाद, भूल |
| पातरै | १५६ | प्रमाद करता है |
| पातरयो | १५४ | ठगा, प्रतारित किया |
| पातल | १३४ | पतली |

पाथरी ९४, १३८ बिछाइ हुई
पाधरसी १८४
पाँनहियाँ २२५ पगरखियाँ
पारथिया २७ प्रार्थना करने वाले
पालणडइ १८० पालने मे
पालव १४८, १५३ पल्ला छोर
पावडिए १४२, २०२ पगथिए
पिंड २१० शरीर
पुग्गल ५५ पुद्गल
पुरिसादानी २४४ पुरुषो में प्रधान
पूजनइ २९ पूर्ति होते
पूरी (आसन) १३५ (आसन) जमाकर
पेखि २११ प्रेक्ष्य
पैसण १५६ प्रवेश करने
पोढ डि १८० सुला कर
पोरसि १६४ प्रहर
पोलिये १५६ द्वारप ल
पोसालइ २३१ पौषधशाला
प्रजूजने १२५ प्रयुक्त कर
प्राशुक १७८ पुत्र
प्रीसै १३४ परोसे

फ

फिरकड़ी २२६ काठकी चकरी, खिलौना
२२० नष्ट
फीटो १४३ नष्ट होना उड़ जाना
फेडु १८५ दूर करू
फोफलपान २२५ पान सुपारी

ब

बडा १४७ पकौड़ी
बडाला १२९ महान
बलगाइ (अंगु १८० अंगुली लिए) पकड कर चलाना
बलियां १७५ वलय,चूड़ियाँ
बहुअर १३२ बहू
बाझडी १४७, १५१ बन्ध्या
बाझणि ६९ बन्ध्या
बाथि १५१ बाह
बापूकारया १५० ललकारने पर
बार १५६ वार
बारणइ १६६, १८१ द्वार पर
बारमि ५७ बारहवा
बारि १८४ द्वार पर
बालूडा २२५ बालक
बावलि १७१ एक काटे-दार वृक्ष
बावीस ५५ बाईस
बाहर १३७ सहाय

| शब्द | पृष्ठ | अर्थ |
|---|---|---|
| वि ति | ५५ | दो तीन |
| विमणा | १६५, १८४ | दुगुणित |
| बिमणो | १४० | दुगुना |
| बीज | १५४ | बिजली |
| बीजा वसु | | परवश |
| बीडो | १२१ | जिम्मा लेना |
| बीहामणउ | २२ | भयानक |
| बुगचइ | १०३ | वस्त्र रखने का अलकृत वेष्टन |
| बूठा | १ ३८, २३७ | बरसा वृष्टि हुई |
| बूबन बाहिर | १९४ | न चिल्लाहट न सहायना |
| बूही | १२३, १६९ | चली |
| वेखास | ८८, १४५ | विकल्प |
| बेडली | ७३ | नौका |
| बेवे | १९२, १९६ | दोनो |
| बैसाणी | १२२ | बैठाकर |
| **भ** | | |
| भंभेरयो | १३५ | झकझोरना |
| भणी | १०२, २११ | लिए प्रति |
| भमीनइ | २२९ | भ्रमण कर |
| भयणा | ५६ | भजना |
| भलावइ | २४४ | सौपते है |
| भवण | ५८ | भवन |
| भले | २२७ | अक्षर (स्वर व्यंजन) |
| भाख्यउ | १७० | कहा |
| भागइ | ५६ | भाग में |
| भाडउ | १६४ | शुल्क,किराया |
| भामणइ | १८१ | बलैयेंओं से |
| भामणि | १४३ | भामिनी |
| भासइ | ५७ | कहते है |
| मिलिजे | २२७ | मिलना जुलना |
| भुई | ७३ | भूमि |
| भूय | १५२ | भूमि |
| भूजाल | २३८ | बडी भुजाओं वाला वीर |
| भेदाणो | १७० | |
| भेय | ५८ | भेद |
| भेव | १२६ | भेद |
| भोलवी | २१९ | भुलाई |
| **म** | | |
| मन | ९४ | मन |
| मइ | ५७ | मै |
| मउड | २३१ | मुकुट |
| मउडउ | ७४ | विलम्ब से |
| मउसाल | १६२ | ननिहाल |
| मग | ५१ | मणि |
| मछराल | १६३ | गुमानी,जोरावर |
| मछराला | १२९ | गुमानी |
| मजीठो | १४३ | मजीठ का रग |
| मल्हपतउ | २२७ | मस्ती से चलना गजगति चाल |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मल्हावइ | ५ | दुलार करता है | मीजी | १४३, १७० | मज्जा |
| मसजर | २३५ | वस्त्र विशेष | मीटइ | १६९ | दृष्टि में |
| मसाकति | ६, ७ | परिश्रम, पारिश्रमिक | मीटि | १२, १८, १९, १३५ | नजर दृष्टि |
| महिणउ | २१० | आक्षेप | | | |
| महीयारी | ६८ १५६ | ग्वालिन | मीढता | २४ | तुलना करते |
| मा जणी | १६३ | मा जायी बहिन | मीत | १३६ | मित्र |
| | | | मीनति | ७२ | वीनति |
| माडणा | २३१ | चित्राकन | मीस मोहनि | ५५ | मिश्र मोहनीय |
| माडियउ | २३२ | प्रारभ किया | मीसा | ५४ | मिश्र |
| माणतउ | १९२ | भोगता | मुक्खलडेह | १७७ | मुह से |
| माणै | १३२ | भोगे | मुखमल | ६६, २३५ | मखमल |
| माथै | १४४ | ऊपर | मु छाल | २३८ | मूछो वाला बड़ै |
| मामणा | २२६ | मनमने वचन | मु झि | २२९ | मुग्ध होकर |
| मामणे वचने | १७७ | बच्चो की मनमनाती बोली तुतलाती | मुरकनउ | १७७ | मुस्कराता |
| | | | मुरडइ | २८ | मुडता है |
| | | | मूआ | १७४ | मृतक |
| मारू घाला | १२८ | मारवाडी घाघरा | मूकइ | १६९ | छोडे |
| | | | मूकस्यै | १४५ | भेजगा |
| माल्हती | ४३ | घूमती हुई | मूकिसू | २३४ | रखूगा |
| मायीत | १८१ | माता पिता | मेळउ | २२९ | मिलाप |
| मावीत | १३८ | माता पिता | मेलवणी | १६२ | मिलान |
| माहण | १८६ | ब्राह्मण | मेलावडो | १६० | मिलाप |
| माहोमाहि | १८४ | परस्पर | मेल्हाणी | १६८ | छोडनी |
| मिच्छात | ५४, ५५ | मिथ्यात्व | मेवासी | ११ | चरवाहा, डाकू |
| मिच्छत्ति | ५५ | मिथ्यात्व (गुणस्थान) | मोकला | ३१ | खुला पर्याप्त |
| मिरी | १७७ | मिर्च | मोअब | १४३ | बड़ी, जयेष्टा |

| | | |
|---|---|---|
| मोसाल | १५९ | ननिहाल |
| मोसालो | १४६ | विवाहके समय ननिहाल से आने वाली सौगात रस्म |

**र**

| | | |
|---|---|---|
| रंढ माडि | १४८ | जिद्द पकड कर |
| रढाला | ११९ | रणवीर |
| रखे | १८ | मत, निषे-धात्मक अव्यय |
| रखीजइ | ५६ | करना |
| रडइ | ७० | रोता है |
| रणवावला | १६३ | युद्धातुर |
| रमाडइ | २२५ | खिलाता है |
| रयणि | १८२ | रात्रि |
| राई | १३५ | दराग |
| राखडि | १७७ | राखी बांधना |
| राचतौ | १३८ | रचना हुआ |
| राजवी | १६३ | राजा |
| राड़ि | १९४ | झगडा |
| राता | २१० | लाल |
| रामति | १६२ | खेल |
| रामेकडउ | १९५ | खिलौना |
| रीब | १८७ | चिल्लाहट |
| रूख | २२९ | वृक्ष पर |
| रूड़ी | २३० | अच्छी |
| रूसणउ | ९४ | रुष्ट होना |
| रूहाडि | ४३, १६८, १८०, | अभिलाषा |
| रेडुं | १७८, २०१ | गिराऊं |
| रेडै | १३७ | गिराती हैं |
| रोतउ | १७७; १८० | रोता हुआ |
| रोवाडयउ | १८० | रुलाया |

**ल**

| | | |
|---|---|---|
| लगइ | २०१ | पर्यन्त |
| लजाणउ | १७४ | लज्जित हुआ |
| लडथडै | १३० | लडखडाता है |
| लद्धउ | ५७ | प्राप्त किया |
| लवणिमा | १६८ | लावण्य |
| लहवहयउ | २३४ | अस्वस्थ हुआ |
| लाखीणउ | ९४, १९० | लाखो के मूल्य वाला अमूल्य |
| लाजवो | १६३ | लजाकर |
| लाड | १२९, १७७ | प्यार |
| लीधउ | १६१ | लिया |
| लाधी | १२२ | पाई |
| लावन | १८९ | लावण्य |
| लाहइ | २३८ | (लाहण) बांटना |
| लुणियइ | ५२ | फसल पाना |
| लुणिवा | ३२ | फसल पानेके लिये |
| लूषी | १७९ | लुब्धी |
| लूही | १२८ | पोछकर |
| लेखइ | १७७ | गणना |

| शब्द | पृष्ठ | अर्थ |
|---|---|---|
| लेखणि | २२७ | लेखनी |
| लेखवो | १४३ | मानो |
| लेसालइ | २२७ | लेखशाला पाठशाला |
| लोइ | २०१ | खून |
| लोभाण | १६५ | लुब्ध |
| लोयणे | १३५ | नेत्रों से |
| लोह | ५७ | लोभ |
| लोही | १४७ | रक्त |
| लोहडइ | १९९ | लोह पर |
| **व** | | |
| व्यावर | १४७ | प्रसूति |
| वउलइ | ७, १३ | बीतते हैं |
| वउलाऊ | ९४ | पहुंचाने वाला |
| वच्छ | २३० | पुत्र, वत्स |
| वछर | ५७ | वत्सर |
| वट्टंतउ | ५६ | वर्त्तमान रहता हुआ |
| वजाडइ | २२६ | बजाता है |
| वटाह | ७ | मार्ग |
| वण | ५६ | वर्ण |
| वध्यउ | १७९ | बढा |
| वयण | २०५ | वचन |
| वयसारि | २३१ | बैठाकर |
| वरइ पड़इ | १४, २२, १२३ | सफल हो |
| वरनोला | २३१ | वर या दीक्षार्थी का भोज निमंत्रण |
| वरय न पड़स्ये | १२५ | सफल नहीं होगा |

| शब्द | पृष्ठ | अर्थ |
|---|---|---|
| वरसइ | १६९ | वर्षा करता है |
| वरियाम | १४७ | बलवान |
| वरियाम | १४७ | प्रसव की वेदना |
| वनती | १६३ | वापिस |
| वसु | १२७ | वशवर्त्ती |
| वहाड़ि | २३२ | वहन कराके |
| वांक | १७८ | टेढ़, भूल |
| वागे | १२९ | चोगे की तरह का पुराना पहनाव |
| वागइ | २३० | वागे का |
| वागउ | २२४ | वागा पौशाक |
| वागरी | ६ | शिकारी |
| वान | ५० | मान इज्जत |
| वान | १३२ | वर्ण |
| वारीजिनी | १७९ | मना करते हुए |
| वारू | १९० | उत्तम |
| वालभ | ९३ | वल्लभ |
| वावण | ३२ | बोने मे |
| वावरइ | २३७ | खरचता है |
| वास | २३९ | वासक्षेप |
| वाहर | १९१ | सहायतार्थं |
| विगइ | १६४ | विकृति, |
| विघटइ | १६९ | विघटितहोना |
| विछिति | २४१ | शोभा |
| विणजारा | ९३ | वाणिज्य करने वाला |
| विणठो | १३६ | विनष्ट |
| विणसाडै | १४२ | नष्ट करतेहैं |

| | | |
|---|---|---|
| विणसी जाय | २११ | विनष्ट हो जाती है |
| विनडइ | २२, ९० | नमा लेता हैं, पराभव |
| विमासी | २६,१५६ | विमर्शकर |
| विरचइ | १६९ | विरत होना |
| विरूअउ | २०९ | विरूप |
| विलकतउ | १७७ | विलक्ष होता |
| विलूधउ | ७० | विलुब्ध |
| विलूधी | ७८ | विलुब्ध हुई |
| विलूरनइ | २२० | विदीर्ण करके |
| विवरचउ | ५८ | विवेचन किया |
| विहाण | ५७ | विधान |
| वीगताला | १२९ | व्यक्तिलशाली |
| वीटियउ | ७४ | वेष्टित, घेरा हुआ |
| वीजइ | १८८ | ढुलाते है, व्यजन करतेहै |
| वीर | १४१ | भाई |
| वीटचउ | २०५ | घिरा हुआ |
| वीरा | १२६ | भ्राता |
| वुज्जोय | ५४ | उद्योत |
| वूहा | २३२ | वहन किया |
| वेगलउ | ६, ३६ | शीघ्र |
| वेठि | ७५ | प्रतीक्षा |
| वेड़ | २३१ | वेल, अगूठी |
| वेढि | २२३ | लडाई |
| वेत | १८९ | विधान माप |
| वेय | ५५ | वेद |
| वेयण | ५८, ५५ | वेदन, वेदनीय कर्म |
| वेवाही | २२५ | वैवाहिक सम्बन्धी सगे |
| वेसास | २७, ७५, १६९ | विश्वास |

## स

| | | |
|---|---|---|
| श्रव | २३८ | सर्व |
| सइमुख | १७० | स्वयमुख से, रूबरू |
| संघयण | ५४ | शरीर का सगटन |
| सघाडउ | १६५ | शृंघाटक, समुदाय |
| साथिं | २३८ | साथ |
| सजलनउ | ५७ | सज्वलन कषाय |
| सजुउ | ५८ | सयुक्त |
| सजोडि | १८५ | जोडी |
| सथुउ | ५८ | सस्तुतः, सस्तवना की |
| सपजइ | १९१ | समाप्त हो |
| सपेखि | १२० | देखकर |
| ससो | १५७ | सशय |
| सइगू | ३६ | साथी |
| सडवमि | २११ | स्ववश |
| सकज | १४५ | समर्थ |
| सकजउ | १८१ | समर्थ |
| सखरउ | २३६ | सुन्दर,अच्छा |
| सघाडे | १५४ | देखो सघाडउ |
| सनपीढिया | १६७ | परम्परागत |
| सतसट्ठि | ५४ | सडसठ |
| समउ | २२५ | समय |
| सम्म | ५५ | सम्यक्तव |
| समापू | १२७ | दू,समर्पितकरूं |
| समापउ | १७८ | दो |

| | | |
|---|---|---|
| समापी | १९२ | समर्पितकी |
| समारउ | ७१ | सुधारो |
| सय | ५५ | शत, सौ |
| सयल | ५८ | सकल |
| सरइ | २०५ | स्वर से |
| सरणाइ | २२६ | शहनाई |
| सरिस | २०१ | सरीखे |
| सलहीजइ | ११२,१६२,१७७ | सराहना होती है |
| सलहीयइ | २६, ५३, | सराहन करनी |
| संवास | २११ | सहवास |
| सवील | ४९ | युक्ति प्याऊ |
| ससमय | १३३ | स्वशास्त्र |
| सहजोगी | ५४ | सयोगी |
| सहिनाणै | १४५ | लक्षणो मे |
| साक | ११८, १७८ | शका |
| साकउ | ७९ | यश |
| साकर | १६२ | शक्कर |
| साकर कूजउ | ४४ | मिश्री का कूजा |
| सांख | २३१ | सख |
| साचवइ | १६४ | सभालता है |
| साचवी | ४३ | सभालकर |
| साचवै | १५६ | सभालै |
| साटो | १२६ | सौदा |
| साण | ४९ | से |
| साथ | १२८,१८६ | जधाल |
| साद | ७८, १७७ | आवाज |

| | | |
|---|---|---|
| साधारण | ५५ | वनस्पति काय, जिसमें एक शरीर में अनन्त जीव हों |
| साधी | २४१ | सिद्ध की |
| साँधीयइ | १९० | निशाना साधना |
| सापतउ | १९४ | पूरा,अखड |
| सामठउ | १६३ | समष्टि से |
| सामठा | १२६ | समष्टि |
| सामठी | १८६ | एक साथ |
| साम्हउ | १७३ | सामने |
| साल | ६९ | शल्य |
| सालस्यइ | ६९ | शल्य चुभेगा |
| सासण | ५५ | सास्वादन |
| सासरउ | १८१ | ससुराल |
| सांसहइ | ८२, १३२ | सहन करे |
| सासाण | ५४ | सास्वादन |
| साहरइ | ८३, १६७ | सहारादे |
| साहि | १७८ | पकड कर |
| साही साही | १८० | पकड़ पकड़कर |
| सिगड़ी | ७७ | अग्निका चूल्हा |
| सिगला | १८१ | सभी |
| सिणगार | २२८ | श्रृगार |
| सिढो समान | २२७ | बच्चो के अभ्यास का प्रथम पाठ |

सीझस्यइ ७० सिद्ध होगा
सुकयत्थ १५८ सुकृतार्थ
सुंखड़ी १७७, २२७ मेवा मिष्ठान्न
सुखम ५५ सूक्ष्म
सुगाल २३७ सुकाल
सुरगइ ५५ देव गति
सुहम ५४ सूक्ष्म
सुहणा २०१ स्वप्न
सुहिणो १३० स्वप्न
सूग १५५ घृणा
सूड ३९ सूदन
सूयइ १७७ सोती है
सूल १४१ समाधान
सूहव २३५ सुहागिनी
सेहरो १३८ मुकुट
सैंवसि १३४ अपने वश
सोवन २३८ स्वर्ण
सोस १'८ चिन्ता
सोह १८१ सोभा
सोहग ५४ सौभाग्य

**ह**

हटकइ १७७ डाटती है
हटकण री १७७ डाटने की
हटकी १४५, १५४ डाटी फटकारी
हमाल १२७ मजदूर
हवासी २४१ ढग, अच्छा
हसीय गुदारै १४८ हसकर टाल देना
हाउ १८० हौआ
हाथ विछाइ १४८ अचल पसारकर
हत्थइ १७७ हाथ को
हाथाल २३८ शक्तिशाली लबे हाथ वाला
हाम २२, १२७ १८४ इच्छा स्वीकृति
हालइ १७३ चलता है
हालरियइ १८० लोरी
हालाहल १६९ जहर
हालरो १५१, १७७ लोरी
हालिरउ ६९ पुत्र
हिम ५५ अब
हिव २३० अब
हिवइ २१० अब
हिवणा ७८ अब
हु डा ५५ हु डिक सस्थान
हुकलइ २३१ बाजा
हुण ५५ ढग
हुलरावती १७७ बच्चे को लोरी देकर खेलाती
हेज ८, १८, ३४, १३६ स्नेह, प्रेम
हेठि ७५ नीचे
हेलइ ५२, १६३ सहज
हेलि १९८,२१९ सहज में
होडि १८२ तुलना

## श्री जिनराज सूरि प्रयुक्त देशी सूची

# जिनराजसूरि कृति कुसुमांजलि का शुद्धि-पत्रक

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ११ | १८ | या नउ | स्यानउ |
| १५ | १३ | ईनरीभ | न रीझइ |
| ३० | ११ | झलदेव | बलदेव |
| ३० | २२ | ग्रनुस रइ | अनुसारइ |
| ३१ | ६ | विमलाचज | विमलाचल |
| ३३ | १९ | जाजियउ | जागियउ |
| ३३ | २१ | वाखण | बखाण |
| ३४ | १३ | ग्राखड़ी | आंखड़ी |
| ४३ | २ | हूं | हुँ |
| ४७ | १४ | वोचि | वोधि |
| ४८ | ४ | जगदोल | जगदीस |
| ४८ | ७ | छोदिवा | छेदिवा |
| ५० | १२ | ग्रनरेड़ा | अनेरड़ा |
| ५२ | ११ | मुभ | मुझ |
| ५८ | ९ | भय | भव |
| ६२ | २१ | ग्रव | अघ |
| ६३ | ७ | उइसइ | उवइसइ |
| ६६ | १४ | एफ | एक |
| ६७ | ८ | तउतउ | तइ तउ |
| ६९ | १२ | र्घार | धरि |
| ७१ | ६ | पघलइ | पघलइ |
| ७२ | १४ | घोट | घोटा |
| ७४ | २२ | घाल्या | घाल्या |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ८१ | २२ | साभली | सांभली |
| ८४ | १० | बयु | बयुं |
| ८५ | २१ | राज धार होत मन मिलइ ...... अमूणउ | राज जीव प्रीत अधीर मिलइ सीयण मुणउ |
| ८६ | १८ | आण | आगइ आण |
| ८८ | ६ | षति | पति |

९१ विशेषः-कूड़ कपट करत जिन कारण, सो परिवार विरंग।
स्वारण विणु सब छेह दिखावत, तरुवर जेम विहग॥४॥

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ९३ | १४ | ने | जे |
| ९४ | १४ | उखार | दरबार |
| १०२ | ८ | कउन | कोउ |
| १०४ | २१ | करि | करिहु |
| १०६ | ६ | पइमज हथ इजाजित | प्रेम जहर तइ जाजत |
| १०६ | १२ | करउ के | करउगे |
| १०६ | १३ | रहत | कहत |
| ११० | २ | निकस | निकसत |
| १११ | ७ | अच | अउ |
| ११७ | ८ | जिभ | निज |
| ११७ | २३ | नगर | नरक |
| १२० | १३ | पते न्याय | पोते न्याय |
| १२० | २४ | कहियं विर | कइयइ वीर |
| १२१ | ४ | ५-६ ठो गाथाएं डबल आ गई है | |
| १२१ | ६ | अलिवि | अलवि |
| १२१ | १३ | जाजगृह | राजगृह |
| १२४ | ८ | दाजीय | दीजिये |
| १२६ | ४ | भी भीनो | भीनो |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १२६ | ४ | दिन दिन दिन | दिन दिन |
| १३१ | १८ | नथ | नाथ |
| १३२ | २२ | जाचंद | चाचंद |
| १३२ | २३ | जिस | जिसा |
| १३४ | ४ | पप हिरं हिलो | पहिरं पहिले |
| १३५ | ६ | रग | रंग |
| १३६ | ५ | पतग | पतंग |
| १४० | ६ | संजम | संजम |
| १४८ | २७ | डलाणो | डोलाणो |
| १५२ | २ | लोख | लाख |
| १५६ | ८ | नदन | नंदन |
| १६५ | ६ | मादक | मोदक |
| १६६ | १० | घरणी | घरणी |
| १६८ | ३ | प्रानोपम | अनोपम |
| १६८ | १६ | आंबिला | आंबिली |
| १६६ | २ | विमाणसण | विमासण |
| १७० | ७ | हुवरइ | हुवइ |
| १७२ | १२ | हिरइ | हिवइ |
| १७३ | २ | हयउ | हियउ |
| १७५ | ५ | धिरतो | घिरती |
| १७८ | ८ | कह उश्युं | कहउ स्युं |
| १८१ | १० | मोटु | मेटुं |
| १८१ | | घूंघलउलो | घूंघलउ |
| १८४ | | रण | रिण |
| १८७ | ७ | व्यास | व्यास |
| १८८ | १० | प्रकार | प्राकारो |
| १८८ | १५ | भामंतड | भामंडल |
| १८८ | १६ | प्रमु | प्रभु |
| १८८ | १६ | घंसोको | घसोको |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १८८ | २२ | बहु | बहु |
| १९० | १ | बास्यइ | थास्यइ |
| १९१ | १२ | दसड गला | दस डगला |
| १९१ | १२ | पहूचाबासी | पहूँचावसी |
| १९३ | १० | ऊबरीय | ऊबरथा |
| १९४ | ९ | निरा तिचारी | निरतिचार |
| १९४ | १८ | सापोतउ | सापतउ |
| १९७ | ४ | पिराम | पिरा मां |
| १९७ | ६ | बो | बे |
| १९९ | १८ | सयम | संयम |
| २०२ | ६ | पोरजन | परिजन |
| २०२ | १४ | पड़िथइ | पड़ियइ |
| २०४ | ५ | घरणा | घरणा |
| २०४ | १५ | सररू | सारू |
| २०५ | १७ | सोमाप | सोमा |
| २०७ | १४ | रिछड़तइ | विछड़तइ |
| २०८ | ७ | भूल | फल |
| २१२ | ७ | अभ्यंगन | अभ्यंगन |
| २१२ | ८ | उतकठा | उत्कंठा |
| २१२ | १३ | घरणी | घरणी |
| २१२ | १६ | घरणुं | घरणुं |
| २१३ | २१ | घरणउ | घरणउ |
| २१३ | ७ | सव | सर्व |
| २१५ | ५ | पहसरण | पइसरण |
| २१७ | १० | गच्च | गच्छ |
| २१७ | २० | चितुष्पदिका | चतुष्पदिका |
| २१७ | २१ | इलोक | श्लोक |
| २१८ | ४ | मभ्क | मुफ |
| २१८ | ८ | संघ भकुंड | संघ कफुंड |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २१८ | ११ | रइणि | राइणि |
| २१८ | १७ | कइइ | करइ |
| २१८ | १६ | तेला वडी | तलावडी |
| २२० | १० | डोलइवा | डोलाइवा |
| २२० | १७ | क | का |
| २२१ | ९ | घाणीं | वाणी |
| २२५ | ६ | मेलि | मेलि |
| २२५ | ९ | गहगइता | गऽगहता |
| २२५ | १८ | कठइ | कंठइ |
| २२६ | ५ | वचत वदन | वचन वदत |
| २२८ | १० | भवमर्ता | भमर्ता |
| २२९ | ६ | दइ | दह |
| २३३ | १ | कपिप्या | कप्पिया |
| २१३ | ११ | दम श्रु तखव | दसाश्रु तखंध |
| २३३ | ११ | बादि | वादी |
| २३५ | १ | वत | मवत |
| २३५ | १९ | अघवारइ | अवघारइ |
| २३८ | ६ | घ्रम | ध्रम |
| २३८ | २५ | संधाति | संघाति |
| २३९ | १३ | व तुपाल | वस्तुपाल |
| २४० | २० | घणाउ | घणाउ |
| २४० | २४ | सिघु | सिंधु |
| २४१ | १० | घांघणी | घंघाणी |
| २४१ | ५२ | समरपा | समरथा |
| २४४ | २ | अभिम्रण | भविम्रण |
| २४४ | ७ | कारिज | जे कारिज |

